ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

भाग एक



कथा-प्रस्तुति

हरिकृष्ण देवसरे

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

भाग एक

कथा-प्रस्तुति

हरिकृष्ण देवसरे

साहित्य अकादेमी

Grimm-Bandhuon Ki Kahaniyan (Part-I) : Hindi translation by Harikrishna Devsare of Grimm brothers (Jacob Ludwig Carl Grimm, Wilhelm Carl Grimm), Sahitya Akademi, New Delhi (2007), Rs .90.00

प्रथम संस्करण : 2000
पुनर्मुद्रण : 2007

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली-110 001
विक्रय विभाग, स्वाति, मंदिर मार्ग, नयी दिल्ली-110 001
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in
ई-मेल : sahityaakademisales@vsnl.net

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता-700 053
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बंगलौर-560 001

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018

ISBN 81-260-2040-7

मूल्य : 90 रुपये

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

भूमिका

यह कालजयी कृति

विश्व बालसाहित्य की कालजयी कृतियों में 'ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ' का विशेष महत्त्व है। विश्व में परीकथाओं का इतना बड़ा संकलन अपने आप में सर्वथा अकेला है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इस संकलन को तैयार करने में ग्रिम बंधुओं की भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि, लोकसाहित्य को उसके मौलिक रूप में प्रस्तुत करने के संकल्प और साथ-ही उनके अथक परिश्रम की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

सम्भवतः विश्व की किसी भाषा के साहित्य में परीकथाओं के ऐसे प्रामाणिक संग्रह का अनुवाद उपलब्ध न होना इन कथाओं में विद्यमान असीम मनोरंजन, रोमांच, कौतूहल और उनके पात्रों के साथ महसूस होनेवाले अपनेपन से पाठकों को वंचित रखना ही होता। इसी कारण ग्रिम बंधुओं की कहानियों के अनुवाद विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में किये गए और वहाँ उनका भरपूर स्वागत हुआ। उन्हें आज भी बाल-पाठकों द्वारा बड़ी रुचि के साथ पढ़ा जाता है।

विश्व बालसाहित्य की कालजयी कृतियों को भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करने की साहित्य अकादेमी की योजना एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसकी कमी पिछले तीन-चार दशकों से अनुभव की जा रही थी। ये कृतियाँ अंग्रेज़ी में भारी क़ीमतवाले सेटों के रूप में तो उपलब्ध हैं, किन्तु वे भारतीय बच्चों की पहुँच से बाहर हैं। इसके कारण अनेक हैं। साहित्य अकादेमी ने उन कालजयी कृतियों को भारतीय बच्चों तक उनकी ही भाषा में पहुँचाने का जो बीड़ा उठाया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है।

हिन्दी में ग्रिम बंधुओं की कहानियों का एक लघु संकलन, यदि मुझे ठीक से याद है, तो कोई पच्चीस-तीस वर्ष पहले मैक्समूलर भवन ने प्रकाशित किया

था और उसे 'बाल भारती' पत्रिका (प्रकाशन विभाग, दिल्ली) ने मुझे समीक्षार्थ भेजा था। उसकी सीमित प्रतियाँ ही छपी थीं। वह संकलन न तो बच्चों तक पहुँच सका और न आज उपलब्ध है। यों भी वह छपाई और प्रस्तुति की दृष्टि से ऐसा न था कि सम्भावित बाल पाठकों के हाथों से गुज़रने के बाद किसी के व्यक्तिगत पुस्तकालय में सुरक्षित रह पाता। ग्रिम बंधुओं की कुछ कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में लेखकों ने यदि ईमानदारी बरती तो उनके नाम के साथ प्रस्तुत कीं, अन्यथा अपने ही नाम से पुनर्लेखन करके प्रकाशित करायीं। लेकिन इससे ग्रिम बंधुओं के इस महत्त्वपूर्ण कार्य का अनुमान लगाना सम्भव न था। ग्रिम बंधुओं की कहानियों के बारे में शायद कभी कोई विश्लेषणात्मक लेख भी नहीं लिखा गया, जो उनके विशद् कार्य को रेखांकित करता और उसके समग्र रूप को प्रस्तुत करने की आवश्यकता का संकेत करता, इसलिए साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत इतना बड़ा संग्रह, हिन्दी ही नहीं, शायद भारतीय भाषाओं में भी पहला ही है।

ग्रिम बंधुओं की कहानियों का यह बड़ा संग्रह लोक-साहित्य और परीकथाओं के संग्रह तथा उनका पुनर्लेखन करनेवालों के लिए मार्गदर्शक एवं मानक ग्रन्थ के रूप में इस अर्थ में उपयोगी है कि लोकमानस की ऐसी धरोहर को वास्तव में सुरक्षित रखने की भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि क्या होनी चाहिए ! यह भी जानना महत्त्वपूर्ण है कि लोकमानस में प्रचलित कहानियाँ किस तरह एक भू-भाग से दूसरे, तीसरे और इसी तरह एक देश से दूसरे और तीसरे देश की यात्रा करती हुई अपने कथ्य और मूल्यों में किस तरह से स्थानीय विश्वासों और मान्यताओं को आत्मसात कर, अपने को परिवर्तित करती चलती जाती हैं और फिर भी वे अपने मनोरंजन, कौतूहल, रोमांच, पात्रों के स्वर और स्वरूप एवं भूमिका में कोई कमी नहीं आने देतीं।

जैकोब ग्रिम अनोखे प्रतिभासंपन्न विद्वान थे, जबकि विलहेम ग्रिम काव्यात्मक प्रतिभा के धनी थे। वे साहित्य में व्याकरणशास्त्र के अध्ययन के प्रारंभिक अध्येता थे। उन्होंने जर्मन लोक के कथाओं कविता-मिथक और प्राचीन साहित्य का विशेष अध्ययन किया था। उन दोनों में परियों की कहानी कहने की अद्‌भुत दक्षता थी। सन् 1814 में प्रकाशित उनका परीकथासंग्रह बहुत ही लोकप्रिय हुआ। उसमें लोक जीवन के विभिन्न तथ्यों और क़िस्सागों द्वारा कही गई कहानियों को सुरुचिपूर्ण एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया था। इसके पूर्व ग्रिम बंधुओं ने 'किण्डर उण्ड हांसमारचन' (चिल्ड्रेन एण्ड फ़ोकटेल्स) में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त जादू, जीवजन्तु, काल्पनिक कथाओं, तिलिस्मी और

हास्य कहानियों का संचय किया था। दृष्टान्त और आख्यान बनकर लोक कथा में प्रचलित कल्पना फ़ैंटेसी, चमत्कार, संयोग किस तरह से ताने-बाने का काम करते हैं—यही उन दोनों के शोध का विषय बना रहा।

ग्रिम बंधुओं ने आम लोगों में प्रचलित लोक आख्यानों के प्राचीनतम रूप मौखिक रूप से जहाँ कहीं भी उपलब्ध थे—उन्हें ढूँढ़ निकाला। विभिन्न समय में परम्परागत रूप से विकासमान और परवर्ती काल में विद्यमान उन सभी विशेषताओं को उन्होंने अपनी कथा-प्रस्तुति में जुगाये रखा। उन्होंने कथाओं में निहित आख्यान-तत्त्व, कथा-तंतु और अभिप्रायों में आनेवाले बदलावों को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया। लोक-कथाओं की प्रस्तुति के अनिवार्य तत्त्व—भाषा, शब्द, पदबंध, मनोदशा, पात्र-परिवेश, स्वाद के साथ देशी या स्थानीय बोली और लहज़े के वैशिष्ट्य को भी इस संकलन में देखा जा सकता है। कहना न होगा, यूरोप के लोक जीवन में ईसाई धर्म की पैठ और चर्च के आवश्यक महत्त्व को भी ग्रिम बंधुओं ने रेखांकित किया। उनके द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत संकलन में भाषागत परिवर्तनों को लक्ष्य किया जा सकता है, जो उनकी उर्वर सोच और निरन्तर अनुसंधान से जुड़े हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत अन्तिम संस्करण (1857) में कोई दो सौ कहानियाँ संकलित थी—जो न केवल जर्मनी में बल्कि विश्व-साहित्य में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना सकीं।

ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों की प्रस्तुति में मैंने यथासम्भव उनकी मूल संवेदना और कथ्य की रक्षा करने का पूरा प्रयत्न किया है, जिससे ग्रिम बंधुओं की आत्मा सुरक्षित रहे। दरअसल ग्रिम की कहानियों का रोमांच और कौतूहल इतना सशक्त है कि वह फ़ैंटेसी होते हुए भी अपने पाठक को वास्तविकता का अहसास दिलाकर, अपने प्रवाह के साथ पूरी गति से आगे बढ़ता जाता है और कहानी के ख़त्म होने पर ही रुकता है। इस दृष्टि से मैंने भाषा की सरलता, सहजता और संवादों को यथासम्भव ऐसा रखा है कि वे इस प्रवाह में किसी तरह बाधक न बनें। इसके लिए मैं मैक्समूलर भवन, नई दिल्ली और जर्मन भाषा के अध्येता श्री अंशुमान साहा का विशेष आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इन कहानियों (मैंने इनका अनुवाद अंग्रेज़ी से किया है) की आत्मा और जर्मन-संस्कृति तथा लोकमानस के स्वरूप को समझने में पूरी सहायता की। इससे इसकी प्रस्तुति में निश्चय ही काफ़ी हद तक प्रामाणिकता का पुट आ गया है, जो इसकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

आधुनिक युग में विशेष रूप से नयी वैज्ञानिक उपलब्धियों, अन्तरिक्ष यात्राओं, दूसरे ग्रहों में जीवन की खोज, उड़न तश्तरियों के रहस्य आदि और

विज्ञान-कथाओं ने बड़ों की ही नहीं, बच्चों की सोच में भी परिवर्तन किया है। इस कारण भारतीय भाषाओं के बालसाहित्य में ही नहीं, विश्व बालसाहित्य में भी आज परीकथाओं की सार्थकता पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया गया है। यह बहस आज भी जारी है। किन्तु एक कालजयी कृति के रूप में ग्रिम बंधुओं की कहानिया का महत्त्व सदैव बना रहेगा। यह और बात है कि बाल पाठक उसे अपने समय से बहुत पहले, यानी तब की कृति समझकर पढ़ें, जब वे पात्र सचमुच इस धरती पर चलते-फिरते थे। यह कुछ वैसा ही है, जैसे आज हम डायनासोरों के बारे में ड्रैगन और प्रेतात्माओं या ऐसी ही अन्य जन्तुओं की फ़ैंटेसी-फ़िल्में मनोरंजन के लिए देखते हैं। लेकिन फिर भी उनके रोमांच और कौतूहल के प्रति आकर्षण कम नहीं होता।

विश्व बालसाहित्य के सभी मर्मज्ञों और साहित्य के विद्वानों ने एक स्वर से यह दावा किया है कि ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ हर उम्र के पाठकों को—चाहे वह बच्चा हो, बड़ा हो या बूढ़ा हो—समान रूप से आकर्षित करती आयी हैं और उनका मनोरंजन करने में सक्षम हैं। आज भी इनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आयी है। मेरी यह प्रस्तुति यदि इस दावे को सफल सिद्ध कर सकी तो मैं अपने इस प्रयास को सफल और सार्थक मानूँगा।

साहित्य अकादेमी ने इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मुझे योग्य समझा, इसके लिए मैं अकादेमी का हृदय से आभारी हूँ। इसलिए भी आभारी हूँ कि इस कालजयी कृति को बाल साहित्य के एक समर्पित सेवक के नाते, भारतीय साहित्य विशेषकर हिन्दी पाठकों के हाथों तक पहुँचाने के पुनीत कार्य का गौरवपूर्ण अवसर मुझे मिला। इस प्रस्तुति में मुझे डॉ. मनीषा दुबे का जो सहयोग मिला, उसके प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

भारतीय बालसाहित्य जगत और भारतीय बाल पाठकों के लिए, विश्व साहित्य की इस कालजयी कृति को, मुझे आशा है कि भारत की स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती की अनुपम भेंट के रूप में स्वीकार किया जायेगा।

इसके लिए साहित्य अकादेमी को साधुवाद !

—हरिकृष्ण देवसरे

कथालोक के अमर सर्जक : ग्रिम बंधु

जैकोब लुडविग कार्ल ग्रिम (1785-1863) और विलहेम कार्ल ग्रिम (1786-1859) के बारे में कहा जाता है कि वे आधुनिक लोकसाहित्य-विज्ञान के जनक थे। एक साधारण ग़रीब परिवार में जन्मे ग्रिम बंधुओं ने अपनी विधवा माँ के साथ बड़ा कष्टप्रद बचपन बिताया था। लेकिन दोनों भाई बचपन से ही एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। बचपन से ही वे एक ही बिस्तर पर सोते थे, एक ही मेज़ पर बैठकर काम करते थे, एक ही स्कूल में पढ़ते थे। दोनों की रुचियाँ भी एक जैसी थीं। दोनों ही अपने पिता के समान वकील बनना चाहते थे। अपनी माँ के संघर्ष और अथक परिश्रम के बल पर ही दोनों ने यूनिवर्सिटी स्तर की शिक्षा प्राप्त की थी। विलहेम की शादी हो जाने के बाद भी अविवाहित जैकोब विलहेम के ही घर में रहते थे और विलहेम के अध्ययन-कक्ष तथा उनकी पुस्तकों का बेहिचक प्रयोग करते थे। जैकोब ने विलहेम के साथ रहकर ही अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और सफल समझा। लेकिन प्रतिभा के मामले में जैकोब ग्रिम कहीं ज़्यादा विद्वान थे। उनमें काम करने की अद्‌भुत क्षमता और स्वतः प्रेरणा शक्ति थी, जबकि विलहेम स्वभाव से कलाकार थे। उन्हें संगीत में गहरी रुचि थी। विलहेम को कहानी कहने की कला में भी अद्‌भुत दक्षता प्राप्त थी।

'यूनिवर्सिटी आफ मारबर्ग' में जैकोब ग्रिम को अपने प्रोफ़ेसर और उस समय के प्रसिद्ध विद्वान फ्रेडरिक कार्लवान सेविग्नी के साथ काम करने का मौक़ा मिला। सेविग्नी ने ही जैकोब को मध्ययुगीन जर्मन साहित्य का अध्ययन करने की प्रेरणा दी थी। सेविग्नी के पुस्तकालय में जैकोब ने इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें पढ़ीं। इस तरह जैकोब में लोकगीतों, बैले और लोकनाट्य के प्रति अध्ययन करने की रुचि जागी थी। जब सेविग्नी रोमन क़ानून सम्बन्धी कुछ सामग्री एकत्र करने के लिए रोम गये तो वह जैकोब को अपने साथ लेते गये। वहाँ जैकोब को अपने विषय सम्बन्धी शोधकार्य करने का भी अवसर मिला। इसी समय विलहेम ने जैकोब

को एक पत्र भी लिखा था : "मैं सोचता हूँ कि तुम वहाँ पाण्डुलिपियों में कुछ पुरानी जर्मन कविताएँ खोजो। शायद तुम्हें वहाँ कुछ अज्ञात और बहुत महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हाथ लग जाएँ।" लेकिन जब जैकोब लौटकर आए तो उन्होंने कविताओं की बजाय कहानियों को अपने शोध का विषय बनाया। कारण यह था कि उस समय जिन लोगों ने लोकगीतों पर काम किया था, उन्होंने उन गीतों में संशोधन करके उन्हें आधुनिक लोगों की समझ के अनुरूप बनाने की कोशिश में उन गीतों के वास्तविक रूप को नष्ट कर दिया था। ग्रिम बन्धु यह नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने स्वयं लोककथाएँ संकलित करने का संकल्प लिया था।

वास्तव में ग्रिम बंधु भाषा-विज्ञानी थे। साहित्य के पारम्परिक स्वरूप का अध्ययन करना उनका मुख्य उद्देश्य था। जैकोब ग्रिम में जर्मन भाषा और व्याकरण के प्रति रुचि बाद तक भी बनी रही, लेकिन विलहेम ग्रिम को लोककथाएँ संग्रहित करने में विशेष आनन्द मिला था। ग्रिम बन्धुओं की कहानियों के संकलन का उद्देश्य तब बच्चे नहीं थे। उनकी कहानियों का यह बड़ा संग्रह उस बड़ी शोध-योजना का एक हिस्सा था, जिसका उद्देश्य था—भाषा, दन्तकथाओं, कविताओं, बच्चों के खेलों और गीतों के माध्यम से जर्मन भाषा की पुरातनता के स्रोत तक पहुँचकर उसके क्रमिक विकास का अध्ययन करना। इसी के परिणामस्वरूप उन्होंने 'जर्मन व्याकरण' तथा 'जर्मन शब्दकोश' तैयार किए थे।

ग्रिम बंधुओं ने इन कथाओं का संग्रह करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा कि इन्हें शब्दशः उसी तरह लिखा और प्रस्तुत किया जाय, जैसा कि उन्हें सुना गया था। ग्रिम बंधुओं का दृढ़ मत था कि लोकसाहित्य की रचनाओं का संग्रह करते समय उसकी भाषा तथा उसके स्वरूप के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। वे जैसी हैं, उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत किया जाए।

ग्रिम बंधुओं ने पूरे जर्मनी की यात्रा की थी और छोटे-से-छोटे गाँव तक में जाकर लोगों से कहानियाँ सुनकर उन्हें लिपिबद्ध किया था। इसलिए ये वही कहानियाँ हैं, जिन्हें लोग सदियों से सुनते आये हैं और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत के रूप में देते रहे हैं। किसान, मज़दूर, दादी, नानी-हर तरह के लोगों से ग्रिम बंधुओं ने कहानियाँ सुनी और लिपिबद्ध की थीं। इस दौरान उन्हें कई अजीब अनुभव भी हुए। एक बार एक बुढ़िया ने इस शर्त पर कहानियाँ सुनायीं कि वह भूखी है और पहले उसे भरपेट खाना खिलाओ। एक अन्य बूढ़ी महिला के पास जब वे कहानी सुनने गये तो उसने शर्त रखी कि श्रोता के रूप में उसके सामने कोई बच्चा बैठा होना ज़रूरी है। ग्रिम बंधुओं ने उस गाँव के कई परिवारों से सम्पर्क

किया कि वे अपने बच्चों को बुढ़िया के पास कहानियाँ सुनने के लिए भेज दें। किन्तु उन लोगों ने यह कहकर मना कर दिया कि वह बुढ़िया जादूगरनी है। वह बच्चों पर ऐसा जादू करती है कि वे रात में डरते और चीख़ते-चिल्लाते हैं। तब ग्रिम बंधु दूर के गाँव से एक मित्र के बच्चे को किसी बहाने से ले आये। इसके बाद वह बुढ़िया कहानी सुनाने बैठी। ग्रिम बंधु साथ के कमरे में पर्दे के पीछे बैठकर कहानियाँ सुनने एवं लिखने लगे। उस बुढ़िया की कहानी सुनाने की कला अद्‌भुत थी। वह कहानी सुनाती तो साथ में जानवरों, पक्षियों और हवा, तूफ़ान, बादलों आदि की आवाज़ भी निकालती और इस तरह वह कहानी को बहुत प्रभावशाली बना देती थी। ग्रिम बंधुओं ने लिखा है कि सम्भवतः कथा सुनाने की कला में वह बुढ़िया विश्व में सर्वश्रेष्ठ है।

ग्रिम बंधुओं का यह कथा-संकलन जब सन 1812 में पहली बार प्रकाशित हुआ तो उसका नाम था--*नर्सरी एण्ड हाउसहोल्ड टेल्स* (नर्सरी और घरेलू कहानियाँ)। शीघ्र ही यह पुस्तक जर्मनी के घर-घर की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गयी थी। इसके बाद कहानियों का दूसरा खण्ड 1815 में प्रकाशित हुआ। उस समय के जर्मन साहित्य जगत में इन पुस्तकों को कोई विशेष महत्त्व नहीं मिला। एक तत्कालीन लोकसाहित्य-संकलनकर्ता ब्रेण्टेनो ने तो इन्हें फूहड़ कहानियाँ कहकर अस्वीकार कर दिया था। लेकिन इनकी लोकप्रियता दिनोंदिन इतनी तेज़ी से बढ़ी कि इनके लगातार कई संस्करण निकले। इसके बाद शुरू हुआ इन कहानियों के अनुवाद का सिलसिला। सबसे पहले डेनिश, स्वीडिश और फ़्रेंच, अंग्रेज़ी, इटेलियन, स्पेनिश, चैक, पोलिश और इस तरह लगभग सभी भाषाओं में इनके अनुवाद प्रकाशित हुए।

ग्रिम बंधुओं की कहानियों को बच्चों ने जिस उत्साह से स्वीकार करके उन्हें लोकप्रियता दी, उसका एक सीधा परिणाम यह हुआ कि बच्चों की कल्पनाजन्य भूख को शान्त करने की आवश्यकता पर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। फिर जब हैंस एण्डरसन की कहानियों का संग्रह *वण्डरफुल स्टोरीज़ फॉर चिल्ड्रन* प्रकाशित हुआ तो लोगों को लगा कि बच्चों के लिए ऐसे साहित्य की बहुत ज़रूरत है जो उन्हें कल्पना जगत की सैर कराए, हँसाए, गुदगुदाए और साथ ही जीवन की वास्तविकता से परिचित कराए। उन्हें अपने समाज, लोगों और देश की परम्पराओं और व्यवहार की जानकारी दे।

ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों की लोकप्रियता देखकर उनके समकालीन हैन्स एण्डरसन ने ग्रिम बंधुओं से मुलाक़ात की थी और उनके साथ कुछ दिन बिताकर अपनी कहानियों पर चर्चा की थी। एण्डरसन की कहानियों में निस्सन्देह

लोकप्रचलित कथाओं की आत्मा की रक्षा तो की गयी थी—लेकिन एण्डरसन ने उन्हें मौलिकता देकर काफ़ी कुछ जीवन के यथार्थ से जोड़ने का प्रयास किया था। वह यदि बच्चों को कल्पनालोक की सैर कराते भी हैं तो उन्हें यथार्थ के धरातल से उठाकर कल्पनालोक में ले जाते हैं और फिर वापस उसी धरातल पर ले आते हैं। उन्नीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक में ग्रिम बंधुओं की कहानियों ने जहाँ विश्व की अनेक भाषाओं को अपनी लोक कथाओं के संग्रह, बच्चों के लिए प्रकाशित करने की प्रेरणा दी और विश्व बालसाहित्य में एक नयी कथा-धारा का मार्ग प्रशस्त किया—वहीं 1835 में हैंस एण्डरसन के कथा-संग्रह के प्रकाशन से विश्व बालसाहित्य में मौलिक परीकथा लेखन की एक नयी धारा ने जन्म लिया। इसके बाद अनेक नये लेखक—राबर्ट साउथी, जॉन रस्किन, आस्कर वाइल्ड, हेलेन बैनरमैन आदि ने अपनी मौलिक परीकथाएँ लिखीं।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के सम्मानस्वरूप ग्रिम बंधुओं को 1829 में गार्टिंगेन यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर और पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर बिठाया गया था। सन् 1841 में उन्हें बर्लिन विश्वविद्यालय में 'एकेडेमी आफ़ साइन्सेस' के लिए चुना गया था।

ग्रिम बंधुओं की ये कहानियाँ केवल जर्मन साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व बालसाहित्य की अमर कृति के रूप में सम्मानित हैं। विश्व भर के बच्चे इन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ते आ रहे हैं और लगभग दो सौ वर्षों से ये बच्चों के साथ-साथ बड़ों का भी मनोरंजन कर रही हैं।

ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों के कुछ लोकप्रिय चरित्र 'सिंडरेला', 'स्नोह्वाइट', 'रम्पलस्टिल्टस्किन', ''मोची के जूते बनाने वाले बौने', 'हैन्सल और ग्रेथल' आदि बच्चों द्वारा पसन्द किये गये प्रसिद्ध चरित्र हैं।

ग्रिम बंधुओं की अन्य कृतियाँ जर्मन भाषा के इतिहास और विकास का अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण मानी गयी हैं। जैकोब ग्रिम की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के नाम हैं—*जर्मन ग्रामर* (1819), *जर्मन माइथालॉजी* (1835) *हिस्ट्री ऑफ़ जर्मन लैंग्वेज* (1848)। जर्मनी में ग्रिम बन्धुओं के सारे कार्यों को 'कालजयी साहित्य' के विशेषण से सम्मानित किया गया है, लेकिन इससे भी अधिक वे अपनी कहानियों के रूप में विश्व भर के बच्चों के हृदय में सदियों तक अमर रहेंगे।

—**हरिकृष्ण देवसरे**

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

परीकथाएँ परम्परागत लोकसाहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग रही हैं। विश्व की सभी भाषाओं का लोकसाहित्य, परीकथाओं से समृद्ध है, क्योंकि उनमें उस समाज के विश्वासों और मान्यताओं तथा नैतिक, धार्मिक और प्राचीन मूल्यों को सुरक्षित रखा गया था। पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग कहानियों को कहते-सुनते आए हैं और इनमें अन्तर्निहित जीवन-मूल्य तथा परम्परागत मान्यताएँ विरासत के रूप में- नयी पीढ़ी को देते रहे हैं।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में लोक साहित्य के संग्रह और उनके अध्ययन के महत्त्व पर यूरोप के विद्वानों ने विशेष ध्यान दिया। जर्मनी में एर्निम और ब्रेण्टेनो ने लोकगीतों का संग्रह करके उसे प्रकाशित किया। इस लोक सम्पदा के प्रति आकर्षित होकर ग्रिम बंधुओं ने इसके विशाल भण्डार का मन्थन कर 'जर्मन भाषा का इतिहास', 'जर्मन व्याकरण' और 'जर्मन शब्दकोश' जैसी विशाल और महत्त्वाकांक्षी योजनाओं पर काम शुरू किया। उसी प्रक्रिया में उन्होंने बहुत-सी लोककथाएँ लोगों से सुनीं और उन्हें लिपिबद्ध किया। कारण यह था कि जब लोग कहानी कहते या सुनाते हैं तो विभिन्न पात्रों, भावों और स्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करते हैं। इस तरह कहानियों के माध्यम से किसी भी भाषा का विपुल शब्द भण्डार तैयार किया जाना सम्भव होता है। ग्रिम बंधुओं ने जर्मनी के अलग-अलग भागों में जाकर और ऐसे लोगों को खोजकर बहुत-सी कहानियाँ सुनीं और लिखीं। एक ही कहानी यदि अलग-अलग परिवेश और भौगोलिक परिस्थितियों में सुनने को मिली तो उसे भी उन्होंने लिपिबद्ध किया, ताकि वे यह अध्ययन कर सकें, कि उसमें कब और क्या परिवर्तन किए गए और क्यों ?

लोककथाओं की यह एक विशेषता रही है कि वे जहाँ भी, जिस किसी परिवेश, भौगोलिक वातावरण और सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में पहुँचीं, उनमें वहाँ के

विश्वासों, मान्यताओं और परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन कर लिया गया। लोकसाहित्य और भाषा-विज्ञान के मर्मज्ञों के लिए यह अध्ययन बहुत प्रेरक रहा है। ग्रिम बंधुओं के संकलन में भी ऐसी कई कहानियाँ हैं, जो थोड़े-थोड़े परिवर्तनों के साथ कही-सुनी गई हैं। इनमें 'बारह भाई', 'छह हंस', 'सात कौवे', 'अँगूठा राम', 'अँगूठा राम की यात्राएँ', 'ढोलवादक', 'लोहे का चूल्हा', 'देवदार' और 'राजकुमार और राजकुमारी'—ऐसी ही कहानियाँ हैं, जिनके कथानक एक होते हुए भी उनकी कथन-शैली और प्रस्तुति में भिन्नता है। इसी के साथ ग्रिम बंधुओं ने कहानी सुनाने वाले द्वारा कहानी के आरम्भ में कहे गए वाक्य और अन्त में कही गयी बात को भी कहानी के साथ ही लिखा है। जैसे—'ख़रगोश और साही' के आरम्भ में कहानी सुनानेवाला कहता है—"तुम्हें यह कहानी झूठ लग सकती है, लेकिन यह सच भी हो सकती है, क्योंकि मेरे दादाजी जब इसे सुनाते थे तो यह कहकर कहानी समाप्त करते थे—"यह सब सच है मेरे बेटे। ऐसा न होता तो मैं तुम्हें कभी न सुनाता। तो वह कहानी इस तरह है—"

इसी तरह कई कहानियों के अन्त में कहानी सुनानेवाले ने अपनी ओर से जो कुछ कहा या जोड़ा, उसे भी लिखा गया है, जैसे—'छह नौकर' कहानी के अन्त में कहा गया—"विवाह इतनी धूमधाम से हुआ कि मुझे लग रहा है कि यह कहानी कहने के अलावा अगर मैं ख़ुद भी वहाँ होता तो ज़्यादा अच्छा होता।" 'बौने' कहानी के अन्त में सुनानेवाला कहता है—"और उनकी शादी में मैं काँच के जूते पहनकर गया था, जिन्हें दीवार पर मार-मारकर मैंने चकनाचूर कर दिया था।" 'बिल्ले और चुहिया की दोस्ती' कहानी में जब बिल्ला चुहिया को ही अन्त में खा लेता है तो सुनानेवाला कहता है—"इस दुनिया में ऐसा हर दिन होता रहता है।" 'लाल टोपी' कहानी के उन्हें दो अन्त सुनने को मिले थे। इसलिए कहानी का पहला अन्त लिखने के बाद ग्रिम ने लिखा—"कुछ लोग कहते हैं कि इसमें आख़िरी बात सच नहीं है। इसकी बजाय ऐसा हुआ कि...' और फिर कहानी का जो दूसरा अन्त उन्होंने सुना था, उसे लिख दिया।

ज़ाहिर है कि इन कहानियों के संकलन का उद्देश्य भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन करना था, न कि बाल पाठकों के मनोरंजन के लिए कथा-संग्रह तैयार करना। इन कहानियों को एकत्र करने में जिन लोगों ने ग्रिम बंधुओं की सहायता की थी, उनमें 'फ्रॉ विहमेन' नाम की एक महिला का उल्लेख सबसे पहले आता है। उसके पास कहानियों का मानों भण्डार था और ग्रिम बंधुओं ने, अधिकाधिक जितनी कहानियाँ उससे सुन सकते थे, सुनीं और लिपिबद्ध कीं। इसके बाद नाम आता है विलहेम ग्रिम की पत्नी श्रीमती डॉरचेन वाइल्ड और उसकी पाँच बहनों का। उन्होंने बचपन से ढेरों कहानियाँ सुन रखी थीं। वे सब कहानियाँ उन्होंने संकलन के लिए सुनायीं। इसके अलावा बहुत-से

मित्रों, पड़ोसियों और विभिन्न इलाक़ों के उन क़िस्सागों की भी भूमिका रही है, जो ग्रिम बंधुओं को कथा-संकलन की यात्रा के दौरान मिले थे।

अपने कथा-संग्रह के लिए ग्रिम बंधु कहानियों को जैसा सुनते थे वैसा ही, शब्दशः लिपिबद्ध करते थे। इसका कारण यह था कि वे भाषा को अपने मूलरूप में जानना चाहते थे। एर्निम और ब्रेण्टेनो ने लोकगीतों का जो संग्रह प्रकाशित किया था, उसमें उन्होंने जगह-जगह भाषा और भावों को आधुनिक रंग देने के लिए संशोधन कर दिये थे। इससे उनकी मौलिकता नष्ट हो गयी थी। ग्रिम बन्धु लोक-साहित्य की किसी रचना में ऐसे संशोधन के सिद्धान्ततः विरोधी थे। इसीलिए जब ब्रेण्टेनो ने उनसे यह कथा-संग्रह प्रकाशित करने के लिए माँगा, तो उन्होंने इसे देने से मना कर दिया था, क्योंकि वे ब्रेण्टेनो के इस विचार से परिचित थे कि वह इन्हें प्रकाशित करने से पहले इनमें संशोधन कर देगा। जबकि ग्रिम बन्धु इन कहानियों को, जैसी लिखी हैं, अक्षरशः उसी तरह प्रकाशित करना चाहते थे। उनमें वे न तो कोई आधुनिक सन्दर्भ, मूल्य या सामाजिक विश्वास जोड़ना चाहते थे, न ही उसमें निहित कोई भाव या शब्द बदलना चाहते थे। यही कारण है कि जब उनका यह कथा-संग्रह प्रकाशित हुआ तो उसे भाषा-विज्ञान अध्ययन की एक महत्त्वपूर्ण कृति माना गया। विश्व में लोकसाहित्य संकलन के लिए, शोधार्थियों का मार्गदर्शन करनेवाला यह संकलन एक मानक—एक प्रतिमान बन गया। इन कहानियों में उन्होंने कहीं-कहीं केवल वाक्य-विन्यास व्याकरण की दृष्टि से ही कुछ साधारण संशोधन किए थे।

सन् 1815 तक ग्रिम बंधुओं की कहानियों का यह संकलन बच्चों और बड़ों में बड़ी तेज़ी से लोकप्रिय हुआ। फिर जब सन् 1819 में कथा-संग्रह का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ तो इसकी पाण्डुलिपि तैयार करने का काम विलहेम ग्रिम ने किया था। उसकी भूमिका में विलहेम ने लिखा—"हमने पहले संस्करण को लगभग पूरी तरह बदल दिया है। जो अपूर्ण था, उसे पूर्ण बना दिया गया है। अब काफ़ी कुछ बहुत सरल और सच्चे रूप में कहा गया है और आप पाएँगे कि बहुत से अंश अब अधिक अच्छे रूप में प्रस्तुत हुए हैं। हमने जब इन कहानियों का संचय किया था, तब बुनियादी रूप में हमारा आग्रह इनकी प्रामाणिकता और वास्तविकता के प्रति अधिक था। इसलिए हमने पहले संस्करण की कहानियों में न तो कोई अपना कलाकौशल दिखाया और न ही किसी कहानी के मूल रूप को बदलकर उसे अलंकृत करने का प्रयत्न किया। हमने उसे जिस रूप में पाया था, उसी तरह हमने पाठकों तक पहुँचा दिया था। पहले संस्करण के समय हम हरेक कथा की मूल अभिव्यक्ति और उसके प्रस्तुतीकरण के प्रति अधिक उत्तरदायी थे। लेकिन इस दूसरे संस्करण में 'लोकभाषा' के सारे शब्द और बच्चों को कठिन लगनेवाले मुहावरे भी बदल दिए गए हैं।" बच्चों द्वारा उनके कथा-संग्रह को पसंद किए जाने के फलस्वरूप विलहेम ग्रिम अपने कथा-संग्रह के हर

संस्करण में कुछ न कुछ परिवर्तन करते रहे और उनका यह काम, जिसे वह 'बालकथाओं की एक राष्ट्रीय शैली' के रूप में स्थापित करना चाहते थे, सन् 1857 तक जारी रहा। संभवतः 'ग्रिम बंधुओं की कथाओं' की विश्वव्यापी लोकप्रियता का एक कारण यह भी था कि ग्रिम बंधुओं ने अपनी कहानियों का परिमार्जन, उन्हें बच्चों के अनुरूप बनाने के लिए निरन्तर जारी रखा। विश्वभर के बाल-पाठकों में उन्हें जो लोकप्रियता मिली उसकी कल्पना शायद ग्रिम बन्धुओं ने सपने में भी न की थी। वे तो भाषा-विज्ञानी थे और अपने उसी काम के लिए ख्याति पाने के आकांक्षी थे। यह और बात है कि जर्मन-भाषा के लिए उनके किये गये अन्य कार्यों ने भी उन्हें पर्याप्त प्रसिद्धि दिलायी; लेकिन विश्वभर में वे केवल अपनी इन कहानियों के लिए जाने गए और पिछली दो शताब्दियों में उनकी लोकप्रियता बढ़ती चली गई है।

यूरोप में ग्रिम बंधुओं की कहानियों की चर्चा और लोकप्रियता जैसे-जैसे फैली, वैसे-वैसे उनके अनुवाद प्रस्तुत करने की आवश्यकता की ओर लोगों का ध्यान गया। इनके अनुवाद सबसे पहले डेनिश, स्विस और फ्रेंच में प्रकाशित हुए। इसके बाद अंग्रेज़ी, इटेलियन, स्पेनिश, चेक और पोलिश भाषाओं में हुए। इंग्लैण्ड में सन् 1823 में इन कहानियों का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ। अनुवाद किया था एडगर टेलर ने और इसके चित्र बनाए थे, अपने समय के प्रसिद्ध चित्रकार जॉर्ज क्रिकशैंक ने। इस कथा संग्रह का नाम था—*जर्मन पापुलर स्टोरीज़*। *ए क्रिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ चिल्ड्रन्स लिटरेचर* में एन्नी ईटन लिखती हैं कि इंग्लैण्ड में ग्रिम की कहानियाँ प्रकाशित होने के बाद "उस दिन से अंग्रेज़ी बोलनेवाले बच्चों ने इन कहानियों के रोमांचक, मनोरंजक और प्यारे चरित्रों जैसे—विश्वासपात्र जॉन, बौने, जूते बनानेवाला, रम्पलस्टिल्टस्किन, स्नोह्वाइट और देवदूत आदि को अपना बना लिया। प्राचीन अंग्रेज़ी लोकसाहित्य की सभी महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ, जैसे—बहादुरी के कारनामे, जाने-पहचाने जानवर, वैभवशाली, चमक-दमकवाले शानदार सुन्दर दृश्य और साहसिक ग्रामीण जीवन—इन कहानियों में एक बार फिर उनके सामने सजीव हो उठे थे। वे बाल-पाठक, जो अक्षर-ज्ञान में अभी पूरी दक्षता भी नहीं प्राप्त कर सके थे, इस किताब की कहानियाँ अपने बड़ों से पढ़वाकर ध्यान से सुन लेते थे। फिर अपने आप उस किताब को लेकर वे कहानियाँ दुबारा-तिबारा ख़ुद ऐसे पढ़ते थे, जैसे उन्हें कहानी पढ़ना सचमुच आता हो। दरअसल यह कहानियों का आकर्षण था। जो उन्हें बाँधे रखता था। ग्रिम बंधुओं ने अपने संग्रह में इसी ख़ूबी को जुगाये या बचाये रखा था। बच्चों ने उस वक़्त इस किताब को कितनी रुचि से और कितनी बार पढ़ा होगा, यह आज बता पाना शायद मुश्किल है। लेकिन इसका अनुमान हम उनकी आलमारी में रखी इस किताब की ख़स्ता हालत से ज़रूर लगा सकते हैं।"

इंग्लैंड में सन् 1823 में प्रकाशित *जर्मन पापुलर स्टोरीज़* नामक अपने कथा-संग्रह

को देखकर जेकोब ग्रिम ने अपने प्रकाशक कार्ल लैचमैन को अपने 12 मई, 1823 के पत्र में लिखा था—"हमारी कहानियों का अनुवाद हाल ही में अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुआ है। बहुत साफ़-सुथरी छपाई है और मुझे लगता है कि अनुवाद पठनीय भी है। सरल और प्रवाहपूर्ण अंग्रेज़ी बच्चों की कहानियाँ कहने के लिए जर्मन भाषा की तुलना में ज़्यादा बेहतर मालूम पड़ती है।"

इंग्लैण्ड में, बाद के वर्षों में ये कहानियाँ *ग्रिम्स हाउसहोल्ड स्टोरीज़, ग्रिम्स फ़ेयरी टेल्स* आदि कई शीर्षकों से अनूदित होकर प्रकाशित हुईं और क्रिकशैंक के अलावा वाल्टर क्रेन, आर्थर रैकहम, वैन गॉग जैसे उस समय के प्रसिद्ध चित्रकारों ने इन पुस्तकों के चित्र बनाए थे। इसके बाद फिर विश्व की अनेक भाषाओं में इनके अनुवाद का जो सिलसिला चला, वह आज भी जारी है।

ग्रिम की परीकथाओं में जो राजा और रानियाँ, राजकुमार और राजकुमारियाँ आए हैं, वे प्रायः उदार, दानी, प्रजाप्रिय तथा जनता द्वारा सम्मानित व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। उनके पास न फ़ौज होती है, न ही पुलिस। वे स्वयं, अपनी बुद्धि और अपनी शक्ति के सहारे बड़े-से-बड़े साहसिक काम करने के लिए निकल पड़ते हैं। साहसिक और बहादुरी के काम करना उनका शौक़ है। वे ऐसे अवसरों की तलाश में रहते हैं कि कब उन्हें चुनौती मिले और वे उसे स्वीकार कर अपने साहस और वीरता का प्रदर्शन करके विजय का डंका बजाएँ। 'निडर राजकुमार' कहानी का राजकुमार "घर में बैठे-बैठे ऊब गया था। उसे किसी से भी डर नहीं लगता था। इसीलिए उसने दुनिया की सैर का विचार किया।" 'पहेली' कहानी का राजकुमार "दुनिया देखना चाहता था, इसलिए वह केवल एक वफ़ादार नौकर को लेकर निकल पड़ा।" 'छह नौकर' कहानी में राजकुमार को जब सुन्दर राजकुमारी को जीतकर लाने से उसके पिता ने रोक दिया तो साहस और वीरता का यह काम न कर पाने के दुख से वह बीमार पड़ गया। "उसकी बीमारी सात साल तक चलती रही। अन्त में उसकी बीमारी से निराश होकर बूढ़े राजा ने उससे कहा—"जाओ, और अपना भाग्य आज़मा कर देखो; क्योंकि तुम्हें ठीक करने का दूसरा और कोई उपाय मुझे दिख नहीं रहा।" जैसे ही राजा ने अनुमति दी, वह ख़ुशी से अपने बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया। अब वह अपने अन्दर एक नयी शक्ति महसूस कर रहा था।

साहस और वीरता के काम करने का एकाधिकार केवल राजाओं और राजकुमारों तक ही सीमित नहीं रहा है। ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों में समाज के सामान्य वर्ग के लोगों, जैसे—दर्ज़ी, मोची, ढोलवादक, किसान, ज़मींदार आदि और उनके बेटों को भी साहस तथा वीरता और बुद्धिमत्ता के काम करते हुए प्रस्तुत किया गया है और उन्हें अन्त में विजय प्राप्त होती है। यह तथ्य उस विचारधारा का प्रतीक था कि समाज में सामान्य व्यक्ति को भी महत्त्वपूर्ण बनने का अधिकार है और राजा अपनी

जनता या प्रजा का 'शोषक' न होकर सच्चे अर्थों में 'पालक' बनने की कोशिश करे। उसके राज्य में सभी को प्रतिभा-प्रदर्शन और उसका यश प्राप्त करने का अधिकार मिले। साथ ही, ऐसे लोगों को राजा से प्रशंसा और संरक्षण भी मिले। इसी शुभाकांक्षा के रूप में ग्रिम बंधुओं की कई कहानियों में सामान्य आदमियों को भी बड़े-बड़े काम, बहादुरी का प्रदर्शन और चतुराई से शर्त जीतते हुए दिखाया गया है और अन्त में यदि उनमें से कोई राजा बना तो उसने अपने शेष जीवन में 'सुखपूर्वक राज किया।' ऐसी कहानियों से साधारण और ग़रीब आदमी भी महत्त्वाकांक्षी बनने और भविष्य में कोई सुखद सपना देखने का विश्वास मन में जगा लेता है। जर्मन लोकसाहित्य के आधुनिक समीक्षकों का कहना है कि ग्रिम बन्धुओं की कहानियों में यह विशेषता इसलिए भी उभरकर आयी, कि जिस समय उन्होंने इन कथाओं का संचयन किया उस समय पूरे यूरोप में मध्यमवर्गीय समाज ऊपर उठ रहा था और धार्मिक तथा सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा था। उस समय इस कथा-संग्रह के लोकप्रिय होने के एक इस कारण के साथ-साथ दूसरा यह कारण भी था कि इन कहानियों में मध्यमवर्गीय समाज की आकांक्षाओं को उदात्त रूप में प्रस्तुत किया गया था। जर्मन-समीक्षकों का यह भी कहना है कि इन कहानियों में मध्यमवर्गीय समाज के विचारों को इसलिए भी अधिक अभिव्यक्ति मिली, कि इन्हें सुनानेवाले ज़्यादातर लोग स्वयं मध्यर्म वर्ग के थे। उन्होंने जब इन बड़े सहज ढंग से उन्हें अपने समाज के अनुरूप परिवर्तित करके ही उन्हें सुनाया। इस कारण यदि किसी कहानी में कहीं उच्च वर्ग की उदात्तता का चित्रण रहा भी होगा तो वह स्वाभाविक रूप से तिरोहित हो गया और कहानी का मूलरूप वही प्रमाणित हो गया, जिसे मध्यवर्ग ने सुनाया।

ग्रिम की कहानियों के कथानायकों की एक विशेषता यह भी है कि वे स्वयं बड़े दयालु होते हैं। वे छोटे-छोटे जीवों की मदद करते हैं और कष्ट उठाकर भी 'उफ़' नहीं करते। कहानियों के दूसरे भाग में जब कथानायक मुसीबतों में फँसता है या उसके सामने चुनौतियाँ आती हैं या उसे असम्भव कार्य करने को कहा जाता है और यह कि न कर पाने पर मृत्यु-दण्ड मिलेगा—तब यही छोटे-छोटे जीव, पशु-पक्षी उसकी मदद करते हैं; असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं और कथानायक विजयी होता है। ऐसी कहानियाँ बाल पाठकों के मन में जहाँ जीवों पर दया करने की भावना का संचार करती हैं, वहीं यह विश्वास जगाती हैं कि इस दयालुता या परोपकार का फल अच्छा ही मिलता है, साथ ही यह कि संसार में छोटा-से-छोटा जीव भी महत्त्वपूर्ण है। 'रानी मधुमक्खी' 'दो यात्री' 'दो भाई', 'सफ़ेद साँप' जैसी कहानियों में ऐसे ही विचारों को अभिव्यक्ति दी गयी है।

ग्रिम बंधुओं की कहानियों में हिंसा के घृणित रूप को कोई स्थान नहीं दिया गया। इस बारे में उनकी बड़ी स्पष्ट राय रही है, जिसकी चर्चा उन्होंने अपनी कहानियों

के पहले संस्करण की भूमिका में की है और कहा है कि चूँकि ये कहानियाँ बच्चों द्वारा पढ़ी जानी हैं, इसलिए उनके कोमल मन पर हिंसा के बुरे प्रभाव नहीं पड़ने चाहिए। ग्रिम बंधुओं के जर्मन समीक्षकों ने कहा है कि हिंसा को कहानियों से दूर रखने का कारण उस समय यानी अठारहवीं शताब्दी में उभरे नवजागरण के प्रगतिशील विचारों का प्रभाव भी हो सकता है। फ्रांस में उन्हीं दिनों इसी प्रभाव के फलस्वरूप हँसी-ख़ुशीवाली, मनोरंजक और दिल बहलानेवाली परीकथाएँ बहुत लोकप्रिय हो रही थीं। ग्रिम बन्धुओं को कहानियाँ सुनानेवाले लोग, जो मुख्यतः मध्यमवर्गीय समाज से थे, फ्रांस की परीकथाओं की लोकप्रियता और उनके मनोरंजक गुणों से अवश्य ही प्रभावित रहे होंगे। यों भी हिंसा, आतंक और अराजकता के प्रति मध्यमवर्ग के लोगों में कोई आकर्षण नहीं होता। इसलिए ग्रिम बन्धुओं की कथाएँ इन बातों से बची रह गईं।

जीवन और समाज के शाश्वत मूल्यों को प्रतिपादित करनेवाली कहानियाँ हर देश और समाज में मिलती हैं। जर्मनी की ये लोककथाएँ भी इसका अपवाद नहीं हो सकती थीं। दूसरों के साथ भलाई और अच्छा व्यवहार करने का फल अच्छा ही मिलता है और संसार में ऐसे आदमी की क़द्र होती है। 'सोने का हंस', 'ग़रीब और अमीर आदमी', 'अच्छा सौदा', 'गौरैया और उसके चार बच्चे', 'नन्हे देवदूत' जैसी कहानियाँ इसी शाश्वत दृष्टि की स्थापना करती हैं। इसी तरह लालची और दुष्ट प्रकृतिवाले लोगों को उनकी करनी की सज़ा मिलती है। 'लोमड़ और बिल्ली', 'मछुआरा और उसकी पत्नी', 'चमकीला सूरज लाता है दिन', 'बौने के उपहार', 'दो यात्री' यही संदेश देनेवाली कहानियाँ हैं।

ग्रिम बंधुओं की कहानियों में यह विश्वास भी जगाया गया है कि यदि छोटा और कमज़ोर जीव चाहे तो वह अपनी पूरी शक्ति बटोर चतुराई और समझ के सहारे बड़े-से-बड़े शत्रु को भी पराजित कर सकता है। 'कुत्ता और गौरैया' में छोटी-सी चिड़िया की बात की अनसुनी करनेवाले गाड़ीवान से गौरैया जिस तरह बदला लेती है, वह कहानी यही सन्देश देती है कि छोटा और कमज़ोर प्राणी भी अपने से शक्तिशाली शत्रु से बदला ले सकता है। 'अँगूठाराम', 'छोटा बहादुर दर्ज़ी', 'भेड़िया और सात बकरियाँ' कहानियाँ भी ऐसे ही उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

सभी देशों की परीकथाओं में, राजा-रानी, राजकुमारी-राजकुमार की सुन्दरता का वर्णन, वहाँ की जलवायु, मानव-प्रजाति, सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप मिलता है। महिला-पात्रों की सुन्दरता के वर्णन में तो ये लेखक कोई कमी नहीं उठा रखते थे। यूरोप की परीकथाओं की तरह ग्रिम बंधुओं की जर्मन परीकथाओं की रानियाँ और राजकुमारियाँ इतनी सुन्दर हैं कि उन्हें पाने के लिए राजकुमार और दूसरे लोग प्राणों की बाज़ी तक लगाते हैं। ग्रिम बंधुओं की रानियों और राजकुमारियों का रंग

सफ़ेद गोरा, आँखें नीली और बाल भूरे होते हैं (केवल स्नोह्वाइट, 'हिमानी' को छोड़कर, जिसके बाल आबनूस की तरह काले थे। उसकी माँ ने जिस बच्चे की कल्पना की थी, उसमें उसके बाल आबनूस जैसे काले थे। अन्य देशों की परीकथाओं की तरह इन कहानियों में भी राजा की सुन्दर रानी या राजकुमारी की सुन्दरता से चिढ़नेवाली सौतेली माँ, दूसरी रानियाँ या स्वयं उनकी ईर्ष्यालु बहनें या राजा की ईर्ष्यालु माँ जैसे पात्र मिलते हैं। दूसरे देशों की परीकथाओं की तरह इन्हें भी अन्त में कारा-दण्ड या मृत्यु-दण्ड मिलता है।

यूरोप की परीकथाओं में 'तीन' की संख्या का बहुत महत्त्व माना गया है। हैंस एण्डरसन और ग्रिम बंधुओं की परीकथाओं में भी 'तीन' का महत्त्व हम समान रूप से पाते हैं। इसका कारण यह है कि पश्चिमी सभ्यता पर 'त्रयी' (दि ट्रिनिटी)के सिद्धांत का बड़ा गहरा प्रभाव रहा है। इसे ईसाई धर्म में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हठधर्मी सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अनुसार 'एक' की संख्या परमात्मा की इकाई और उसकी अविभाज्यता की प्रतीक है। 'दो' की संख्या 'मनुष्य' यानी ईश्वर के पुत्र का प्रतीक है। लेकिन जब ये दोनों पवित्र आत्मा के साथ मिलकर 'तीन' की संख्या बनाती हैं तो वह गरिमापूर्ण संयोजन का प्रतीक बन जाती है। इसलिए तीन की संख्या को ईसाई धर्म में बहुत पवित्र माना गया है। ग्रिम बन्धुओं की कई कहानियों के तो पात्र ही तीन हैं, जैसे—'तीन औरतें', 'तीन पंख', 'तीन भाषाएँ', 'तीन भाई', 'मेंढकों के तीन क़िस्से'। 'कुशल चोर' कहानी में राजा उस चोर को तीन मुश्किल काम करने को कहता है। उस राजा के घोड़े की रखवाली तीन पहरेदार करते हैं। 'विश्वासपात्र जॉन' में जब राजा राजकुमारी का अपहरण कर अपना जहाज़ समुद्र में आगे ले जाता है तो उसके ऊपर तीन कौवे आकर बैठते हैं। उनकी बातचीत में राजा और राजकुमारी के साथ भविष्य में क्या घटनेवाला है, इसकी चर्चा होती है। 'विश्वासपात्र जॉन' इसे सुनता है और बचाव के उपाय करता है। 'ढोलवादक' में जादूगरनी बुढ़िया उसे तीन कठिन काम करने को कहती है। 'राजकुमार और राजकुमारी' तथा 'लोहे का चूल्हा'—इन दोनों कहानियों में—दोनों राजकुमारियों के पास तीन-तीन अख़रोट थे, जो मुसीबत को दूर भगाने में उनके सहायक बनते हैं। 'बिल्ले और चुहिया की दोस्ती' कहानी में 'तीन' की संख्या को शुभ मानने के लिए कही जानेवाली कहावत तक का प्रयोग किया गया है—"हर अच्छी चीज़ तीन की संख्या में मिलती है।" कहानी में बिल्ला चुहिया से इस कहावत के बहाने से कहता है—"देखो न ! अब मुझे तीसरी बार धर्मपिता बनने को कहा गया है।" और इस तरह बिल्ला चुहिया को बेवक़ूफ़ बनाकर मटकी का सारा घी खा जाता है।

ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों में अपने समय के राजाओं, सामन्तों और अमीर लोगों की वैभवपूर्ण विलासिता, ग़रीबों की स्थिति, यहूदियों पर होनेवाले अत्याचार, बड़ों

का आज्ञापालन, लड़कियों में सहनशीलता तथा कष्ट झेलने की क्षमता जगाना आदि अनेक सामाजिक आदर्श और तत्कालीन समाज के चित्र भी देखने को मिलते हैं। 'बूढ़ा सुलतान' एवं 'लोमड़ी और घोड़ा' में बूढ़ों की तिरस्कार भरी सामाजिक ज़िन्दगी से परिचय कराया गया है और उनके प्रति अच्छे व्यवहार की अपेक्षा की गयी है। 'चमकीला सूरज लाता है दिन' कहानी में यहूदी के प्रति किए गए अत्याचार का परिणाम बताया गया है।

समाज में लड़कियों की स्थिति के चित्र 'बारह भाई', 'सात कौवे', 'छह हंस' आदि कहानियों में देखे जा सकते हैं—जिनमें लड़कियों को मुँह बंद कर कष्ट भोगने को कहा गया है। इसी तरह अपनी सौतेली माँ और सौतेली बहनों के व्यंग्य-बाणों को चुपचाप सहनेवाली 'सिंडरेला', 'स्नोह्वाइट' का छिपकर रहने के लिए मजबूर होना और 'ग्रेथल' द्वारा पानी लाना, ताकि उसमें जादूगरनी हैंसल को उबाल सके—इन परीकथाओं में युगों से चली आ रही नारी-उपेक्षा की मनोवृत्ति साफ़ दिखायी देती है।

परीकथाओं में अभिव्यक्त ऐसे मूल्य, जो अपना सन्दर्भ और महत्त्व—दोनों ही संदिग्ध बना चुके हैं, उनके बारे में 1979 में अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के दौरान विश्वव्यापी चिन्तन हुआ। अपने मूल रूप में, परीकथाएँ हरेक भाषा के 'कालजयी साहित्य' की तरह तो स्वीकार हो सकती हैं, पर उनसे जो सन्देश या विचार ग्रहण करना अपेक्षित होता है, उसका प्रभाव और उसकी सार्थकता पर अब प्रश्न-चिह्न भी लग चुका है। सन् 1979 में 'परीकथाओं का दंश' शीर्षक अपने लेख में एक्वेडोर के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक और समीक्षक जार्ज एनरिक एडोम ने लिखा था—"हमारा उद्देश्य न तो परीकथाओं के साहित्यिक मूल्य को कम करना है और न इससे इनकार करना है, क्योंकि इनकी जड़ें सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई हैं। किन्तु यह तर्क कि 'परीकथाएँ हानिकारक नहीं हो सकतीं, क्योंकि वे विश्व की सभी परम्पराओं का अंग हैं'—दोषपूर्ण है। वे समस्त परम्पराओं से जुड़ी हुई नहीं होती और न सभी परम्पराएँ अनिवार्य रूप से बच्चों के लिए अच्छी होती हैं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह सभी कुछ अच्छा है, जो परम्परागत है। क्या आज हम मनुष्यों और विश्व से सम्बन्धित ढेर सारी भ्रान्त धारणाओं को सुधारने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, ताकि वे हमारे बच्चों तक न पहुँच सकें और वे भी वही ग़लती करके अपने बच्चों तक न पहुँचा दें। अक्षर ज्ञान के बाद जब बालकों की पहुँच पुस्तकों तक हो जाती है तो वे पहले 'सिन्दबाद' और 'अलादीन का चिराग़' जैसी कहानियाँ पढ़ने के बाद गुलीवर और राबिन्सन क्रूसो के साहसिक कामों और कारनामों के स्वप्न देखने लगते हैं। जो बच्चे पढ़ नहीं सकते, वे कॉमिक्स की शरण लेते हैं। आज टेलीविज़न ने 'सुपरमैन' और 'बैटमैन' (वे जिन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन पर टिप्पणी करने के लिए पर्याप्त कठोर शब्दों को ढूँढ़ना बहुत कठिन है) जैसे नायकों को सुदूर गाँवों तक पहुँचा दिया है। यत्र-तत्र कुछ दादियों और माताओं

के मुँह से अब भी सुना जा सकता है कि 'एक समय की बात है...।' वैसे ऐसा लगता है कि युवा और पढ़ी-लिखी माताओं ने कहानी सुनाने की आदत को पूर्ण रूप से त्याग दिया है। वे ऐसा महसूस करती हैं कि इन कहानियों के प्रतीक वास्तविकता से मेल नहीं खाते अथवा वे उनके शैक्षिक और चिकित्सापरक महत्त्व को सन्देह की दृष्टि से देखती हैं।'' (यूनेस्को दूत, मार्च 1979)

जार्ज एनरिक एडोम की यह टिप्पणी, मीडिया द्वारा लायी जा रही सूचना-क्रान्ति, आधुनिक-जीवन शैली और नए सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के बढ़ते प्रभावों बनाम पुरानी परीकथाओं के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण है। वह परीकथाओं के द्वारा बाल-मानस में बननेवाले भावी कल्पनालोक का पर्दाफ़ाश करते हुए यह कहने में संकोच नहीं करते कि ''बर्तन धोनेवाली एक लड़की अपना काम करते हुए कुछ गाती है, जिसे कोने में बैठा हुआ फ़िल्म निर्देशक सुनता है और इस प्रकार वह उसे 'खोजकर' फ़िल्म की तारिका बना देता है। दुर्भाग्य से बहुत कम लड़कियाँ 'मैरिलिन मनरो' बन पाती हैं। ऐसी करोड़ों दियासलाई बेचनेवाली युवतियाँ, बत्तख़ों की देखरेख करनेवाली लड़कियाँ और सिंडरेलाएँ, प्रौढ़ सिंडरेलाएँ बनकर रह जाती हैं। उनके पास कोई परी माँ जादुई छड़ी लेकर नहीं आती और उन्हें मुसीबतों से निकालकर उनके फटे कपड़ों को रेशमी पोशाक में और टूटी चप्पल को क़ीमती-चमचमाती सैण्डिल के रूप में नहीं बदल देती। उन्हें बचाने के लिए कोई राजकुमार या उसका कोई आधुनिक समकक्ष—राष्ट्रपति का बेटा, भारी उद्योगपति का पुत्र या बैंक के मालिक का लड़का भी नहीं आता। अधिकांश स्त्रियों के लिए 'सिंडरेला' का स्वप्न 'स्नोह्वाइट' की कठोर वास्तविकता बन जाता है। वह सिर छिपाने के लिए जगह चाहती है तो वह उसे मिल सकती है, पर तभी जब कि वह 'बौनों' के लिए 'बिस्तर बिछाने, खाना पकाने, कपड़े धोने, सिलाई और बुनाई करने तथा प्रत्येक वस्तु को साफ़-सुथरी रखने के लिए तैयार रहती है।'' (यूनेस्को दूत, मार्च 1979)

परीकथाओं के प्रति विश्व के आधुनिक संस्कृति और सभ्यतावाले समाजों में जो चिन्ता व्यक्त की जा रही है, वही चिन्ता बहुत पहले हिन्दी बालसाहित्य जगत में सन् 1962 में व्यक्त की गई थी और तब कई वर्षों तक यह बहस हिन्दी के अलावा गुजराती, मराठी और अन्य कई भाषाओं में भी चली थी। हिन्दी में आनन्दप्रकाश जैन, हरिकृष्ण देवसरे और विष्णु प्रभाकर के विचारों से बाल साहित्यकारों को चिंतन की एक नयी दिशा मिली थी।

आनंदप्रकाश जैन ने 'शृंगार' मासिक के जुलाई 1962 के अंक में लिखा था, ''जादूगरों और राक्षसों की कहानियाँ अब बच्चों के साहित्य में स्थान पाने योग्य नहीं रह गयी हैं। कहीं जादू नहीं चलता। आज का राक्षस बहुत ख़ूबसूरत होता है। जनजीवन को नष्ट करनेवाले उसके माध्यम भी सीधे नहीं रह गए हैं—वे भी बिजली के तारों

की तरह ज़मींदोज़ रहकर काम करते हैं। आज के विषम जीवन की प्रणालियों से बच्चों को भी किसी-न-किसी प्रकार हमें परिचित कराना होगा। विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराने के लिए उनकी स्कूली पाठ्य पुस्तकें ही पर्याप्त नहीं होतीं, बल्कि विदेशी बच्चों की तरह विज्ञान कथा और अन्य प्रकार के साहित्य से भी उनके मनोरंजन का एक साधन प्रस्तुत करना होगा।"

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने इसी सम्बन्ध में धर्मयुग (नवम्बर 1962) में प्रकाशित अपने लेख में लिखा—"अभी तक बाल साहित्य को पुरानी कहानियों और लोककथाओं से छुटकारा नहीं मिल पाया है, किन्तु आज तो हमें आवश्यकता है ऐसे साहित्य की, जो बच्चों को बदलते हुए युग की बातों से परिचित कराए। उन्हें राकेट, चाँद, नागरिकता तथा सच्चरित्रता की जानकारी दे सके।" आगे 'दिनमान' (14 नवम्बर 1976) में डॉ. देवसरे ने लिखा—"यथार्थ के धरातल से कटे हुए बालसाहित्य को पढ़कर बच्चे अपने को वास्तविक जीवन से कटा हुआ पाते हैं। वे अपने परिवेश और वातावरण को समझकर उससे जुड़ने का प्रयास करते हैं। अन्धविश्वास और परम्परागत विचारधारा के प्रति उनकी कोई आस्था नहीं रही। राजा-रानी, भूत-प्रेत आदि की कल्पनाओं का उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रहा। अब वे इतिहास के पात्र बन गए हैं।"

हिन्दी बाल साहित्य के साथ-साथ मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में भी चली 'परीकथाओं की सार्थकता' की उक्त बहस पन्द्रह-सोलह वर्ष तक एक आन्दोलन बनकर चली थी। इसको लेकर उठाए गए कई प्रश्नों के उत्तर देते हुए सन् 1978 में 'रविवार' (कलकत्ता: 16 अप्रैल 1978) में डॉ. देवसरे का यह बयान प्रासंगिक होगा : "परीकथाओं की सार्थकता पर प्रश्न-चिह्न लगाने का यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि बच्चे प्राचीन भारतीय संस्कृति, इतिहास और जीवन से उदासीन हो जाएँ या उनकी जानकारी ही न प्राप्त करें। किन्तु यदि यह जानकारी इतनी प्रचुर मात्रा में दी जाने लगे कि वे आधुनिक बोध से कट जाएँ तो समस्या गम्भीर हो जाती है और आज यही हो रहा है। कुछ लोग यह दलील देते हैं कि राजा-रानी, बच्चों की कहानियों के ऐसे पात्र हैं, जिन्हें उनसे अलग करना बाल कथाओं को नीरस बनाना होगा। किन्तु जब राजा-रानी का अस्तित्व ही नहीं रहा तो उनकी कहानियाँ सुनाकर हम बच्चों को आधुनिक जीवन बोध कैसे दे पाएँगे। हम यह क्यों नहीं समझ पाते कि राजा-रानी की जो कहानियाँ हम बच्चों को सुनाते हैं, वे उस चिन्तन-धरातल पर निर्मित हुई थीं, जिसे सामन्तवाद के पोषकों ने तैयार किया था।"

परीकथाओं की सार्थकता के विषय में चली इस बहस के परिणामस्वरूप हिन्दी में मौलिक और आधुनिक बालसाहित्य लेखन की ओर काफ़ी ध्यान दिया गया। विश्व बालसाहित्य में भी पिछले दो दशकों में बहुत परिवर्तन आया है। आज के बाल साहित्य और बच्चों के प्रति विश्व के लेखकों के सोच ताजिमा शिन्ज़ी (जापानी लेखक) के

इस कथन से स्पष्ट है : "हर तरह के प्राणियों के अस्तित्व की वास्तविकता, उन्हें अनगिन इच्छाओं और मायूसियों के सामने लाकर खड़ा कर देती है और अगर हर व्यक्ति को ज़िन्दगी और जीने की सच्ची समझ हासिल करनी है तो बचपन से ही इस बात का अहसास बहुत ज़रूरी हो गया है। मुझे फ़िक्र है उन बच्चों की, जिन्हें नयी शताब्दी का स्वागत करना हैं। उन्हें इस सोच को विकसित करने से वंचित नहीं रखा जाना चाहिए।"

फिर भी बड़ों के साहित्य की तरह, विश्व बालसाहित्य की 'ईसप फ़ेबिल्स', 'रॉबिन्सन क्रूसो', 'गुलीवर की यात्राएँ', डेविड कॉपरफ़ील्ड', 'टॉम सायर', 'एलिस इन द वण्डरलैण्ड'', 'हैंस एण्डरसन की कहानियाँ'—जैसी कालजयी कृतियों की तरह 'ग्रिम बन्धुओं की कहानियाँ' भी बच्चों के बीच लोकप्रिय रहेंगी क्योंकि प्रत्येक बच्चा किसी-न-किसी समय कहानियों के राजकुमार या राजकुमारी होने का स्वप्न अवश्य देखता है। मनोविश्लेषकों ने पाया है कि छोटी उम्र के बच्चे एक ही कहानी को बिना किसी परिवर्तन के बार-बार सुनने का हठ करते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुनरावृत्ति बालकों के मन में इस बात की निश्चिन्तता उत्पन करती है कि कहानी का अन्त सुखद ही होगा। इसलिए 'ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ' भी अपनी पठनीयता बनाए रखेंगी, क्योंकि—'अंग्रेज़ी बालसाहित्य' की मर्मज्ञ 'मे हिल आर्बुथनॉट' के शब्दों में—"ग्रिम की कहानियों ने जीवन, मानव-सम्बन्धों और नैतिक मूल्यों के प्रति पाठक के दृष्टिकोण को बहुरंगी और विविधतापूर्ण बनाया है। ये कहानियाँ फ़ैंटेसी भी हैं, वास्तविकता भी हैं और इससे भी ऊपर, ये असीम मनोरंजन से भरपूर हैं।"

—हरिकृष्ण देवसरे

1

सिंडरेला

एक बार एक अमीर आदमी की पत्नी बहुत बीमार पड़ गयी। उसे लगा कि वह अब बचेगी नहीं। उसने अपनी इकलौती बेटी को अपने पास बुलाया और बोली, "प्यारी बेटी, कर्तव्यनिष्ठ और अच्छी बनो, तभी ईश्वर तुम्हारी हमेशा रक्षा करेगा। मैं स्वर्ग से तुम्हें देखूँगी और तुम्हें याद करूँगी।" तभी उसकी आँखें बन्द हो गयीं और उसकी मृत्यु हो गयी। रोज़ वह लड़की अपनी माँ की क़ब्र पर जाती और रोती। उसने कर्तव्यनिष्ठ और अच्छी बनी रहने की कोशिश की। अगले बसंत में जब धूप चमककर खिलने लगी, तब उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली।

उसकी नयी माँ अपने साथ अपनी दो बेटियों को भी लायी, जो देखने में सुन्दर और गोरी, लेकिन दिल की दुष्ट थीं। बेचारी सौतेली बच्ची के जीवन में दुर्भाग्य के क्षण आ गये। दोनों लड़कियों ने कहा, "क्या यह मूर्ख लड़की हमारे साथ बैठक में बैठेगी ? जो रोटी खाता है, उसे कमाना भी पड़ता है। यहाँ नौकरानी के साथ इसे काम तो करना ही होगा।" उन्होंने उसके अच्छे कपड़े उतरवा लिये और उसे एक पुराना, घिसा मटमैला-सा चोगा दे दिया। पैरों में पहनने के लिए उसे लकड़ी के जूते मिले। वे बोलीं, "देखो एक समय की गर्वीली राजकुमारी किस तरह धक्के खा रही है।" और उसे रसोई में धकेल दिया।

उसे सुबह से रात तक काम करना पड़ता। वह सुबह-सुबह उठकर पानी भरने जाती, आग जलाती, खाना बनाती और फिर बर्तन माँजती। उसकी सौतेली बहनें उसका बेहद अपमान करतीं। उसे धकेल कर गिरा देतीं और मटर और सब्ज़ियाँ राख में फेंक देतीं। फिर उसे उनको बीनकर निकालना पड़ता। रात में जब वह थक जाती तो उसके पास सोने के लिए कोई बिस्तर नहीं होता और उसे भट्ठी के पास राख़ में बैठना पड़ता। वह इस सबके कारण बहुत गन्दी और राख भरी रहने लगी थी। इसीलिए वे उसे 'सिंडरेला' (सिंडरेला का अर्थ है राख से जन्मी) कहकर पुकारतीं।

एक दिन पिता मेले में जा रहे थे। उन्होंने दोनों बेटियों से पूछा कि उन्हें मेले से क्या चाहिए। एक बोली, 'सुन्दर कपड़े', दूसरी बोली, 'मोती और रत्न।' पिता ने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये सिंडरेला ?" वह बोली, "घर लौटते समय आपके हैट से जो शाख़ टकराये वही आप मेरे लिए तोड़कर ले आइएगा।" पिता अपनी दोनों सौतेली लड़कियों के लिए मोती और रत्न और सिंडरेला के लिए पिंघल-वृक्ष की एक शाख़ लाया था। जैसे ही वह घर आया उसने अपनी सौतेली बेटियों को उनकी माँगी चीज़ें दे दीं और सिंडरेला को पिंघल-वृक्ष शाख़ दी। उसने उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और अपनी माँ की क़ब्र के पास जाकर उसने वह शाख़ दी। वह वहाँ बहुत देर तक रोती रही। उसके आँसू बह-बहकर उस शाख़ को सींचते रहे। वह शाख़ बढ़कर एक सुन्दर पेड़ बन गयी। सिंडरेला उस पेड़ के पास दिन में तीन बार जाकर प्रार्थना करती और रोती। हर बार एक छोटी सफ़ेद चिड़िया पेड़ के ऊपर उड़ती और यदि वह कुछ माँगती तो वह चिड़िया उसकी माँग पूरी कर देती।

कुछ समय बाद वहाँ के राजा ने एक उत्सव का आयोजन किया। यह उत्सव तीन दिन चलनेवाला था और इसमें देश की सभी सुन्दर लड़कियों को बुलाया गया था। इनमें से ही उसका बेटा अपने लिए पत्नी पसन्द करनेवाला था। जब सौतेली बहनों ने सुना कि उन्हें भी उत्सव में जाना है तो वे बेहद ख़ुश हुईं और सिंडरेला को बुलाकर बोलीं, "हमारे बालों में कंघी करो, जूतों पर पालिश करो और फीते बाँधो, क्योंकि हमें राजा के महल में होनेवाले उत्सव में जाना है।" सिंडरेला ने रोते हुए उनकी आज्ञा का पालन किया, क्योंकि उसकी भी महल में नृत्य करने जाने की इच्छा थी। उसने अपनी सौतेली माँ से महल में जाने की आज्ञा माँगी।

वह बोली, "सिंडरेला ! तुम तो धूल और राख में डूबी हुई हो—तुम कैसे उत्सव में जाओगी ? तुम्हारे पास तो कपड़े और जूते भी नहीं हैं, तुम कैसे नाचोगी ?" लेकिन जब उसने बार-बार ज़िद की तो माँ ने आख़िरकार कहा, "मैंने राख में एक बाल्टी भर मटर के दाने फेंक दिये हैं। यदि तुम दो घण्टों में उनको बीन लोगी तो तुम महल में जा सकती हो।"

लड़की बाहर चली गयी और पिछले दरवाज़े से बग़ीचे में निकल गयी। वहाँ जाकर उसने पुकारा, "पालतू कबूतरो, बत्तख़ो और सभी आकाश के पक्षियो, यहाँ आकर मटर के दाने बीनकर वापस बाल्टी में डालने में मेरी मदद करो। अच्छे दाने बीनकर बाल्टी में डालना और ख़राब दाने खा लेना।" रसोईघर की खिड़की पर

दो सफ़ेद कबूतर आकर बैठे, फिर बत्तखें आयीं और धीरे-धीरे आकाश के सारे पक्षी वहाँ राख पर जमा हो गये। वे अच्छे दाने चुनकर बाल्टी में डालने लगे। एक घण्टे में ही सारे दाने बिन गये और पक्षी वापस उड़ गये। लड़की वह बाल्टी उठाकर अपनी सौतेली माँ के पास ले गयी और यह सोचकर ख़ुश होने लगी कि अब वह उत्सव में जा सकती है। लेकिन वह बोली, "नहीं सिंडरेला, तुम्हारे पास तो कपड़े भी नहीं हैं, तुम नाच भी नहीं सकतीं। सब तुम पर हँसेंगे।" यह सुनकर वह रोने लगी तो सौतेली माँ बोली, "यदि तुम वे दो बाल्टी मटर के अच्छे दाने, जो मैंने राख़ में फेंके हैं, एक घण्टे में वापस बीन लोगी तो मैं तुम्हें जाने की अनुमति दे दूँगी, और उसने अपने मन में सोचा, "यह कभी ये काम नहीं कर सकतीं।" जैसे ही दोनों बाल्टियाँ ख़ाली हुईं, सिंडरेला तुरन्त पिछले दरवाज़े से बग़ीचे में गयी और पहले की ही तरह आवाज़ लगायी, "पालतू कबूतरो, बत्तख़ो और आकाश के सभी पक्षियो, यहाँ आकर सारे मटर के दाने बीनकर वापस बाल्टी में डालने में मेरी मदद करो ! अच्छे दाने बीनकर बाल्टी में डालना और ख़राब दाने खा लेना।"

रसोईघर की खिड़की पर दो सफ़ेद कबूतर आकर बैठे, फिर बत्तखें आयीं और धीरे-धीरे आकाश के सारे पक्षी वहाँ राख पर जमा हो गये और अच्छे दाने चुनकर बाल्टी में डालने लगे। सिर्फ़ आधे घण्टे में ही सारे दिन बिन गये और पक्षी वापस उड़ गये। लड़की दोनों बाल्टियाँ लेकर अपनी सौतेली माँ के पास गयी और यह सोचकर ख़ुश होने लगी कि अब वह उत्सव में जा सकती है, लेकिन वह बोली, "इससे कुछ नहीं होगा, तुम हमारे साथ नहीं चल सकतीं, क्योंकि तुम्हारे पास न तो अच्छे कपड़े हैं और न ही तुम नाच सकती हो। तुम्हारे कारण हमें शर्मिन्दा होना पड़ेगा।" यह कहकर उसने पीठ फेर ली और अपनी दोनों घमण्डी लड़कियों को लेकर जल्दी से वहाँ से चली गयीं।

घर पर कोई नहीं था। सिंडरेला पेड़ के नीचे अपनी माँ की क़ब्र पर गयी और बोली—

"झूमो-हिलो प्यारे पेड़,
जिससे बरसे सोना-चाँदी।"

इससे ऊपर के पक्षी ने एक सोने-चाँदी की पोशाक़ गिरायी। साथ में रेशम की चप्पलें भी थीं, जिन पर चाँदी की कढ़ाई की गयी थी। सिंडरेला ने जल्दी से उनको पहना और वह नृत्य के लिए चली गयी। उसकी माँ और सौतेली बहनों को इस बात का पता भी नहीं चला। वे उसे कोई विदेशी राजकुमारी ही समझती

रहीं, क्योंकि वह अपनी सोने की पोशाक़ में बहुत ही सुन्दर लग रही थी। सिंडरेला के बारे में तो वे सोच रही थीं कि वह तो राख से मटर के दाने बीन रही होगी। राजकुमार उसके पास आया और उसका हाथ पकड़कर उसे नृत्य के लिए ले गया। वह बोला, "यह मेरी साथी है।" वे शाम तक नाचते रहे और जब उसने घर लौटने की अनुमति चाही तो राजकुमार बोला, "मैं तुम्हें सुरक्षित घर छोड़कर आऊँगा।" दरअसल राजकुमार उसका पता जानना चाहता था। वह उससे दूर भागकर एक कबूतर की खोह में छिप गयी।

राजकुमार उसकी राह देखता रहा और जब लड़की का पिता वहाँ आया तो उसने कहा कि एक अजनबी लड़की यहाँ दौड़कर कबूतर की खोह में घुस गयी है। सौतेली माँ ने सोचा, "क्या वह सिंडरेला हो सकती है ?" और वे अपने साथ कुल्हाड़ी लेकर आये जिससे वह खोह को काटकर खोल सकें, लेकिन भीतर कोई नहीं था। जब वे घर वापस आये तो उन्होंने सिंडरेला को अपने गन्दे कपड़ों में राख के बीच लेटे पाया। चिमनी में एक दिया जल रहा था। वह जल्दी से कबूतर की खोह के दूसरी तरफ कूदकर क़ब्र के पास के पेड़ के पास गयी और वहाँ जाकर अपनी अच्छी पोशाक उतारकर उसे क़ब्र पर रख दिया था। पक्षी उस पोशाक को वापस ले गया था और उसने अपनी पुरानी, मटमैली पोशाक वापस पहन ली थी और रसोईघर में राख के बीच आकर बैठ गयी थी।

अगले दिन जब उत्सव फिर शुरू हुआ और उसकी माँ और सौतेली बहनें फिर वहाँ चली गयीं तो सिंडरेला उस वृक्ष के पास गयी और पहले की तरह गाने लगी–

"झूमो-हिलो प्यारे पेड़,
जिससे बरसे सोना-चाँदी।"

पक्षी ने पहले से भी सुन्दर पोशाक नीचे फेंकी और जब लड़की उसे पहनकर नृत्य के लिए पहुँची तो वहाँ मौजूद हर व्यक्ति उसकी सुन्दरता से चकाचौंध रह गया था। राजकुमार ने, जो उसका इन्तज़ार कर रहा था, उसका हाथ पकड़ा और नाचने के लिए पहले की तरह ही बोला, "यह मेरी साथी है।" जैसे ही शाम हुई वह वापस जाने लगी तो राजकुमार ने उसका पीछा किया, जिससे वह उसका घर देख सके। लेकिन वह उछलकर दूर चली गयी और अपने घर के पीछे बने बग़ीचे में घुस गयी। वहाँ एक बहुत ऊँचा पेड़ था, जिस पर बढ़िया सेब लगे थे और उसकी शाख़ें ऐसे सरसरा रही थीं, जैसे कि उनके बीच में गिलहरी दौड़ रही हो। लेकिन राजकुमार नहीं समझ सका कि वह आवाज़ कहाँ से आ रही थी। वह वहीं इन्तज़ार करता रहा, जब तक कि लड़की के पिता वहाँ न आ गये। राजकुमार

उनसे बोला, "वह अजनबी लड़की भाग गयी। मुझे लगता है वह इस पेड़ पर चढ़ गयी है।" उसके पिता सोचने लगे कि कहीं वह सिंडरेला तो नहीं थी और उन्होंने कुल्हाड़ी लेकर पेड़ को काट डाला, लेकिन उस पर कोई नहीं था। वे रसोईघर में गये, जहाँ सिंडरेला राख के बीच पहले की ही तरह लेटी थी। वास्तव में वह पेड़ के दूसरी तरफ़ कूद गयी थी और वृक्ष के पक्षी के पास अपने क़ीमती कपड़े छोड़कर उसने फिर पुरानी पोशाक पहन ली थी।

तीसरे दिन फिर जैसे ही उसकी सौतेली माँ और बहनें महल के लिए निकलीं तो सिंडरेला फिर अपनी माँ की क़ब्र के पास जाकर कहने लगी–

"झूमो-हिलो प्यारे पेड़,
जिससे बरसे सोना-चाँदी।"

पक्षी ने एक ऐसी पोशाक़ नीचे गिरायी, जो उसकी अभी तक की सभी पोशाकों से सुन्दर और चमचमाती थी और जूते सोने के थे। जब वह नृत्य के लिए महल में पहुँची तो लोग उसे देखकर मन्त्रमुग्ध रह गये और उनके मुँह से बोल ही नहीं फूटे। राजकुमार पहले की तरह केवल उसी के साथ नाचा और सबसे यही कहा, "यह मेरी साथी है।" जैसे ही शाम हुई तो वह वापस घर जाने लगी। राजकुमार ने उसका पीछा किया तो वह इतनी तेज़ी से दौड़ी कि राजकुमार उसे पकड़ नहीं सका। लेकिन उसे एक तरीक़ा सूझा और उसने रास्ते पर चिपचिपा डामर फैला दिया, जिससे लड़की का बायें पैर का जूता वहीं छूट गया। राजकुमार ने उसे उठा लिया और उसने देखा कि वह बहुत सुन्दर और छोटा-सा था और सोने का बना था। अगली सुबह वह उस जूते को लेकर लड़की के पिता के पास गया और बोला, "मैं सिर्फ़ उसी लड़की से शादी करूँगा, जिसके पैर में यह जूता सही बैठता हो।" दोनों बहनें यह सुनकर बेहद .ख़ुश हुईं क्योंकि उनके पैर सुन्दर थे। पहले बड़ी बहन अपने कमरे में जूता लेकर पहनने गयी। उसकी माँ पास में ही खड़ी थी। लेकिन उसे जूता नहीं आया। माँ बोली, "अपना पैर काट दो, जब तुम रानी बन जाओगी तो तुम्हें पैरों से थोड़े ही चलना होगा।" लड़की ने अपने पैर का पंजा काट डाला और जूते में अपना पैर ठूँस दिया। वह अपना दर्द छिपाती रही और नीचे राजकुमार के पास गयी। राजकुमार ने उसे अपनी दुल्हन के रूप में घोड़े पर बिठा लिया और चल पड़ा। जैसे ही वे क़ब्र के पास से गुजरे तो वहाँ उन्हें दो नन्हीं बत्तख़ें वृक्ष पर बैठी दिखायी दीं। वे गा रही थीं–



पीछे देखो, पीछे देखो,
जूते पर है ख़ून लगा,
जूता तो है ठीक नहीं
ये लड़की तुम्हारी बीवी नहीं।"

राजकुमार यह सुनकर पीछे मुड़ा और देखा कि लड़की के पैरों से खून बह रहा है। उसने तुरन्त घोड़ा वापस मोड़ा और इस नक़ली पत्नी को वापस छोड़कर कह दिया कि वह उसकी पत्नी बनने के लायक़ नहीं है। अब दूसरी बहन को जूता पहनना था, लेकिन उसकी एड़ी बहुत बड़ी थी। वह अपने कमरे में गयी और जूता पहनने की कोशिश करने लगी। उसकी माँ ने एक चाकू लेकर कहा, "अपनी एड़ी थोड़ी-सी काटकर फेंक दो, क्योंकि जब तुम रानी बन जाओगी तो तुम्हें अपने पैरों पर थोड़े ही चलना पड़ेगा।" उसने एड़ी काटकर अपना पैर जूते में ठूँस लिया और अपना दर्द छिपाते हुए राजकुमार के पास आयी। उसने उसे अपनी पत्नी की तरह घोड़े पर बिठाया और चल पड़ा। जब वे क़ब्र के पास के वृक्ष के नज़दीक से गुज़रे तो उन्हें नन्हीं बत्तख़ें बैठी गाती सुनायी दीं—

"पीछे देखो, पीछे देखो,
जूते पर है ख़ून लगा,
जूता तो है ठीक नहीं,
ये लड़की तुम्हारी बीवी नहीं।"

उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसे उसके जूते से ख़ून टपकता हुआ दिखाई दिया और उसकी जुराब भी लाल हो गयी थी। उसने अपना घोड़ा वापस मोड़ा और अपनी नक़ली पत्नी को वापस उसके घर पहुँचा दिया और कहा, "इनमें से कोई भी ठीक नहीं है, क्या तुम्हारी और कोई लड़की भी है ?" पिता ने कहा, "केवल मेरी पहली पत्नी की बेटी सिंडरेला है, जो किसी भी हाल में आपकी पत्नी नहीं बन सकती।" राजकुमार ने उसे बुलवाया, लेकिन सौतेली माँ बोली, "अरे नहीं ! वह तो बहुत गन्दी है, मैं तो उसे आपके सामने भी नहीं आने दूँगी।" लेकिन राजकुमार ने आदेश देकर उसे बुला ही लिया। वह अपने हाथ और मुँह धोकर सामने आयी और राजकुमार का अभिवादन किया। राजकुमार ने उसे सोने का जूता दिया, सिंडरेला एक कुर्सी पर बैठी और अपने भारी लकड़ी के जूते उतारकर जूता पहन लिया। वह उसे एकदम ठीक बैठा था। जैसे ही वह खड़ी हुई, राजकुमार ने ध्यान से उसका चेहरा देखा और उसे पहचान गया कि इसी सुन्दर लड़की ने उसके साथ नृत्य किया था। वह बोला, "यही मेरी पत्नी है।" सौतेली माँ और दोनों बहनें

ईर्ष्या के कारण सफ़ेद पड़ गयीं। लेकिन राजकुमार ने सिंडरेला को अपने घोड़े पर बिठाया और चल पड़ा। जैसे ही वे क़ब्र के पास वाले वृक्ष के पास पहुँचे, दोनों सफ़ेद बत्तखें गाने लगीं।–

"पीछे देखो, पीछे देखो, जूते पर है खून नहीं;
सही नाप का जूता है, यही तुम्हारी बीवी है।"

जैसे ही उन्होंने गाना ख़त्म किया, वे उड़कर सिंडरेला के कन्धों पर बैठ गयीं और वहीं बैठी रहीं। विवाह समारोह धूमधाम से मनाया गया। दोनों बहनों को उनकी दुष्टता की सज़ा मिली और वे अन्धी हो गयीं।

2

बहादुर दर्ज़ी

एक बेहद घमण्डी राजकुमारी थी। वह अपने सामने विवाह का प्रस्ताव लेकर आने वाले सभी युवकों के सामने एक पहेली रखती थी और जो भी उसे हल नहीं कर पाता था, उसे दुत्कार कर भगा देती थी। इसकी चर्चा सभी में फैल गयी और कहा गया कि जो भी इस पहेली का हल ढूँढ़ लेगा, राजकुमारी उससे विवाह कर लेगी। इसी समय तीन दर्ज़ी उस शहर में आये। जब उन्होंने यह चर्चा सुनी तो उनमें से दो बड़े दर्ज़ी तो एकदम निश्चिन्त थे कि वे यह शर्त अवश्य जीत लेंगे, क्योंकि वे बड़ी-ही बारीक और बढ़िया सिलाई करते थे। तीसरा दर्ज़ी आलसी और निकम्मा था, जिसे अपना काम ही समझ में नहीं आता था। लेकिन फिर भी उसे अपने आप पर भरोसा था कि वह यह पहेली ज़रूर सुलझा लेगा। पहले दोनों दर्ज़ियों ने उसे घर पर रुकने के लिए कहा। लेकिन वह ज़िद्दी था। उसने कहा कि वह जायेगा और उसने यह तय कर लिया है। यह कहकर वह ऐसे चल पड़ा कि पूरी दुनिया उसी की हो।

तीनों दर्ज़ी राजकुमारी के सामने उपस्थित हुए और उससे कहा कि वे पहेली सुलझाने आये हैं, वे ही उसके लिए उपयुक्त हैं, क्योंकि उनकी समझ, 'सुई में धागा डालने' जैसी बारीक है। राजकुमारी बोली, "तब, पहेली यह है : मेरे सिर पर दो रंगों के बाल हैं—वे रंग कौन से हैं ?"

पहला व्यक्ति बोला, "यदि यही पूछना है तो इसका जवाब यह है कि वे रंग हैं—सफ़ेद और काला। जैसे 'नमक और काली मिर्च नामक कपड़े में होते हैं।"

राजकुमारी बोली, "ग़लत। अब दूसरा आदमी जवाब दे।" वह बोला, "यह काला और सफ़ेद नहीं बल्कि भूरा और लाल है। मेरे पिता के घरेलू कोट जैसा।"

राजकुमारी चिल्लायी, "फिर ग़लत ! अब तीसरा आदमी जवाब दे। मुझे लगता है कि यह सही जवाब होगा।"

छोटा दर्ज़ी आत्मविश्वास से भरा सामने आया और बोला, "राजकुमारी के सिर पर सुनहरे और रूपहले बाल हैं। यही वे रंग हैं।"

जब राजकुमारी ने सुना तो वह पीली पड़ गयी और डरकर ज़मीन पर गिर पड़ी। दरअसल तीसरे दर्ज़ी ने वह पहेली सुलझा दी थी जिसके बारे में राजकुमारी को लगा था कि उसे कोई भी नहीं सुलझा पायेगा। जैसे ही वह सम्भली उसने दर्ज़ी से कहा, "बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती, नीचे अस्तबल में एक भालू है, जिसके साथ तुम्हें रात बितानी होगी और यदि तुम सुबह तक जीवित बच जाते हो तो मैं तुमसे विवाह करूँगी।"

छोटे दर्ज़ी ने तुरन्त हामी भर दी और बोला, "बहादुरी से सामना करना तो आधी जंग जीतने के बराबर ही है।" लेकिन राजकुमारी अपने-आपको बहुत सुरक्षित महसूस कर रही थी, क्योंकि उस भालू ने आज तक किसी को ज़िन्दा नहीं छोड़ा था।

जैसे ही शाम हुई, दर्ज़ी को भालू के पास ले जाया गया। जैसे ही वह अस्तबल में गया, भालू उस पर झपटा। दर्ज़ी चिल्लाया, "धीरे ! धीरे ! मैं तुम्हें तौर-तरीक़े सिखाता हूँ।" और उसने अपनी जेब से थोड़ी मूँगफलियाँ निकालीं और उन्हें बेफ़िक्र होकर अपने दाँतों से तोड़ने लगा। जैसे ही भालू ने यह देखा उसे मूँगफली खाने की इच्छा हुई। दर्ज़ी ने उसे भी अपनी जेब से एक मुट्ठी भरकर दी, लेकिन वे मूँगफलियाँ नहीं, बल्कि पत्थर थे। भालू ने उन्हें मुँह में डाला, लेकिन अपनी पूरी ताक़त लगाकर भी उन्हें तोड़ नहीं पाया। वह अपने ऊपर ही चिल्लाया, "मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूँ, मैं मूँगफलियाँ भी नहीं तोड़ सकता। क्या तुम मुझे ये तोड़कर दोगे ?" उसने दर्ज़ी से पूछा। दर्ज़ी बोला, "तुम भी अजीब हो। इतना बड़ा तुम्हारा मुँह है, लेकिन तुम एक मूँगफली नहीं तोड़ सकते।" यह कहते हुए उसने चालाकी से भालू के दिये पत्थर को मूँगफली से बदल दिया और उसे तोड़कर दिखा दिया।

भालू बोला, "मैं एक बार फिर कोशिश करता हूँ। यह तो आसान लगता है।" उसने फिर अपनी पूरी ताक़त से पत्थर को चबाया, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। जब भालू थक गया तो दर्ज़ी ने अपने कोट से एक वायलिन निकाला और उस पर एक धुन बजायी। जैसे ही भालू ने वह धुन सुनी वह नाचने लगा। थोड़ी ही देर में वह रुक गया और उसने दर्ज़ी से पूछा कि क्या वायलिन बजाना आसान काम है ? दर्ज़ी बोला, "आसान है, एकदम बच्चों के खेल जैसा। अपने बायें हाथ की उंगलियाँ तारों पर रखो और दायें हाथ से कमानी चलाओ, बस इतना ही तो करना है। मज़े-मज़े में, हप्पा-लप्प, तारा-रा-रा-रा।"

भालू बोला, "ओह, यदि यही वायलिन बजाना है तो मैं भी सीख सकता हूँ और फिर मैं जब चाहूँ तब नाच भी सकता हूँ। तुम क्या सोचते हो ? क्या तुम मुझे सिखाओगे ?"

दर्ज़ी बोला, "ख़ुशी से। यदि तुम चतुर हो तो सीख सकते हो। मुझे अपने पंजों के नाख़ून दिखाओ। अरे, ये तो भयानक रूप से लम्बे हैं। इन्हें थोड़ा काटना पड़ेगा। संयोग से पास में ही एक शिकंज़ा पड़ा हुआ था, जिससे दर्ज़ी ने भालू के पंजे कस दिये और बोला, "रुको, मैं अभी कैंची लेकर आता हूँ।" भालू चीखता-चिल्लाता रहा। दर्ज़ी पास ही घास के एक ढेर पर लेट गया और उसको नींद आ गयी।

राजकुमारी यह सोचकर ख़ुश हो रही थी कि उसे दर्ज़ी से मुक्ति मिल गयी। विशेषकर जब उसने भालू को गुर्राते हुए सुना तो वह और भी ख़ुश हुई। सुबह वह अस्तबल में गयी। जैसे ही उसने भीतर झाँका तो उसने दर्ज़ी को उतना ही तरोताज़ा और जीवन्त पाया, जैसे कि मछली पानी के भीतर होती है। वह चौंक गयी, लेकिन कोई लाभ न था, क्योंकि उसने सबके सामने विवाह की शर्त रखी थी। राजा ने एक बग्घी मँगवायी, जिस पर बैठकर वह और दर्ज़ी विवाह के लिए गए। जैसे ही वे वहाँ से निकले, दोनों ईर्ष्यालु बड़े दर्ज़ियों ने अस्तबल में जाकर भालू को खोल दिया। भालू तुरन्त बग्घी के पीछे भागा। राजकुमारी ने भालू की गुर्राहट और चीख़ सुनी और दर्ज़ी से रोते हुए बोली, "ओह, भालू हमारा पीछा कर रहा है, तुम्हें पकड़ने के लिए" दर्ज़ी उछलकर अपने सिर के बल खड़ा हो गया और अपने पैर खिड़की के बाहर निकाल कर चिल्लाया, "यह शिकंज़ा देख रहे हो ? वापस जाओ, नहीं तो इसका मज़ा चखना होगा।" भालू ने एक क्षण सोचा और फिर दुम दबाकर वापस भाग गया। दर्ज़ी राजकुमारी के साथ गिरजाघर गया और वहाँ उनका विवाह हुआ। विवाह के बाद वे बेहद ख़ुशी से रहे—चातक पक्षियों के जोड़े की तरह उनका पूरा जीवन हँसी-ख़ुशी से बीता।

3

तीन पक्षी

बहुत वर्ष पहले हमारे देश में पहाड़ों पर कुछ अच्छे राजा रहते थे। वे रोज़ शिक़ार पर जाते थे और उनके महल भी सबसे ऊँचे थे। एक दिन उनमें से एक राजा अपने शिकारियों के साथ महल से बाहर निकला। वहाँ उसे तीन लड़कियाँ अपनी गायें चराती हुई दिखीं। जैसे ही उन्होंने राजा को अपने दल-बल के साथ वहाँ से गुज़रते हुए देखा तो उनमें से सबसे बड़ी लड़की राजा की ओर इशारा करके अपनी सहेलियों से बोली, "हिल्लोआ ! हिल्लोआ ! यदि मेरे पास होता तो मैं उसे पा लेती।" इस पर पहाड़ी के दूसरी ओर खड़ी दोनों लड़कियों में से एक ने दायें हाथ से और दूसरी ने बायें हाथ से राजा के पास खड़े दो व्यक्तियों की ओर इशारा करके कहा, 'हिल्लोआ ! हिल्लोआ ! यदि मेरे पास होता तो उसे पा लेती।' ये दोनों व्यक्ति राजा के मन्त्री थे।

राजा को शिकार से लौटने पर जब सारी बात का पता चला तो उसने तीनों लड़कियों को बुलवा भेजा। राजा ने उनसे पूछा कि उन्होंने सुबह पहाड़ों पर जो कुछ कहा था उसका क्या अर्थ था ? इस प्रश्न का उन्होंने उत्तर नहीं दिया। अंततः राजा ने सबसे बड़ी लड़की से पूछा, "क्या तुम मुझसे विवाह करना चाहोगी ?" इस पर उसने हामी भर दी। फिर शेष दोनों बहनों की शादी भी राजा के दो मन्त्रियों के साथ हो गयी, क्योंकि वे दोनों भी सुन्दर और गोरी थीं। राजा की पत्नी तो उन दोनों से सुन्दर थी, क्योंकि उसके बाल सुनहरे थे।

दोनों बहनों को पहले-पहल कोई बच्चा नहीं हुआ। एक बार जब राजा लम्बी यात्रा पर जा रहा था तो उसने दोनों बहनों को अपनी रानी के साथ रहने के लिए बुलाया। राजा के जाने के बाद रानी ने एक बच्चे को जन्म दिया, जिसका माथा लाल था, लेकिन वह बेहद सुन्दर था। दोनों बहनों ने तय किया कि वे बच्चे को तालाब में फेंक देंगी। जैसे ही उन्होंने बच्चे को तालाब में फेंका, एक पक्षी हवा

में ऊपर उड़ते हुए गाने लगा—

"मरने को तैयार हो जाओ,
दुनिया से सदा के लिए जाओ।
इन सुन्दर-सुन्दर फूलों जैसे
ऐ बहादुर बच्चे, तुम ठीक तो हो ?"

जब दोनों बहनों ने सुना तो वे चौकन्नी हो गयीं और घर लौटने की जल्दी करने लगीं। जब राजा लौटा तो उन्होंने उसे रानी के बच्चे के बारे में बताया और कहा कि रानी को मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ था। राजा ने कहा, "जैसी ईश्वर की इच्छा।" इसी बीच एक मछुआरे ने तालाब से जाल में एक नन्हे बच्चे को पकड़ा जो अभी भी सांस ले रहा था। मछुआरे की कोई सन्तान नहीं थी तो वे उसे पालने लगे। एक साल बाद राजा फिर यात्रा पर गया और उसकी अनुपस्थिति में एक और बेटा पैदा हुआ जिसे दोनों बहनों ने चुराकर पानी में फेंक दिया। जैसे ही उन्होंने यह किया कि एक पक्षी ऊपर उड़कर गाने लगा—

"मरने को तैयार हो जाओ,
दुनिया से सदा के लिए जाओ।
इन सुन्दर-सुन्दर फूलों जैसे,
ऐ बहादुर बच्चे ! तुम ठीक तो हो ?"

अब राजा वापस लौटा तो उन्होंने उसे रानी के बारे में पहले की ही तरह बातें बतायीं, लेकिन वह केवल इतना ही बोला, "जैसी ईश्वर की इच्छा।" हालाँकि मछुआरे ने फिर किस्मत से बच्चे को बचा लिया था और उसे उसके भाई के साथ पाला-पोसा था।

कुछ दिनों बाद राजा फिर यात्रा पर निकला और उसकी अनुपस्थिति में फिर एक बच्चा पैदा हुआ, लेकिन इस बार वह लड़की थी। इसे भी रानी की झूठी बहनों ने तालाब में फेंक दिया और तुरन्त चिड़िया उड़कर गाने लगी—

"मरने को तैयार हो जाओ,
दुनिया से सदा के लिए जाओ।
इन सुन्दर-सुन्दर फूलों जैसे,
ऐ बहादुर बच्ची ! तुम ठीक तो हो ?

राजा जब यात्रा से लौटा तो उसे पहले की तरह ही बातें बतायी गयीं। यह सुनकर राजा इतना नाराज़ हुआ कि उसने रानी को कैद में डलवा दिया। वहाँ वह बहुत वर्षों तक रही।

इस दौरान बच्चे बड़े हो गये। लेकिन जब सबसे बड़ा बच्चा मछली पकड़ने गया तो वहाँ मौजूद मछुआरों के दूसरे बच्चों ने उसे अपने पास नहीं आने दिया। वे बोले, "अपने रास्ते जाओ छोड़े हुए बच्चे !" यह सुनकर वह लड़का बहुत दुखी हो गया। घर आकर उसने मछुआरे से पूछा कि वह कौन है ? इस पर मछुआरे ने उसे पूरा क़िस्सा बताया कि किस तरह वह और उसके भाई-बहन उसकी जाल में आ गए थे और उसने उन्हें निकाला था।

बड़े बेटे ने यह निश्चय किया कि वह अपने पिता की तलाश में निकलेगा। लेकिन मछुआरा नहीं चाहता था कि वह जाये। आख़िरकार उसने हामी भर दी और बड़ा लड़का निकल पड़ा। कई दिन चलने के बाद वह एक बड़े तालाब के पास आया, जिसके पास एक औरत खड़ी होकर मछली पकड़ रही थी।

लड़का बोला, "नमस्ते अम्मा।"

वह बोली, "ख़ुश रहो बच्चे।"

लड़का बोला, "मछली फँसने के पहले तुम यहाँ बहुत देर बैठोगी।" औरत ने जवाब दिया, "और तुम अपने पिता से मिलने से पहले उसका बहुत देर तक इन्तज़ार करोगे। लेकिन तुम यह तालाब कैसे पार करोगे ?" वह बोला, "ईश्वर ही जानता है।" और बूढ़ी औरत ने उसे अपनी पीठ पर बिठा लिया और तालाब के उस पार ले गयी। वहाँ लड़के ने सब जगह तलाश की, लेकिन उसे अपने पिता नहीं मिले।

उसके जाने के एक साल बाद उसके भाई ने उसकी तलाश में निकलने का विचार किया। वह भी उस बड़े तालाब तक आया। उस औरत से मिला। उससे बातचीत की और उसे भी उसके भाई की तरह औरत ने किनारे पहुँचा दिया। अब बहन घर पर अकेली रह गयी थी। वह अपने भाइयों के न होने से इतनी बेचैन और दुखी हो गयी कि वह स्वयं उन्हें तलाश करने निकल पड़ी।

अपनी राह में वह अपने भाइयों की ही तरह बड़े तालाब के पास पहुँची और उसे वहाँ वही बूढ़ी औरत मिली, जिससे उसने कहा, "नमस्ते अम्मा। औरत बोली–"ख़ुश रहो मेरी बच्ची" लड़की ने कहा, "भगवान की कृपा से तुम ख़ूब सारी मछलियाँ पकड़ो।" जैसे ही बूढ़ी औरत ने यह सुना, वह लड़की से बहुत अच्छा व्यवहार करने लगी और लड़की को तालाब पार कराने के बाद एक छड़ी दी और बोली, "अब इसी रास्ते पर सीधे चली जाओ बेटी। जब तुम्हें एक बड़ा काला कुत्ता मिले तो ध्यान रखना कि न तो तुम उस पर हँसो और न ही उसे ठोकर मारना। बस पास से निकल जाना। फिर तुम एक बड़े महल के पास पहुँचोगी,



जिसकी बाहरी दीवार पर तुम यह छड़ी रख देना और फिर उससे होकर सीधे महल की दूसरी तरफ़ बने झरने तक पहुँचना। यह झरना एक धारा के रूप में होगा, जिसके बीच में एक पेड़ होगा। पेड़ पर एक पिंजरे में एक पक्षी होगा, जिसे तुम्हें उठा लेना होगा। फिर झरने में से एक गिलास पानी भरना। यह सब करने के बाद तुम उसी रास्ते से वापस लौटना, जिससे जाओगी। वापसी में छड़ी फिर से उठा लेना और जब लौटते समय कुत्ते के पास से गुज़रो तो छड़ी उसके मुँह पर मारना और फिर सीधे मेरे पास आ जाना।" लड़की को सारी चीज़ें वैसी ही मिलीं, जैसी कि उसे उस औरत ने बतायी थीं। महल के पिछवाड़े में उसे अपने दोनों भाई भी मिल गये, जो आधी दुनिया भटक चुके थे। वे सभी साथ में वहाँ तक आ गये, जहाँ काला कुत्ता लेटा था। जैसे ही उन्होंने उसके मुँह पर छड़ी से मारा तो कुत्ता तुरन्त एक सुन्दर राजकुमार में बदल गया। वह उनके साथ ही बड़े तालाब तक आया। वहाँ पर बूढ़ी औरत अभी भी खड़ी थी, जो उन्हें वापस आया देखकर बेहद प्रसन्न हुई और उन सभी को तालाब के पार पहुँचा दिया। इसके बाद वह ग़ायब हो गयी, क्योंकि उसे मुक्ति मिल गयी थी। भाई-बहन मछुआरे के पास पहुँच गये और सभी एक-दूसरे से मिलकर बेहद प्रसन्न हुए। पक्षी के पिंजरे को उन्होंने दीवार के ऊपर लटका दिया। दूसरा भाई घर पर नहीं रुका और उसने अपना धनुष उठाया और शिकार पर निकल गया। जब वह थक गया तो उसने अपनी बाँसुरी निकाली और एक धुन बजायी, जिसे वहाँ पास ही शिकार कर रहे राजा ने सुना। वह लड़के के पास आया और उससे पूछा कि उसे वहाँ शिकार करने की अनुमति किसने दी। उसने जवाब दिया, "किसी ने नहीं।"

राजा ने पूछा, "फिर तुम कहाँ से आये हो ?"

लड़के ने कहा, "मैं मछुआरे का बेटा हूँ।"

राजा ने कहा, "लेकिन उसके तो बच्चे नहीं हैं ?"

लड़के ने कहा, "यदि तुम्हें मेरी बात का भरोसा नहीं तो फिर मेरे साथ चलकर देख लो।"

राजा मछुआरे के घर गया, जिसने उसे पूरी बात कह सुनायी और तभी दीवार पर पिंजरे की चिड़िया गाने लगी—

"माँ बैठी है अकेली
जेल में बन्द
और ये हैं उसके बच्चे
जो सोते समय चुराए गए थे

झूठी बहनों ने चुराया था उन्हें
बच्चों की जान लेने को।
गहरे पानी में फेंका था उन्हें
यहीं गहरे तालाब में।"

यह सुनकर सभी डर गए। राजा तुरन्त ही उस पक्षी, मछुआरे और तीनों बच्चों को अपने साथ महल में ले गया। वहाँ उसने कारागार खोलने का आदेश दिया और अपनी पत्नी को बाहर निकलवाया। उसकी पत्नी बहुत बीमार और कमज़ोर हो गयी थी। उसकी बेटी ने अपनी माँ को झरने से बचा हुआ पानी पिलाया। उसकी माँ वह पानी पीते ही ठीक हो गयी। इसके बाद दोनों झूठी बहनों को जलाया गया। राजा की बेटी ने सुन्दर राजकुमार से विवाह कर लिया। सभी बेहद हँसी-ख़ुशी लम्बे समय तक रहे।

4

बोतल में आत्मा

एक समय में एक लकड़हारा था। वह सुबह से शाम तक काम करता था। इस तरह कड़ी मेहनत करके बहुत समय बाद वह थोड़ा पैसा बचा पाया। फिर वह अपने बेटे से बोला, "तुम मेरे एक ही बेटे हो, इसलिए यह अपने गाढ़े पसीने की कमाई मैं तुम्हारी पढ़ाई पर ख़र्च करना चाहता हूँ। तुम ऐसा कोई काम सीखो, जिससे तुम बुढ़ापे में मेरी मदद कर सको और जब मेरे हाथ-पैर थक जाएँ तो मैं घर पर ख़ाली बैठ सकूँ।"

इसके बाद बेटा एक बढ़िया स्कूल में गया। वह बहुत मेहनती था, जिससे सबका उस पर ध्यान गया। वह उस स्कूल में लम्बे समय तक पढ़ता रहा। उसकी पढ़ाई पूरी हो गयी, लेकिन फिर भी वह पूरी तरह शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाया। उसके पिता की पूरी सम्पत्ति भी ख़त्म हो गयी थी और उसे इसीलिए घर लौटना पड़ा।

"आह ! अब मैं तुम्हें और पैसे नहीं दे सकता, क्योंकि इतने समय से तो मैं ठीक से दोनों समय की रोटी भी नहीं खा पाया।" पिता ने दुख से कहा।

लड़के ने कहा, "आप निश्चिन्त रहिए पिताजी, यदि ईश्वर की इच्छा यही होगी तो यही होगा। मैं सफल होऊँगा।"

इसके बाद जब पिता कुछ कमाने के लिए जंगल में जाने लगे तो लड़के ने कहा, "मैं आपके साथ चलकर आपकी मदद करूँगा।" पिता ने कहा, "आह ! लेकिन मेरे बेटे, तुम्हारे लिए यह बहुत मुश्किल होगा। तुमने तो कभी भी इतनी कड़ी मेहनत नहीं की है। तुम्हें यह काम नहीं करना चाहिए। इसके अलावा मेरे पास सिर्फ़ एक कुल्हाड़ी है और दूसरी कुल्हाड़ी ख़रीदने के पैसे भी नहीं हैं।"

बेटा बोला, "जाओ, और जाकर अपने पड़ोसी से तब तक के लिए उधार माँग लो, जब तक हम एक और कुल्हाड़ी ख़रीदने के लिए पैसे न कमा लें।"

पिता ने पड़ोसी से एक कुल्हाड़ी माँगी और अगली सुबह सूरज निकलने पर वे साथ-साथ जंगल में पहुँचे। बेटे ने पिता की मदद की। वह अपने काम से बेहद ख़ुश था और दोपहर तक जब सूरज उनके सिर पर आ गया तो पिता ने थोड़ा आराम करने और खाना खाने का प्रस्ताव रखा, जिससे कि उसके बाद वे दोबारा ठीक से काम कर सकें। बेटे ने अपने हिस्से की रोटी लेकर कहा, "आप यहाँ आराम करें, मैं तो थका नहीं हूँ। मैं जंगल में थोड़ा भीतर जाऊँगा और चिड़ियों के घोंसलों की तलाश करूँगा।"

पिता बोले, "अरे बेवक़ूफ़, तुम क्या ढूँढ़ना चाहते हो ? तुम थक जाओगे। फिर तुम अपने हाथ भी नहीं उठा पाओगे। शान्त रहो और थोड़ी देर मेरे पास बैठो।"

लेकिन लड़के ने ऐसा नहीं किया। वह अपनी रोटी खाते हुए पेड़ों के बीच निकल गया और झाड़ियों के बीच झाँक-झाँककर घोंसले तलाश करने लगा। आगे-पीछे चक्कर काटते-काटते काफ़ी दूर और एक विशाल शाहबलूत के वृक्ष के पास आ पहुँचा, जो कि निश्चय ही कई सौ वर्ष पुराना था। पाँच लोग मिलकर भी उस पेड़ को नाप नहीं सकते थे। वह उस पेड़ को देखने के लिए वहीं रुक गया। उसे लगा कि पेड़ में कई पक्षियों के घोंसले होंगे। पेड़ को देखते हुए उसे अचानक आवाज़ सुनाई दी। उसने ध्यान से सुना तो उसे फिर से घुटी-घुटी-सी आवाज़ सुनाई दी, "मुझे बाहर निकालो ! मुझे बाहर निकालो !" उसने चारों तरफ़ देखा, लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं पड़ा। लेकिन आवाज़ अभी भी आ रही थी, जैसे धरती के भीतर से आ रही हो। उसने भी आवाज़ दी, "तुम कहाँ हो ?" आवाज़ आई, "मैं यहाँ फँसा हूँ, इस शाहबलूत के पेड़ की जड़ों के बीच। मुझे बाहर निकालो ! मुझे बाहर निकालो !" पढ़ा-लिखा लड़का पेड़ के नीचे तलाश करने लगा, जहाँ जड़ें फैली थीं। आख़िरकार एक छोटी-सी खोह में उसे एक काँच की बोतल मिली। उसने उसे उठा लिया और उसे रोशनी में देखने पर उसे उसके भीतर मेंढक-जैसा एक जीव दिखाई पड़ा, जो लगातार उछल रहा था। वह फिर चिल्लाया, "मुझे बाहर निकालो ! मुझे बाहर निकालो !" लड़के ने तुरन्त बोतल का ढक्कन खोल दिया। एक आत्मा तुरन्त उछलकर बाहर आ गयी और तेज़ी से बड़ी और बड़ी होने लगी। कुछ ही क्षणों में वह उसके सामने राक्षस की तरह विशालकाय रूप में खड़ा था। उसका आकार पेड़ से आधा था। वह घनघोर आवाज़ में चिल्लाया, "तुम्हें पता है कि मुझे इस बोतल में से निकालने का तुम्हें क्या इनाम मिलेगा ?"

लड़के ने बिना डरे उत्तर दिया, "नहीं मुझे कैसे पता होगा ?" आत्मा बोली, "मैं तुम्हें बताता हूँ। मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ दूँगा।"



लड़का बोला, "तुम्हें मुझे पहले बताना चाहिए था। तुम्हें वहीं रहना चाहिए था, जहाँ तुम थे। लेकिन मेरा सिर तो वहीं रहेगा जहाँ वह है, क्योंकि अभी मुझे इस मामले में कई लोगों की राय लेनी है।"

आत्मा ने कहा, "अपने लोगों को मेरे रास्ते से अलग ही रखो। लेकिन तुम्हें तुम्हारा इनाम मिलना ही चाहिये। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे किसी ने दया करके इस बोतल में बन्द किया था ? नहीं, यह तो मेरी सज़ा थी। मैं शक्तिमान बुध हूँ, जो भी मुझे नीचा दिखाएगा, मैं उसकी गर्दन तोड़ दूँगा।"

लड़के ने कहा, "धीरे से, धीरे से ! यह तो बहुत जल्दी होगा। मुझे सबसे पहले जानना पड़ेगा कि तुम सचमुच बोतल में थे और तुम सचमुच एक आत्मा हो। यदि मैं तुम्हें बोतल में वापस जाता देख लूँ, तभी तो विश्वास होगा। तब तुम जो कहोगे वहीं मैं करूँगा।"

गर्व में भरकर आत्मा बोली, "यह तो बहुत आसान है।" और अपने आपको समेटकर वह पहले जैसा छोटा हो गया और तुरन्त बोतल के अन्दर चला गया। वह अभी बोतल में पहुँचा ही था कि लड़के ने तुरन्त बोतल का ढक्कन बन्द कर दिया। बोतल फिर से वहीं शाहबलूत के पेड़ की जड़ों में फेंक दी। इस तरह उसने आत्मा को फिर बोतल में बन्द कर दिया।

इसके बाद लड़का अपने पिता के पास वापस जाने ही वाला था कि आत्मा फिर ज़ोर से चिल्लायी, "ओह मुझे बाहर निकालो ! मुझे बाहर निकालो।"

लड़का बोला, "नहीं, दोबारा नहीं, जिसने मेरी जान लेने की कोशिश की, उसे अब मैं दोबारा खुला नहीं छोड़ूँगा।"

आत्मा बोली, "यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें इतना धन दूँगा, जितना ज़िन्दगी भर के लिए काफ़ी होगा।"

लड़के ने इनकार कर किया, "तुम मुझे पहली बार की ही तरह धोखा दोगे।" आत्मा बोली, "तुम तो अपनी क़िस्मत को ही ठुकरा रहे हो। मैं तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा, बल्कि ढेर सारा इनाम ही दूँगा।"

लड़के ने मन ही मन सोचा, "मैं ऐसा ही करता हूँ, शायद वह अपना वादा निभाये और मुझे नुक़सान नहीं पहुँचाये।" और यह सोचते हुए उसने बोतल का ढक्कन दोबारा खोल दिया। आत्मा पहले की तरह उछलकर बाहर निकली और फिर से राक्षस की तरह बड़ी हो गयी।

आत्मा ने लड़के को पट्टी की तरह एक कपड़े का टुकड़ा दिया और बोली, "अब तुम्हें तुम्हारा इनाम मिलेगा। यदि तुम इस पट्टी का एक सिरा किसी घाव

पर लगाओगे तो घाव ठीक हो जायेगा और यदि इसके दूसरे सिरे से लोहे को छुओगे तो वह चाँदी में बदल जायेगा।"

लड़का बोला, "पहले मुझे इसे परखने दो।" और वह एक पेड़ के पास गया और अपनी कुल्हाड़ी से उसकी डाल काट दी और उसे पट्टी के एक सिरे से छुआ। छाल तुरन्त ठीक हो गयी। लड़का बोला, "यह ठीक है। अब मैं जा सकता हूँ।" आत्मा ने उसे धन्यवाद दिया और लड़के ने उसे उसकी भेंट के लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद लड़का अपने पिता के पास वापस चला गया।

पिता ने पूछा, "तुम कहाँ भटक रहे थे ? तुम अपने काम के बारे में एकदम कैसे भूल गये ? मैंने ठीक ही कहा था कि तुम यह काम नहीं कर सकते।"

लड़का बोला, "शान्त हो जाइये पिताजी, मैं काम पूरा कर दूँगा।" पिता गुस्से से फट पड़े और चिल्लाये, "हाँ, तुम तो पूरा कर ही दोगे, बिना कुल्हाड़ी के !"

लड़का बोला, "पिताजी देखिए, मैं एक झटके में पेड़ काट देता हूँ।" और यह कहकर उसने वह कपड़े की पट्टी उठायी और उससे कुल्हाड़ी को छुआ और फिर उससे पेड़ पर वार किया, लेकिन कुल्हाड़ी तो चाँदी की हो गयी थी, इसलिये उसकी धार मुड़ गयी। बेटा बोला, "पिताजी, देखिये आपने मुझे कैसी कुल्हाड़ी दी है। इसमें धार ही नहीं है।"

पिता डर गये और बोले, "ओह, तुमने क्या कर दिया ? अब मुझे कुल्हाड़ी के पैसे भरने पड़ेंगे। मैंने तो यह तुम्हारे काम करने के लिए पड़ोसी से उधार ली थी।"

बेटा बोला, "नाराज़ मत होइये। मैं जल्दी ही कुल्हाड़ी के पैसे चुका दूँगा।" लेकिन उसके पिता चिल्लाये, "अरे, बेवकूफ़, कैसे वापस करोगे ? तुम्हारे पास तो मेरी दी गयी चीज़ों के अलावा तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारे दिमाग़ में अपने किसी साथी से सीखी ख़ुराफ़ात भरी है, लेकिन तुम्हें लकड़ी काटने के बारे में कुछ नहीं पता है।"

थोड़ा रुककर बेटा बोला, "पिताजी ! अब मैं और काम नहीं कर सकता। अब हम आराम करेंगे।"

पिता बोले, "क्या ? क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारी तरह जेब में हाथ डालकर घूमूँ ? मैं तो काम करूँगा, तुम्हें घर जाना हो तो जाओ।" बेटे ने कहा कि उसे घर जाने का रास्ता नहीं मालूम, क्योंकि वह पहली बार जंगल में आया है। आख़िरकार उसने अपने पिता को अपने साथ चलने के लिए राज़ी कर लिया। पिता का गुस्सा भी थोड़ी देर में कम हो गया। जब वे अपने घर पहुँचे तो पिता

ने लड़के को ख़राब हो गयी कुल्हाड़ी बेचने के लिए कहा। उसने कहा कि अपने पड़ोसी को देने के लिए बाक़ी पैसे उसे मेहनत करके कमाने होंगे। बेटे ने कुल्हाड़ी ली और उसे लेकर शहर के सुनार के पास गया। उसकी जाँच करने के बाद उसने उसे तौला और कहा, "यह चार हज़ार रुपये की है, लेकिन इतने पैसे अभी मेरे पास नहीं हैं।"

लड़का बोला, "तुम्हारे पास जो भी है, मुझे दे दो, बाकी मैं तुमसे बाद में ले लूँगा।" सुनार ने उसे तीन हज़ार रुपये दे दिये और बाक़ी उधार रखे। लड़का घर लौटा और अपने पिता से बोला, "जाओ और जाकर पड़ोसी से पूछो कि उसकी कुल्हाड़ी कितने रुपयों की थी। मुझे उसके पैसे वापस करने हैं।

पिता ने कहा, "मुझे मालूम है, एक सौ साठ रुपये।"

"तब तो उसे तीन सौ बीस, यानी दुगने रुपये दे दो। देखो मेरे पास काफ़ी पैसे हैं।" और उसने अपने पिता को भी एक हज़ार रुपये दिये और कहा, "अब तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। आराम से रहो।"

पिता बोले, "हे भगवान, तुम्हें इतने पैसे कहाँ से मिले ?" बेटे ने पिता को पूरी बात कह सुनायी। बाक़ी बचे पैसे लेकर वह विश्वविद्यालय चला गया और वहाँ पूरी शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद उस पट्टी की मदद से इलाज़ करके दुनिया का सबसे लोकप्रिय डॉक्टर बन गया।

5

राक्षस और दर्ज़ी

एक दर्ज़ी था, जो शेख़ीबाज़ था, लेकिन काम बहुत करता था। उसे एक बार दुनिया की सैर करने का विचार आया। उसने तुरन्त अपनी दुकान छोड़ी और पहाड़ों और घाटियों में निकल पड़ा। इधर-उधर चलते-चलते आगे बढ़ता रहा। थोड़ी दूर चलने पर उसे एक ऊँचा पहाड़ दिखायी पड़ा। उसके पीछे एक ऊँची मीनार थी, जो घने जंगलों में बनी हुई थी। दर्ज़ी चिल्लाया, "अरे, यह क्या हुआ ?" वह उत्सुकता से उस जगह के पास पहुँचा। लेकिन जैसे ही वह उसके पास पहुँचा तो उसका मुँह खुला रह गया और आँखें फटी रह गयीं—उस मीनार के तो पैर थे, वह मीनार एक क्षण में पहाड़ी पर उछली और अचानक दर्ज़ी के सामने एक विशाल राक्षस खड़ा हो गया। राक्षस ने गड़गड़ाती आवाज़ में पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो मच्छर ?" दर्ज़ी ने धीरे से कहा, "मैं इस जंगल में अपनी जीविका कमाने आया हूँ।"

राक्षस ने गुस्से से कहा, "ठीक है, तुम मेरी नौकरी शुरू कर दो।" दर्ज़ी ने विनम्रता से कहा, "यदि ऐसा है तो ठीक है, लेकिन मुझे तनख़्वाह क्या मिलेगी ?" राक्षस बोला, "तनख़्वाह ?" फिर उसकी आवाज़ गूँजी—

"सुनो—हर साल में तीन सौ पैंसठ दिन और किसी साल में एक दिन ज़्यादा भी। ठीक ?"

दर्ज़ी बोला, "ठीक।" लेकिन उसने सोचा, "हरेक को अपनी चादर देखकर ही पैर फैलाना चाहिये। मुझे जल्दी से यहाँ से स्वतन्त्र होना चाहिए।"

राक्षस चिल्लाया, "जल्दी जाओ बेवक़ूफ़ और जाकर मेरे लिए एक गिलास पानी लाओ।"

दर्ज़ी ने कहा, "पूरा कुआँ क्यों नहीं और झरना भी ?" कहकर उसने पूरा कुआँ उठाने का अभिनय किया। राक्षस चिल्लाया, "क्या ! कुआँ और झरना भी ?"



राक्षस थोड़ा डरपोक और कमज़ोर था, वह डरने लगा और उसने सोचा, "यह आदमी सेव भूनने के अलावा भी बहुत कुछ कर सकता है। यह बहुत बहादुर है। मुझे ध्यान रखना चाहिए नहीं तो यह तो मेरा भी मालिक बन जायेगा।" इसलिए जब दर्ज़ी पानी लेकर लौटा तो राक्षस ने उसे जंगल से कई गट्ठर लकड़ी लाने के लिए भेज दिया। दर्ज़ी ने पूछा, "पूरा जंगल एक बार में क्यों नहीं—हर पेड़-बड़ा-छोटा, अच्छा-ख़राब ?" और चला गया। डरा हुआ राक्षस धीरे से बड़बड़ाया, "क्या पूरा जंगल, कुआँ भी, झरना भी।" वह और भी डर गया था। वह सोचने लगा कि दर्ज़ी उससे कहीं बलवान है और उसका नौकर बनने लायक़ नहीं है। दर्ज़ी लकड़ी के गट्ठर लेकर लौटा तो राक्षस ने उसे दोपहर के भोजन के लिए दो-तीन जंगली सुअर मारने के लिए कहा। शेख़ी बघारनेवाला दर्ज़ी बोला, "एक बार में हज़ार क्यों न मारूँ, और बाक़ी सब उसके बाद ?" डरपोक राक्षस हड़बड़ाया, "क्या, क्या ओह ! आज के लिए इतना काफ़ी है, तुम अब सो जाओ।"

बेचारा राक्षस अब दर्ज़ी से बेहद डर गया था। वह रात में अपनी आँखें भी नहीं बन्द कर पाता था और पूरे समय इस नौकर से मुक्ति पाने का उपाय सोचता रहा था। उसे लगता था कि वह कोई जादूगर है, जो उसकी जान के पीछे पड़ा है। समय के साथ समझ भी आती है। अगली सुबह राक्षस और दर्ज़ी एक साथ एक मैदान में गये जहाँ बहुत से बेंत के पेड़ उगे थे। जब वे वहाँ पहुँचे तो राक्षस बोला, "इनमें से एक पर बैठो। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम इसे झुका सकते हो या नहीं ?"

शेख़ीमार दर्ज़ी पेड़ पर चढ़ा और एक शाख़ पर बैठ गया। अपनी साँस रोककर उसने अपने आपको भारी बनाया और पेड़ नीचे झुकाया। जल्दी ही उसे फिर से सांस लेनी पड़ी। वह दुर्भाग्य से अपना फ़ीता जेब में नहीं लाया था और शाख़ वापस ऊपर चली गयी। राक्षस बेहद ख़ुश हुआ, क्योंकि उसने देखा कि उस शाख़ के साथ दर्ज़ी हवा में ख़ूब ऊपर उछला और ग़ायब हो गया। वह अभी भी हवा में उड़ रहा है या ज़मीन पर पड़ा है, यह मैं आपको अच्छी तरह नहीं बता सकता।

6

जंगल में एक घर

एक ग़रीब लकड़हारा था। वह अपनी पत्नी और तीन बेटियों के साथ जंगल के एक कोने में एक छोटी-सी झोंपड़ी में रहता था। एक सुबह जब वह अपने काम पर निकलने लगा तो वह अपनी पत्नी से बोला, "मेरा भोजन बड़ी बेटी के हाथों भेजना। मैं घर वापस शाम को लौटूँगा। वह रास्ता नहीं भूल जाए, इसके लिए मैं एक थैले में बीज लेकर उन्हें रास्ते में बिखेरता हुआ जाता हूँ।"

जब सूरज एकदम ऊपर चढ़ आया तो लड़की एक प्याले में खिचड़ी लेकर चल पड़ी। लेकिन गौरैयों, चकोरों, सोनचिरैयों और दूसरे पक्षियों ने तो बहुत पहले ही बीज चुग लिये थे। इससे लड़की को राह तलाश करने के लिए कोई चिह्न नहीं मिला। वह अपनी क़िस्मत पर भरोसा करती हुई चलती रही। सूरज डूब गया और रात हो गयी। पेड़ अँधेरे में खड़खड़ाने लगे और उल्लू चिल्लाने लगे, लड़की को डर लगने लगा। अचानक उसे पेड़ों के बीच दूर रोशनी दिखायी दी। उसने सोचा, "ज़रूर कोई वहाँ रहता है, जो मुझे रात को रहने की जगह दे सकता है।" और यह सोचकर वह रोशनी की तरफ़ बढ़ती गयी। थोड़ी ही देर में वह एक कुटिया के पास आ गयी, जिसकी खिड़कियों में प्रकाश था। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया तो एक मोटी आवाज़ आयी, "भीतर आ जाओ।" लड़की भीतर गयी तो उसे वहाँ बूढ़ा आदमी हाथों से अपने चेहरे को ढँके हुए दिखायी दिया। उसकी सफ़ेद दाढ़ी नीचे ज़मीन को छू रही थी। भट्टी के पास में तीन जानवर थे—एक मुर्ग़ी, मुर्ग़ा और एक चितकबरी गाय। लड़की ने बूढ़े आदमी को अपनी परेशानी के बारे में बताया और उससे एक रात रुकने की जगह माँगी। वह आदमी बोला—

"प्यारी मुर्ग़ी, प्यारे मुर्ग़े
और प्यारी चितकबरी गाय,
बोलो तो क्या है उपाय ?"



"क्लक !" वे तीनों बोले और इसका अर्थ था कि वे सन्तुष्ट हैं। बूढ़े आदमी ने लड़की से कहा, "यहाँ भीड़ है, तुम रसोई में जाकर हमारे लिए खाना तैयार करो।"

लड़की को रसोई में बहुत कुछ मिला और उसने बढ़िया खाना बनाया ! लेकिन उसने जानवरों के बारे में कुछ नहीं सोचा। जब वह खाना बना चुकी तो वह बर्तन उठाकर बाहर कमरे में ले आयी और बूढ़े आदमी के सामने बैठकर भर पेट खाना खाया। जब वह खा चुकी तो वह बोली, "मैं बहुत थक गयी हूँ। मेरा बिस्तर कहाँ है, मैं कहाँ सोऊँ ?" जानवरों ने जवाब दिया–

"तुमने उसके साथ खाया,
तुमने उसके साथ पिया,
सोचा नहीं हमारा तुमने
सोचा नहीं हमारा तुमने !
फिर भी तुम बिता सकती हो रात यहाँ।"

बूढ़े आदमी ने कहा, "उन सीढ़ियों से नीचे चली जाओ। वहाँ एक कमरे में तुम्हें दो बिस्तर मिलेंगे, उन्हें झाड़कर सफ़ेद चादरें बिछा दो। मैं वहाँ आकर सो जाऊँगा।" लड़की सीढ़ियों से नीचे गयी, उसने बिस्तरों को झाड़कर नयी चादर बिछायी और वह बिना बूढ़े आदमी का इन्तज़ार किये एक बिस्तर पर ख़ुद सो गयी। थोड़ी देर बाद बूढ़ा आया और जब उसने रोशनी में लड़की को गहरी नींद में सोये देखा तो फंदेवाला दरवाज़ा खोलकर लड़की को नीचे तहख़ाने में गिरा दिया।

लकड़हारा शाम को घर लौटा और उसने दिनभर भूखा मारने के लिए अपनी पत्नी को फटकार लगायी। वह बोली, "इसमें मेरी ग़लती नहीं है। बड़ी लड़की तो तुम्हारा खाना लेकर गयी थी। वह रास्ता भटक गयी होगी, लेकिन कल वह ज़रूर लौट आयेगी।" सुबह होते ही लकड़हारा फिर काम पर चलने लगा और उसने इच्छा ज़ाहिर की कि इस बार दूसरी लड़की उसके लिए खाना लेकर आये। वह बोला, "मैं एक थैला मटर लेकर जाऊँगा। वे मक्के से बड़े हैं और लड़की को ठीक से दिखायी भी पड़ेंगे और वह रास्ता नहीं भटकेगी।" दोपहर में लड़की अपने पिता का भोजन लेकर निकल पड़ी। लेकिन मटर के दानों को भी पहले दिन की तरह जंगल के पक्षी चुग गये थे। इसीलिए वह देर रात जंगल में भटकती रही और आख़िरकार बूढ़े आदमी की कुटिया में आ गयी। उसने रात भर रहने की जगह और भोजन की माँग की। सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़े ने अपने जानवरों से फिर पूछा–

"प्यारी मुर्ग़ी, प्यारे मुर्ग़े
और प्यारी चितकबरी गाय,
बोलो तो क्या है उपाय ?"

उन्होंने फिर जवाब दिया, "क्लक !" और फिर सब कुछ पहले दिन की ही तरह हुआ। लड़की ने बढ़िया खाना बनाया और बूढ़े आदमी के साथ खाया-पिया। लेकिन एक बार भी पशु-पक्षियों के बारे में नहीं सोचा। जब उसने बिस्तर के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया–

"तुमने उसके साथ खाया,
तुमने उसके साथ पिया,
सोचा नहीं हमारा तुमने,
फिर भी तुम बिता सकती हो रात यहाँ।"

जैसे ही वह सोने गयी, बूढ़ा आदमी आया और उसे देखकर सिर हिलाते हुए पहले की ही तरह उसे भी तहख़ाने में डाल दिया।

फिर तीसरा दिन आया और लकड़हारे ने अपनी पत्नी से सबसे छोटी लड़की से भोजन भेजने के लिए कहा। वह बोला, "क्योंकि वह हमेशा से ही आज्ञाकारी और अच्छी है। वह सही रास्ते पर चलेगी और अपनी दोनों आलसी बहनों की तरह भाग नहीं जायेगी।"

लेकिन माँ ने मना किया और बोली, "क्या मैं अपनी सबसे छोटी बेटी को भी खो दूँगी ?"

पति बोला, "डरो मत। हमारी बेटी रास्ता नहीं भटकेगी। वह बहुत कुशल है और सावधानी के लिए मैं मटर के बीजों की बजाय सेम के बीज डालूँगा, जो कि ज़्यादा बड़े होते हैं। इससे उसे रास्ता अच्छी तरह पहचान में आयेगा।

लेकिन लड़की जब अपने साथ भोजन लेकर निकली, तब तक जंगली कबूतरों ने सभी सेम के बीच खा लिये थे और वह राह भटक गयी। वह यह सोचकर परेशान और दुखी हो गयी कि अब उसके पिता खाना कैसे खाएँगे और उसके न लौटने पर उसकी माँ किस तरह दुखी होगी। आख़िरकार जब अँधेरा हो गया तो उसे भी कुटिया की रोशनी दिखायी दी और उसमें जाकर उसने विनम्रता से रात भर रहने की जगह माँगी। बूढ़े आदमी ने अपने जानवरों से उसी तरह तीसरी बार पूछा–

"प्यारी मुर्ग़ी, प्यारे मुर्ग़े
और प्यारी चितकबरी गाय
बोलो तो क्या है उपाय ?"

वे बोले, "क्लक, क्लक !" लड़की आग के पास आ गयी, जहाँ वे बैठे थे और उन्हें प्यार से सहलाया। मुर्ग़ी और मुर्ग़े की उसने कलगी सहलायी और गाय के सिर पर हाथ फेरा। बाद में उसने बूढ़े आदमी के अनुरोध पर भोजन तैयार किया। लेकिन जब उसने मेज़ पर बर्तन लगा दिये तो उसने अपने मन में सोचा, "मुझे इन लोगों को खिलाने से पहले ख़ुद नहीं खाना चाहिए। रसोई में बहुत सारा सामान है, मुझे पहले इन लोगों को खिलाना चाहिये।" यह सोचकर वह थोड़े से भुट्टे के दाने लायी और उन्हें मुर्ग़ा-मुर्ग़ी के सामने डाल दिया। फिर वह घास लायी और उसे गाय को दिया और उनसे बोली, "खाओ, अच्छी तरह खाओ, प्यास लगेगी तो मैं अच्छा पानी पिलाऊँगी।" यह कहकर वह एक बाल्टी भरकर पानी लायी। मुर्ग़ी और मुर्ग़ा बाल्टी के किनारे पर बैठ गये और अपनी चोंच उसमें डुबाकर पानी पीने लगे। गाय ने भी जी भरकर पानी पिया।

जब पशु-पक्षी खा-पी चुके तो लड़की बूढ़े आदमी के साथ खाने बैठी और बचा-खुचा खाना खा लिया। थोड़ी ही देर में जब मुर्ग़ा और मुर्ग़ी अपनी चोंच अपने पँखों के बीच में दबाकर सोने की तैयारी करने लगे और चितकबरी गाय अपनी आँखें झपकाने लगी। लड़की ने पूछा, "क्या हम भी सोने की तैयारी करें ?" बूढ़े आदमी ने पहले की ही तरह कहा–

"प्यारी मुर्ग़ी, प्यारे मुर्ग़े
और प्यारी चितकबरी गाय
बोलो तो क्या है उपाय ?"

"क्लक, क्लक !" जानवर बोले, जिसका अर्थ था–

"तुमने हमारे साथ खाया,
तुमने हमारा साथ दिया,
सोचा हमारे बारे में तुमने,
आराम करो अब दो पल तुम।"

लड़की यह सुनकर नीचे गयी और पंखोंवाले बिस्तरों को झाड़कर साफ़ चादरें बिछायीं और जब बिस्तर तैयार हो गये तो बूढ़ा आदमी आकर एक बिस्तर पर लेट गया। उसकी दाढ़ी उसके पैरों तक फैली थी। लड़की दूसरे बिस्तर पर लेट गयी, अपनी प्रार्थना की और फिर सो गयी।

वह आधी रात तक चुपचाप लेटी सोती रही और बीच रात में अचानक घर में इतनी हलचल हुई कि वह जाग गयी। कमरे के हर कोने में खड़खड़ाहट होने लगी। दरवाज़े दीवारों से टकराने लगे और खम्भों से चीं-चीं की आवाज़ आने लगी,

सीढ़ियाँ गिर पड़ी और आख़िरकार ऐसा लगा, मानों पूरी छत ही गिर पड़ी हो। थोड़ी देर में ही सब कुछ शान्त हो गया। लेकिन लड़की को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। वह चुपचाप फिर से सो गयी। जब सूरज की रोशनी से उसकी आँखें खुली तो उसके सामने अद्भुत दृश्य था। वह एक विशाल कमरे में थी और उसके आसपास की हर चीज़ राजसी चमक-दमक लिये हुए थी। दीवार पर हरे रेशम पर सोने के फूल कढ़े थे। पलंग हाथीदाँत का था। पर्दे लाल मख़मल के थे। पास ही मोतियों जड़ी चप्पलें थीं। लड़की को लगा यह सब सपना है, लेकिन तभी तीन नौकर राजसी पोशाकों में वहाँ आये और उसकी सेवा में खड़े हो गये। लड़की ने कहा, ''जाओ, मैं उठकर बूढ़े आदमी के लिए नाश्ता बनाऊँगी और प्यारे मुर्ग़ी और मुर्ग़े और चितकबरी गाय को भी कुछ खाने को दूँगी।'' उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उसे लगा कि बूढ़ा आदमी ज़ाग चुका है, लेकिन जब उसने उसके बिस्तर की तरफ देखा तब उसे वहाँ कोई अजनबी सोया हुआ दिखायी दिया। वह एक सुन्दर युवक था। वह उठा और उसने लड़की से कहा, ''मैं एक राजकुमार हूँ, जो बहुत पहले एक बूढ़ी जादूगरनी के जादू से बूढ़ा आदमी बन गया था और मुझे जंगल में अकेले रहना पड़ता था। मेरे तीनों नौकरों ने भी मुर्ग़ी, मुर्ग़ा और चितकबरी गाय का रूप धारण कर लिया था। यह जादू तब टूटनेवाला था, जबकि कोई दयालु लड़की मुझसे और मेरे पशु-पक्षियों से एक-सा भला व्यवहार करे, जो तुमने किया। इसी वजह से यह जादू टूट गया—पुरानी झोंपड़ी फिर से महल बन गयी।'' यह कहकर राजकुमार ने अपने सेवकों को लड़की के माता-पिता को भी महल में लाने का आदेश दिया, जिससे वे विवाह-समारोह में शामिल हो सकें।

लड़की ने पूछा, ''लेकिन मेरी दोनों बहनें कहाँ है ?''

राजकुमार बोला, ''मैंने उन्हें तहख़ाने में रखा है, जहाँ से कल सुबह उन्हें जंगल में ले जाया जायेगा। वहाँ उन्हें कोयला-ख़दान में तब तक मज़दूरी करनी पड़ेगी जब तक कि उनका व्यवहार न सुधर जाये और उनके दिल में पशु-पक्षियों के लिए भी प्रेम न जागे।

7

बौने

एक समय में एक धनी राजा था, जिसकी तीन बेटियाँ थीं। वे दिन भर अपने पिता के महल के बाग़ में टहलती रहतीं। राजा को अपने बाग़ के सभी पेड़ बेहद पसन्द थे, सिवाय एक सेब के पेड़ के। उसके बारे में कहा जाता था कि जो भी इस पेड़ से एक भी सेब तोड़ेगा, वह सैकड़ों गज़ ग़हरे ज़मीन के भीतर धँस जायेगा। जब उस पेड़ पर फल लगे तो वे एकदम लाल थे। तीनों राज़कुमारियाँ रोज़ उस पेड़ के पास जाकर देखतीं कि कोई फल गिरा है या नहीं। लेकिन हवा से टूटकर कोई भी फल नहीं गिरा। उस पेड़ की शाखें इतनी लदी हुई थीं कि ज़मीन को ही छू रही थीं। आख़िरकार सबसे छोटी राजकुमारी को इतना लालच हुआ कि उसने अपनी बहनों से कहा, "हमारे पिता हमें इतना प्यार करते हैं कि वे कभी नहीं चाहेंगे कि हम ज़मीन में धँस जाएँ। उन्होंने यह केवल बाहरी लोगों के लिए कहा होगा।" और यह कहकर उसने एक सेब तोड़ लिया और अपनी बहनों के साथ बाँटकर खा लिया। लेकिन जैसे ही उन्होंने वह सेब खाया, वे ज़मीन में इतनी गहराई में धँस गयीं, जहाँ कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी।

धीरे-धीरे दोपहर हो गयी और राजा ने अपनी बेटियों को याद किया, लेकिन वे कहीं नहीं मिलीं। नौकरों ने पूरा महल और बग़ीचे छान मारे। आख़िरकार जब राजा को उनकी कोई ख़बर नहीं मिली तो राजा ने पूरे देश में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो भी राजकुमारियों को वापस लायेगा, उसकी शादी एक राजकुमारी से होगी। बहुत सारे लड़कों ने राजकुमारियों की तलाश में धरती और समुद्र छान मारा, क्योंकि राजकुमारियाँ इतनी सुन्दर थीं कि सभी उनसे शादी करना चाहते थे। तलाश करनेवालों में तीन शिकारी भी थे, जो आठ दिन सफ़र करके एक विशाल महल में पहुँचे। वहाँ हर कमरा बेहद सजा-धजा था। एक कमरे में उन्हें एक बड़ी मेज़ दिखी, जिस पर तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन रखे थे। सभी वस्तुएँ एकदम गर्म थीं और उनमें

से भाप उठ रही थी। लेकिन उन्हें वहाँ कोई भी आदमी नहीं दिखायी पड़ा। यहाँ उन्होंने आधे दिन तक इन्तज़ार किया और उनके सामने गर्म-गर्म भोजन रखा रहा। आख़िरकार उन्हें भूख लग आयी और उन्होंने भरपेट खाना खा लिया। इसके बाद उन्होंने तय किया कि उनमें से एक महल में रहेगा और बाक़ी दोनों राजकुमारियों की तलाश में जाएँगे। अपनी बारी तय करने के लिए उन्होंने पर्ची डाली। सबसे बड़े भाई की घर पर रुकने की बारी आयी, इसलिए अगले दिन जब दोनों छोटे भाई बाहर गए तो सबसे बड़ा भाई घर पर रुका। दोपहर के समय एक बौना वहाँ भुने हुए मांस के टुकड़े लेकर आया, जिसे उसने छोटे टुकड़ों में काटा और सबको दिया। जब उसने शिकारी को वह टुकड़ा दिया तो वह टुकड़ा ज़मीन पर गिराकर शिकारी से उसे उठाने के लिए कहा। शिकारी नीचे झुका तो बौना तुरन्त उस पर झपट पड़ा और उसके बाल पकड़कर उसे बेहद पीटा। अगले दिन दूसरा भाई घर पर रुका लेकिन उसके साथ भी वही हुआ। जब दोनों भाई लौटे तो सबसे बड़े भाई ने पूछा कि उसका दिन कैसे बीता। भाई ने जवाब दिया, "बहुत बुरा, इतना बुरा कि मैं बता नहीं सकता।" और दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को आपबीती सुनायी। लेकिन उन्होंने सबसे छोटे भाई से कुछ नहीं बताया, क्योंकि उन्हें यह डर लगा कि वह यह सब सुनकर रुकने से मना कर देगा। तीसरे दिन सबसे छोटा भाई घर पर रुका। बौना हमेशा की तरह वहाँ मांस लेकर आया। एक टुकड़ा गिराकर छोटे भाई से उसे उठाने के लिए कहा। लेकिन भाई ने बौने से कहा, "क्या ! तुम अपने आप नहीं उठा सकते ? यदि तुम अपनी रोटी ख़ुद कमा सकते हो तो तुम्हें ख़ुशी मिलती, लेकिन तुम इसके लायक़ नहीं हो।"

यह सुनकर बौना बेहद नाराज़ हो गया। लेकिन लड़के ने उसे पकड़ लिया और उसे इस बुरी तरह झकझोरा कि वह चिल्ला पड़ा, "रुको, रुको ! मुझे जाने दो, मैं तुम्हें राजकुमारियों के बारे में बताता हूँ।"

जब लड़के ने यह सुना तो उसने बौने को छोड़ दिया। बौने ने उसे बताया कि वह पाताल लोक का बौना है और उसके जैसे वहाँ हज़ारों बौने हैं। वह उसे राजकुमारियों के रहने की जगह बता सकता है। राजकुमारियाँ एक सूखे कुएँ में रहती थीं। बौने ने यह भी कहा कि उसके बाक़ी दोनों भाई उसके साथ ईमानदारी का व्यवहार नहीं करेंगे। इसीलिए उसे राजकुमारियों को छुड़ाने के लिए अकेले ही जाना चाहिए। उसे वहाँ एक बड़ी टोकरी में बैठकर अपना शिकारी चाकू लेकर जाना चाहिए। वहाँ नीचे उसे तीन कमरे दिखेंगे, जिनमें हरेक में एक-एक राजकुमारी होगी। उनकी रक्षा अनेक सिरोंवाले जानवर कर रहे होंगे, जिनके सभी सिर उसे



काटने होंगे। बौना यह कहकर ग़ायब हो गया। शाम को दोनों भाई लौट आये और उन्होंने छोटे भाई से पूछा कि उसने अपना समय किस तरह बिताया। वह बोला, "वाह ! बहुत बढ़िया ! दोपहर में एक बौना आया था, जिसने मांस के टुकड़े काटे और एक टुकड़ा गिरा दिया। उसने फिर मुझे वह टुकड़ा उठाने के लिए कहा और मैंने मना कर दिया। उसे गुस्सा आ गया और फिर मैंने उसे झकझोर डाला। थक-हारकर उसने मुझे राजकुमारियों का पता बता दिया।"

इसे सुनकर दोनों भाई बेहद दुखी हो गये अैर ईर्ष्या से नीले पड़ गये। लेकिन अगली सुबह वे सभी पहाड़ी पर गये और फिर पर्ची डाली कि सबसे पहले टोकरी में बैठकर नीचे कौन जायेगा। पहले की ही तरह सबसे बड़े भाई की बारी आयी और वह अपने साथ एक घंटी लेकर नीचे चला गया। घंटी बजाने पर उसके भाइयों को उसे तुरन्त ऊपर खींचना था। वह थोड़ा-सा ही नीचे गया कि उसने तेजी से घंटी बजायी और जैसे ही वह ऊपर आया, दूसरा भाई उसकी जगह बैठ गया और नीचे गया। लेकिन उसने भी तुरन्त घंटी बजायी और उसे ऊपर खींच लिया गया। अब तीसरे भाई की बारी आयी। वह एकदम नीचे तक गया। वहाँ टोकरी से बाहर निकलकर बेधड़क चाकू हाथ में लेकर पहली मंज़िल तक गया। वहाँ उसे ख़तरनाक ख़र्राटों की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई पड़ी। सावधानीपूर्वक दरवाज़ा खोलने पर उसने राजकुमारी को भीतर देखा। नौ सिरोंवाला एक जानवर उसकी गोद में सिर रखकर लेटा था। उसने अपना चाकू उठाया और उसके सारे सिर काट डाले। राजकुमारी तुरन्त उछलकर उठी और उसे गले लगाया और चूमा। उसने उसे इनाम में सोने का हार भी दिया। इसके बाद वह दूसरी राजकुमारी के पास गया। उसके पास एक सात सिरवाला जानवर था। उसने उसे भी मुक्त किया और फिर सबसे छोटी राजकुमारी के पास गया। उसके पास चार सिरवाला जानवर बैठा था। इस जानवर को भी उसने मार डाला। फिर तीनों बहन उससे लिपट गयीं और उसे चूमने लगीं। लड़के ने ज़ोर से घंटी बजायी जिससे ऊपरवाले भाइयों को सुनाई पड़े। जब टोकरी नीचे आयी तो उसने बारी-बारी से तीनों राजकुमारियों को उसमें बिठाकर ऊपर पहुँचाया। लेकिन जब टोकरी उसके लिए नीचे आयी तो उसे बौने की बात याद आयी कि उसके भाई उसके साथ बेईमानी का व्यवहार करेंगे। उसने एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और उसे टोकरी में रख दिया। जैसे ही टोकरी आधी दूर तक गयी, भाइयों ने रस्सी काट दी और पत्थर नीचे गिर पड़ा। उन्होंने सोचा कि उन्हें अपने भाई से छुटकारा मिल गया है। उन्होंने राजकुमारियों से वचन लिया कि वे अपने पिता को बताएँगी कि उन्हीं लोगों ने उन्हें बचाया है। इसके बाद वे राजा के पास

गये और उनसे उनकी बेटियों से शादी करने की इच्छा ज़ाहिर की। इस बीच सबसे छोटा भाई दुखी होकर तीनों कमरों में भटकता रहा और उसे लगा कि वह वहीं मर जायेगा। अचानक उसे दीवार पर एक बाँसुरी दिखायी पड़ी और उसने सोचा, "वाह यह यहाँ किस काम आयेगी ? यहाँ ख़ुशी जैसा है ही क्या ?" उसने जानवरों के सिरों को ठोकर मारी और कहा, "ओह, तुम मेरे किस काम के ? तुम मेरी मदद तो कर नहीं सकते !" ऊपर-नीचे, आगे-पीछे अनेक बार वह चलता रहा, इतना चला कि ज़मीन घिस गयी।

दूसरे विचार भी साथ-साथ उसके मन में आते रहे। जब बाँसुरी उठाकर उसने फूँक मारी तो अचानक वहाँ अनेक बौने आ गये। उसने और बाँसरी बजायी और हर तान के साथ एक बौना आ जाता। आख़िरकार पूरे कमरे में बौने भर गये। सभी ने उससे पूछा कि वह क्या चाहता है ? उसने कहा कि वह ऊपर जाना चाहता है और सूरज की रोशनी देखना चाहता है। हर बौने ने तुरन्त अपने सिर से एक बाल तोड़ा और उन्होंने उसे कुएँ से ऊपर उड़ाकर धरती पर पहुँचा दिया। ऐसा वे तब तक करते रहे, जब तक उन्होंने उन बालों के सहारे शिकारी को ऊपर धरती पर नहीं पहुंचा दिया। जैसे ही वह वापस पृथ्वी पर पहुँचा, वह महल की ओर चल पड़ा। वहाँ वह राजकुमारियों की शादी के समय पहुँचा। वह तुरंत उस कमरे में गया, जहाँ राजा अपनी तीनों बेटियों के साथ बैठे थे। जैसे ही वह कमरे में घुसा तो वे इतनी भावविभोर हो गयीं कि बेहोश ही हो गयीं। इस पर राजा को बहुत गुस्सा आया और उसने उस अजनबी को जेल में डालने का आदेश दिया, क्योंकि उसे लगा कि उसके कारण उसकी लड़कियों को कष्ट पहुँचा है। लेकिन जल्दी ही लड़कियाँ होश में आ गयी और उन्होंने अपने पिता से उसे छोड़ देने का अनुरोध किया। पिता ने उनसे इसका कारण पूछा। तब उन्होंने उन्हें पूरी कहानी बताने से इनकार कर दिया। राजा ने कहा कि वे अपनी कहानी कमरे में बने चूल्हे को सुना दें। वह ख़ुद दरवाज़े के पीछे छिपकर सुनने लगा। जब राजा ने पूरी बात सुनी तो उसने अपनी सबसे छोटी लड़की की शादी उसकी जान बचानेवाले से कर दी।

और उनकी शादी में मैं काँच के जूते पहनकर गया था, जिन्हें दीवार पर मार-मारकर मैंने चकनाचूर कर दिया था।

8

जंगल की एक बूढ़ी औरत

एक ग़रीब लड़की नौकरानी थी। वह अपना सामान लेकर जंगल से गुज़र रही थी। जैसे ही वह जंगल के बीच पहुँची तो उसने पाया कि वह भयानक डाकुओं से घिरी है। वे अचानक झाड़ियों से उछलकर बाहर आ गये और उसकी ओर बढ़े। लेकिन वह डरकर अपनी गाड़ी से कूद गयी और एक पेड़ के पीछे छिप गयी। जैसे ही डाकू वहाँ से सामान लेकर चले गये, वह बाहर आ गयी। बस यहीं से उसका दुर्भाग्य शुरू हो गया। वह बुरी तरह रोने लगी और अपने आपसे बोली, "मैं क्या करूँ, मेरे जैसी ग़रीब लड़की, मैं जंगल से बाहर नहीं निकल सकती। यहाँ तो कोई नहीं रहता। मैं तो यहाँ भूख से मर जाऊँगी।"

वह जंगल से बाहर निकलने का रास्ता तलाश करने लगी, लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं मिला। जब शाम हुई तो वह एक पेड़ के नीचे बैठ गयी और तय किया कि वह ईश्वर के भरोसे वहीं रहेगी, चाहे जो भी हो जाये।

उसे वहाँ बैठे अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि एक छोटा सफ़ेद कबूतर वहाँ उड़कर आया। उसकी चोंच में एक छोटी सोने की चाभी थी। कबूतर ने चाभी लड़की के हाथ में रख दी और बोला, "क्या तुम वह बड़ा-सा पेड़ देख रही हो ? उसके भीतर एक अलमारी है, जो इस चाभी से खुलती है। उस अलमारी में तुम्हें पर्याप्त भोजन मिलेगा, जिससे तुम भूख से कभी नहीं मरोगी।" लड़की पेड़ के पास गयी और उसकी अलमारी खोलकर उसमें एक बर्तन भर दूध और रोटी देखी। उसने पेट भर खाना खाया। खा-पीकर वह अपने आपसे बोली, "घर पर मुर्ग़े-मुर्ग़ियाँ अपने दड़बों में चले गये होंगे और मैं भी सोना चाहती हूँ।" एक ही क्षण में कबूतर उड़ा और दूसरी सोने की चाभी लाकर बोला, "क्या तुमने वह पेड़ देखा है ? उसे खोलो तो उसमें तुम्हें बिस्तर मिलेगा।" उसने उसे खोला तो उसमें छोटा-सा सफ़ेद बिस्तर था। अपनी प्रार्थना करने के बाद वह सो गयी। सुबह कबूतर तीसरी बार

एक और चाभी लेकर आया और फिर लड़की को एक पेड़ खोलने के लिए कहा जिसमें ढेर सारे कपड़े थे। जब उसने वह खोला तो उसमें सोने और बेशक़ीमती रत्नों से सजे कपड़े थे, जैसे किसी राजकुमारी के हों। यहाँ वह लड़की कुछ समय रही और कबूतर उसे सभी ज़रूरत की चीज़ें लाकर देता रहा। यहाँ जीवन शान्त और आरामदायक था।



एक दिन कबूतर आया और उसने लड़की से पूछा कि क्या वह उससे प्रेम करेगी ? लड़की बोली, "हाँ, पूरे मन से।" कबूतर बोला, "मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ छोटी-सी कुटिया तक आओ। उसके भीतर जाने पर वहाँ तुम्हें एक बूढ़ी औरत मिलेगी, जो कहेगी 'नमस्ते', लेकिन कृपया मेरे लिए उसे कोई उत्तर मत देना। वह जो भी चाहे उसे कहने देना। उसके दायें हाथ की तरफ़ जाना तो तुम्हें एक दरवाज़ा दिखायी देगा, जिसे तुम खोलना। उससे एक कमरे में जाना। वहाँ एक मेज़ पर कई तरह की अँगूठियाँ रखी होंगी, जिनमें से कई रत्नजटित होंगी। उन्हें अलग छोड़ देना और एक सादी अँगूठी उठाकर जितनी जल्दी हो, मेरे पास लेकर आना।"

लड़की कुटिया तक गयी और भीतर पहुँची। वहाँ एक बूढ़ी औरत बैठी थी, जिसने उसे देखकर बुरी शक्ल बनायी। लेकिन बोली "नमस्ते।" लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया और दरवाज़े की ओर गयी। बूढ़ी औरत चिल्लायी, "कहाँ जा रही हो ? यह मेरा घर है और इसमें मेरी इजाज़त के बिना कोई नहीं जा सकता।" और उसने लड़की के कपड़े पकड़कर उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने चुपचाप अपने आपको छुड़ाया और उस कमरे में जाकर मेज़ पर अँगूठियों का ढेर देखा, जो चमचमा रहा था। उसने उन्हें एक ओर कर दिया और सादी अँगूठी तलाश करने लगी। लेकिन उसे वह नहीं मिली। जब वह तलाश कर रही थी तो उसने बूढ़ी औरत को भीतर आकर एक चिड़िया का पिंजरा उठाकर बाहर जाते देखा। लड़की उसके पीछे गयी और उससे पिंजरा ले लिया। जब उसने उसे देखा तो पक्षी के उस पिंजरे में अँगूठी दिखायी दी। उसने अँगूठी उठायी और ख़ुशी से दौड़ती हुई वापस लौटी। उसने सोचा कि कबूतर आकर अँगूठी ले लेगा, लेकिन वह नहीं आया। वह पेड़ से पीठ टिकाकर बैठ गयी और कबूतर की राह देखने लगी। लेकिन तभी पेड़ अपना रूप बदलने लगा जैसे कि वह कमज़ोर और झुका हुआ हो और उसकी शाख़ें गिरने लगीं। अचानक शाख़ें झुकीं और दो बाँहें बन गयीं और जब लड़की ने पलटकर देखा तो पेड़ एक सुन्दर आदमी में बदल चुका था। उसने लड़की को गले लगाकर चूमा और बोला, "तुमने मुझे बूढ़ी औरत से बचा लिया है, जो दुष्ट जादूगरनी है। उसने मुझे बहुत पहले पेड़ बना दिया था और मैं रोज़ थोड़े समय के लिए एक सफ़ेद कबूतर में बदल जाता था। लेकिन जब तक उसके पास अँगूठी थी, मैं वापस अपने रूप में नहीं आ सकता था। इसके बाद उसके नौकर और घोड़े भी जादू के प्रभाव से मुक्त हो गये। वे सभी उसके राज्य (वह एक राजा का बेटा था) को चल पड़े, जहाँ उसने उस लड़की से शादी की और वे हमेशा ख़ुशी से रहे।

9

तीन दिहाड़ी मज़दूर

तीन दिहाड़ी मज़दूर थे। वे हमेशा एक साथ ही कहीं जाते-आते थे और हमेशा एक ही शहर में काम करते थे। लेकिन एक बार उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली और धीरे-धीरे उनके पास खाने के लिए भी कुछ नहीं बचा। उन्होंने एक-दूसरे से पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए तो एक ने प्रस्ताव रखा कि अब उन्हें इस जगह पर नहीं रहना चाहिए, बल्कि जगह-जगह जाना चाहिए। जब वे किसी ऐसे शहर में पहुँचें, जहाँ कोई काम न हो तो वे अलग-अलग हो जाएँ। उन्होंने सराय के मालिक से तय किया कि वे उसे चिट्ठियाँ लिखेंगे, जिससे कि हरेक को पता रहेगा कि दूसरा कहाँ पर है। यही योजना सबसे अच्छी लगी। आख़िर वे सभी यात्रा पर निकल पड़े। सड़क पर उन्हें अच्छे कपड़े पहने हुए एक आदमी मिला। उसने उनके बारे में जानना चाहा तो वे बोले, "हम दिहाड़ी मज़दूर हैं, हम काम तलाश कर रहे हैं। अभी तक तो हम सफल रहे हैं, लेकिन जब हमें काम मिलना एकदम बन्द हो जाएगा, हम अलग-अलग हो जाएँगे।

अजनबी ने कहा, "इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं कहूँ यदि तुम लोग वैसा ही करो तो तुम्हें काम या पैसे की कमी नहीं होगी। तब तुम सेठ बन जाओगे और बग्घी में चलोगे।"

एक ने कहा, "यदि इससे हमारी ख़ुशी और अन्तरात्मा को कोई हानि नहीं होती है तो हम तुम्हारे कहे अनुसार ही करेंगे।"

वह आदमी बोला, "नहीं, मैं तुम्हारा कुछ नहीं लेना चाहता, कम से कम तुम्हारी सुख-शान्ति तो बिलकुल नहीं।"

दूसरे ने इस बीच अजनबी के पैर देखे। उसके दोनों पैरों में से एक घोड़े का खुर था। यह देखकर पहले पहल तो वह उस अजनबी की बात सुनने से डर गया, लेकिन वह बुरा व्यक्ति बोला कि उसे उनकी आत्माओं से कोई लेना-देना

नहीं है, बल्कि किसी और की आत्मा उसे चाहिए। यह आश्वासन मिलने पर तीनों ने उसे हामी भर दी। बुरे व्यक्ति ने उनसे कहा कि वह यह चाहता है कि हर सवाल के जवाब में पहला व्यक्ति "हम तीनों" दूसरा व्यक्ति "पैसों के लिए" और तीसरा व्यक्ति "यह सही है" चिल्लाए। यही जवाब उन्हें हर समय देना होगा और कोई दूसरा शब्द मुँह से नहीं निकालना होगा। जब तक वे उसकी बात मानेंगे, उनकी जेबें पैसों से भरी रहेंगी। शुरुआत में बुरे व्यक्ति ने उन्हें बहुत सारे रुपये दिये और एक ख़ास शहर में जाकर एक ख़ास सराय में रुकने के लिए कहा। वे वहाँ पहुँचे तो सराय के मालिक ने उनके पास आकर पूछा कि उन्हें कुछ खाने के लिए चाहिए या नहीं।

पहले आदमी ने कहा, "हम तीनों", दूसरे ने कहा, "पैसे के लिए" और तीसरे ने कहा, "यह सही है।" सराय-मालिक ने दोहराया "हाँ, यह सही है।"

जल्दी ही उनके सामने ढेर सारा खाना आ गया। जैसे ही उन्होंने खाना ख़त्म किया, सराय-मालिक खाने के पैसे लेने आ गया और बिल उनके सामने रख दिया। पहले ने कहा, "हम तीनों", दूसरे ने कहा, "पैसों के लिए" और तीसरे ने कहा, "आप लोग एकदम सही कह रहे हैं।" "आप तीनों को भुगतान करना पड़ेगा। पैसों के बिना मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता। सराय-मालिक के ऐसा कहने पर उन्होंने माँगे गये पैसों से भी ज़्यादा पैसे निकालकर दे दिये। यह देखकर वहाँ बैठे मेहमान एक-दूसरे से बोले, "ये लोग एकदम पागल हैं।" सराय-मालिक बोला, "हाँ, इनकी दिमाग़ी हालत एकदम ठीक नहीं लगती।" फिर भी वे उसकी सराय में रहे और 'हम तीनों' 'पैसों के लिए' और 'यह सही है' के अलावा एक भी शब्द नहीं बोले, इसके अलावा वे वहाँ की एक-एक गतिविधि को भी देखते-जानते थे।

एक दिन वहाँ एक बड़ा व्यापारी आया, जो अपने साथ बहुत सारे पैसे लेकर आया था। उसने सराय-मालिक से कहा, "मेरे सोने की देखभाल करो नहीं तो ये तीनों बेवक़ूफ़ इसे चुरा लेंगे।" सराय-मालिक ने थैले अपने कमरे में लाकर रख दिये। उसने महसूस भी किया कि वे थैले सोने से भरे हुए हैं। उसने तीनों दिहाड़ी मज़दूरों को नीचे के कमरों में रख दिया और व्यापारी को सबसे अच्छे कमरे में रखा। आधी रात में जब सराय-मालिक को लगा कि सभी सो गये हैं तो वह अपनी पत्नी को साथ लेकर धनी व्यापारी के कमरे में गया और उसे कुल्हाड़ी के वार से मार डाला। उसकी हत्या करके वे फिर सोने चले गये। जब सूरज उगा तो हंगामा शुरू हो गया, क्योंकि व्यापारी मरा हुआ पाया गया था। सराय में ठहरे हुए सभी लोगों को बुलाया गया। सराय-मालिक ने कहा कि व्यापारी की हत्या इन तीनों



दिहाड़ी मज़दूरों ने की है। इस बात से अन्य लोगों ने भी सहमति व्यक्त की और कहा कि कोई और व्यक्ति यह काम नहीं कर सकता। उन तीनों से जब पूछा गया कि यह काम उन्होंने किया है या नहीं, तो पहले ने जवाब दिया, ''हम तीनों'', दूसरे ने कहा ''पैसों के लिए'' और तीसरा बोला, ''यह सही है।''

सराय-मालिक बोला, ''इनकी बात सुनो, वे अपने आप ही स्वीकार कर रहे हैं। तीनों को क़ैद में डाल दिया गया और उन्हें समझ में आया कि यह तो बड़ी कठिन परिस्थिति आ गयी है। शाम तक बुरा व्यक्ति वहाँ आया और उनसे बोला, ''एक दिन और हौसला रखो और बेचैन मत होओ। तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं होगा।''

अगली सुबह उन्हें न्यायाधीश के सामने ले जाया गया। उसने उनसे पूछा, ''क्या तुमने ख़ून किया है ?'' पहला बोला, ''हम तीनों'', न्यायाधीश ने पूछा, ''क्यों ?'' दूसरा बोला, ''पैसों के लिए'' न्यायाधीश चिल्लाया, ''दुष्ट व्यक्तियो, तुम्हें अपने किये का अफ़सोस नहीं है ?'' तो तीसरे ने कहा, ''यह सही है।'' न्यायाधीश ने उन्हें मृत्युदण्ड दिया, क्योंकि उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था और उस पर दृढ़ता से टिके थे।

तीनों साथियों को ले जाया गया और सराय-मालिक को उनके साथ आरोपी के रूप में जाना पड़ा। जैसे ही उन्हें जल्लाद ने पकड़ा और उस तख़्ते पर खड़ा किया, जहाँ एक व्यक्ति तेज तलवार लेकर खड़ा था, अचानक चार लाल लोमड़ियों से जुती गाड़ी वहाँ तेज़ी से उड़ती हुई आयी और उसकी खिड़की से एक सफ़ेद रूमाल दिखायी दिया। जल्लाद ने कहा, ''यह तो माफ़ी का संकेत है।'' गाड़ी में से आवाज़ भी आ रही थी, 'क्षमा ! क्षमा !' गाड़ी से बुरा व्यक्ति उतरा। उसने एक राजा की तरह कपड़े पहने थे। उसने तीनों क़ैदियों से कहा, ''तुम निर्दोष हो, तुम अब बता सकते हो कि तुमने क्या देखा और क्या सुना।'' इस पर पहले मज़दूर ने कहा, ''हमने व्यापारी को नहीं मारा, ख़ूनी वहाँ खड़ा है।'' उन्होंने सराय-मालिक की ओर इशारा किया, ''इसका सबूत इसके कमरे में है, जहाँ इसके द्वारा मारे गये और दूसरे लोगों की लाशें भी पड़ी होंगी।''

न्यायाधीश ने अपने सिपाहियों को भेजा। वहाँ वैसा ही था। सराय-मालिक को पकड़कर उसका सिर धड़ से उड़ा दिया गया। बुरी आत्मा ने फिर तीनों से कहा, ''तुम मुक्त हो, तुम्हें ज़िन्दगी भर के लिए पैसे भी मिलेंगे, क्योंकि मुझे जो चाहिए था, वह मुझे मिल गया है।''

10

निडर राजकुमार

एक राजा का बेटा था। वह घर में बैठे-बैठे ऊब गया था। उसे किसी से डर भी नहीं लगता था। इसीलिए उसने दुनिया की सैर करने का विचार किया, जहाँ उसके लिए बहुत-सा समय और बहुत सी रोचक वस्तुएँ थीं। उसने अपने माता-पिता से अनुमति ली और चल पड़ा। वह सीधे दिन-रात चलता रहा, क्योंकि सभी रास्ते उसके लिए एक समान थे। चलते-चलते वह एक राक्षस के घर आ पहुँचा। बेहद थका हुआ होने की वजह से उसके घर के दरवाज़े के सामने ही बैठ गया। उसने आसपास देखा तो उसे वहाँ आंगन में मनुष्य के आकार की गेंदें और खिलौने पड़े दिखायी दिये, जो राक्षस के खेलने के काम आते थे। थोड़ी देर में उसकी खेलने की इच्छा हुई और उसने लकड़ी के खिलौनों को खड़ा करके उन्हें गेंद से मारा। वे सभी गिर गये तो वह आनन्द से चिल्लाया। राक्षस को यह आवाज़ सुनायी दी और उसने खिड़की से बाहर सिर निकालकर देखा तो पाया कि आम आदमियों जैसा कोई आदमी उसकी गेंदों से खेल रहा है।

राक्षस चिल्लाया, "ऐ कीड़े, तुम मेरी गेंदों से क्यों खिलवाड़ कर रहे हो ? इतनी ताक़त कहाँ से आयी ?" राजकुमार ने आसपास ऊपर-नीचे देखा तो उसे राक्षस दिखायी दिया। उसने जवाब दिया, "अरे बेवक़ूफ़, तुम्हें क्या लगता है कि सिर्फ़ तुम्हारे पास ही ताक़त है ? मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ।" राक्षस उतर कर नीचे आया और कौतूहल से उसके खेल को देखने लगा। फिर बोला, "आदमी के बच्चे, यदि तुम ऐसे ही हो तो फिर मेरे लिए जीवन-वृक्ष से एक सेब तोड़कर ला दो।"

राजकुमार ने पूछा, "तुम उसका क्या करोगे ?"

राक्षस बोला, "मुझे वह सेब अपने लिए नहीं चाहिए, बल्कि अपनी पत्नी के लिए चाहिए। मैंने अभी तक दुनिया में बहुत तलाश की है, लेकिन मुझे वह नहीं मिला।"

राजकुमार बोला, "मैं जल्दी ही वह सेब ला दूँगा। ऐसी कोई ताक़त नहीं है, जो मुझे सेब लाने से रोक सके।"

राक्षस बोला, "क्या तुम्हें लगता है कि यह इतनी आसान बात है ? जिस बग़ीचे में यह पेड़ है, उसके चारों ओर लोहे की बाड़ लगी है। उस बाड़ के बाहर अनेक जंगली जानवर हैं, जो बग़ीचे की रखवाली करते हैं।" राजकुमार बोला, "वे मुझे भीतर जाने देंगे।"

राक्षस ने कहा, "हाँ तुम पेड़ तक भी पहुँच जाओगे और सेब को लटकते हुए देख भी लोगे, लेकिन फिर भी तुम उसे तोड़ नहीं पाओगे। कारण यह है कि उस पेड़ पर एक छल्ला लटका है और सेब तोड़ने से पहले तुम्हें छल्ले से अपना हाथ निकालना होगा। यह काम आज तक किसी से नहीं हो पाया है।"

राजकुमार बोला, "तब तो मैं पहला भाग्यशाली व्यक्ति बनूँगा।" यह कहकर उसने राक्षस से विदा ली। वह खेतों-जंगलों, पहाड़ों-नदियों को पार करता हुआ अंततः एक सुन्दर बग़ीचे में आ पहुँचा। उसके चारों ओर जानवर घेरा डाले हुए थे। लेकिन उस समय वे सभी गहरी नींद में थे। वह उन्हें पार कर गया, तब भी वे नहीं जागे। बग़ीचे के बीचोंबीच जीवन-वृक्ष खड़ा था। उसकी शाख़ों पर लाल सेब चमक रहे थे। राजकुमार पेड़ पर चढ़ गया और जैसे ही उसने एक सेब की ओर हाथ बढ़ाया, उसे एक छल्ला लटकता हुआ दिखायी दिया, जिसमें से उसने बिना किसी मुश्किल के हाथ निकाल लिया और एक सेब तोड़ लिया। छल्ला सरककर उसकी बाँह पर ठीक बैठ गया और उसे लगा जैसे कि तुरन्त उसके शरीर में किसी ताक़त का प्रवाह हुआ हो। जब वह सेब लेकर पेड़ से नीचे उतरा तो वह बाड़ को लाँघकर बग़ीचे से बाहर नहीं निकला, बल्कि बड़े दरवाज़े के पास गया। उसने दरवाज़े को हिलाया तो वह झटके से खुल गया। वह बाहर निकल गया, लेकिन दरवाज़े के सामने बैठा शेर उसका पीछा करने लगा—गुस्से और हिंसक भाव से नहीं, बल्कि एक पालतू जानवर की तरह।

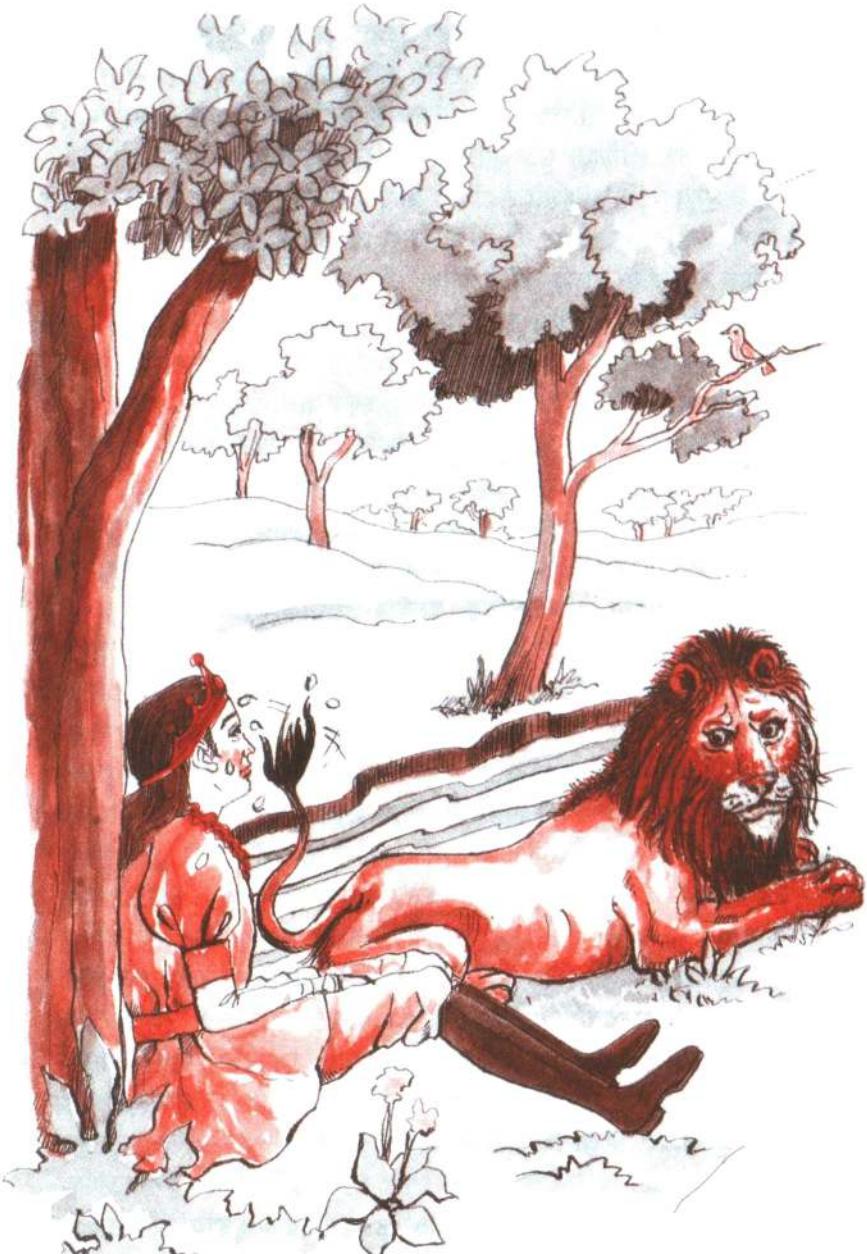
राजकुमार वह सेब लेकर राक्षस के पास गया और उससे बोला, "देखो, मैं कितनी आसानी से इसे तोड़ लाया।" राक्षस को इतनी जल्दी अपनी इच्छा पूरी हुई देखकर बेहद ख़ुशी हुई। वह तुरन्त अपनी पत्नी को उसका माँगा हुआ सेब देने गया। उसकी पत्नी एक सुन्दर युवा लड़की थी। उसने जब राक्षस की बाँह पर वह छल्ला नहीं देखा तो कहा, "मुझे नहीं लगता कि यह सेब तुम ख़ुद तोड़कर लाये हो। यदि ऐसा होता तो तुम्हारी बाँह पर छल्ला भी होता। राक्षस बोला, "मैं उसे घर से लेकर आता हूँ", क्योंकि उसे लगा कि वह राजकुमार से आसानी से

छल्ला ले लेगा। और यदि वह ख़ुशी-ख़ुशी छल्ला नहीं देगा तो उससे वह ज़बरदस्ती उतरवा लेगा। वह गया और उसने छल्ला माँगा, लेकिन राजकुमार देने के लिए तैयार नहीं हुआ। राक्षस बोला, "जहाँ सेब है, वहीं छल्ला रहेगा। यदि तुम इसे आसानी से नहीं दोगे तो मुझे तुमसे युद्ध करना पड़ेगा।"

वे बहुत देर तक कुश्ती लड़ते रहे, लेकिन राक्षस राजकुमार पर विजय नहीं पा सका, क्योंकि राजकुमार को तो छल्ले से और ताक़त मिल गयी थी। उसने एक चाल चली और राजकुमार से बोला, "मैं लड़ते-लड़ते थक गया हूँ, तुम भी थक गये हो। क्यों न हम युद्ध दोबारा शुरू करने से पहले पानी में एक-एक डुबकी लगाकर तरोताज़ा हो जाएँ।" राजकुमार को उसकी चाल समझ में नहीं आयी। वह नदी तक गया। उसने अपने कपड़े और छल्ला उतार दिया और पानी में कूद गया। जैसे ही वह पानी में कूदा, राक्षस ने छल्ला उठाया और वहाँ से भागा। लेकिन शेर ने, जो वहाँ बैठा यह देख रहा था, राक्षस का पीछा किया और उसके हाथ से छल्ला झपटकर अपने मालिक को वापस कर दिया। राक्षस एक पेड़ के पीछे छिप गया और जब राजकुमार अपने कपड़े पहन रहा था तो उसके पीछे से आया और उसे धकेलकर गिराने के बाद उसकी दोनों आँखें निकाल लीं।

बेचारा राजकुमार जब अन्धा हो गया था। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। तभी राक्षस आया और उसका हाथ पकड़कर एक खड़ी चट्टान के सिरे पर खड़ा कर दिया। उसने राजकुमार को वहीं छोड़ दिया और सोचने लगा, "यह दो क़दम और आगे बढ़ेगा और अपनी जान से हाथ धो बैठेगा। तब छल्ला मेरे क़ब्ज़े में होगा।" लेकिन स्वामिभक्त शेर ने अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ा। शेर ने उसके कपड़े मुँह से पकड़कर उसे कग़ार से दूर खींच लिया। बाद में जब राक्षस मरे हुए राजकुमार को देखने आया तो उसने पाया कि उसकी चाल तो विफल हो गयी है। राक्षस ग़ुस्से से बोला, "क्या यह कमज़ोर आदमी ख़त्म नहीं होगा ?" और उसका हाथ पकड़कर उसे दूसरे रास्ते से एक डरावनी खाई के पास ले आया। लेकिन यहाँ भी वफ़ादार शेर ने अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ा और उसे ख़तरे से बचा लिया। जैसे ही वे खाई की कग़ार तक पहुँचा तो राक्षस ने राजकुमार का हाथ छोड़ दिया। उसने यह सोचा कि वह आगे बढ़ता जाएगा, लेकिन शेर ने राक्षस को ही ऐसा धक्का दिया कि वही खाई में गिर गया और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये।

वफ़ादार शेर अपने मालिक को ख़तरे से बाहर निकाल लाया और उसे एक पेड़ के पास ले गया, जिसके पास साफ़ पानी की धारा बह रही थी। यहाँ शेर



ने अपने मालिक को बिठाया और अपनी पूँछ से उसके मुँह पर पानी छिड़कने लगा।

राजकुमार की आँखों पर जैसे ही पानी की एक-दो बूँदें पड़ीं, उसकी दृष्टि लौट आयी। उसने एक चिड़िया को देखा, जो उसके पास में उड़कर पेड़ की एक शाख़ पर बैठ गयी। फिर उसने पानी में डुबकी लगायी और तुरन्त पेड़ों के बीच उड़ गयी, क्योंकि वह भी अब देख सकती थी। राजकुमार ने ईश्वर की कृपा को पहचाना फिर वह पानी में नहाया और अपना मुँह धोया। जब वह बाहर आया तो वह पहले की ही तरह साफ़-साफ़ देख सकता था।

राजकुमार ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अपने वफ़ादार शेर को लेकर यात्रा करता रहा। चलते-चलते वह एक जादुई महल तक आ पहुँचा। महल के दरवाज़े पर एक लड़की खड़ी थी, जो बहुत सुन्दर, लेकिन काली थी। वह राजकुमार से बोली, "ओह, क्या तुम मुझे इस दुष्ट जादूगर से बचा सकते हो, जिसने मुझ पर जादू कर रखा है ?" राजकुमार ने पूछा, "मैं उसके लिए क्या कर सकता हूँ ?" राजकुमारी बोली, "तुम्हें इस महल में तीन रातें बितानी होंगी। लेकिन इस दौरान तुम्हें किसी भी चीज़ से डर नहीं लगना चाहिए। तुम्हें कितनी भी परेशानी हो और तुम घबराओ नहीं तो मैं बच जाऊँगी, क्योंकि फिर वे तुम्हारी ज़िन्दगी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते।"

राजकुमार बोला, "मैं किसी से नहीं डरता। ईश्वर की मदद से मैं पूरी कोशिश करूँगा।" यह कहकर वह ख़ुशी-ख़ुशी महल के भीतर चला गया। तब अँधेरा ही था। वह बैठ गया और इन्तज़ार करने लगा। आधी रात तक सब कुछ शान्त था, लेकिन उसके बाद भयानक आवाज़ें सुनायी दीं और हर कोने से बुरी आत्माएँ निकलकर बाहर आ गयीं। उन्होंने राजकुमार को देखा नहीं था। वे कमरे के बीच में आग जलाकर बैठ गयीं और खेलने लगीं। जब एक आत्मा हार गयी तो बोली, "यह ठीक नहीं है, यहाँ बाहर का कोई मौजूद है। उसकी वजह से ही मैं हार गयी।" दूसरों ने भी आवाज़ दी, "आओ यहाँ आ जाओ, चूल्हे के पीछे छिपे हुए व्यक्ति !" पूरे समय वे इतनी ज़ोर-ज़ोर से और इतने डरावने तरीक़े से चीख़ रही थीं कि कोई भी डर जाता। लेकिन राजकुमार शान्त रहा और डरा नहीं। आख़िरकार सारी आत्माएँ उसके ऊपर और उसके आसपास उछलने लगीं और वे इतनी सारी थीं कि वह अपने आपको नहीं बचा पाया। उन्होंने उसे ज़मीन पर खींच लिया, उसे झकझोरा, नोचा, पीटा और प्रताड़ित किया। लेकिन राजकुमार के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला, सुबह होते ही वे सभी आत्माएँ ग़ायब हो गयीं। लेकिन राजकुमार इतना

थक गया था कि उसके हाथ-पैर नहीं हिल रहे थे। सूरज चमकने लगा और वहाँ काली लड़की आयी, जिसके हाथ के एक बोतल में जीवन-जल था। इससे उसने राजकुमार का चेहरा पोंछा और राजकुमार की ताक़त वापस आ गयी। वह राजकुमार से बोली, "तुमने एक रात तो अच्छी तरह गुज़ार ली, लेकिन तुम्हारी परीक्षा की दो रातें अब भी बाक़ी हैं।" यह कहकर वह चली गयी। राजकुमार ने देखा कि उस लड़की के पैर गोरे हो गये हैं। अगली रात भी आत्माएँ आयीं और फिर उछलकूद करने लगीं। पिछली रात की ही तरह वे राजकुमार के ऊपर भी कूदती रहीं, जब तक कि उसका शरीर घावों से नहीं भर गया। उसने यह सब सहन किया और जब सुबह हुई तो वे सब चली गयीं। लड़की फिर आयी और जीवन-जल से उसके घाव ठीक किये। जब वह जाने लगी तो राजकुमार ने देखा कि लड़की की बाँहें भी गोरी हो गयी हैं। अब उसे केवल एक रात बितानी थी, लेकिन वह सबसे भयानक रात थी। जब बुरी आत्माओं का समूह आया और उन्होंने उसे देखा तो वे चिल्लायीं, "अरे ! तुम अभी भी यहीं हो ?" इसके बाद उन्होंने उसे ख़ूब मारा-पीटा, इधर-उधर धकेला, उसके हाथ पैर खींचे, लेकिन वह सब कुछ सहन करता रहा और चुपचाप रहा। जब आत्माएँ चली गयीं तो वह घायल अवस्था में बिना हिले-डुले पड़ा रहा। वह लड़की को देखने के लिए अपनी आँखें भी नहीं खोल पा रहा था, जो वहाँ जीवन-जल लेकर आयी थी। अचानक उसका सारा दर्द ख़त्म हो गया और वह पहले की ही तरह तरोताज़ा और शक्तिशाली महसूस करने लगा। जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसने पास खड़ी लड़की को देखा। वह बेहद गोरी और सूरज़ की रोशनी की तरह आभा लिये हुए थी। वह बोली, "उठो और अपनी तलवार महल की दीवार के ऊपर तीन बार घुमाओ। तब सभी मुक्त हो जाएँगे। जैसे ही राजकुमार ने ऐसा किया, पूरा महल उसके जादू से मुक्त हो गया और लड़की राजकुमारी के अपने असली रूप में आ गयी। उसके नौकर कमरे में आए और उन्होंने बताया कि बड़े कक्ष में खाने की मेज़ लग गयी है और उसमें मांस परोसा गया है। राजकुमार और राजकुमारी ने साथ-साथ खाना खाया और शाम को धूमधाम से उनका विवाह हुआ।

11

तकुआ, भरनी और सुई

एक छोटी लड़की थी। वह जब छोटी ही थी, तब उसके माता-पिता मर गये थे। गाँव की सीमा पर, वह और उसकी धर्म माता एक छोटी कुटिया में रहती थीं और कताई, बुनाई और सिलाई करती थी। उसने उस बेचारी बच्ची को रख लिया था और उसे पढ़ाती-लिखाती और काम सिखाती थी। जब लड़की पन्द्रह साल की हुई तो उसकी धर्ममाता बीमार पड़ गयी। लड़की को अपने बिस्तर के पास बुलाकर वह बोली, "मेरी बेटी मेरा अन्त नज़दीक आ रहा है। मैं तुम्हारे लिए यह कुटिया छोड़ रही हूँ, जो तुम्हें हवा और ख़राब मौसम से बचाएगी और साथ में यह तक़ुआ, भरनी और सुई छोड़ रही हूँ, जिससे तुम अपनी जीविका कमा सकती हो।" यह कहकर उसने अपना हाथ लड़की के सिर पर रखा और उसे आशीर्वाद दिया। वह बोली, "जब तक तुम ईश्वर का नाम लोगी, तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।" थोड़ी ही देर में उसकी धर्ममाता ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। जब उसे क़ब्र तक ले जाया गया तो बेचारी लड़की ताबूत के पीछे-पीछे बुरी तरह रोती हुई अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गयी।

अब वह छोटी लड़की अपनी कुटिया में अकेली रहती थी। मेहनत से धागा कातती, बुनती और सिलती थी। उस पर ईश्वर की कृपा थी। ऐसा लगता था कि उसके कमरे में रखा धागा अपने आप बढ़ जाता। जब वह कपड़ा बुनती या किसी क़मीज़ में तुरपन करती तो उसे पहले से ही ख़रीदार तैयार मिलता, जो उसे पर्याप्त क़ीमत दे देता। यह पैसे उसके लिए तो काफ़ी होते ही, कुछ और ग़रीब लोगों की भी वह मदद कर देती।

इसी समय देश के राजा का बेटा अपने लिए दुल्हन तलाश कर रहा था। उसे ग़रीब लड़की से शादी करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए उसने किसी अमीर लड़की से भी विवाह न करने का निश्चय किया था। वह बोला, "मेरी पत्नी वह

बनेगी जो एक साथ सबसे अमीर भी हो और सबसे ग़रीब भी।" जब वह उस गाँव में आया, जहाँ वह लड़की रहती थी तो उसने वहाँ की सबसे अमीर और सबसे ग़रीब लड़की का नाम पूछा। लोगों ने सबसे पहले सबसे अमीर लड़की का नाम बताया और फिर बताया कि सबसे ग़रीब लड़की वह है, जो गाँव की सीमा पर एक कुटिया में रहती है। राजकुमार सबसे पहले अमीर लड़की के पास गया। उसने उसे सजे-धजे दरवाज़े के सामने बैठा पाया। जैसे ही उसने राजकुमार को आते देखा तो वह उठी और नीचे झुककर उसका अभिवादन किया। राजकुमार ने उसे एक बार देखा और बिना एक भी शब्द बोले ग़रीब लड़की के घर की ओर चला गया। वह वहाँ दरवाज़े पर नहीं खड़ी थी, बल्कि अपनी रसोई में बैठी थी। राजकुमार ने अपना घोड़ा रोका और रसोई घर की खिड़की से देखते हुए पाया कि सूरज की तेज रोशनी वहाँ चमक रही थी अैर लड़की मेहनत से चरखे पर सूत कात रही थी। लड़की ने ऊपर देखा, लेकिन जैसे ही उसने राजकुमार को भीतर झाँकते हुए देखा तो वह शरमाकर गुलाब-जैसी लाल हो गयी। फिर वह नीचे देखने लगी और मेहनत से अपना काम करने लगी। उस समय सूत अच्छा कत रहा था या नहीं, यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन वह तब तक सूत कातती रही, जब तक राजकुमार वहाँ से चला नहीं गया। वह खिड़की तक आयी और उसे खोलकर बोली, "रसोई में बहुत गर्मी है।" लेकिन फिर भी वह खड़ी देखती रही, जब तक कि उसे राजकुमार की टोपी में लगे सफ़ेद पंख दिखायी देते रहे।

इसके बाद वह फिर काम करने बैठ गयी। उसे एक कविता याद आ गयी, जो उसकी धर्ममाता कातते समय गाती थी। वह गाने लगी—

"तकुए, तकुए बाहर जाकर,
प्रेमी को ले आओ जाकर।"

अभी उसने यह शब्द कहे ही थे कि तकुआ उसके हाथ से उछला और दरवाज़े के बाहर चला गया। उसने उसे खेतों के ऊपर हँसी-ख़ुशी नाचते और अपने पीछे एक सुनहरा धागा छोड़ते देखा। थोड़ी ही देर में वह नज़र से दूर हो गया। लड़की के पास कोई तकुआ नहीं था, इसलिए उसने भरनी उठायी और सूत कातने लगी।

इसी बीच तकुआ नाचते हुए चला गया और जब उसका धागा ख़त्म हो गया तो वह राजकुमार के पास पहुँच गया। वह बोला, "मैं क्या देख रहा हूँ ? तकुआ मुझे राह दिखा रहा है ?" और अपने घोड़े की गर्दन मोड़कर वह सुनहरे धागे के बताये रास्ते पर चल पड़ा। इसी समय काम करती हुई लड़की ने गाया—



"भरनी, भरनी बाहर जाकर,
प्रेमी को ले आओ जाकर।"

तुरन्त वह उसके हाथ से उछली और दरवाज़े से बाहर निकल गयी। दरवाज़े के सामने उसने एक बेहतरीन क़ालीन बुनना शुरू कर दिया। उसके दोनों सिरों पर गुलाब अैर कमलिनी के फूल और बीच में सुनहरी ज़मीन पर हरी पत्तियाँ, ख़रगोश, मुर्ग़े, पेड़, पक्षी सभी बने थे। पक्षी ऐसे थे, जैसे एकदम गा ही पड़ेंगे। यह सब भरनी ने इतनी तेज़ी से बनाया कि लगा जैसे कि अपने आप ही सब कुछ बना हो।

भरनी भाग गयी, इसलिए लड़की ने सिलना शुरू कर दिया। सिलते-सिलते वह गाने लगी–

"सुई, सुई, तेज़ सुई सुन्दर,
तैयार करो मेरा घर-बाहर।"

जैसे ही उसने यह गाया, सुई उसकी उँगलियों से उछलकर पूरे कमरे में उछलने लगी। ऐसा लगा जैसे कि अदृश्य आत्माएँ वहाँ काम कर रही हों, क्योंकि कुछ ही देर में मेज़ों पर हरे कपड़े और कुर्सियों पर मख़मल बिछ गये, दीवारों पर रेशमी पर्दे टंग गये। सुई ने अपना आख़िरी टाँका लगाया था कि लड़की ने खिड़की से राजकुमार की टोपी के सफ़ेद पंख देखे, जो उसकी कुटिया में तकुए के सुनहरे धागे के साथ आ रहा था। जैसे ही वह घर के सामने घोड़े से उतरा और क़ालीन से होकर कुटिया में आया वहाँ उसने कमरे में पुराने कपड़े पहने लड़की को देखा, जो काँटों में गुलाब-जैसी चमक रही थी।

राजकुमार बोला, "तुम सबसे ग़रीब, लेकिन फिर भी सबसे अमीर हो। मेरे साथ आओ, मैं तुमसे विवाह करूँगा।"

लड़की ने कुछ नहीं कहा, लेकिन अपना हाथ बढ़ा दिया। राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे लेकर वह कुटिया से बाहर चला गया। फिर उसने लड़की को अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया। वह उसे राजमहल में ले गया।

वहाँ धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ और उसके बाद तकुआ, भरनी और सुई को सम्मान के साथ ख़ज़ाने में रख दिया गया।

12

भेड़िया और आदमी

एक लोमड़ी ने एक भेड़िये को मनुष्य में मौजूद आश्चर्यजनक शक्ति के बारे में बहुत-सी कहानियाँ सुनायीं। उसकी इस शक्ति के कारण ही जानवर चालाक़ी से काम लेने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसके बिना वे मनुष्य का सामना नहीं कर सकते हैं। भेड़िये ने जवाब दिया "अगर कभी मैं किसी आदमी से मिला तो उस पर छलाँग लगाकर मैं उसे मार डालूँगा।"

इस पर लोमड़ी बोली, "ठीक है, मैं इसमें तुम्हारी मदद कर सकती हूँ। तुम कल तड़के मेरे साथ आ जाना। मैं तुम्हें आदमी दिखला दूँगी।"

अगले दिन भेड़िया जल्द ही आ गया। लोमड़ी, उसे उस सड़क की ओर ले गयी, जहाँ से होकर शिक़ारी रोज़ ही गुज़रा करते थे। सबसे पहले एक बूढ़ा रिटायर्ड फौज़ी आया।

भेड़िये ने पूछा, "क्या यह आदमी है ?"

लोमड़ी बोली, "नहीं, यह कभी था।"

इसके बाद स्कूल जा रहा एक बच्चा वहाँ आया। भेड़िये ने पूछा, "क्या यह आदमी है ?"

लोमड़ी बोली, "नहीं, यह आदमी होगा।"

इसके बाद एक वन-रक्षक आया, जिसने अपने कन्धे पर एक दुनाली बन्दूक़ लटका रखी थी और उसकी बग़ल में एक बड़ा-सा चाकू भी लटक रहा था।

उसके पास आने पर लोमड़ी भेड़िये से बोली, "देखो, यह आदमी इधर आ रहा है। इस पर तुम्हें झपटना चाहिए। लेकिन उससे पहले मैं अपनी माँद में जा रही हूँ।"

भेड़िये ने शिक़ारी पर छलाँग लगा दी। शिक़ारी ने जब भेड़िये को देखा तो बोला, "मैंने तो बन्दूक में ज़्यादा गोलियाँ ही नहीं भरीं," फिर भी उसने निशाना

साधकर भेड़िये के सिर में गोलियाँ दाग़ दीं। भेड़िये का चेहरा दर्द से विकृत हो गया, लेकिन वह बढ़ता ही गया। शिक़ारी ने दूसरी नली की गोलियाँ भी उस पर दाग़ दीं। अपने दर्द को दबाते हुए भेड़िया शिक़ारी पर तेज़ी से झपटा। शिक़ारी ने अपना लम्बा, तेज़ धारवाला चाक़ू निकाला और भेड़िये के ऊपर वार करने लगा। भेड़िया हल्की गुर्राहट के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा और उसका पूरा शरीर ख़ून से नहा गया।

थोड़ी देर में लोमड़ी ने वहाँ आकर भेड़िये से पूछा, "कहो भेड़िये भाई ! आदमी के साथ तुम्हारी मुलाक़ात कैसी रही ?"

भेड़िया बोला, "सच कहूँ तो उसकी शक्ति के कारण मेरी यह हालत नहीं हुई है। पहले तो शिक़ारी ने अपने कन्धे पर से एक छड़ी उतारी, फिर उसके अन्दर फूँका। उसके भीतर से कोई चीज़ तेज़ी से मेरे चेहरे पर आकर लगी और मुझे तीखी चुभन जैसा अहसास हुआ। शिक़ारी ने दोबारा अपनी छड़ी में फूँक मारी और उसके बाद तो मुझे ऐसा लगा, मानों तेज़ चमक के साथ पत्थरों की बौछार मेरे चेहरे पर हो रही है। जब मैं उसके और थोड़ा पास पहुँचा तो अपने शरीर में से उसने एक नंगी हड्डी निकाल ली। इससे वह मुझ पर तब तक वार करता रहा, जब तक कि मैं मुर्दे के समान उसके सामने नहीं गिर पड़ा।"

लोमड़ी बोली, "आह, क्या तुम यह भी नहीं समझते कि तुम कितने बड़े डींग मारनेवाले हो ! इतनी भी मत हाँका करो कि बात को वापस ही न समेट पाओ।"

13

रानी मधुमक्खी

एक बार दो राजकुमारों को कुछ साहसिक काम करने की सूझी। वे घर से अपनी यात्रा पर ऐसे निकले कि फिर वापस घर नहीं लौटे। इस पर उनका सबसे छोटा भाई डमलिंग उन्हें खोजने निकला। जब वे उसे मिल गये तो उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया, क्योंकि वह बहुत सीधा-सादा था। वे साथ चल पड़े। रास्ते में उन्हें दीमकों की बांबी मिली, जिसे दोनों बड़े भाइयों ने तोड़ दिया और छोटी दीमकों को अपने अंडे लेकर डरकर इधर-उधर भागते हुए देखने लगे। लेकिन डमलिंग बोला, "इन बेचारों को शान्ति से रहने दो। उन्हें मैं परेशान होते हुए नहीं देख सकता।" वे आगे चल पड़े और एक तालाब के पास आ गये, जिसमें बत्तख़ें तैर रही थीं। दोनों भाई भूनकर पकाने के लिए एक जोड़ी बत्तख़ पकड़ने का प्रयास करने लगे। लेकिन डमलिंग ने उन्हें रोका और कहा, "उन्हें छोड़ दो। मैं इन्हें मरने नहीं दूँगा।" अन्त में वे मधुमक्खियों के छत्ते के पास आ पहुँचे, जिसमें इतना सारा शहद था कि वह छत्ते के मुँह से टपक रहा था। दोनों भाई पेड़ के नीचे लेटकर पास से गुज़रती मधुमक्खियों को उनके शहद के लिए पकड़नेवाले थे। लेकिन डमलिंग ने फिर उन्हें रोका और बोला, "इन्हें छोड़ दो, मैं तुम्हें इनको नहीं पकड़ने दूँगा।"

इसके बाद तीनों भाई एक महल में आये, जहाँ अस्तबल में कई पत्थर के घोड़े खड़े थे, लेकिन वहाँ कोई आदमी नहीं दिखायी दे रहा था। वे सभी कमरों में आ गये और आख़िर में उन्हें एक ऐसा कमरा मिला, जिसके दरवाज़े पर तीन ताले बन्द थे। दरवाज़े के बीचों-बीच एक छेद था, जिससे कमरे के भीतर दिखायी देता था। जब उन्होंने उस छेद से कमरे के भीतर झाँका तो वहाँ एक ख़ूंख़ार-सा आदमी बैठा दिखायी पड़ा। उन्होंने उसे एक बार पुकारा, दूसरी बार पुकारा, लेकिन उसने नहीं सुना। जब उन्होंने उसे तीसरी बार पुकारा तो वह उठा और दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गया। वह बिना कुछ बोले उन्हें खाने-पीने के सामान से लदी

एक मेज़ के पास ले गया। उन्होंने ख़ूब खाया-पीया और फिर वह उन्हें अलग-अलग शयन कक्ष में ले गया। अगली सुबह वह सबसे बड़े भाई के पास आया और उसे जगाकर एक पत्थर की मेज़ के पास ले आया, जिस पर तीन वाक्य लिखे हुए थे। पहला वाक्य यह था कि जंगल में घास के नीचे राजकुमारी के एक हज़ार मोती पड़े हैं, जिन्हें तलाश करना है और यदि सूरज डूबने तक सभी मोती नहीं मिल पाये तो तलाश करनेवाला पत्थर का हो जाएगा। सबसे बड़ा भाई गया और पूरे दिन मोती तलाश करता रहा। लेकिन उसे केवल सौ मोती ही मिले। उसके साथ वैसा ही हुआ, जैसा मेज़ पर लिखा था—वह पत्थर का हो गया। अगले दिन दूसरा भाई इस काम पर निकला, भाई लेकिन उसे भी बड़े भाई जैसा ही डर था। उसे केवल दो सौ मोती मिले और वह भी पत्थर का हो गया। अब डमलिंग की बारी आयी, जिसने पूरी घास में मोती तलाश कर डाले, लेकिन यह आसान काम नहीं था। काम धीरे-धीरे चल रहा था कि दीमकों का राजा, जिसकी जान उसने बचायी थी, अपने पाँच हज़ार साथियों को लेकर आया और थोड़ी ही देर में उन्होंने पूरे मोती तलाश करके ढेर लगा दिया।

मेज़ पर लिखा दूसरा वाक्य था कि उस तालाब में से राजकुमारी के शयन-कक्ष की चाभी तलाश करके लाना, जिसके पास से संयोग से वे लोग गुज़रे थे। जब डमलिंग तालाब के पास आया तो वे बत्तख़ें, जिनकी उसने जान बचायी थी, जल्दी से पानी में डुबकी लगाकर चाभी निकाल लायीं। मेज़ पर लिखा तीसरा वाक्य सबसे कठिन था। राजा की तीनों बेटियों में सबसे छोटी और सबसे सुन्दर लड़की को पहचानना था। वे सभी सोयी हुई थीं और एक-सी दिख रही थीं। उनकी पहचान का कोई भी चिह्न नहीं था सिवाय इसके कि उन्होंने सोने से पहले अलग-अलग मीठी चीज़ें खायी थी। सबसे बड़ी ने शक्कर खायी थी, मझली ने थोड़ा शर्बत पिया था और सबसे छोटी ने शहद खाया था। तभी वहाँ रानी मधुमक्खी आयी, जिसे डमलिंग ने बचाया था और उसने तीनों का मुँह सूँघकर देखा। आख़िर में वह उस, राजकुमारी के ऊपर बैठ गयी जिसने शहद खाया था और जो सबसे छोटी और सबसे सुन्दर थी। उसी समय सारा मायाजाल टूट गया और जो भाई पत्थर बन गये थे, वापस मनुष्य बन गये। डमलिंग की शादी सबसे छोटी राजकुमारी से हो गयी और वह पिता की मृत्यु के बाद राजा बना। बाक़ी दोनों भाइयों का विवाह भी बाद में दोनों राजकुमारियों से हो गया।

14

तीन पंख

किसी समय की बात है, एक राजा था, जिसके तीन बेटे थे तीनों बेटों में दो तो साहसी और समझदार थे, जबकि तीसरा बेटा बहुत सीधा-सादा था। वह अपने बारे में कभी कोई गप्प न हाँकता और न ही कोई दावे करता। इसलिए सभी उसे डमलिंग के नाम से जानते थे। इधर राजा अब बूढ़ा और कमज़ोर हो गया था। उसे लग रहा था कि उसकी ज़िन्दगी के अधिक दिन नहीं बचे हैं। लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि अपने बाद वह राज्य देने के लिए तीनों बेटों में से किसे चुने। इसलिए तीनों को बुलाकर उसने उनसे कहा, "तुम लोग यात्रा पर निकल जाओ। तुममें से जो भी सबसे सुन्दर क़ालीन लेकर मेरे पास आएगा, मेरी मृत्यु के बाद वही राजा होगा।" इसके बाद, उनके आपसी झगड़े को रोकने के लिए राजा उन तीनों को महल के बाहर ले गया। वहाँ उसने तीन पंखों को हवा में फूँककर उड़ा दिया और उनसे बोला, "ये जिधर भी उड़कर जाते हैं, तुम्हें भी उधर ही जाना है।"

एक पंख उड़कर पूर्व दिशा की ओर गया, दूसरा पश्चिम की ओर उड़ा। जबकि तीसरा बिलकुल सामने की ओर गया। यह पंख थोड़ी दूर जाकर ही ज़मीन पर गिर गया। डमलिंग का मज़ाक उड़ाते हुए एक भाई दाहिनी तथा दूसरा बायीं ओर अपने-अपने पंख की दिशा में चला गया। डमलिंग को वहाँ रुकना पड़ा, जहाँ जाकर उसका पंख गिरा था।

डमलिंग दुखी होकर पंख के पास बैठ गया। अचानक उनकी नज़र पंख के पास बने चोर-दरवाज़े पर पड़ी। उसने उसके ढक्कन को उठाया तो उसे सीढ़ियाँ दिखायी दीं। वह उनसे होकर ज़मीन के नीचे उतर गया। नीचे एक और दरवाज़ा था। जब उसने उसे खटखटाया तो किसी के गाने की आवाज़ आयी—

"ओ मेंढक, टेढ़े पैरोंवाले,
छोटे और हल्के हरे;
देखो दरवाज़ा कौन खटखटाये,
ले जाओ भीतर उसे न रखो खड़े!"

दरवाज़ा खुल गया तो अन्दर जाकर उसने देखा कि एक बड़ा मेंढक बहुत सारे छोटे मेंढकों से घिरा हुआ बैठा है। बड़े मेंढक ने उससे पूछा कि वह क्या चाहता है ? इस पर उसने कहा, "मैं बेहतरीन और सबसे सुन्दर क़ालीन चाहता हूँ।" इस पर बड़े मेंढक ने एक युवा मेंढक को बुलाकर उससे कहा, "मेरे पास बड़ा बक्सा लेकर आओ।" युवा मेंढक उसे ले आया तो बड़े मेंढक ने बक्से को खोला। उसमें से एक बहुत सुन्दर क़ालीन निकालकर उसने डमलिंग को दे दिया। यह क़ालीन इतना सुन्दर था कि कोई भी ऐसा क़ालीन नहीं बना सकता था। डमलिंग ने इसके लिए मेंढक को धन्यवाद दिया और क़ालीन लेकर सीढ़ियों के ऊपर आ गया।

इस बीच उसके दोनों भाइयों ने सोचा कि छोटा भाई तो बहुत सीधा-सादा है और वह कुछ भी नहीं ला पाएगा। इसलिए उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "किसी गड़रिये की पत्नी की पीठ पर हमें जो भी सबसे सुन्दर चादर मिले, उसे लेकर ही हम चलते हैं।" उन्हें जैसे ही इस तरह की चादर दिखी, उसे चुराकर वे लोग राजा के पास आ गये। लगभग उसी समय डमलिंग भी अपना बेहतरीन और सुन्दर क़ालीन लेकर राजा के पास आया। जैसे ही राजा ने यह क़ालीन देखा, वह आश्चर्यचकित रह गया और तुरन्त बोला, "अधिकारपूर्वक देखा जाए तो यह राज्य तुममें से सबसे छोटे भाई का है।" लेकिन बाक़ी दोनों भाई राजा के पीछे पड़ गये और कहने लगे, "यह असम्भव है कि डमलिंग को यह राज्य दिया जाए, क्योंकि इसे तो साधारण समझ भी नहीं है।"

इस पर राजा ने निर्णय दिया कि जो भी सबसे सुन्दर अँगूठी लेकर आएगा, वही उसका उत्तराधिकारी होगा। पिछली बार की तरह इस बार भी राजा उन्हें महल के बाहर ले गया। तीन पंख लेकर उसने उन्हें हवा में उड़ा दिया, ताकि वे अपने-अपने पंख के पीछे जा सकें। दोनों बड़े भाई पहले की तरह पूर्व और पश्चिम दिशा में गए, जबकि डमलिंग का पंख चोर-दरवाज़े के पास आकर गिर गया। वह सीढ़ियों से उतरकर दूसरी बार मोटे बूढ़े मेंढक के पास गया और उसे बताया कि वह दुनिया की सबसे सुन्दर अँगूठी चाहता है। मेंढक ने अपना गहनों का पिटारा लाने का आदेश दिया। इसमें से उसने एक अँगूठी निकालकर उसे दी, जिसमें हीरे चमक

रहे थे। सुनार द्वारा बनायी गयी दुनिया की किसी भी अँगूठी से यह अधिक सुन्दर थी। दोनों बड़े भाइयों ने अधिक भागदौड़ न करके एक कील को अँगूठी का आकार दे दिया और उसे लेकर राजा के पास आ गये। लेकिन जैसे ही डमलिंग ने अपनी सोने की अँगूठी दिखायी, राजा बोला, "राज्य पर इसका अधिकार है।" लेकिन दोनों बड़े भाइयों ने राजा को शान्ति से नहीं बैठने दिया, जब तक कि उसने तीसरी शर्त नहीं रख दी। शर्त यह थी कि जो भी उसके पास सबसे सुन्दर लड़की लेकर आएगा, उसे ही राज्य मिलेगा। राजा ने तीसरी बार पंखों को हवा में उड़ाया। पहले की तरह ही दो पंख पूर्व और पश्चिम दिशा में गये और तीसरा पंख सीधे सामने की ओर गया।

अब डमलिंग एक बार फिर नीचे उतर कर मोटे मेंढक के पास पहुँचा और बोला, "मुझे जो सबसे सुन्दर दुल्हन मिल सके, उसे लेकर घर जाना है।" मेंढक सोचता हुआ बोला, "सबसे सुन्दर दुल्हन ! सबके लिए इसे पाना आसान नहीं है, परन्तु तुम्हें वह ज़रूर मिलेगी।" मेंढक ने डमलिंग को एक खोखली गाजर दी, जिसमें छह छोटी चुहिया जुती हुई थीं। डमलिंग ने उदास होकर पूछा कि वह उसे लेकर क्या करेगा। मेंढक बोला कि मेरी छोटी नौकरानियों में से किसी को भी तुम गाड़ी में बिठा दो। डमलिंग ने मोटे मेंढक के चारों ओर घेरा बनाकर बैठे मेंढकियों में से एक मेंढकी को लेकर गाड़ी में बिठा दिया। ऐसा करते ही वह एक सुन्दर लड़की में बदल गयी। खोखली गाजर और छह चुहियाँ भी सुन्दर रथ और घोड़ों में बदल गये। डमलिंग ने उस लड़की को चूमा और उसे लेकर राजा के महल की ओर चल पड़ा। उसके दोनों भाई बाद में पहुँचे। सुन्दर लड़की की खोज के लिए उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया था। उन्हें जो भी पहला किसान मिला उसकी लड़की को वे लेकर आ गये। जब राजा ने सभी लड़कियों को देखा तो वह बोला, "मेरी मृत्यु के बाद मेरा राज्य मेरे छोटे बेटे का होगा।"

लेकिन दोनों बड़े भाइयों ने राजा को शान्ति से बैठने नहीं दिया। बार-बार एक ही बात कहने लगे, "हम किसी भी हाल में डमलिंग को राजा नहीं बनने देंगे।" उन्होंने कहा कि उन तीनों में से सबसे अच्छा कौन है, इसकी जाँच की जानी चाहिए। जिसकी पत्नी बड़े कमरे में टँगे हुए छल्ले में से छलाँग लगाकर दूसरी ओर ठीक से पहुँच जाए, वह सर्वश्रेष्ठ होगा। वे मन ही मन सोच रहे थे कि "ये किसान बेटियाँ निश्चय ही खरी साबित होंगी, जबकि वह कोमल-सी लड़की छलाँग लगाने के प्रयास में अपनी जान गँवा बैठेगी।" आख़िरकार राजा ने उनकी बात मान ली। किसान की बेटियाँ छल्ले में से आसानी से कूद तो गयीं, लेकिन

इतनी भारी थीं कि कूदते ही वे गिर पड़ीं और अपने हाथ-पैर तुड़वा बैठीं। इसके बाद डमलिंग की सुन्दर दुल्हन ने बिलकुल हिरन के बच्चे की तरह एक हल्की और गरिमापूर्ण छलाँग लगायी और सारे विरोधों का अन्त कर दिया। इस प्रकार, अंततः डमलिंग को राजमुकुट मिल ही गया। उसने बुद्धिमत्ता से अत्यन्त लम्बे समय तक सुखपूर्वक राज किया।

15

हिमानी और लाली

एक ग़रीब विधवा थी, जो अपनी झोंपड़ी में अपने दो बच्चों के साथ रहती थी। उसके बच्चों के नाम थे हिमानी और लाली, क्योंकि वे झोंपड़ी के सामने लगी गुलाब की झाड़ी पर उगनेवाले दो गुलाब के फूलों की तरह थे। वे बहुत शान्त, भले, मेहनती और प्यारे बच्चे थे। हिमानी लाली से अधिक शान्त और नम्र थी। लाली घास के मैदान में उछलकूद करके फूल तोड़ती और तितलियाँ पकड़ती, जबकि हिमानी घर पर रहकर अपनी माँ के काम में हाथ बँटाती और यदि कोई काम न होता तो उसे कुछ पढ़कर सुनाती। दोनों बच्चे एक-दूसरे से बेहद प्यार करते और हमेशा हाथों में हाथ डाले एक-दूसरे के साथ रहते। जब भी वे इस बारे में बात करते तो वे तय करते कि वे एक-दूसरे से कभी अलग नहीं होंगे और हमेशा एक-दूसरे से मिल-बाँटकर रहेंगे। अक्सर वे जंगलों में जाकर जंगली बेर इकट्ठा करते, लेकिन उन्हें कभी किसी जानवर ने नुक़सान नहीं पहुँचाया। ख़रगोश उनके हाथों से गोभी खाता और मुर्ग़ा उनके पास बैठकर ही दाना चुगता। बकरियाँ उनके साथ खेलतीं और पक्षी उनके पास शाख़ों पर बैठकर ऐसे गाते, जैसे वहाँ कोई न हो। उनके साथ कभी कोई दुर्घटना नहीं घटी। यदि जंगल में उन्हें कभी रात भी हो जाती तो वे वहीं घास पर सो जाते और सुबह लौटते। उनकी माँ को उस बारे में पता होता, इसलिए वह उनकी चिन्ता नहीं करती। एक बार जब उन्होंने इस तरह जंगल में रात बितायी तो सुबह होने पर उन्हें अपने पास चमक़ीले सफ़ेद कपड़े पहने एक बच्ची बैठी हुई मिली। वह बच्ची उठी और उनकी तरफ़ देखकर बिना कुछ बोले जंगल में चली गयी। जब बच्चों ने उसे तलाश किया तो उन्होंने देखा कि वे एक गड्ढे के किनारे पर सोये थे। यदि वे कुछ कदम आगे भी बढ़े होते तो उसमें गिर गये होते। उनकी माँ ने कहा कि वह बच्ची निश्चय ही देवदूत थी, जो उनकी जंगल में रक्षा कर रही थी।

हिमानी और लाली अपनी झोंपड़ी को इतना साफ़-सुथरा रखतीं कि उसमें रहना किसी को भी अच्छा लगता। गर्मियों में रोज़ सुबह लाली घर ठीक करती, फिर अपनी माँ के लिए एक गुलदस्ता बनाती, जिसमें वह हर गुलाब से एक कली ज़रूर लगाती। हर सर्दियों में सुबह हिमानी आग जलाती और पानी उबालती। वह केतली इतनी अच्छी तरह से साफ़ करती कि ताँबे की केतली भी सोने की तरह चमकती रहती। शाम को जब बर्फ़ गिरने लगती तो माँ कहती, "हिमानी, जल्दी जाकर दरवाज़ा बन्द करो," और वे आग के पास बैठ जातीं। फिर माँ चश्मा लगाकर धार्मिक किताब पढ़तीं और बच्चियाँ पास में बैठकर सूत काततीं। उनके पास में एक छोटी-सी भेड़ भी बैठी रहती और पीछे एक छोटी बत्तख़ भी अपने पंखों में मुँह छिपाये बैठी रहती।

एक शाम जब वे इस तरह आराम से बैठी थीं कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। माँ बोली, "जल्दी करो लाली, जल्दी से दरवाज़ा खोलो। शायद कोई यात्री भीतर आना चाहता है।" लाली गयी और दरवाज़ा खोलकर उस बेचारे यात्री को देखने लगी। पर यह क्या ! वहाँ तो यात्री की बजाय एक मोटे भालू ने अपना बड़ा काला सिर भीतर किया। लाली घबराकर भीतर भागी, भेड़ मिमियाने लगी, बत्तख़ पंख फड़फड़ाने लगी और हिमानी अपनी माँ के बिस्तर के पीछे छिप गयी। भालू बोलने लगा, उसने कहा, "डरो मत, मैं कोई नुक़सान नहीं पहुचाऊँगा। लेकिन मैं बर्फ़ से आधा जमा हुआ हूँ और अन्दर आकर थोड़ी गर्मी लेना चाहता हूँ।"

माँ बोली, "बेचारा भालू ! अन्दर आकर आग के सामने लेट जाओ, लेकिन ध्यान रखना कि कहीं जल ही न जाओ।" फिर वह आगे बोली, "इधर आओ हिमानी और लाली। भालू तुम लोगों को नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। वह, अच्छा है।" वे दोनों यह सुनकर वापस आ गयीं और भेड़ और बत्तख़ ने भी अपना डर छोड़कर मेहमान का स्वागत किया।

भालू भीतर आने से पहले बोला, "बच्चो, ज़रा मेरे ऊपर से बर्फ़ तो झाड़ो।" और बच्चों ने ब्रश से भालू के ऊपर की बर्फ़ झाड़ी। इसके बाद वह आग के सामने लेट गया और सन्तोष से थोड़ा गुर्राया। बच्चे भी कुछ ही देर में उससे खेलने लगे। उन्होंने उसके भीगे बाल खींचे, उसकी पीठ पर पैर रखे, उसे आगे-पीछे धकेला और एक छड़ी से उसे थोड़ी-बहुत मार भी लगायी और जब वह गुर्राया तो वे हँसे। भालू ने इस सबका मज़ा लिया। जब बच्चों ने उसे ज़ोर से मारा तो वह चिल्लाया—

"छोड़ दो, मुझे छोड़ दो,
लाली और हिमानी,
वर्ना नहीं होगी तुम्हारी शादी।"

जब रात हुई तो माँ ने भालू से कहा, "यदि तुम चाहो तो तुम यहाँ आग के पास लेट जाओ। तुम यहाँ ठण्ड से बच भी सकते हो।"

जैसे ही सुबह हुई बच्चों ने भालू को बाहर जाने दिया और वह भालू उछलता हुआ बर्फ़ में बाहर निकल गया। उसके बाद वह हर शाम तय समय पर आता और भट्ठी के पास लेट जाता। बच्चे उससे मन भरकर खेलते और धीरे-धीरे वह उसके इतने आदी हो गये कि अपने काले दोस्त के आने तक वे दरवाज़ा बन्द नहीं करते थे।

लेकिन जैसे ही बसन्त ऋतु आयी और बाहर सब कुछ हरा-भरा हो गया, भालू ने एक सुबह हिमानी से कहा कि उसे वापस जाना होगा और वह पूरी गर्मियों भर नहीं लौटेगा। हिमानी ने पूछा, "प्यारे भालू, तुम कहाँ जा रहे हो ?" भालू बोला, "मुझे जंगल में जाकर दुष्ट बौनों से अपने ख़ज़ाने की रक्षा करनी होगी। सर्दियों में जब ज़मीन कड़ी हो जाती है तो वे अपने बिलों में दुबके रहते हैं। अब बर्फ पिघलने पर बौने बाहर निकल आते हैं। उन्हें जो कुछ मिलता है, उसे चुरा लेते हैं और वे जो भी उठाकर अपनी गुफ़ाओं में ले जाते हैं, वह आसानी से वापस नहीं मिल पाता।" हिमानी भालू के जाने से बेहद दुखी हुई और उसने इतने दुखी होकर थोड़ा-सा दरवाज़ा खोला कि भालू के बाहर निकलते समय उसके बालों का एक गुच्छा दरवाज़े में ही फँस गया। उसके बालों के उखड़ने से उसकी ख़ाल में जो छेद बन गया उससे हिमानी को उसमें सोना चमक़ता हुया दिखायी दिया। लेकिन वह एकदम निश्चिन्त भी नहीं था। भालू दौड़कर चला गया और पेड़ों के बीच खो गया।

थोड़ी देर बाद माँ ने बच्चों को जंगल में लकड़ियाँ बीनने भेजा। लकड़ियाँ बीनते-बीनते उन्हें रास्ते पर पड़ा एक पेड़ मिला, जिसके तने पर घास से कुछ ऊपर-नीचे हो रहा था। वे समझ नहीं पायीं कि वह क्या था। जब वे पास आयीं तो उन्होंने एक बौने को देखा, जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ थी और एक गज़ लम्बी सफ़ेद दाढ़ी थीं। उसकी दाढ़ी का सिरा एक खपच्ची में अटका था और बौना रस्सी से बाँधे हुए कुत्ते की तरह उछल-उछलकर मुक्त होने की कोशिश कर रहा था। उसने अपनी लाल अँगारे भरी आँखों से लड़कियों को देखा और बोला, "तुम यहाँ क्यों खड़ी हो ? क्या तुम मेरी कोई मदद किये बिना ही चली जाओगी ?" लाली ने पूछा, "तुमने क्या किया है बौने ?" वह बोला, "बेवक़ूफ़, घूरनेवाली ! मैं पेड़ को तोड़कर अपनी रसोई के लिए थोड़ी लकड़ी ले जाना चाहता था, क्योंकि हमें तो थोड़ी-सी ही लकड़ी चाहिए। मैंने ठीक से कुल्हाड़ी मारी थी और लकड़ी ठीक से ही कट



रही थी कि अचानक बीच में मेरी दाढ़ी फँस गयी। मैं उसे निकाल ही नहीं पा रहा हूँ। सफ़ेद मुँहवाली लड़कियो, हँसो मत, तुम कुछ कर नहीं सकतीं क्या ?''

बच्चों ने बौने की दाढ़ी बाहर निकालने के लिए हर सम्भव प्रयास किया। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। आख़िरकार लाली बोली, ''मैं जाकर किसी को मदद के लिए बुलाती हूँ।''

बौना चिल्लाया, "अरे पागल, अरे बेवक़ूफ़ किसी और को किसलिए बुलाना है ? तुम लोग ही काफ़ी हो। क्या तुम लोग ही कोई उपाय नहीं खोज सकतीं ?"

हिमानी बोली, "इतने बेसब्र मत हो। मैंने कुछ सोचा है," और यह कहकर अपनी जेब से कैंची निकाली और दाढ़ी का सिरा काट दिया। जैसे ही बौने को मुक्ति मिली तो उसने पेड़ की जड़ों के बीच फँसा अपना थैला बाहर निकाला, जिसमें सोना भरा था और उसे कन्धे पर लादकर बड़बड़ाता हुआ चल पड़ा, "बेवक़ूफ़ लोग ! मेरी दाढ़ी का कोना काट दिया सत्यानाश हो तुम्हारा !" और यह कहते हुए वह बच्चों पर एक नज़र डालकर चला गया।

कुछ देर बाद हिमानी और लाली मछली पकड़ने गयीं। जैसे ही वे तालाब के पास पहुँची तो उन्होंने देखा कि एक बड़े टिड्डे-जैसी चीज़ किनारे पर इस तरह उछल रही है, जैसे कि वह पानी में छलाँग लगाने ही वाली है। उन्होंने बौने को पहचान लिया। लाली ने पूछा, "तुम क्या कर रहे हो ? तुम पानी में गिर पड़ोगे।" बौना बोला, "मैं इतना बेवक़ूफ़ नहीं हूँ। लेकिन तुम यह नहीं देख रहे कि यह मछली मुझे भीतर खींच लेगी ?" बौना वहाँ काँटा डाले बैठा था और दुर्भाग्य से हवा से उड़कर उसकी दाढ़ी डोरी से अटक गयी थी। इसी वजह से जब कोई बड़ी मछली फँसी तो बेचारा बौना उसे खींच नहीं पाया और मछली जीत गयी। बौने ने पास उगे सरकंडे भी पकड़े, लेकिन कोई लाभ न हुआ, क्योंकि मछली ने उसे खींच लिया था और वह जल्दी ही पानी में डूबनेवाला था। सौभाग्य से तभी वहाँ ये दोनों लड़कियाँ आ पहुँची और बौने की दाढ़ी को डोरी से छुड़ाने की कोशिश करने लगीं। लेकिन दाढ़ी डोरी में बुरी तरह उलझ गयी थी। लड़की ने यह देखकर अपनी कैंची निकाली और बौने की दाढ़ी और काट दी। जब बौने ने यह देखा तो उसे बेहद ग़ुस्सा आ गया और वह चिल्लाया, "गधे ! मेरा चेहरा क्यों बिगाड़ा ? इसे एक बार काटना काफ़ी नहीं था क्या ? मैं अपने साथियों को अपना अब मुँह नहीं दिखा सकता। यदि मुझे पता होता कि तुम ऐसा करनेवाली हो तो मैं यहाँ आने से पहले ही तुम्हारा बाजा बजा देता।" यह कहकर उसने एक मोतियों की थैली निकाली, जो कि झाड़ियों के बीच अटकी थी और बिना एक भी शब्द कहे पत्थरों के बीच ओझल हो गया।

इस क़िस्से के थोड़े ही दिन बाद माँ ने दोनों लड़कियों को पास के शहर में धागा, सुइयाँ, पिनें, लेस और फ़ीते ख़रीदने के लिए भेजा। वे एक आम रास्ते से गुज़रीं, जहाँ पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े थे। उन्होंने अपने सिर पर एक बड़े पक्षी को मँडराते हुए देखा। वह नीचे आता जा रहा था और अंततः वह नीचे आकर

एक चट्टान के पीछे बैठ गया। उसी समय उन्हें एक चीख़ सुनायी दी। वे दौड़कर देखने गयीं। उन्होंने देखा कि उस गिद्ध ने उस बौने को पकड़ लिया है और उसे उठाकर ले जाने की कोशिश कर रहा है। परेशान बच्चों ने यह देखकर बौने को कसकर पकड़ लिया और जब तक नहीं छोड़ा तब तक कि गिद्ध उसे छोड़कर वापस नहीं चला गया। जैसे ही वह गया, बौने का डर ख़त्म हुआ और वह अपनी अज़ीब-सी आवाज़ में चिल्लाया, "क्या तुम मुझे ठीक से नहीं पकड़ सकती ? तुमने मेरे इतने बढ़िया भूरे कोट को इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह जगह-जगह से फट गया है। एकदम फूहड़ हो तुम लोग भी।" यह कहकर उसी कन्धे पर क़ीमती रत्नों भरा एक थैला टाँगा और चट्टानों के बीच स्थित गुफ़ा में चला गया।

अब लड़कियों को उसके इस रूखे व्यवहार की आदत हो गयी थी। वे शहर की ओर अपने काम के लिए चल पड़ीं। घर वापस लौटते समय वे उसी राह से लौटीं और अनजाने में एक ऐसी जगह से गुज़रीं, जहाँ कि बौने ने अपने रत्नों को यह सोचकर फैला रखा था कि वहाँ कोई नहीं आएगा। सूरज की रोशनी में रत्न बेतरह दमक रहे थे और उनसे इतनी तरह-तरह की रोशनी निकल रही थी कि वे दोनों लड़कियाँ उन्हें देखने के लिए वहीं रुक गयीं।

"तुम लोग यहाँ क्यों खड़ी हो ?" बौने ने पूछा और उसका चेहरा गुस्से से लाल-पीला हो गया। वह अभी भी उन लड़कियों को बुरा-भला कह रहा था कि तभी एक तेज़ आवाज़ सुनायी दी। एक बड़ा काला भालू जंगल से बाहर आया। बौना डरकर उछल पड़ा और जब तक भालू ने उसे पकड़ नहीं लिया, उसे होश नहीं आया। उसके बाद वह चिल्लाया, "मुझे छोड़ दो, प्यारे भालू, भालू जी ! मैं तुम्हें अपना ख़ज़ाना दूँगा। इन सुन्दर रत्नों को देखो, केवल मुझे मेरी ज़िन्दगी दे दो, क्योंकि मेरे जैसे कमज़ोर आदमी से डरने की तुम्हें क्या ज़रूरत है ? मैं तो तुम्हारी दाढ़ में भी नहीं लगूँगा। ये दो दुष्ट लड़कियाँ हैं, इन्हें ले लो। ये तुम्हारा पेट भरेंगी। ये बत्तख़ों-जैसी मोटी भी हैं। ईश्वर के लिए इन्हें खा लो।"

लेकिन भालू ने बिना कुछ कहे अपने पंजे से बुरे दिलवाले बौने को एक मुक्का मारा और फिर वह नहीं हिला।

लड़कियाँ यह देखकर भागने लगीं। लेकिन भालू चिल्लाया, "हिमानी और लाली, डरो मत ! रुको, मैं तुम्हारे साथ आऊँगा।" उन्होंने उसकी आवाज़ पहचान ली और रुक गयीं। जब भालू आया तो उसकी कड़ी खाल अचानक गिर पड़ी और वह उनके सामने एक लम्बे आदमी के रूप में सोने की पोशाक पहने खड़ा था। वह बोला, "मैं एक राजकुमार हूँ। इस दुष्ट बौने ने मेरी सारी सम्पत्ति लूट ली

थी और मुझे उसने अपनी मृत्यु तक इस जंगल में एक भालू के भेष में भटकने का शाप भी दिया था। अब उसे अपने कर्मों की सज़ा मिल गयी है।"

वे घर गये। हिमानी की राजकुमार से शादी हो गयी और लाली की उसके भाई से। बौने से मिली अपार सम्पत्ति उन्होंने आपस में बाँट ली। बूढ़ी माँ अपने दोनों बच्चों के साथ हँसी-ख़ुशी वर्षों तक रही। झोंपड़ी के सामने लगे गुलाब के पौधों को महल के सामने लगाया गया और उनमें बहुत सुन्दर लाल और सफेद गुलाब खिलते रहे।

16

ग़रीब और अमीर आदमी

बहुत पुरानी बात है कुछ देवदूत धरती पर मनुष्य का रूप धारण कर घूमने आये। उनमें से एक घूमते-घूमते बेहद थक गया और अभी वह भटक ही रहा था कि रात घिर आयी। उसे सड़क के दोनों ओर आमने-सामने दो मकान दिखायी दिये, जिनमें से एक बड़ा और सुन्दर था, जबकि दूसरा टूटा-फूटा और भद्दा था। पहला मकान एक अमीर आदमी का था और दूसरा एक ग़रीब आदमी का। देवदूत ने सोचा कि उसे पहले मकान में रात गुज़ारनी चाहिए क्योंकि उसके ऊपर मेहमान की ख़ातिरदारी करने का बोझ भी नहीं पड़ेगा। उसने पहले घर का दरवाज़ा खटखटाया। अमीर आदमी ने घर की खिड़की खोली और अजनबी से पूछा कि उसे क्या चाहिए। देवदूत ने उत्तर दिया, "मुझे एक रात रहने की जगह चाहिए।" अमीर आदमी ने देवदूत को सिर से पाँव तक जाँचा-परखा और उसके फटे-पुराने कपड़े देखकर उसकी ग़रीबी का अन्दाज़ा लगाया। फिर बोला, "मैं तुम्हें भीतर नहीं आने दे सकता। कमरों में बीज और जड़ी-बूटियाँ भरी हैं। जो भी मेरे घर का दरवाज़ा खटखटाएगा उसे अगर मैं भीतर आने दूँ, तो मुझे तो जल्दी ही अपने हाथों में भीख का कटोरा पकड़ना पड़ेगा। अपना रास्ता नापो !"

यह कहकर उसने खिड़की बन्द कर दी। देवदूत वहाँ से चलकर सामनेवाले टूटे-फूटे घर के सामने पहुँचा। अभी उसने दरवाज़ा खटखटाया ही था कि दरवाज़ा खुल गया। ग़रीब आदमी ने उसका स्वागत किया और बोला, "आज रात यहीं रह जाओ। बहुत अँधेरा हो गया है। आज तुम आगे नहीं जा पाओगे।" यह सुनकर देवदूत बहुत ख़ुश हुआ और भीतर चला गया।

ग़रीब आदमी की पत्नी ने भी देवदूत का स्वागत किया और उसका हाथ पकड़कर बोली, "आराम से रहो। हमारे पास ज़्यादा कुछ तो है नहीं, लेकिन जो भी है, उसी से हम तुम्हारा स्वागत करेंगे।" उसने कुछ आलू आग पर भूनने के



लिए रखे और साथ ही साथ बकरी का दूध भी दुह लिया। जब मेज पर खाना लग गया तो देवदूत उनके साथ खाने बैठा। उसे वही रूखा-सूखा खाना बेहद स्वादिष्ट लग रहा था, क्योंकि जो उसके साथ बैठकर खा रहे थे, वे ख़ुशी से खिला रहे थे।

जब भोजन समाप्त हो गया तो पत्नी ने पति को बुलाकर कहा, '''आज हम पुआल पर सो जाएँ और यह आदमी हमारे बिस्तर पर, क्योंकि यह आदमी तो दिन भर भटका है और बहुत थका होगा।''

पति ने जवाब दिया, ''ठीक है, मैं उससे कहता हूँ।'' और उसने देवदूत के पास जाकर कहा कि यदि वह चाहे तो आराम से उनके बिस्तर पर सो सकता है। देवदूत ने पहले तो मना किया, लेकिन बाद में मान गया और वे ज़मीन पर पुआल के बिस्तर पर सो गये।

अगली सुबह वे जल्दी उठ गये और अपने मेहमान के लिए अपनी क्षमता के अनुसार बढ़िया से बढ़िया नाश्ता बनाया। जब सूरज उगा तो देवदूत भी उठ गया और उनके साथ नाश्ता करने के बाद वह निकलने के लिए तैयार हो गया। जब वह दरवाज़े तक पहुँचा तो वह मुड़ा और उनसे बोला, ''तुम लोग इतने दयालु हो। तुम तीन वरदान माँग सकते हो।''

ग़रीब आदमी बोला, ''हमेशा ख़ुशी, स्वास्थ्य, शक्ति और दो जून की रोटी के अलावा क्या चाह सकता हूँ ? मुझे यह नहीं समझ में आ रहा कि मैं तीसरा वरदान क्या माँगूँ ?''

देवदूत ने पूछा, ''क्या तुम्हें इस पुराने घर के बदले नया घर नहीं चाहिए ?''

ग़रीब आदमी बोला, ''हाँ, यह ठीक होगा।''

देवदूत ने उसकी इच्छाएँ पूरी कर दीं। उसके पुराने घर को नया कर दिया और उन्हें एक बार फिर आशीर्वाद देते हुए बाहर चला गया।

अमीर आदमी जब जागा तो दिन चढ़ चुका था। उसने अपनी खिड़की से झाँका तो उसे पुराने घर की जगह लाल ईंटों का सुन्दर घर दिखायी पड़ा। उसने आँखें मलकर देखा और अपनी पत्नी को बुलाकर पूछा, ''बताओ तो क्या हुआ—कल शाम यहाँ एक पुरानी टूटी-फूटी झोंपड़ी खड़ी थी और आज एक नया घर है। जाओ और जाकर पता लगाओ कि ऐसा हुआ कैसे ?''

उसकी पत्नी दौड़कर गयी और उसने ग़रीब आदमी से पूछा। ग़रीब आदमी ने उसे बताया कि किस तरह एक अजनबी ने वहाँ आकर रात भर रुकने की जगह माँगी थी। जब वह सुबह जाने लगा तो उसने उन्हें तीन वरदान दिये थे—हमेशा ख़ुशी और स्वास्थ्य, ज़िन्दगी भर खाना और पुराने घर की जगह नया घर। जब ग़रीब आदमी अपनी बात कह चुका तो अमीर आदमी की पत्नी दौड़कर घर गयी और अपने पति से पूरी बात कह सुनायी। अमीर आदमी बोला, ''काश, मुझे पता

होता। वह अजनबी तो यहाँ भी आया था रात बिताने के लिए, लेकिन मैंने ही उसे वापस भेज दिया।"

उसकी पत्नी बोली, "फिर तो जल्दी करो, अपने घोड़े पर बैठो और उसका पीछा करो, शायद वह तुम्हें मिल ही जाए। मिलने पर उससे तुम तीन वरदान अपने लिए माँग लेना।"

अमीर आदमी ने अपनी पत्नी की बात मानकर उसका पीछा किया और जल्दी ही देवदूत के पास पहुँच गया। उसने देवदूत से बहुत नम्रता से बात की और यह प्रार्थना की कि वह इस बात का बुरा न माने कि उसने उसे घर के भीतर नहीं आने दिया। वह तो केवल दरवाज़े की चाभी लेने ही भीतर गया था कि देवदूत वहाँ से चला गया। लेकिन यदि देवदूत वापस आता है तो उसे ख़ुशी होगी कि वह दोबारा उसके घर आए। देवदूत ने वादा किया कि वापसी में उनके घर ज़रूर आएगा। अमीर आदमी ने उससे पूछा कि वह भी अपने पड़ोसी की तरह तीन वरदान माँग सकता है या नहीं। देवदूत बोला—"हाँ ! तुम माँग सकते हो, लेकिन यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। यदि तुम नहीं माँगते तो वही तुम्हारे लिए बेहतर होता।"

लेकिन अमीर आदमी को लगा कि वह आसानी से ख़ुशी पा सकता है। देवदूत ने आख़िरकार उससे कहा, "घर जाओ ! तुम्हारी तीन इच्छाएँ पूरी होंगी।"

अमीर आदमी को तीन वरदान मिल गये थे। जैसे ही वह घोड़े पर बैठकर घर की ओर चला तो वह सोचने लगा कि उसे क्या वर माँगना चाहिये। सोचते-सोचते उसके हाथ से लगाम छूट गयी और उसका घोड़ा उचकने लगा। उचकते-उचकते उसे इतने झटके लगे कि वह कुछ सोच ही नहीं पाया। उसने घोड़े की गर्दन थपथपायी और बोला, "शान्त हो जाओ बस !" लेकिन वह उचकता ही रहा और बेकाबू हो गया। अमीर आदमी ग़ुस्से में चिल्लाया, "तुम्हारी गर्दन टूट जाये !" जैसे ही उसने यह कहा कि घोड़ा ज़मीन पर गिर पड़ा और फिर उठा नहीं ! इस तरह उसकी पहली इच्छा पूरी हुई। लेकिन अमीर आदमी स्वभाव का लालची तो था ही। अपनी काठी कैसे छोड़ता ? उसने घोड़े पर से काठी काट ली और अपनी पीठ पर टाँगकर आगे पैदल चल पड़ा। उसने मन में सोचा, "अभी भी तुम्हारे पास दो वरदान बचे हैं।" और राहत की साँस ली। जब वह रेतीली ज़मीन पर चल रहा था तो दोपहर में सूरज बेहद तेज तप रहा था। वह परेशान हो गया और काठी से उसकी पीठ भी दर्द कर रही थी। उसने वरदानों के बारे में कुछ तय भी नहीं किया था। "यदि मैं दुनिया की सारी सम्पति माँग लूँ तो मुझे कुछ तो मिलेगा ही यह तो मुझे मालूम

है। लेकिन मैं ऐसा कुछ करूँगा कि फिर मेरे माँगने के लिए कुछ बचे ही ना।" फिर उसने आह भरी और बोला, "काश, मैं वह मसख़रा किसान होता, जिसको भी तीन वरदान मिले थे और उसने पहले थोड़ी शराब, फिर पेट भरकर शराब और फिर एक पीपा शराब माँगी थी।"

उसने बहुत बार सोचा कि क्या माँगे, लेकिन हर बार उसे वह चीज़ कम लगने लगती। फिर अचानक उसके दिमाग़ में आया कि उसकी पत्नी कितने मज़े में है, घर पर ठण्डक में बैठी है और बढ़िया कपड़े पहने हुए है। यह सोचते ही उसे बेहद क्रोध आया और बिना सोचे-समझे उसने ज़ोर से कहा, "काश वह इस काठी पर बैठी होती और इसी से चिपक जाती, बजाय इसके कि यह मेरी पीठ से फिसलती जाए।"

जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले, उसकी पीठ से काठी ग़ायब हो गयी और उसे समझ में आ गया कि उसकी दूसरी इच्छा भी पूरी हो गयी है। उसे एकदम तेज़ गर्मी लगी और वह दौड़ने लगा। उसे लगा कि वह जल्दी से अपने कमरे में बन्द हो जाए और तीसरी इच्छा के लिए कोई बड़ी चीज़ सोचे। लेकिन उसने जैसे ही घर आकर दरवाज़ा खोला तो उसने देखा कि उसकी पत्नी कमरे के बीचों-बीच काठी पर बैठी हुई है और रोते हुए अपने को उससे छुड़ाने की कोशिश कर रही है, क्योंकि वह उससे चिपक गयी है। वह अपनी पत्नी से बोला, "शान्त रहो, मैं दुनिया की सारी सम्पत्ति माँग रहा हूँ। तुम वहीं बैठी रहो।"

लेकिन उसकी पत्नी ने अपना सिर झटका और बोली, "मेरे किस काम की यह सारी सम्पत्ति, यदि मैं इस काठी से ही चिपकी रहूँ ?" तुमने इच्छा करके मुझे इससे बाँधा है और अब तुम ही मुझे मुक्ति दिलाओ।"

और इस तरह अमीर आदमी को पसन्द आया हो या न आया हो—लेकिन उसे अपना तीसरा वरदान माँगना ही पड़ा कि उसकी पत्नी काठी से छूट जाए और उसकी इच्छा तुरन्त पूरी हो गयी। अमीर आदमी को इस तरह अपने वरदान माँग कर दुख, परेशानी, फटकार और घोड़े की मृत्यु के अलावा कुछ न मिला, जबकि ग़रीब दम्पति जीवन भर सुख और शान्ति से रहे।

17

ढोलवादक

एक शाम एक युवा ढोलवादक समुद्र के किनारे टहल रहा था कि अचानक उसे कपड़े के तीन टुकड़े रेत पर पड़े दिखे। 'ये कितने सुन्दर है।' उसने सोचा और उनमें से एक टुकड़ा उठाकर अपनी जेब में रख लिया और घर की ओर चल पड़ा। कुछ देर बाद कपड़े के उस टुकड़े को वह बिलकुल ही भूल गया। अभी उसे नींद आने ही लगी थी कि अचानक उसे लगा कि कोई उसे पुकार रहा है। वह सुनने का प्रयास करने लगा। उसने स्पष्ट सुना कि कोई पुकार-पुकार कर उसे जगा रहा है। अँधेरा होने की वजह से उसे कुछ दिखायी तो नहीं दिया, लेकिन उसे लगा कि उसके पलंग के पास कोई चीज़ आगे-पीछे हो रही है। ऐसा महसूस कर उसने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए ? "जवाब मिला, "मुझे मेरी क़मीज़ वापस दे दो, जो कल तुम्हें समुद्र-तट पर पड़ी हुई मिली थी।"

"वह मैं तुम्हें वापस दे दूँगा, अगर तुम मुझे बता दोगे कि तुम कौन हो ?"

"मैं एक राजा की बेटी हूँ, लेकिन मुझे एक जादूगरनी ने शीशेवाली पहाड़ी पर क़ैद कर रखा है। मुझे रोज़ अपनी दो बहनों के साथ समुद्र में स्नान करने की अनुमति है। परन्तु अपनी क़मीज़ के बिना मैं वापस उड़कर नहीं जा सकती। कल शाम मेरी दोनों बहनें तो हमेशा की तरह वापस चली गयी, लेकिन मुझे रुकना पड़ा। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरी क़मीज़ वापस कर दो। ढोलवादक ने कहा, "ख़ुश रहो, मेरी बच्ची।" यह मैं तुम्हें वापस दे दूँगा और उसने अपनी जेब से कपड़ा निकालकर उसे वापस दे दिया। वह जल्दी से उसे झपटकर वापस जाने लगी। तभी ढोलवादक ने कहा, " रुको, शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

तभी आवाज़ सुनायी दी, "आप शीशेवाली पहाड़ी पर चढ़कर जादूगरनी से मुझे आज़ाद करवा सकते हैं ? लेकिन पहाड़ी पर चढ़ पाना काफ़ी मुश्किल है। क्या आप कोशिश करेंगे ?"

ढोलवादक बोला, "जहाँ चाह वहाँ राह ! मैं तुम्हारे लिए दुखी हूँ और मैं किसी चीज़ से नहीं डरता। लेकिन मुझे शीशेवाली पहाड़ी का रास्ता नहीं मालूम है।"

"रास्ता घने जंगल से होकर जाता है, जहाँ बड़े-बड़े राक्षस रहते हैं। मैं आपको इससे ज़्यादा और कुछ नहीं बता सकती।" ऐसा कहकर, लड़की उड़कर दूर चली गयी।

ढोलवादक सुबह-सुबह जागा और ढोल को अपनी गर्दन में लटका कर जंगल की ओर चल पड़ा। जब जंगल में कुछ दूर तक जाने पर भी उसे कोई राक्षस नहीं मिला तो उसने सोचा कि शायद सारे के सारे राक्षस अभी तक सो रहे हैं। उन्हें जगाने के लिए उसने अपने ढोल को सीधा किया और ज़ोर-ज़ोर से बजाने लगा। आवाज़ सुनकर सारे पक्षी दूर चले गये। राक्षस कुछ देर तक तो आवाज़ के बावजूद घास पर लेटा सोता रहा, लेकिन अन्त में उठकर खड़ा हुआ। खड़ा होने पर उसकी ऊँचाई देवदार के पेड़ के बराबर थी। वह ढोलवादक को देखकर ग़ुस्से में चीख़ा, "मूर्ख, तुमने मुझे क्यों जगाया ? तुम इतने ज़ोर-ज़ोर से ढोल क्यों बजा रहे हो।" ढोलवादक ने जवाब दिया, "मैं ढोल बजाकर अपने पीछे आनेवाले हज़ारों लोगों को रास्ता दिखा रहा हूँ।"

"ये लोग जंगल में क्या ढूँढ़ रहे हैं ?" राक्षस ने पूछा।

"ये लोग इस जंगल को तुम्हारे-जैसे राक्षसों से आज़ाद करवाकर इसमें एक रास्ता बनाएँगे।" ढोलवादक ने कहा।

"ओह ! मैं इन लोगों को चींटी की तरह मसल दूँगा।"

"तुम इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे, क्योंकि जब इनमें से किसी को पकड़ने के लिए नीचे झुकोगे, तब बाक़ी लोग तुम्हारी पीठ पर कूदकर तुम्हें ज़मीन पर गिरा देंगे। जब तुम ज़मीन पर लेट जाओगे तो झाड़ी में छुपे बाक़ी लोग भी बाहर आ जाएँगे और तुम्हारे ऊपर चढ़कर बैठ जाएँगे। इन लोगों के पास लोहे के बड़े-बड़े हथौड़े हैं, जिससे मार-मार कर ये तुम्हारे सिर का भुर्ता बना देंगे।"

यह सुनकर राक्षस डर गया और उसने सोचा, अगर मैं इन चतुर लोगों से उलझूँगा तो ये लोग मुझे अवश्य घायल कर देंगे। मैं भालू और भेड़ियों को तो मार सकता हूँ, लेकिन इन केंचुओं से मैं अपनी रक्षा नहीं कर सकता, ऐसा सोचकर राक्षस ज़ोर से बोला, "मैं तुम लोगों को अब भविष्य में कभी परेशान नहीं करूँगा। अगर तुम्हारी कोई इच्छा हो तो मुझे बताओ। मैं तुम्हें ख़ुश करने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।"

ढोलवादक ने कहा, "ठीक है, मैं इन लोगों को वापस भेज दूँगा, ताकि ये लोग भविष्य में तुम्हें परेशान न करें। तुम्हारे पाँव लम्बे हैं और तुम मुझसे ज़्यादा तेज़ दौड़ सकते हो। तुम मुझे उठाकर शीशेवाली पहाड़ी तक ले चलो।"

"तुम मेरे कन्धे पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगा।" राक्षस ने कहा।



इस प्रकार, राक्षस ढोलवादक को अपने कन्धे पर बैठाकर चल पड़ा। चलते

हुए ढोलवादक ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजाने लगा। राक्षस ने सोचा कि सोकर वह अन्य लोगों को वापस जाने का संकेत कर रहा है। कुछ देर बाद अचानक एक दूसरा राक्षस रास्ते में प्रकट हुआ और ढोलवादक को पहले राक्षस के कन्धे से उठाकर अपनी क़मीज़ के बटन के छेद में रख लिया। ढोलवादक ने बटन को कसकर पकड़ लिया। बटन का आक़ार एक बड़ी प्लेट जितना था। कुछ देर बाद उन्हें एक तीसरा राक्षस मिला। इस तीसरे राक्षस ने उसे बटन के छेद से निकालकर अपनी टोपी के बाहरी किनारे पर बैठा लिया। इस प्रकार, ढोलवादक चारों ओर के दृश्यों को देखता हुआ आगे बढ़ता रहा। अब, उसे दूर एक नीली पहाड़ी दिखायी दी, जो शीशेवाली पहाड़ी थी। यह राक्षस कुछ क़दम चलकर ही पहाड़ी के समीप पहुँच गया और वहाँ पहुँच कर ढोलवादक को नीचे उतार दिया। ढोलवादक पहाड़ी के ऊपर तक जाना चाहता था, परन्तु राक्षस उसे वहाँ उतारकर सिर हिलाता और कुछ लड़खड़ाता हुआ वापस चला गया।

इस प्रकार वह ग़रीब ढोलवादक वहाँ उस पहाड़ी के सामने खड़ा था, जो दूसरी अन्य पहाड़ियों से तीन गुनी ऊँची थी और शीशे की तरह चिकनी थी। वह नहीं जानता था कि इस अत्यन्त चिकने पहाड़ पर किस प्रकार चढ़ पाएगा। उसने चढ़ने की, कोशिश की लेकिन फ़िसलकर नीचे आ गया। उसने सोचा, 'क्या ही अच्छा होता अगर वह पक्षी होता।' जब वह ऐसा सोच रहा था तो उसने देखा कि थोड़ी दूरी पर दो आदमी झगड़ा कर रहे हैं। जब वह उनके नज़दीक पहुँचा तो पाया कि वे दोनों एक घोड़े की ज़ीन के स्वामित्व को लेकर झगड़ रहे थे। ज़ीन उनके सामने ज़मीन पर पड़ी थी। "तुम लोग कितने मूर्ख हो, जो एक ज़ीन के लिए आपस में झगड़ रहे हो, जबकि तुम्हारे पास घोड़ा है ही नहीं।" ढोलवादक ने चीख़कर कहा।

"यह चीज़ ही झगड़ा करने योग्य है।" उनमें से एक बोला। उसने आगे बताया कि इस पर बैठकर दुनिया में जहाँ जाने की इच्छा की जाएगी, यह बैठे हुए व्यक्ति को वहाँ पहुँचा देगी। इस पर दोनों का बराबर अधिकार है, लेकिन अब इस पर बैठने की मेरी बारी है और यह आदमी मुझे बैठने नहीं दे रहा।

"मैं तुम्हारे झगड़े को अभी समाप्त किये देता हूँ।" ढोलवादक ने कहा और कुछ क़दम आगे चलकर ज़मीन पर एक सफ़ेद रेखा खींच दी। "तुम दोनों में से जो भी पहले यहाँ पहुँचेगा, वही इस ज़ीन पर बैठेगा।" दोनों आदमी तुरन्त दौड़ने लगे, लेकिन अभी वे मुश्किल से दो क़दम दौड़े होंगे कि ढोलवादक जल्दी से जाकर ज़ीन पर बैठ गया और इच्छा प्रकट की कि वह उस शीशेवाली पहाड़ी की चोटी

पर पहुँच जाए। उसके इच्छा प्रकट करने की देर थी कि वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया। पहाड़ की चोटी पर एक बड़ा समतल स्थान था, जिस पर एक पुराना पत्थर का मकान बना था। इस मकान के आगे मछलियों से भरा एक तालाब था। ढोलवादक को वहाँ न तो कोई मनुष्य और न ही कोई जानवर दिखायी दिया। हवा चल रही थी और उसके सिर के ऊपर बादल तैर रहे थे। वह चलता हुआ मकान के दरवाज़े तक गया और उसने दरवाज़े पर तीन बार दस्तक दी। तीसरी बार दस्तक देने पर एक लाल-लाल आँखों और साँवले चेहरेवाली बुढ़िया बाहर निकली। उसने अपने चश्मे के नीचे से ढोलवादक को घूरते हुए पूछा कि उसे क्या चाहिए ?

"मुझे अन्दर आने की अनुमति, एक रात के लिए ठहरने का स्थान और कुछ खाना चाहिए।" ढोलवादक ने साहस के साथ जवाब दिया।

"यह सब तुम्हें मिल जाएगा, यदि तुम तीन काम कर देने का वादा करो।" बुढ़िया ने कहा।

"ज़रूर, मैं आपका काम कर दूँगा। मैं काम से नहीं डरता, चाहे वह कितना भी कठिन हो।" ढोलवादक बोला।

यह सुनकर बुढ़िया उसे घर के अन्दर ले गयी और खाना खाने को दिया। खाने के बाद उसे नरम-नरम सुन्दर बिस्तर सोने के लिए दिया गया।

दूसरे दिन सुबह जब जागा तो बुढ़िया ने उसे अपनी कमज़ोर, पतली अँगुली से उतारकर अपना अंगुश्ताना दिया और कहा कि इसकी मदद से तालाब से सारा पानी बाहर निकाल दो। मगर ध्यान रखना कि काम रात होने से पहले समाप्त हो जाए। इसके अलावा तुम्हें तालाब से सारी मछलियों को निकालकर उन्हें उनकी जाति के अनुसार तालाब के किनारे सजाना भी होगा।"

"यह तो बहुत अजीब-सा काम है।" ढोलवादक ने कहा, लेकिन तालाब पर जाकर उसने काम शुरू कर दिया। सारी सुबह काम करता रहा, परन्तु ज़्यादा कुछ कर नहीं पाया। अंगुश्ताना से तालाब का पानी बरसों में भी नहीं निकल सकता था। दोपहर होने पर थककर वह तालाब के किनारे बैठ गया और सोचने लगा, "मेरे काम करने या नहीं करने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़नेवाला, तालाब का पानी नहीं निकल पाएगा।" वह निराश किनारे पर बैठा था कि तभी घर के अन्दर से एक सुन्दर लड़की उसके लिए खाना लेकर बाहर आयी। "तुम्हें क्या चाहिए ? तुम यहाँ दुखी होकर क्यों बैठे हो ?" लड़की ने सवाल किया।

ढोलवादक ने जब ऊपर देखा तो पाया कि उससे बात करनेवाली लड़की बहुत सुन्दर है। उसने जवाब दिया, "ओह, जब मैं पहला काम करने में ही असमर्थ

हूँ तो बाक़ी काम कैसे कर पाऊँगा ?" मैं यहाँ एक राजा की बेटी को ढूढ़ँने आया हूँ। वह यहीं कहीं रहती है, लेकिन वह मुझे अभी तक नहीं मिली है। अतः मेरे लिए ज़रूरी है कि मैं इस काम को पूरा करूँ।

"तुम रुको", लड़की ने कहा, "मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम थक गये हो, इसलिए मेरी गोद में सिर रखकर सो जाओ। जब तुम जागोगे तो तुम्हारा काम पूरा हो चुका होगा।"

ढोलवादक इतना थका था कि उसे दुबारा सोने के लिए नहीं कहना पड़ा और आँख बन्द करते ही वह गहरी नींद में सो गया। उसके बाद लड़की ने एक इच्छापूर्ति करनेवाली अँगूठी बाहर निकाली और कहा, "सारा पानी बाहर आओ। मछलियाँ बाहर आओ।" उसके ऐसा कहते ही सारा पानी भाप बनकर बादलों में समा गया और मछलियाँ पानी से निकलकर अपनी जाति और लम्बाई के अनुसार तालाब के किनारे पर सज गयीं।

अब ढोलवादक धीरे-धीरे नींद से जागा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उसका काम पूरा हो चुका है। लड़की ने कहा, "इसमें से एक मछली अपने साथियों से अलग पड़ी है। जब बुढ़िया इसे अलग पड़े देखेगी तो पूछेगी कि इसे अलग क्यों रखा गया है ? तब तुम इसे उठाकर यह कहते हुए बुढ़िया के चेहरे पर दे मारना कि यह तुम्हारे लिए है, बूढ़ी जादूगरनी।"

जब शाम ढली और बुढ़िया ने आकर उससे यह प्रश्न पूछा तो उसने जल्दी से उस अलग पड़ी मछली को उठाकर उसके चेहरे की तरफ़ उछाल दिया। बुढ़िया कुछ नहीं बोली और सिर्फ़ उसे देखती रही। दूसरी सुबह बुढ़िया ने उससे कहा, "कल तुम बच गये थे। आज मैं तुम्हें ज़्यादा कठिन काम दूँगी। आज तुम यहाँ के सारे पेड़ों को काटकर उनकी लकड़ियाँ गट्ठर में बाँधकर रखोगे। ध्यान रहे कि काम रात होने से पहले समाप्त हो जाना चाहिए।"

इतना कहकर उस बुढ़िया ने उसे एक कुल्हाड़ी, एक हथौड़ा और दो खूँटियाँ दीं, लेकिन कुल्हाड़ी काँच की बनी थी और अन्य सामान भी कमज़ोर टिन का बना था। इन चीज़ों के मज़बूत नहीं होने के कारण इनकी सहायता से पेड़ काट पाना काफ़ी मुश्किल था। ढोलवादक की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। दोपहर में फिर वही सुन्दर लड़की उसके लिए खाना लेकर आयी और उसे सांत्वना देती हुई बोली, "तुम मेरी गोद में सिर रखकर सो जाओ। जब तुम जागोगे तब तुम्हारा काम पूरा हो चुका होगा।" ढोलवादक के सो जाने पर उस लड़की ने फिर अपनी अँगूठी निकाली और उससे काम पूरा कर देने के लिए

कहा। पलक़ झपकते ही सारे पेड़ कटकर ज़मीन पर आ गिरे। उन पेड़ों की लकड़ियाँ अपने आप टुकड़ों में कट गयीं और उनका गट्ठर बन गया। काम इतनी तेज़ी से हुआ कि लगा अनेक राक्षसों ने एक साथ काम किया हो। ढोलवादक जैसे ही जागा, लड़की ने उससे कहा, "देखो, सारी लकड़ियाँ कट चुकी हैं और उनका गट्ठर भी बन गया है। सिर्फ़ लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा अलग पड़ा है, इसके बारे में अगर शाम को बुढ़िया कोई प्रश्न करे तो उसे लकड़ी के इस टुकड़े से मारते हुए बोलना कि यह तुम्हारे लिए है बूढ़ी जादूगरनी।"

जब शाम को बुढ़िया आयी तो उसने कहा, "देखो, काम कितना आसान था, मगर तुमने लकड़ी के उस बड़े टुकड़े को किसके लिए छोड़ दिया है ?"

"तुम्हारे लिए बूढ़ी जादूगरनी," उसने बुढ़िया को लकड़ी से मारते हुए कहा। लेकिन ऐसा लगा मानों बुढ़िया को चोट न लगी हो। वह हँसते हुए बोली, "कल इन सारी लकड़ियों का एक गट्ठर बाँधकर आग लगा देना।"

दूसरे दिन, सुबह वह जागा और अपने काम में लग गया, लेकिन सारे जंगल की लकड़ियों को एक जगह इकट्ठा कर पाना एक अकेले आदमी के लिए बहुत मुश्किल काम था। काम काफ़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। वह सुन्दर लड़की उसे नहीं भूली थी और दोपहर में उसके लिए हमेशा की तरह खाना लेकर बाहर आयी। खाना खाकर ढोलवादक उसकी गोद में सिर रखकर सो गया। जागने पर उसने पाया कि सारी लकड़ियों को एक जगह पर जमाकर उसमें आग लगायी जा चुकी है। आग की लपटें आकाश को छू रही थीं। लड़की ने उससे कहा, "मेरी बात ध्यान से सुनो। शाम को जब जादूगरनी आएगी तो तुमसे कुछ काम करने के लिए कहेगी। वह जो काम कहे, उसे बिना डरे कर डालना। वह तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं कर पाएगी। लेकिन अगर तुम डर गये तो इस आग में जलकर भस्म हो जाओगे। अन्त में, तुम जब उसका काम पूरा कर दोगे तो उसे उठाकर इसी आग में फेंक देना।"

यह सब बताकर वह लड़की वापस घर के अन्दर चली गयी। तभी वह बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई वहाँ आयी और बोली, "ओह, कितनी ठण्ड है। मैं तो बर्फ़ की तरह गल जाऊँगी, लेकिन ख़ैर आग जल रही है, जिससे मुझे गर्मी मिलेगी।" यह बोलती हुई बुढ़िया ढोलवादक की ओर मुड़ी और उससे बोली, "इस आग के अन्दर लकड़ी का एक जो बड़ा टुकड़ा है वह इस आग में जल नहीं पाएगा। तुम इसे वहाँ से उठाकर मेरे पास लाओ। तुम अगर जल्दी से ऐसा कर दोगे तो तुम आज़ाद हो जाओगे और उसके बाद जहाँ कहीं जाना चाहोगे, जा सकोगे।"

ढोलवादक बिना किसी झिझक के जलती हुई आग में कूद गया। उसका कोई नुक़सान नहीं हुआ। वह इस आग में से लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा निकालकर बाहर लाया और बुढ़िया के पास ज़मीन पर रख दिया। ज़मीन पर लकड़ी के रखते ही चमत्कार हुआ और लकड़ी का वह टुकड़ा एक ख़ूबसूरत लड़की में बदल गया। यह वही लड़की थी, जिसने उसकी मदद की थी। उसके रेशमी वस्त्रों से यह स्पष्ट था कि वही राजा की पुत्री है। बुढ़िया दुष्टता से हँसती हुई ढोलवादक से बोली, "क्या तुम्हें लगता है कि तुमने उसे पा लिया है ? नहीं, अभी नहीं।" ऐसा बोलते हुए बुढ़िया ने उस सुन्दर लड़की को झपटकर पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन ढोलवादक बीच में आ गया और उसने बुढ़िया को उठाकर आग में फेंक दिया। आग की लपटों ने बुढ़िया को अपने आग़ोश में इस तरह समा लिया, मानों एक दुष्ट के अन्त पर ख़ुशी मना रही हो। इसके बाद उस सुन्दर लड़की ने ढोलवादक की ओर देखा और पाया कि वह सुन्दर और जवान है। यह सोचते हुए कि इस आदमी ने उसे बचाने के लिए अपने जान की बाज़ी लगा दी, उसने उसके हाथ को अपने हाथों में ले लिया और बोली, "तुमने मेरे लिए बहुत किया। अब सिर्फ़ एक वादा और करो कि तुम मेरे प्रति सच्चे और ईमानदार रहोगे। मैं तुमसे शादी करना चाहती हूँ। यहाँ बुढ़िया ने काफ़ी दौलत इकट्ठा कर रखी है। हमारी ज़िन्दगी आराम से गुज़रेगी।"

इसके बाद, वह उसे घर के अन्दर ले गयी और वहाँ बुढ़िया के द्वारा जमा किया गया ख़ज़ाना दिखाया। ख़ज़ाने में सोना, चाँदी, हीरा, मोती आदि मूल्यवान वस्तुओं का ढेर लगा था। उन लोगों ने सोने, चाँदी आदि को वहीं पड़ा छोड़ दिया और सिर्फ़ हीरे और मोती को इकट्ठा किया और इसे लेकर कमरे से बाहर आ गए। अब वे उस पहाड़ी पर नहीं रुकना चाहते थे। ढोलवादक ने कहा कि उन्हें अब इच्छानुसार उड़ने वाली घोड़ी की ज़ीन पर बैठकर उस पहाड़ी से नीचे उतर जाना चाहिए। मगर लड़की ने कहा कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। उसकी इच्छापूर्ति करनेवाली अँगूठी उन्हें कहीं भी ले जा सकती है। इसके सहारे वे अपने घर वापस लौट सकते हैं।

"ठीक है, फिर नगर द्वार तक चलते हैं," ढोलवादक ने कहा और पलक झपकते ही वे वहाँ पहुँच गए। अब ढोलवादक बोला, "मैं पहले जाकर माता-पिता की ख़बर लेकर आता हूँ। तुम यहीं रुककर मेरा इन्तज़ार करो। मैं जल्दी वापस लौट आऊँगा।"

"ओह ! फिर तुम वहाँ पहुँचकर अपने माता-पिता के दायें गाल पर चुम्बन

मत लेना, अन्यथा तुम सब कुछ भूल जाओगे और मैं यहाँ अकेली खड़ी रह जाऊँगी।"

"मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ।" ढोलवादक बोला। उसने उससे वादा किया कि वह जल्दी वापस आ जाएगा। वह जब अपने घर पहुँचा तो उसे कोई नहीं पहचान पाया। ऐसा लगा मानों तीन दिनों में ही वह बिलकुल बदल गया हो। उसने जब उन्हें अपने बारे में बताया तो उसके माता-पिता ने उसे प्यार से अपने गले लगा लिया। उनके प्यार को देखकर वह ख़ुशी से झूम उठा और उस सुन्दर लड़की के द्वारा दी गयी हिदायत को भूल गया। उसने उनके दोनों गालों का चुम्बन ले लिया। चुम्बन लेते ही वह उस सुन्दर लड़की को भूल गया। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और उससे हीरे-जवाहरात आदि निकाले और मेज़ पर रख दिया। उसके माता-पिता की समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी दौलत का क्या करना है। उन्होंने उस दौलत से एक बहुत सुन्दर महल बनवाया, जिसके चारों ओर सुन्दर बाग़ और पानी का झरना था। इसके बाद, एक दिन ढोलवादक से उसकी माँ ने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए एक सुन्दर लड़की चुनी है, जिससे तुम्हें शादी करनी है। शादी की रस्म तीन दिनों में पूरी होगी।"

अब ढोलवादक अपने परिवार के साथ ख़ुशी-ख़ुशी रह रहा था। परन्तु उसके द्वारा नगर द्वार पर छोड़ी गई राजकुमारी बहुत दुखी थी। काफ़ी देर तक वह उसकी प्रतीक्षा करती रही। मगर जब वह वापस नहीं लौटा और शाम होने लगी तो वह समझ गयी कि उसने ज़रूर अपने माता-पिता के दायें गाल का चुम्बन लिया होगा। ऐसा सोचकर वह काफ़ी दुखी हो गयी और सोचने लगी कि वह किसी घने जंगल में चली जाए, ताकि उसे अपने पिता के यहाँ वापस लौटकर नहीं जाना पड़े। इसके बाद वह रोज़ शाम को नगर के अन्दर जाने लगी। वह ढोलवादक के घर के सामने से गुज़रती। ढोलवादक ने उसे बहुत बार देखा भी, परन्तु पहचान नहीं पाया। अन्त में, उसने एक दिन लोगों को ढोलवादक की शादी की चर्चा करते सुना। शादी की ख़बर सुनकर उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह अपने खोए प्यार को वापस पाने के लिए प्रयास करेगी। जैसे ही शादी की रस्म का पहला दिन आया, उसने अपनी अँगूठी घुमायी और इच्छा प्रकट की कि उसे सूर्य की तरह चमकीले कपड़े चाहिए। तुरन्त कपड़े प्रकट हुए, जो इतने चमकीले थे कि लगता था, इन्हें सूर्य की किरणों को बुनकर बनाया गया हो। इसके बाद जैसे ही अतिथि जमा हुए, वह भी ढोलवादक के घर पहुँच गयी। सभी लोग उसके वस्त्रों को प्रशंसाभरी नज़रों से देख रहे थे। चुनी गयी नववधू को भी सुन्दर वस्त्र बहुत पसन्द थे। नववधू उसके पास आयी और उससे पूछा कि क्या वह अपना वस्त्र बेचेगी ? उसने जवाब

दिया, "अवश्य, परन्तु पैसों के लिए नहीं, हाँ अगर उसे लड़के के कमरे के बग़ल वाले कमरे में एक रात सोने दिया जाएगा तो वह अपनी पोशाक उसे दे देगी।"

नववधू इस पोशाक को हासिल करने की अपनी इच्छा को दबा नहीं पायी और वह उसकी शर्त को मानने के लिए तैयार हो गयी। उसने अपने होनेवाले पति को जगाए जाने से बचाने के लिए उसकी शराब में नींद की दवा मिला दी। धीरे-धीरे वातावरण में शान्ति छा गयी। अब राजकुमारी खिसककर दरवाज़े के पास आ गयी और उसे धीरे-से थोड़ा खोल दिया। इसके बाद उसने बहुत धीमी आवाज़ में बोलना शुरू किया--

"ढोलवादक ढोलवादक, मेरी बात सुनो,
मैंने तुम्हारे लिए जो किया उसे मत भूलो,
शीशेवाली ऊँची पहाड़ी के बारे में सोचो,
जादूगरनी और उसकी दुष्टता को याद करो,
ढोलवादक, ढोलवादक, मेरी बात सुनो।"

वह इसी प्रकार रो-रोकर बोलती रही, मगर उसकी बात को सुनने के लिए ढोलवादक नहीं जागा। सुबह होने पर राजकुमारी को कमरा ख़ाली करना पड़ा। दूसरी शाम उसने फिर अपनी अँगूठी घुमाई और चाँद जैसी चमकीली पोशाक की इच्छा प्रकट की। जैसे ही उसने अपनी बात ख़त्म की, पोशाक प्रकट हो गयी। इसे पहनकर वह पुनः ढोलवादक के घर पहुँची। नववधू को यह पोशाक भी बहुत अच्छी लगी और राजकुमारी ने वह पोशाक भी एक रात बग़ल के कमरे में गुज़ारने की अनुमति के बदले में दे दी। यह रात भी पहली रात की तरह ही गुज़र गयी।

मगर घर के नौकरों ने राजकुमारी के रोने और बोलने की आवाज़ को इस रात सुन लिया और सुबह उन्होंने यह बात ढोलवादक को बता दी। उन लोगों ने उसे यह भी बता दिया कि वह स्वयं इन बातों को नहीं सुन पाया, क्योंकि उसकी शराब में नींद आनेवाली दवा मिली थी।

तीसरी शाम राजकुमारी ने अपने लिए सितारों-जैसी चमक़ीली पोशाक की इच्छा प्रकट की। इसे पहनकर जैसे ही वह ढोलवादक के घर पहुँची, नववधू बोल उठी, "मैं इसे अवश्य लूँगी।" राजकुमारी ने इसे भी अन्य दो पोशाकों की तरह बग़ल के कमरे में सोने के बदले दे दिया। आज ढोलवादक ने हमेशा की तरह अपने शराब को पीने की बजाय इसे अपने बिस्तर की बग़ल में गिरा दिया। रात होने पर जब वातावरण शान्त हो गया तो उसे एक बहुत ही मधुर आवाज़ सुनायी दी--

"ढोलवादक ढोलवादक, मेरी बात सुनो,
मैंने तुम्हारे लिए जो किया उसे मत भूलो,
शीशेवाली ऊँची पहाड़ी के बारे में सोचो,
जादूगरनी और उसकी दुष्टता को याद करो,
ढोलवादक, ढोलवादक, मेरी बात सुनो।"

अचानक ढोलवादक को सब याद आ गया और वह चिल्ला पड़ा, "आह ! मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्रूर व्यवहार किया ? लेकिन मैं सब भूल गया था।" इसके बाद वह अपने बिस्तर से उठा और राजकुमारी का हाथ पकड़कर अपने माता-पिता के पास ले गया। "वास्तव में यही मेरी होनेवाली पत्नी है और मैं अगर किसी अन्य लड़की से शादी करूँगा तो यह ग़लत होगा," उसने कहा। उसके माता-पिता को जब वास्तविकता का पता चला तो उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी उसे इस शादी की अनुमति दे दी। इसके बाद ढोल-बाजों के साथ भव्य समारोह में यह शादी सम्पन्न हुई। ढोलवादक और राजकुमारी काफ़ी ख़ुश थे, लेकिन पहलेवाली लड़की भी कम ख़ुश नहीं थी। उसे तीन ख़ूबसूरत पोशाकें मिल गयी थीं और वह उससे ही काफ़ी ख़ुश थी।

18

तीन भाग्यशाली बच्चे

एक बार की बात है, एक बाप ने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया। उसने अपने पहले बेटे को एक मुर्ग़ा दिया, दूसरे को हँसिया दिया और तीसरे बेटे को एक बिल्ली दी। फिर वह उनसे बोला, "मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरा अन्त भी क़रीब आ रहा है। लेकिन मरने से पहले मैं तुम लोगों को अपनी परेशानी बताना चाहता हूँ। मेरे पास पैसा नहीं है। मैंने तुम्हें जो चीज़ें दी हैं, वे देखने में बहुत मामूली लगती हैं। लेकिन तुम लोग ऐसा मत सोचना। यदि मेरी दी हुई चीज़ों का तुम लोग समझदारी से उपयोग करोगे और ऐसे देश खोज निकालोगे, जहाँ इनके बारे में किसी को पता न हो तो तुम लोगों के भाग्य खुल जाएँगे।"

थोड़े समय बाद पिता की मृत्यु हो गयी। बड़ा लड़का मुर्गे को अपने साथ लेकर यात्रा पर निकल पड़ा। लेकिन वह जहाँ भी गया, लोगों को मुर्ग़ों के बारे में मालूम था। शहरों में वह दूर से ही मुर्ग़े को गिरजाघर की मीनार पर बैठा देखता, जो हवा चलने पर घूमने लगता। जब वह गाँव जाता तो वहाँ भी एक से अधिक मुर्ग़ों की आवाज़ें सुनायी पड़तीं। एक और मुर्ग़े के बारे में सोचने की फ़ुर्सत वहाँ किसी को भी नहीं थी।

उसे ऐसा लगने लगा कि वह कभी भी इससे बहुत सारा धन नहीं कमा पायेगा। लेकिन अन्त में संयोग से वह एक ऐसे द्वीप में पहुँच गया, जहाँ लोगों को मुर्ग़े के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। वे अपने समय को घण्टों और पहर में बाँटना भी नहीं जानते थे। जब सुबह और शाम होती तो उसका तो उन्हें ज़रूर पता चल जाता। लेकिन रात में अगर वे नहीं सोते तो समय का ज्ञान उन्हें नहीं हो पाता था। लड़का उन लोगों से बोला, "देखो ज़रा ये कितना अभिमानी जीव है। अपने सिर पर इसने कितना सुन्दर लाल मुकुट पहन रखा है। किसी भी योद्धा की तलवार की तरह इसके पैरों में काँटे हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि रात



के दौरान निश्चित अवधि पर यह तीन बार आवाज़ लगाता है। जब यह तीसरी बार आवाज़ लगाये तो समझ लेना चाहिए कि जल्दी ही सूरज उगनेवाला है। लेकिन यदि यह दिन में आवाज़ लगाये तो मौसम में आनेवाले परिवर्तन के लिए ख़ुद को तैयार कर लेना चाहिए।"

वे लोग अत्यन्त प्रसन्न हो गये और उनमें से कुछ सारी रात जगकर मुर्ग़े की आवाज़ सुनते रहे। मुर्ग़े ने ठीक दो बजे, चार बजे और छह बजे ज़ोर से बांग दी।

अगले दिन उन्होंने पूछा कि क्या यह बिकाऊ है और यदि है तो उसकी क़ीमत क्या है ? इस पर लड़का बोला, "उतना सोना, जितना एक गधा ढो सकता है।" वे लोग बोले, "ऐसे अद्भुत जीव के लिए यह क़ीमत तो कुछ भी नहीं है।" और ख़ुशी-ख़ुशी उन्होंने उसे उतना सोना दे दिया।

जब वह सोना लेकर घर पहुँचा तो उसके भाई आश्चर्यचकित रह गये। दूसरा लड़का बोला कि वह भी अपना हँसिया लेकर बाहर जाएगा और देखेगा कि इससे उसका भाग्य कैसे बदलता है। उसको भी पहले तो ऐसा ही लगा कि भाग्य उसका साथ नहीं देगा, क्योंकि जितने लोगों से भी वह मिला, उसने सबको अपने साथ हँसिया लेकर चलते हुए देखा। लेकिन अन्त में वह भी ऐसे द्वीप में पहुँच गया, जहाँ के लोग हँसिये के प्रयोग से बिलकुल अनजान थे। उनकी मक्के की फ़सल तैयार हो जाती तो वे बड़ी-बड़ी तोपें लगाकर उस पर गोले दाग़ते थे। ऐसे में अक़्सर ऐसा होता था कि गोले फ़सल के ऊपर से होकर निकल जाते थे। कई बार गोला तनों के ऊपर लगने की बजाय बालियों के ऊपर लगता था और वे दूर गिरकर बिखर जाती थीं, इस तरह बहुत सारा अनाज बर्बाद हो जाता था और फिर घोर दुख के दिन आ जाते। लेकिन हमारा नायक जब वहाँ पहुँचा तो उसने जल्दी-जल्दी शान्तिपूर्वक इतनी कटाई कर दी कि लोग साँस रोके भौंचक्के देखते रह गये। लोगों ने ख़ुशी-ख़ुशी उसे उतना सोना दे दिया। जितना उसका घोड़ा ढो सकता था।

उसके घर लौटने पर तीसरा भाई अपना भाग्य आज़माने के लिए बिल्ली लेकर निकल पड़ा। उसके साथ भी ठीक वैसा ही हुआ, जैसा दूसरों के साथ हुआ था। जब तक वह जाने-पहचाने रास्तों पर घूमता रहा, तब तक उसे एक भी जगह ऐसी नहीं मिली, जहाँ बिल्ली नहीं पायी जाती हो। कई जगह तो उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि बिल्ली के नवजात बच्चों को अक्सर पानी में डुबाकर मार दिया जाता था। अन्त में वह भी ऐसे एक द्वीप में पहुँच गया, जहाँ लोग बिल्ली के बारे में नहीं जानते थे। लेकिन वहाँ इतने अधिक चूहे थे कि घर का मालिक घर

में हो या न हो वे मेज़-कुर्सियों पर चढ़कर उछलकूद मचाते रहते थे। यहाँ के लोग अक्सर प्लेग फैलने की शिकायत करते। वहाँ का राजा भी समझ नहीं पा रहा था कि कैसे इन चूहों से मुक्ति पायी जाए। जिधर देखो उधर ही चूहों के झुण्ड दिखते और वे चूहे जो कुछ अपने साथ नहीं ले जा पाते थे, उसे नष्ट कर देते। बिल्ली ने यहाँ आकर अपना शिकार शुरू कर दिया और बहुत जल्द अनेक कमरों से चूहों को साफ़ कर दिया। ये देखकर लोग राजा से प्रार्थना करने लगे कि इसे वह अपने साम्राज्य के लिए ख़रीद लें। राजा के .ख़ुशी-ख़ुशी वह क़ीमत चुका दी, जो इस अद्‌भुत जानवर के लिए माँगी गयी। इस प्रकार तीसरा भाई सबसे बड़ा ख़ज़ाना लेकर घर लौटा जो सोने से लदे खच्चर के रूप में उसके साथ था।

इस दौरान शाही महल में रहकर बिल्ली चूहों के साथ मज़ेदार खेल खेल रही थी और इतने अधिक चूहों को मार चुकी थी कि उनकी कोई गिनती नहीं की जा सकती। अन्त में अपने व्यस्त कार्यक्रम के बाद उसे बहुत प्यास लगने लगी और उसने खेल बन्द कर दिया। अपना सिर उठाकर वह, ''म्याऊँ-म्याऊँ।'' की आवाज़ निकालने लगी। ऐसी आवाज़ सुनकर अपने सभी दरबारियों के साथ-साथ राजा भी बहुत डर गया और डर के मारे वे महल छोड़कर भाग खड़े हुए। वहाँ उन्होंने एक सभा बुलायी और विचार किया कि अब क्या किया जाए। अन्त में यह निश्चय किया गया कि बिल्ली के पास एक दूत को इस सन्देश के साथ भेजा जाए कि या तो वह महल छोड़ दे, नहीं तो बलपूर्वक उसे महल से बाहर कर दिया जाएगा। दरबारी बोले, ''हम चूहों द्वारा फैलाये जा रहे प्लेग रोग को झेलना पसन्द करेंगे, लेकिन इस जानवर के शिकार होने के लिए समर्पण करना पसन्द नहीं करेंगे।'' और इस प्रकार एक दूत को बिल्ली से यह पूछने के लिए भेजा गया कि वह शान्तिपूर्वक महल का त्याग करेगी या नहीं। इधर बिल्ली की प्यास बढ़ती जा रही थी और वह ''म्याऊँ-म्याऊँ'' के सिवा और कुछ नहीं बोल रही थी। दूत ने सोचा कि बिल्ली ''नहीं-नहीं'' कह रही है और उसने जाकर राजा से ऐसा ही कह दिया। दरबारियों में यह सहमति हुई कि बिल्ली को मज़ा चखाया जाना चाहिए। तोपें लायी गयीं और बारूद लाकर उसे तोपों से दाग़ा गया। कुछ ही देर में महल में आग लग गयी। थोड़ी देर में आग उस कमरे में भी पहुँच गयी, जहाँ बिल्ली बैठी थी। बिल्ली छलाँग लगाकर खिड़की से बाहर कूद गयी, लेकिन फैली हुई आग की भूमि तब तक शान्त नहीं हुई, जब तक पूरा महल जलकर राख नहीं हो गया।

19

सोने का हंस

एक आदमी था। उसके तीन बेटे थे। सबसे छोटे बेटे का नाम डमलिंग था। इस नाम के कारण सभी उससे घृणा करते थे और उसकी उपेक्षा किया करते थे। हर अवसर पर उसे पीछे-पीछे रखा जाता था। एक बार बड़ा लड़का जंगल में लकड़ी काटने जा रहा था। उसकी माँ ने जाने से पहले उसे एक बड़ा और अच्छा-सा मालपुआ और पानी की एक बोतल साथ में ले जाने के लिए दी। जैसे ही वह जंगल में घुसा, उसे एक छोटा बूढ़ा आदमी मिला। बूढ़े ने उसे नमस्कार किया और उससे कहने लगा, "मैं बहुत भूखा-प्यासा हूँ। इसलिए मुझे अपने मालपुए में से एक टुकड़ा खाने के लिए दो और पानी की एक घूँट पीने दो।" लेकिन लड़के ने यह कहते हुए मना कर दिया कि, "अगर मैं तुम्हें अपना मालपुआ और पानी दे दूँ तो मेरे लिए कुछ भी नहीं बचेगा। इसलिए तुम यहाँ से जाओ।" फिर वह उस आदमी को वहीं छोड़कर आगे बढ़ गया। उसने एक पेड़ काटना शुरू किया। अभी वह पेड़ पर कुछ वार ही कर पाया था कि कुल्हाड़ी उसके हाथ से छूट गयी और उसके हाथ पर ज़ोर से लगी। कुल्हाड़ी से बना घाव इतना ग़हरा था कि उसे मजबूर होकर घर लौटना पड़ा और पट्टी बँधवानी पड़ी। वास्तव में यह घाव उसे छोटे बूढ़े आदमी ने लगाया था।

इसके बाद दूसरा भाई जंगल जाने के लिए तैयार हुआ तो उसकी माँ ने बड़े बेटे की तरह उसे भी एक मालपुआ और पानी की एक बोतल साथ में दी। इस लड़के को वही छोटा बूढ़ा आदमी रास्ते में मिला। उसने इस लड़के से भी मालपुए का एक टुकड़ा और थोड़ा पानी माँगा। लेकिन उसने भी अपने भाई की तरह उसे मना कर दिया और बोला, "जो मैं तुम्हें दूँगा, वह फिर मुझे नहीं मिल सकता। इसलिए भाग जाओ, कुछ नहीं मिलेगा !" यह कहता हुआ वह उस बूढ़े को वहीं छोड़कर आगे बढ़ गया। लेकिन जल्दी ही उसे भी अपने किये का फल मिल गया।

उसने पेड़ काटने के लिए दो वार किये थे कि कुल्हाड़ी से उसने अपने ही पैर पर वार कर लिया। इस तरह उसे भी मजबूर होकर घर लौटकर आना पड़ा।

इसके बाद डमलिंग ने जंगल आकर लकड़ी काटना चाहा। लेकिन जब उसने अपने पिता से पूछा तो उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि, "ऐसा करते हुए तुम्हारे भाई पहले ही चोट खा चुके हैं। तुम भी ऐसा ही करोगे, क्योंकि तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है।" लेकिन डमलिंग इतनी देर तक गिड़गिड़ाकर उनसे प्रार्थना करता रहा कि अन्त में वे मान ही गये और बोले, "ठीक है, जाओ। अनुभव पाकर ही तुम समझदार बनोगे।" उसकी माँ ने उसे राख पर सेंका हुआ एक पुआ और पीने के लिए गन्दे पानी से भरी एक बोतल दे दी।

उसने जब जंगल में प्रवेश किया तो उसे भी वही बूढ़ा आदमी मिला। नमस्कार करने के बाद वह बूढ़ा बोला, "मुझे अपने पुए का एक टुकड़ा दो और अपनी बोतल से दो घूँट पानी दो। मैं बहुत ही भूखा-प्यासा हूँ।"

डमलिंग ने उससे कहा, "मेरे पास जो पुआ है, उसे राख पर सेंका गया है और बोतल का पानी गन्दा है। यदि आपको ये चीज़ें पसन्द हों तो आइये बैठकर खाते-पीते हैं।"

वे बैठ गये और डमलिंग ने पुआ बाहर निकाला। लेकिन आश्चर्य। यह तो बढ़िया पुआ बन गया था और गन्दा पानी भी साफ़ हो गया था। उन्होंने मज़े से खाया-पिया। खाने-पीने के बाद छोटा आदमी कहने लगा, "तुम्हारा दिल बहुत अच्छा है। तुम्हारे पास जो भी था, उसे तुमने ख़ुशी-ख़ुशी मेरे साथ बाँट लिया। इसलिए मैं तुम्हें भाग्यवान बना दूँगा। उधर एक बहुत पुराना पेड़ खड़ा है। तुम उसे काट डालो। उसकी जड़ों में तुम्हारे लिए एक चीज़ रखी हुई है।" यह कहकर बूढ़ा वहाँ से चला गया।

डमलिंग सीधे पेड़ के पास गया और पेड़ को काटने लगा। जब उसने पेड़ को गिरा दिया तो उसकी जड़ों में एक हंस दिखाई दिया। हंस के पंख शुद्ध सोने के थे।

डमलिंग ने हंस को उठा लिया और रात बिताने के लिए सराय की ओर चल दिया। सराय के मालिक की तीन बेटियाँ थीं। उन्होंने जैसे ही इतने सुन्दर पक्षी को देखा तो उनके मन में लालच आ गया। उनमें से हर एक यह चाहने लगी कि उसे कम-से-कम एक पंख मिल जाए। बड़ी लड़की पंख पाने के लिए ताक में बैठ गयी और जैसे ही डमलिंग थोड़ी देर के लिए बाहर गया, उसने पंख के लिए हंस की ओर झपट्टा मारा। लेकिन जैसे ही उसने हंस को छुआ, उसकी उंगलियाँ और अँगूठा हंस के साथ चिपक गये। इसके तुरन्त बाद दूसरी लड़की

वहाँ आयी। वह भी हंस का पंख पाना चाहती थी। उसने अपनी बहन की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि वह हँस के साथ चिपक गयी। अन्त में तीसरी बहन भी पंख की लालसा लिये वहाँ आयी। उसे देखते ही दोनों बहनें सचेत करते हुए उससे बोली, "पास मत आना। भगवान के लिए हमसे दूर ही रहो !" लेकिन वह समझ नहीं पायी कि उसकी बहनें उसे दूर रहने के लिए क्यों कह रही हैं। उसने सोचा, "जब सभी वहाँ हैं तो मैं भी क्यों न जाकर देखूँ ?" और यह सोचकर वह भी उनकी ओर झपटीं। जैसे ही उसने अपनी बहन को छुआ, वह भी उनसे चिपक गयीं। इस तरह उन तीनों को हंस के साथ ही रात बितानी पड़ी।

अगली सुबह डमलिंग ने हंस को बाँह के नीचे दबाया और अपने रास्ते चल दिया। तीनों लड़कियाँ अभी भी हंस से चिपकी हुई थीं और डमलिंग के पीछे-पीछे चलते रहने के लिए विवश थीं। लेकिन डमलिंग ने उनकी ओर देखा भी नहीं और अपनी इच्छानुसार दायें-बायें होते हुए चलता रहा। जब वे एक खेत से गुज़र रहे थे तो पादरी ने उन्हें देखा। लड़कियों को देखकर वह कहने लगा, "बेवक़ूफ़ लड़कियों, कुछ तो शर्म करो ! तुम क्यों इस लड़के के पीछे-पीछे भागती चली जा रही हो ? चलो, अब ये उछल-कूद बन्द करो !" यह कहते हुए उसने सबसे छोटी लड़की का हाथ पकड़ा और उसे सबसे अलग करना चाहा। लेकिन उस लड़की को छूते ही वह भी उनसे चिपक गया और उनके साथ चलने के लिए मजबूर हो गया। थोड़ी दूर पर पादरी का सहायक मिला। उसने जब अपने मालिक को लड़कियों का हाथ पकड़े भागते हुए देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह अपने मालिक से बोला, "अरे-रे मालिक ! आप इतनी तेज़ी से कहाँ चले जा रहे हैं ! क्या आप भूल गये कि आज किसी का नामकरण समारोह है ?" दौड़कर वह अपने मालिक के पास गया और उसका कुर्ता पकड़ लिया। इस तरह वह भी उनके साथ चिपक गया। अब इस जुलूस में पाँच लोग हो गये, जो एक-दूसरे के पीछे चले जा रहे थे। आगे जाने पर उन्हें दो ग्रामीण मिले, जिनके हाथ में कुल्हाड़ी थी। पादरी ने उन्हें देखकर सहायता के लिए पुकारा, ताकि वे उसे और उसके सहायक को छुड़ा दें। उन्होंने जैसे ही पादरी के सहायक को छुआ, वे भी इन लोगों के साथ चिपक गये। इस तरह से अब इनकी संख्या सात हो गयी। ये सभी डमलिंग और उसके सोने के हंस के पीछे-पीछे क़तार में चले जा रहे थे। चलते-चलते सब लोग एक शहर में पहुँच गये। यहाँ के राजा की बेटी हमेशा उदास रहती थी। कोई भी उसे आज तक हँसा नहीं सका था। इसलिए राजा ने घोषणा की थी कि जो भी उसकी बेटी को हँसा देगा, उससे उसकी बेटी का विवाह होगा।



डमलिंग ने जब यह सुना तो वह अपने हंस और हंस के पीछे लगे जुलूस के साथ राजकुमारी के सामने गया। राजकुमारी की नज़र जब इन सात दुलकी भरी चाल चलनेवाले निरीह प्राणियों पर पड़ी तो हँसते-हँसते उसका बुरा हाल हो गया। यहाँ तक कि हँसते-हँसते उसके पेट में बल पड़ गये। डमलिंग ने तुरन्त राजकुमारी को अपनी पत्नी के रूप में माँगा, लेकिन राजा को दामाद के रूप में डमलिंग पसन्द नहीं था। उसने कई बहाने बनाने के बाद कहा कि वह कोई ऐसा आदमी ढूँढ़ लाये, जो तहख़ाने में रखी सारी शराब पी सके। डमलिंग ने अपने मन में बूढ़े आदमी के बारे में सोचा। उसे आशा थी कि वह ज़रूर उसकी सहायता कर सकेगा। वह जंगल में उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ उसने पेड़ को काट गिराया था। वहाँ उसने एक आदमी को बैठे देखा। इस आदमी का चेहरा बहुत खिन्न और उदास लग रहा था। डमलिंग ने उससे पूछा कि उसे कौन-सी चिन्ता सता रही है। इस पर वह बोला कि, "मेरी प्यास बहुत अधिक है, जो कभी बुझती ही नहीं। कारण यह है कि ठण्डा पानी मैं पी नहीं सकता और शराब से भरे पीपे को मैं तुरन्त ख़ाली कर देता हूँ। तुम्हीं बताओ, सूखी रेत में दो बूँद पानी से कहीं कुछ हो सकता है ?"

डमलिंग ने उससे कहा, "इस मामले में मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। तुम मेरे साथ आओ तो मैं तुम्हें सन्तुष्ट कर दूँगा।"

वह उस आदमी को राजा के तहख़ाने तक ले आया। वह पीछे से शराब पीने लगा और दिन ख़त्म होने से पहले ही उसने सभी पीपों को खाली कर दिया। डमलिंग ने फिर से अपनी दुल्हन को माँगा।

राजा यह सोच-सोचकर परेशान हो गया कि ऐसा कुरूप व्यक्ति, जिसका नाम डमलिंग है, उसकी बेटी से विवाह करेगा। इसलिए उसने एक और नयी शर्त उसके सामने रख दी। शर्त यह थी कि वह किसी ऐसे आदमी को खोजकर लाये, जो रोटी के पहाड़ को भी खाकर साफ़ कर सके। डमलिंग बिना अधिक सोच-विचार किये जंगल की ओर चल पड़ा। पहले की तरह वह उसी स्थान पर पहुँचा। वहाँ उसने एक आदमी को बैठा देखा जो चमड़े के कमरबन्द से लगातार अपने शरीर पर कोड़े मार रहा था। उसका चेहरा भयानक था। वह कह रहा था, "मैं इतनी सारी रोटियाँ खा चुका हूँ, फिर भी मेरी भूख शान्त नहीं होती। पेट में आग लगी हो तो कोई क्या कर सकता है ? मेरा पेट हमेशा ख़ाली ही रहता है, इसलिए तो मैं ख़ुद को कोड़े मार रहा हूँ कि कहीं भूख के कारण मर ही न जाऊँ।"

यह सुनकर डमलिंग बहुत ख़ुश हुआ और उस आदमी से बोला, "उठो और

मेरे साथ चलो। तुम्हें खाने को इतना अधिक मिलेगा कि तुम पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाओगे।''

वह उसे लेकर महल की ओर चल पड़ा जहाँ पर राजा ने पूरे राज्य से मँगवा कर रोटियों का पहाड़ खड़ा कर दिया था। जंगल से आये उस आदमी ने रोटियों को जल्दी-जल्दी खाना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि दिन रहते ही रोटियों का वह पहाड़ साफ़ हो गया।

डमलिंग ने तीसरी बार राजा से अपनी दुल्हन को माँगा। राजा फिर से नये-नये बहाने बनाने लगा। उसने डमलिंग से कहा कि यदि वह ज़मीन और पानी दोनों पर चलनेवाला जहाज़ ला सके तो राजकुमारी उसे मिल जाएगी। वह बोला, ''जितनी जल्दी तुम जहाज़ लाओगे, उतनी जल्दी राजकुमारी तुम्हारी दुल्हन बन जाएगी।''

डमलिंग इस बार भी सीधे जंगल में गया। वहाँ उसने उसी बूढ़े को देखा, जिसे उसने अपना पुआ दिया था। जब डमलिंग ने उसे बताया कि वह क्या चाहता है तो बूढ़ा बोला, ''मैंने तुम्हारे साथ खाया-पिया है। इसलिए मैं तुम्हें यह जहाज़ देता हूँ। मैं तुम्हें यह केवल इसलिए दे रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारा स्वभाव अच्छा है और तुमने मुझसे अच्छा व्यवहार किया था।'' यह कहते हुए बूढ़े ने उसे एक जहाज़ दे दिया, जो ज़मीन और पानी दोनों पर ही चल सकता था।

राजा ने जब डमलिंग को जहाज़ के साथ देखा तो वह और अधिक बहाने नहीं बना सका। उसने अपनी बेटी का विवाह डमलिंग से कर दिया। राजा की मृत्यु के बाद डमलिंग को पूरा राज्य भी मिल गया। अपनी दुल्हन के साथ वह बहुत दिनों तक सुख से रहा।

20

लोमड़ और मादा भेड़िया

किसी मादा भेड़िये ने एक बच्चे को जन्म दिया और लोमड़ को उसका पिता बनने के लिए कहा। उसका कहना था कि यह हमारा निकट का सम्बन्धी है और यह समझदार और चतुर भी है। इस कारण यह मेरे बेटे को अच्छी शिक्षा दे सकता है और इस संसार में जीने के लिए उसे अच्छी तरह तैयार कर सकता है। लोमड़ ऊपर से स्वयं को बहुत सभ्य प्रकट कर रहा था। वह मादा भेड़िये से बोला, "इतना सम्मान देने के लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा आचरण हमेशा शिष्ट बना रहेगा। आप कभी भी मुझसे असन्तुष्ट नहीं होंगी।" भोजन के दौरान लोमड़ बहुत मिलनसार और हँसमुख बना रहा और भोजन समाप्त हो जाने पर वह मादा भेड़िये से बोला, "देवी, हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम बच्चे की अच्छी तरह देखभाल करें और यह ध्यान रखें कि उसे अच्छा भोजन मिलता रहे, ताकि वह बहुत शक्तिवान बन सके। मुझे भेड़ों के एक बाड़े के बारे में मालूम है, जहाँ से हम आसानी से कुछ-न-कुछ ला सकते हैं।"

लोमड़ की बात सुनकर मादा भेड़िया ख़ुश हो गयी और वह उसके साथ बाड़े की ओर चल दी। लोमड़ ने उसे वह स्थान दिखाया और बोला, "तुम आसानी से रेंगकर अन्दर जा सकती हो। तुम्हें कोई भी नहीं देख पाएगा। इस बीच मैं दूसरी तरफ़ जाकर किसी मुर्ग़ी पर हाथ साफ़ करने की कोशिश करता हूँ।"

लेकिन लोमड़ ने जैसा कहा था, वैसा नहीं किया, बल्कि वहाँ से भाग निकला और जंगल के पास जाकर ज़मीन पर लेटकर आराम करने लगा। मादा भेड़िया किसी तरह सरककर बाड़े के अन्दर चली गयी। वहाँ एक कुत्ता बैठा हुआ था, जो उसको देखते ही भौंकने लगा। मज़दूर दौड़ते हुए तुरन्त वहाँ पहुँच गये और उन्होंने उसके ऊपर जलते हुए कोयलों का बर्तन उलट दिया। अन्त में किसी तरह वह बच निकली और बाड़े के बाहर सरक गयी। जंगल के पास पहुँचकर उसने



लोमड़ को लेटे हुए देखा। लोमड़ ने बुरा-सा मुँह बनाया और बोला, "प्रिय मेरे साथ बहुत बुरा हुआ। किसानों ने मुझे पकड़ लिया और वे सभी मुझ पर टूट पड़े। उन्होंने तो मेरी हड्डियाँ भी तोड़ डाली हैं। अगर तुम यह नहीं चाहती कि मैं यहाँ पड़े-पड़े मर जाऊँ तो मुझे उठाकर ले चलो।"

बेचारी ख़ुद मुश्किल से चल पा रही थी, लेकिन लोमड़ की चिन्ता करके उसने उसे कन्धे पर उठा लिया। अपने से काफ़ी मज़बूत और बिलकुल स्वस्थ लोमड़ को उठाए वह धीरे-धीरे घर की ओर जा रही थी। जब वे घर पहुँच गये तो लोमड़ उससे बोला, "अलविदा प्रिय ! अब तुम अपनी जलन का मज़ा लो !" यह कहता हुआ वह ज़ोर से हँसा और तेज़ी से वहाँ से भाग गया।

21

हैंसल और ग्रेथल

एक समय की बात है। एक घने जंगल के पास एक ग़रीब लकड़हारा रहता था। उसके साथ उसकी दूसरी पत्नी और पहली पत्नी के दो बच्चे, एक बेटा और एक बेटी भी रहते थे। लड़के का नाम हैंसल और लड़की का ग्रेथल था। लकड़हारा अपना पेट बड़ी कठिनाई से भर पाता था। एक बार भयानक अकाल पड़ा। उसे दो वक़्त की रोटी पाने में भी कठिनाई होने लगी। एक दिन वह अपने ऊपर आयी विपदा के बारे में सोचते हुए आह भरकर अपनी पत्नी से बोला, "हमारा क्या होगा ? हम अपने बच्चों का पेट कैसे पालेंगे, जबकि हमारे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है ?"

"मेरी बात मानो।" वह बोली, "हम उन्हें सुबह-सुबह ख़ूब दूर घने जंगल में ले जाएँगे। वहाँ उनके लिए आग जला देंगे। उन्हें एक-एक रोटी का टुकड़ा देंगे, जिससे कि वे वापस घर नहीं लौट पायें और इस तरह हमें उनसे मुक्ति मिल जाएगी।" लकड़हारा बोला, "नहीं-नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। तुम मेरे बच्चों को जंगल में छोड़ने की बात सोच भी कैसे सकती हो ? वहाँ तो जंगली जानवर भरे पड़े हैं, जो उन्हें पलक झपकते ही चीरकर खा जाएँगे।"

वह बोली, "अरे भोले आदमी ! फिर तो हम चारों ही भूखे मर जाएँगे। तुम तो हमारे लिए ताबूतों का ही इन्तज़ाम करो।" लेकिन यह कहकर भी उसने अपने पति का पीछा तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि वह उसकी बात मानने को राज़ी नहीं हो गया। उसके मुख से निकला, "आह, मुझे बेचारे बच्चों का दुख रहेगा।"

लेकिन दोनों बच्चे भूख के कारण अभी सोये नहीं थे। उन्होंने अपनी सौतेली माँ को अपने पिता से ये बातें करते हुए सुन लिया। ग्रेथल दुख से रोने लगी और हैंसल से बोली, "हमारा क्या होगा ?" वह बोला, "शान्त हो जाओ ग्रेथल। रो मत—मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" और जैसे ही उसके माता-पिता सो गये, वह

उठा। उसने अपना कोट पहना और पीछे के दरवाज़े से बाहर निकल गया। बाहर चाँदनी खिली थी और दरवाज़े के पास पड़े हुए सफ़ेद पत्थर चाँदी की तरह चमक रहे थे। हैंसल ने झुककर अपनी जेब उन सफ़ेद पत्थरों से भर ली। वापस लौटकर वह ग्रेथल से बोला, "निश्चिन्त रहो, प्यारी बहन और आराम से सो जाओ। ईश्वर हमारी सहायता करेगा।" ऐसा कहकर वह भी सो गया।

अगली सुबह सूरज उगने पर माँ ने बच्चों को जगाया, "उठो आलसी कीड़ो, हमें जंगल में लकड़ी काटने जाना है।" उसने दोनों को रोटी का एक-एक टुकड़ा दिया और कहा, "यह तुम्हारे रात के खाने के लिए है। इसे समय से पहले मत खा लेना, नहीं तो फिर उस समय तुम्हें कुछ खाने को नहीं मिलेगा। ग्रेथल ने रोटी के टुकड़े अपनी फ्रॉक की जेब में रख लिये, क्योंकि हैंसल की जेब में तो पत्थर भरे थे। फिर वे सभी निकल पड़े। जब वे थोड़ी दूर पहुँचे, हैंसल रुक गया और मुड़कर अपने घर को देखने लगा। ऐसा जब उसने कई बार किया तो उसका पिता बोला, "हैंसल तुम क्या देख रहे हो और तुम धीरे-धीरे क्यों घिसट रहे हो ? जल्दी चलो।"

"ओह पिताजी," हैंसल बोला, "मैं अपने घर की छत पर बैठी अपनी सफ़ेद बिल्ली को देखकर उसे अलविदा कहने की कोशिश कर रहा हूँ।" उसकी माँ बोली, "बेवक़ूफ़ वह बिल्ली नहीं, बल्कि सफ़ेद चिमनी पर चमकता हुआ सूरज है।" लेकिन हैंसल सचमुच बिल्ली को नहीं देख रहा था, बल्कि जब भी वह रुकता तो हर बार वह एक छोटा गोल पत्थर अपनी जेब से निकालकर रास्ते पर गिरा देता था।

जब वे जंगल के बीचों-बीच आ पहुँचे तो पिता ने बच्चों से लकड़ियाँ जमा करने के लिए कहा, जिससे कि वे आग जलाकर सर्दी से बच सकें। हैंसल और ग्रेथल ने लकड़ियों का नन्हा-सा पहाड़ खड़ा कर दिया। उन्होंने उसमें आग लगायी और आग की लपटें ऊँची उठने लगी। पत्नी बोली, "बच्चो, अब तुम लोग आग के पास लेटकर आराम करो और हम जंगल में जाकर लकड़ी काटते हैं। जब हम वापस लौटने लगेंगे, मैं तुम्हें आकर बुला लूँगी।"

हैंसल और ग्रेथल आग के पास बैठ गये और दिन होने पर भी उन्होंने रोटी खा ली। उन्हें कुल्हाड़ी की आवाज़ सुनायी दे रही थी। इसलिए उन्हें लग रहा था कि उनके पिता आसपास ही कहीं हैं। लेकिन वह कुल्हाड़ी की आवाज़ नहीं थी बल्कि किसी पेड़ से लगी कोई सूखी शाखा थी, जो हवा में झूल-झूलकर आवाज़ कर रही थी। उन्होंने बहुत देर तक इन्तज़ार किया और अन्त में उनकी पलकें थकान से बन्द होने लगीं और वे सो गये। जब उनकी नींद खुली तो बहुत अँधेरा

था। ग्रेथल रोने लगी, "हम इस घने जंगल से बाहर कैसे निकलेंगे ?" लेकिन हैंसल ने उसे यह कहकर ढाढ़स बँधाने की कोशिश की, "चाँद निकलने तक रुक जाओ, तब हम रास्ता ढूँढ़ लेंगे।" चाँद निकला। हैंसल ने अपनी बहन का हाथ पकड़ा और सफ़ेद पत्थरों का पीछा करते हुए चल पड़ा, जो उसे नये चाँदी के सिक्कों की तरह रास्ता बता रहे थे। पूरी रात वे चलते रहे और सुबह होते ही वे वापस अपने घर पहुँच गये। उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया और जब लकड़हारे की पत्नी ने दरवाज़ा खोला तो उसने हैंसल और ग्रेथल को देखकर आश्चर्य से कहा, "दुष्ट बच्चो ! तुम जंगल में इतनी देर तक कैसे सोते रहे ? हमें लगा कि तुम अब कभी नहीं लौटोगे।" लेकिन उनका पिता बहुत ख़ुश था, क्योंकि उसे उन्हें जंगल में अकेला छोड़कर आने से बहुत दुख हुआ था।

थोड़े ही दिन बाद फिर भीषण अकाल पड़ा। एक रात बच्चों ने माँ को पिता से कहते हुए सुना, "अब हमारे पास फिर सब कुछ ख़त्म हो गया है और केवल रोटी का आधा टुकड़ा बचा है। बच्चों को हमें दूर भेजना ही होगा। हम उन्हें और घने जंगल में ले जाएँगे, जिससे वे दोबारा वापस न लौट आएँ। हमारे पास बचने का वही रास्ता है।"

लेकिन उसके पति का दिल भर आया और उसने सोचा, "हमें अपनी रोटी का यह टुकड़ा भी अपने बच्चों के साथ ही बाँटकर खाना चाहिए।" लेकिन उसकी पत्नी ने उसकी एक न सुनी और उसे बार-बार वही बात कहती रही।

जो एक क़दम बढ़ा सकता है, वह दूसरा भी बढ़ा सकता है और इसी तरह जो एक बार राज़ी हो सकता है, वह दूसरी बार भी राज़ी हो सकता है।

बच्चे ये सारी बातें सुन रहे थे। जैसे ही माता-पिता सो गये। हैंसल उठा और सफ़ेद पत्थर बीनने के लिए बाहर जाने लगा, लेकिन उसकी माँ ने दरवाज़ा बन्द कर दिया था, इसलिए वह बाहर नहीं जा सका। फिर भी उसने ग्रेथल को ढाँढ़स बँधाया, "रो मत। चुप हो जा। ईश्वर हमारी सहायता करेंगे।"

अगले दिन सुबह-सुबह उनकी सौतेली माँ ने आकर उन्हें उठा दिया और दोनों को रोटी का एक-एक टुकड़ा दिया, जो पहलेवाले टुकड़े से काफ़ी छोटा था। रास्ते में हैंसल ने अपनी रोटी के टुकड़े को अपनी जेब में टुकड़े-टुकड़े कर दिया और रास्ते में जगह-जगह रुककर रोटी का चूरा गिराता रहा। "हैंसल तुम रुक-रुककर क्या देख रहे हो ?" पिता ने पूछा, "ठीक से चलो।" हैंसल ने जवाब दिया, "मैं अपनी छोटी बत्तख़ को देख रहा हूँ, जो मुझे अलविदा कह रही है।" माँ बोली, "मूर्ख ! वह कोई बत्तख़ नहीं, बल्कि चिमनी के ऊपर चमकता हुआ सूरज है।"

लेकिन हैंसल फिर भी रुक-रुककर रोटी का चूरा गिराता रहा।

माँ बच्चों को घने जंगलों में ले गयी, जहाँ वे कभी नहीं आये थे। वहाँ उन्होंने आग जलायी और वह उनसे बोली, "यहीं बैठो और आराम करो और जब थक जाओ तो थोड़ी देर के लिए सो भी जाना। हम जंगल में लकड़ी काटने जा रहे हैं और शाम को वापस घर लौटते समय तुम्हें साथ ले लेंगे।"

जब दोपहर हुई तो ग्रेथल ने अपनी रोटी का टुकड़ा हैंसल के साथ बाँटकर खाया, क्योंकि उसने तो अपनी रोटी तोड़-तोड़कर रास्ते में फेंक दी थी। फिर वे सो गए, लेकिन शाम हो गयी और उनके पास कोई भी नहीं आया। अँधेरी रात में वे जगे और हैंसल अपनी बहन को ढाढ़स बँधाने लगा, "इन्तज़ार करो ग्रेथल, चाँद निकलने का इन्तज़ार करो। फिर हम रोटी के टुकड़ों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते घर पहुँच जाएँगे।" चाँद निकला और वे उठ गये, लेकिन उन्हें रोटी को कोई टुकड़ा नहीं मिला, क्योंकि जंगल की हज़ारों चिड़ियों ने उन्हें खा लिया था। हैंसल ग्रेथल से कहता रहा, "हम रास्ता ढूँढ़ निकालेंगे," लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिला। वे पूरी रात और अगले दिन भर चलते रहे, लेकिन फिर भी वे जंगल से बाहर नहीं आ सके। उन्हें बेहद भूख लगी थी, लेकिन झाड़ियों पर लगी बेरियों के सिवाय उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। जल्दी ही वे थक गये और आगे बढ़ने के लिए उनकी हिम्मत जवाब दे गयी। वे एक पेड़ के नीचे लेट गये और सो गये।

उन्हें अपने पिता का घर छोड़े तीसरा दिन हो गया था और वे अभी भी चलते जा रहे थे। लेकिन वे जंगल में और भीतर चले जा रहे थे। हैंसल को लगा कि यदि उन्हें समय पर मदद नहीं मिली तो वे भूख से ही मर जाएँगे। दोपहर हुई तो उन्हें एक सफ़ेद चिड़िया दिखायी दी, जो एक पेड़ की शाख़ पर बैठकर बहुत ही मधुर स्वर में गा रही थी। वे वहीं खड़े होकर उसका गीत सुनने लगे। जल्दी ही वह उड़ गयी। उन्होंने उसका पीछा किया और पीछा करते-करते वे एक कुटिया तक जा पहुँचे, जिसकी छत पर वह जाकर बैठ गयी थी। जैसे ही वे उस कुटिया के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उसकी दीवारें और छत रोटी और मिठाइयों की हैं और खिड़कियों के पल्ले पारदर्शी शक्कर के बने थे।

हैंसल बोला, "हम यहाँ चलकर मज़ेदार दावत खाते हैं। मैं छत खाऊँगा, तुम खिड़की खाना। क्या वे मीठे होंगे ?" हैंसल गया और उसने चखने के लिए छत का एक टुकड़ा तोड़ लिया, जबकि ग्रेथल खिड़की के पास जाकर उसे खाने लगी। तभी उन्हें कमरे में एक मधुर आवाज़ सुनाई दी, "धड़-धड़, धड़-धड़, कौन है मेरे दरवाज़े पर ?" बच्चों ने जवाब दिया, "हवा, हवा। स्वर्ग की हवा" और



वे खाते रहे। हैंसल को छत बहुत स्वादिष्ट लगी, इसलिए उसने एक बड़ा टुकड़ा लेकर ही सन्तोष किया। तभी दरवाज़ा खुला और एक बूढ़ी औरत बैसाखियों पर चलती हुई भीतर से आयी। हैंसल और ग्रेथल इतना डर गये कि उनके हाथों से खाने का सामान गिर पड़ा। लेकिन बूढ़ी औरत अपना सिर हिलाते हुए बोली, "ओह, प्यारे बच्चो, तुम यहाँ कैसे आए ? भीतर आओ और मेरे साथ रहो। तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।" यह कहती हुई उन दोनों का हाथ पकड़कर भीतर कुटिया मे ले गयी। भीतर मेज़ पर दूध, पराठे, मिठाई, फल और मेवे रखे थे और पीछे के कमरे में दो छोटे-छोटे बढ़िया बिस्तर बिछे थे, जिन पर सफ़ेद चादरें बिछी थीं। उन पर हैंसल और ग्रेथल लेट गये और उन्हें ऐसा लगा जैसे कि वे स्वर्ग में हों। बूढ़ी औरत का व्यवहार उनके प्रति बहुत अच्छा था। लेकिन वास्तव में वह दुष्ट चुड़ैल थी, जो बच्चों को रास्ता भटकाती थी और उन्हें आकर्षित करने के लिए रोटियों का घर बनाती थी। जैसे ही वे बच्चे उसके क़ाबू में आते, वह उन्हें मारकर, पकाकर खा लेती और मौज मनाती। चुड़ैलों की आँखें लाल होती हैं और वे ज़्यादा दूर नहीं देख सकती, लेकिन उनके सूँघने की शक्ति बिलकुल जंगली जानवरों जैसी तेज़ होती है, जिससे उन्हें बच्चों को पास में आना पता लग जाता है।

जब हैंसल और ग्रेथल चुड़ैल के घर के पास आये, वह ज़ोर से ठहाका लगाते हुए बोली, "ये दोनों मुझसे नहीं बच पायेंगे।" अगले दिन सुबह-सुबह उनके जागने के पहले वह उनके कमरे में गयी और उन्हें सोते हुए देखकर उनके फूले-फूले लाल गालों को देखकर बड़बड़ायी, "ये बहुत स्वादिष्ट होंगे।" फिर उसने हैंसल को अपने भद्दे हाथों से उठाया और जाली के दरवाज़ेवाले छोटे पिंज़रे में बन्द कर दिया। वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया, लेकिन कोई लाभ न हुआ। फिर ग्रेथल की बारी आयी, उसे झकझोरकर उठाती हुई चुड़ैल बोली, "चल उठ आलसी लड़की, पानी ला और अपने भाई के लिए कुछ पका, जिसे पिंजरे में बैठे-बैठे मोटा होना है। जब वह काफ़ी मोटा हो जाएगा, तब मैं इसे खाऊँगी।" ग्रेथल रोने लगी, लेकिन कोई लाभ न हुआ। उसे चुड़ैल की बात माननी ही पड़ी। उसने हैंसल के लिए बढ़िया खाना पकाया, लेकिन बेचारी ग्रेथल के नसीब में खाने को सिर्फ़ केंकड़े का पंजा आया।

हर सुबह बूढ़ी चुड़ैल पिंजरे के पास आती और कहती, "हैंसल अपना हाथ बढ़ाओ, जिससे मैं देख सकूँ कि तुम कितने मोटे हुए हो।" लेकिन हैंसल एक हड्डी बढ़ा देता और बूढ़ी औरत, जिसकी नज़र ख़राब थी, उसे उसकी उँगली मान लेती और उसे आश्चर्य होता कि वह मोटा क्यों नहीं हो रहा है ? चार हफ़्ते बीत

गये और हैंसल वैसा ही रहा तो उसका धीरज जवाब दे गया वह और इन्तज़ार नहीं कर सकी और ग़ुस्से में चिल्लायी, "ग्रेथल, जल्दी से थोड़ा पानी लाओ, हैंसल पतला हो या मोटा, मैं तो आज सुबह उसे पकाकर खाऊँगी।" बेचारी छोटी बहन को कितना दुख हुआ, जब उसे पानी लाने के लिए भेजा गया। उसके गालों पर आँसू बहने लगे, "हे ईश्वर, हमारी मदद करो।" वह बोली, यदि हमें जंगल में जानवर खा जाते तो हम साथ ही मरते।" लेकिन बूढ़ी चुड़ैल बोली, "शोर मत मचाओ। उससे तुम्हारा भला नहीं होनेवाला।"

इस तरह ग्रेथल को सुबह-सुबह पानी लेने भेजा गया और उससे आग जलवायी गयी। "सबसे पहले हम रोटियाँ बनाएँगे, मैंने पहले ही आटा तैयार कर लिया है।" चुड़ैल बोली और यह कहते हुए उसने बेचारी ग्रेथल को भट्ठी के पास धकेल दिया, जिसमें तेज़ लपटें उठ रही थीं। "उसके अन्दर जाकर देखो कि वह ठीक तरह से गर्म हुई है या नहीं, फिर हम उसमें रोटियाँ डालेंगे।" वह बोली। लेकिन वह इस तरह से ग्रेथल को भी भट्ठी में बन्द करके भूनना चाहती थी और हैंसल के साथ खाना चाहती थी। ग्रेथल उसका इरादा भाँप गयी और बोली, "मुझे नहीं मालूम कि यह कैसे करना है। मैं भीतर कैसे जाऊँगी ?"

बूढ़ी औरत बोली, "बदतमीज़ चुहिया ! इस भट्ठी का मुँह काफ़ी बड़ा है, देखो मैं भी इसमें जा सकती हूँ।" कहकर वह उठी और भट्ठी में अपना सिर डाल दिया। ग्रेथल ने उसे धक्का दिया जिससे वह भीतर जा गिरी और फिर भट्ठी का मुँह बन्द कर दिया। ओह ! वह कितने भयानक तरीक़े से चीख़ रही थी, लेकिन ग्रेथल भाग निकली और उस दुष्ट चुड़ैल को जलकर राख बनने दिया।

वह दौड़कर हैंसल के पास गयी और दरवाज़ा खोलकर उसे बुलाया, "हैंसल, हम बच गये। बूढ़ी चुड़ैल मर गयी।" यह सुनकर दरवाज़ा खुलने पर वह उछलकर चिड़िया की तरह पिंजड़े से बाहर निकल आया और वे ख़ुशी से गले लगकर बार-बार एक-दूसरे को चूमने लगे। अब, जबकि डर की कोई बात नहीं थी, वे चुड़ैल के घर में गये जहाँ हर कोने में मोतियों और बहुमूल्य रत्नों से भरे बर्तन रखे थे। अपनी जेब में उन्हें भरते हुए हैंसल बोला, "ये गोल पत्थरों से बेहतर हैं," और ग्रेथल ने सोचा, "मैं इनमें से कुछ घर ले जाऊँगी," और अपनी फ्रॉक की जेब में कुछ रत्न भर लिये। हैंसल बोला, "अब हमें चलना चाहिए और इस जादू भरे जंगल से बाहर निकलना चाहिए।" लेकिन दो घण्टे चलने के बाद वे एक नदी के पास पहुँचे। हैंसल बोला, "हम पार नहीं जा सकते, यहाँ कोई पुल नहीं है और न ही कोई नाव।" ग्रेथल बोली, "लेकिन वहाँ एक सफ़ेद बत्तख़ तैर रही है। मैं

उससे मदद माँगती हूँ।" और वह गाने लगी—

"प्यारी बत्तख़, प्यारी बत्तख़,
मैं हूँ ग्रेथल, ये है हैंसल,
यहाँ न नाव, न है पुल,
हमें उस पार तू ही ले चल।"

यह सुनकर बत्तख़ आयी। हैंसल उस पर बैठा और अपनी बहन को अपने पीछे बिठाने लगा। ग्रेथल बोली, "नहीं, ये बत्तख़ के लिए बहुत भारी हो जाएगा। हम एक-एक करके जाएँगे।" उन्होंने ऐसा ही किया और दूसरी तरफ़ आ पहुँचे और फिर अपने पिता के घर भी आ पहुँचे। वे दौड़ते हुए घर में घुसे और अपने पिता के गले लग गए। जब से वह अपने बच्चों को जंगल में छोड़ कर आया था, तब से उसे चैन नहीं था। उसकी पत्नी मर गयी थी। ग्रेथल ने अपनी फ्रॉक हिलाकर उसकी जेब से फ़र्श पर मोती बिखेर दिये और हैंसल अपनी जेब से एक के बाद एक मुट्ठी भरकर रत्न निकालकर फेंकता गया। उनके दुख के दिन ख़त्म हो गये और वे हँसी-ख़ुशी साथ-साथ रहे।

मेरी कहानी ख़त्म हो गयी। वो देखो, वहाँ एक चुहिया दौड़ रही है। जो भी उसे पकड़ लेगा, उसकी ख़ाल से एक बहुत बड़ी टोपी बना सकता है।

22

अच्छा सौदा

एक किसान अपनी गाय को हाट ले गया और सात रुपये में बेच दिया। घर वापस लौटते समय वह एक तालाब के पास से गुज़रा, जहाँ उसे मेंढक बोलते सुनाई दिये, "आक्, आक् !" किसान बोला, "हाँ, ये अपने घर में हैं, तभी इतने ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे हैं। लेकिन मेरे पास ये सात रुपये हैं, आठ नहीं !" लेकिन मेंढक फिर भी बोलते रहे, "आक्, आक् !" किसान बोला, "तुम नहीं मानते तो मैं तुम्हारे सामने इन्हें गिन देता हूँ।" यह कहकर उसने एक-एक करके सात रुपये गिन दिए। मेंढकों ने फिर भी उसके गुणा-भाग पर ध्यान नहीं दिया और चिल्लाते रहे, "आक्, आक् !" अब किसान थोड़ा गुस्सा हो गया। वह बोला, "यदि तुम मुझसे बेहतर जानते हो तो ख़ुद ही गिन लो !" और यह कहते हुए उसने सारे सिक्के एक-एक करके पानी में फेंक दिये। वह रुककर उनकी राय बदलने का इन्तज़ार करता रहा। लेकिन मेंढक तो अपनी राय पर अड़े हुए थे। वे बोलते रहे, "आक्, आक् !" और उन्होंने उसके रुपये भी वापस नहीं फेंके। किसान और इन्तज़ार करता रहा, आख़िरकार जब शाम हो गयी और घर लौटने का समय आ गया तो वह मेंढकों को गालियाँ देने लगा, "तुम पानी पीटनेवालो, अरे मोटी अक़्लवालो, ओ अन्धो ! तुम्हारे मुँह इतने बड़े-बड़े हैं कि तुम्हारी आवाज़ सुनकर किसी के कान फट जाएँ। लेकिन क्या तुम सात रुपये नहीं गिन सकते ? मैं और कितनी देर इन्तज़ार करूँगा ? और यह कहकर वह वहाँ से चल पड़ा, लेकिन मेंढक अभी भी उसकी पीठ पीछे चिल्लाते रहे, "आक्, आक्, आक् !" और वह बहुत गुस्से में घर पहुँचा।

कुछ दिनों बाद उसने एक बकरी ख़रीदी, जिसे उसने मार दिया। उसने फिर हिसाब लगाया कि यदि वह उसका मांस बेच देता है तो वह गाय की क़ीमत जितना कमा लेगा और ख़ाल भी उसे मिल जाएगी। जैसे ही वह मांस लेकर शहर आया, दरवाज़े के सामने कुत्तों का एक बहुत बड़ा झुण्ड इकट्ठा हो गया। उनमें सबसे

आगे एक बड़ा शिकारी कुत्ता था, जो मांस के आसपास भौंकते हुए उछलने लगा, "वो, वो, वो !" जब वह नहीं रुका तो किसान उससे बोला, "मुझे मालूम था, तुम यही कहोगे वो-वो, क्योंकि तुम्हें वो मांस चाहिए। लेकिन यदि मैं तुम्हें मांस दूँगा तो बदले में मुझे भी इतना ही अच्छा कुछ मिलना चाहिए।" कुत्ते ने केवल जवाब दिया, "वो, वो !"

"तुम अपने दोस्तों को इसमें हिस्सा नहीं दोगे।" कुत्ते ने उत्तर दिया, "वो, वो !"

"यदि तुम यह सब मानो तो मैं तुम्हें यह खाने दूँगा। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ और तुम्हारे मालिक को भी, लेकिन यह मैं तुम्हें कहे देता हूँ कि तीन दिन में मुझे मेरे पैसे नहीं मिले तो यह तुम्हें नुक़सान करेगा।"

यह कहकर उसने गाड़ी से मांस उतारकर रख दिया और वापस घर की तरफ़ चल पड़ा। कुत्ते मांस के चारों ओर जुटकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे, "वो, वो !" दूर से उनकी आवाज़ सुनकर किसान बोला, "ठीक है, तुम लोग यह सब छक कर लो, लेकिन इसकी क़ीमत सबसे बड़ेवाले को चुकानी ही होगी।"

जब तीन दिन बीत गये तो किसान ने सोचा, "आज शाम तक मुझे पैसे मिल जाने चाहिए ?" और ख़ुश हो गया। लेकिन कोई उसे पैसे चुकाने नहीं आया। "आज की दुनिया में किसी का भरोसा नहीं," थक-हारकर वह बोला। उसका धैर्य जवाब दे रहा था। वह शहर गया और कसाई के पास जाकर उससे पैसे माँगने लगा। कसाई को लगा कि वह मज़ाक कर रहा है, लेकिन किसान बोला, "मज़ाक की बात नहीं है मेरे पैसे दो। क्या तुम्हारा शिकारी कुत्ता तीन दिन पहले एक पूरी कटी हुई बकरी लेकर घर नहीं आया ?" इससे कसाई को ज़ोर का ग़ुस्सा आया और उसने झाड़ू से मार-मार कर किसान को घर से बाहर निकाल दिया।

किसान बोला, "धीरज रखो बच्चू, इस दुनिया में कहीं तो न्याय है।" और वह राजा के महल में जाकर सुनवाई की माँग करने लगा। उसे राजा के सामने पेश किया गया, जो अपनी बेटी के साथ बैठा था। राजा ने पूछा, "तुम्हारे साथ क्या दुखभरी बीती है ?"

वह बोला, "आह, मेंढक और कुत्ते मेरी सम्पत्ति हड़प कर गए और बदले में कसाई ने मुझे झाड़ू से मारा।" यह कहते हुए उसने पूरा क़िस्सा राजा को कह सुनाया। राजा की लड़की क़िस्सा सुनकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। इस पर राजा बोला, "मैं तुम्हें न्याय तो नहीं दे सकता, लेकिन अपनी लड़की का विवाह तुम्हारे साथ अवश्य कर दूँगा। अपनी पूरी ज़िन्दगी में आज यह पहली बार हँसी है और



मैंने तय किया था कि मैं इसका विवाह ऐसे युवक से करूँगा, जो इसे हँसाएगा। अपनी क़िस्मत के लिए ईश्वर को धन्यवाद दो।''

किसान बोला, ''मुझे यह नहीं चाहिए। मेरी शादी तो हो चुकी है, मेरी पत्नी ही मेरे लिए काफ़ी है।'' इससे राजा बहुत नाराज़ हो गया और बोला, ''तुम घटिया आदमी हो।''

किसान बोला, ''महाराजाधिराज, बैल के शरीर में बैल का मांस ही तो मिलेगा, और क्या ?''

राजा बोला, ''रुको, तुम्हें दूसरा इनाम मिलेगा। अभी चले जाओ और तीन दिन बाद वापस आना, तुम्हें पाँच सौ मिलेंगे।''

जब किसान दरवाज़े तक आया तो प्रहरी उससे बोला, ''तुमने तो राजा की लड़की को हँसा दिया है। तुम्हें तो ढेर सारा इनाम मिला होगा ?'' किसान बोला, ''हाँ, मुझे पाँच सौ मिलेंगे।''

सिपाही बोला, ''अरे वाह ! इसमें से कुछ मुझे भी मिलना चाहिए। इतने रुपयों का तुम क्या करोगे ?''

किसान ने जवाब दिया, ''तुम माँगते हो तो तुम्हें दो सौ मिल जाएँगे।'' एक यहूदी भी पास में खड़ा होकर यह बातचीत सुन रहा था। वह भी किसान के पीछे भागा और उसका कोट पकड़कर बोला, ''वाह ! तुम कितने क़िस्मत वाले हो ! मैं तुम्हें बदले में सिक्के दे दूँगा। तुम कड़े करारे नोटों का क्या करोगे ?''

''ले सकते हो। ठीक है, मुझे इतना ही धन सिक्कों में दे दो। तीन दिन बाद राजा तुम्हें तीन सौ दे देंगे।'' यहूदी ख़ुश हुआ और भागकर घिसे-पुराने सिक्के ले आया, जिनमें से तीन सिक्के तो दो नये सिक्कों के बराबर थे।

तीन दिन बीतने पर किसान राजा के पास गया। राजा बोला, ''इसका कोट उतार दो, इसे पाँच सौ दे दो।'' किसान बोला, ''ओह अब उन पर मेरा हक़ नहीं है। दो सौ का वादा मैं संतरी को कर चुका हूँ और यहूदी से बदले में तीन सौ घिसे-पिटे सिक्के ले चुका हूँ, इसलिए इनमें से एक भी अब मेरा नहीं है।''

इसी बीच संतरी और यहूदी किसान द्वारा दिये गये हिस्से की उम्मीद में भीतर आए। लेकिन रुपयों के बदले दोनों को कोड़ों की मार मिली। संतरी ने धीरज से कोड़े खाए, क्योंकि वह पहले भी उनका स्वाद चख चुका था। लेकिन यहूदी की दुर्गति हुई। वह ख़ूब रोया-चिल्लाया, ''मुझ पर ख़ुदा की मार हो। ये तो सचमुच करारे नोट हैं !'' लेकिन राजा किसान की मूर्खता पर अपनी हँसी रोक न सका। उसका सारा ग़ुस्सा बह गया। वह बोला, ''तुम्हारा इनाम तुम्हें मिलने से पहले ही

ख़त्म हो गया। इसलिए मैं तुम्हें बदले में कुछ दूँगा। मेरे खज़ाने में जाओ और जितना चाहो धन ले लो।" किसान तुरन्त चल पड़ा और अपनी बड़ी-बड़ी जेबें पैसों से भर लीं और तुरन्त एक सराय में गया और पैसे वहाँ छुपा दिए। यहूदी भी उसके पीछे-पीछे घुस आया। और उसे बड़बड़ाते हुए सुनने लगा, "राजा ने मुझे फिर धोखा दिया है। क्या वह मुझे अपने हाथ से पैसे नहीं दे सकते थे ? कम-से-कम तब मुझे पता तो होता कि मेरे पास कितने पैसे हैं। अब मैं कैसे जानूँ कि मेरी जेबों में क्या है ?"

यहूदी अपने आप से बोला, "हे ईश्वर ! इसने महाराजाधिराज का अपमान किया है, मैं तुरन्त उन्हें इसके बारे में बताता हूँ। मुझे ज़रूर इनाम मिलेगा और इसे सज़ा मिलेगी।" जब राजा ने किसान के शब्द सुने तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया और उसने तुरन्त यहूदी को उसे लाने के लिए वापस भेजा। यहूदी दौड़ता हुआ किसान के पास आया और बोला, "इसी वक़्त महाराजाधिराज के पास चलो।"

किसान बोला, "मुझे मालूम है, क्या बात है ? मुझे पहले एक कोट बनवाना है। तुम्हें क्या लगता है कि इतने धनी आदमी को ऐसा फटा कोट पहनकर दरबार में जाना चाहिए ?" यहूदी को लगा कि किसान बिना नया कोट पहने दरबार में नहीं जाएगा और इतनी देर में तो राजा का ग़ुस्सा ठण्डा पड़ जाएगा। न तो मुझे इनाम मिलेगा, न ही इसे सज़ा। इस आशंका से वह बोला, "दोस्ती के नाते मैं तुम्हें थोड़ी देर के लिए एक सुन्दर कोट देता हूँ। प्यार में आदमी क्या कुछ नहीं करता ?"

किसान ने ख़ुश होकर यहूदी का कोट पहना और दरबार में गया। वहाँ राजा ने उसे यहूदी की शिकायत का दोषी ठहराया। किसान बोला, "जो कुछ उसने कहा, वह सच नहीं है। वह कभी सच नहीं बोलता। वह तो यह भी कहेगा कि यह कोट, जो मैंने पहना है, उसका है।"

यहूदी चिल्लाया, "कैसी बात करते हो ? क्या यह मेरा कोट नहीं ? मैंने तो इसे तुम्हें दोस्ती के नाते यहाँ पहनकर आने के लिए दिया था।" जैसे ही राजा ने यह सुना वह बोला, "यहूदी ने हममें से हरेक को धोखा दिया है।" और फिर उसे कुछ और 'कड़क' नोट दे दिये।

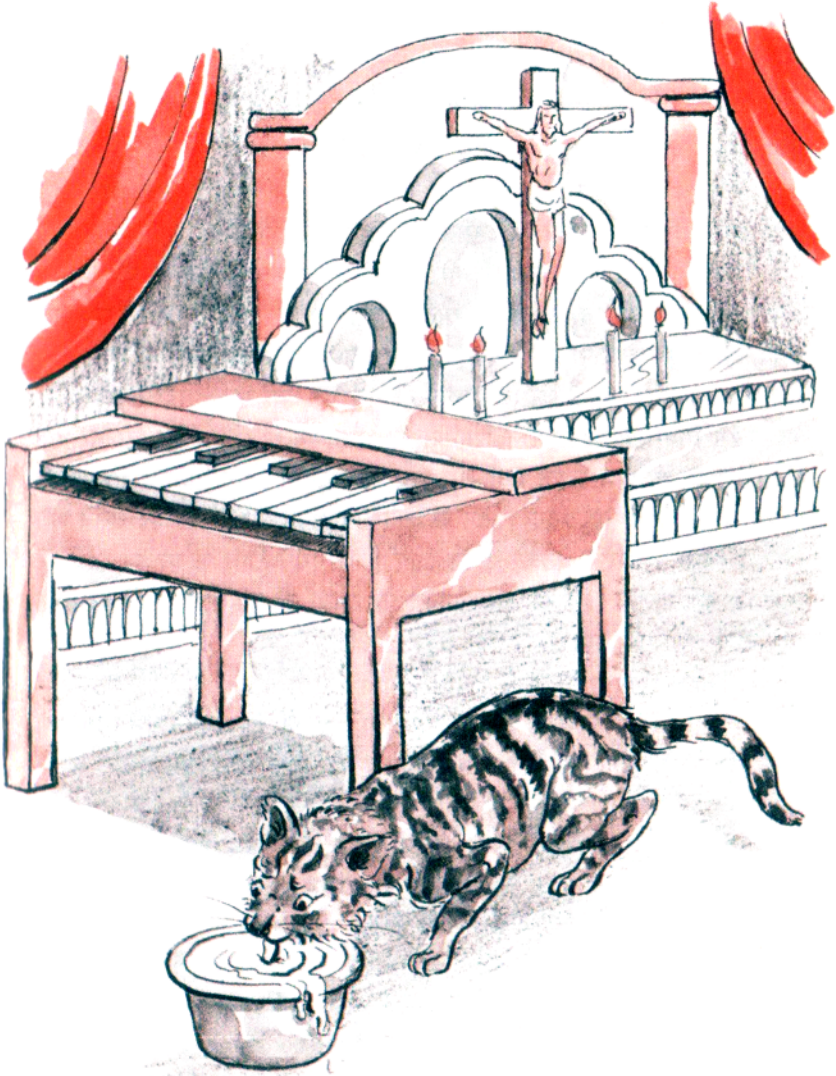
इसी बीच किसान बढ़िया कोट पहने अपने घर मन ही मन गाते हुए लौट रहा था, "अब की बार यह मुझे मिल ही गया !"

23

बिल्ले और चुहिया की दोस्ती

एक बिल्ले ने एक चुहिया से दोस्ती की। फिर बिल्ले ने उससे अपने प्यार और स्नेह का बढ़-चढ़कर बखान किया। बिल्ले ने ये बखान कुछ इस तरह से किया कि चुहिया बिल्ले के साथ उसके घर में रहने और उसकी गृहस्थी सम्भालने के लिए राज़ी हो गयी। बिल्ले ने चुहिया से कहा, "हमें जाड़े के लिए तैयारी कर लेनी चाहिए, नहीं तो हम भूखे मर जाएँगे। कारण यह है कि तुम तो इतनी छोटी-सी चुहिया हो कि तुम कहीं बाहर भी नहीं जा सकतीं—यों बाहर तुम्हारे साथ कोई दुर्घटना भी तो घट सकती है।" यह सब सोचकर वे एक बर्तन ले आये, जिसमें थोड़ा घी था। लेकिन उसे लाने के बाद उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि उसे रखा कहाँ जाए। आख़िर में बहुत सोच-विचार कर बिल्ले ने कहा, "मेरी समझ में तो इसे रखने के लिए चर्च से अच्छी जगह और कोई नहीं है, क्योंकि वहाँ कोई भी चोरी करने की हिम्मत नहीं करता। हम इसे आर्गन बाजे के नीचे रख देंगे और तब तक हाथ नहीं लगाएँगे, जब तक हमें सचमुच इसकी ज़रूरत न हो।" आख़िर बर्तन को चर्च में सम्भाल कर रख दिया गया। लेकिन अभी ज़्यादा दिन नहीं बीते थे कि बिल्ला दोबारा इसके बारे में सोचने लगा। उसने चुहिया से जाकर कहा, "मुझे तुमसे एक बात कहनी है। मेरी चाची कहती है कि मैं उसके बच्चे का धर्मपिता बनूँ। उसका बेटा अभी पैदा हुआ है, जो सफ़ेद रंग का है और उस पर भूरे निशान हैं। इसलिए उसके नामकरण में मुझे ज़रूर जाना चाहिए। तो मुझे आज दिन में जाने की अनुमति दो और तुम यहीं रहकर घर सम्हालो।" चुहिया ने कहा, "ज़रूर, तुम ज़रूर जाओ और जब वहाँ कोई अच्छी चीज़ खाने को मिले तो मुझे भी याद करना, मैं भी ख़ुशी-ख़ुशी नामकरण वाला मीठा लाल शर्बत थोड़ा-सा पी लूँगी।" लेकिन यह तो केवल एक कहानी थी, क्योंकि बिल्ले की कोई चाची नहीं थी और न ही उसे धर्मपिता बनने के लिए कहा गया था। वह सीधे चर्च

में गया और धीरे-धीरे सरकते हुए घी के बर्तन के पास तक जा पहुँचा। वह उसे तब तक चाटता रहा, जब तक कि ऊपरी हिस्सा बिलकुल साफ़ नहीं हो गया। इसके बाद वह अपने बारे में सोचते हुए शहर के घरों की छतों पर घूमता रहा। धूप में जब-तब वह अपने शरीर को फैलाकर अँगड़ाई लेता और घीवाले बर्तन की



याद आने पर अपनी मूँछों पर जीभ फेरकर अपने को शाबासी देता। शाम होने पर जब वह घर पहुँचा तो चुहिया उससे बोली, "तो तुम आ गये ! तुम्हारा आज का दिन तो बहुत मज़ेदार बीता होगा ?"

बिल्ले ने जवाब दिया, "हाँ, सचमुच मेरा दिन बहुत अच्छा बीता।"

"तुमने बच्चे का नाम क्या रखा ?" चुहिया ने पूछा।

"सिर-सफ़ा !" बिल्ले ने तुरन्त जवाब दिया।

"सिर-सफ़ा !" चुहिया बोली, "ये नाम तो बिलकुल अजीब और अनूठा है। क्या तुम्हारे परिवार में ऐसे ही नाम रखे जाते हैं ?"

"इससे क्या होता है ?" बिल्ला बोला, "तुम लोग जो 'टुकड़ा-चोर' जैसे नाम अपने बच्चों के रखते हो, उससे तो यह अच्छा ही है।

कुछ ही दिनों बाद पहले की ही तरह बिल्ले के मन में फिर से घी के लिए लालच पैदा हुआ और वह चुहिया से बोला, "तुम एक बार फिर से घर की देखभाल करके मुझ पर मेहरबानी करो, क्योंकि मुझे दोबारा धर्मपिता बनने के लिए कहा गया है। बात यह भी है कि छोटे बच्चे के गले पर एक सफ़ेद पट्टी है। इसलिए भी मैं इस निमन्त्रण को टाल नहीं सकता।" भोली-भाली चुहिया ने हामी भर दी। बिल्ला दीवार के पीछे सरक गया और चर्च जा पहुँचा। उसने घीवाले बर्तन में से आधा हिस्सा साफ़ कर दिया। दिन के अपने काम से सन्तुष्ट होकर उसने मन ही मन सोचा, "अकेले बैठकर अपने आप खाये गये भोजन से बढ़कर स्वादिष्ट कुछ भी नहीं होता।" बिल्ला जब लौटकर घर आया तो चुहिया ने उससे पूछा कि इस बच्चे का नाम क्या रखा गया है।

"आधा-सफ़ा", बिल्ले ने जवाब दिया।

"आधा-सफ़ा ! इसका क्या मतलब हुआ ? अपनी ज़िन्दगी में मैंने ऐसा नाम पहले कभी नहीं सुना। मैं शर्त लगा सकती हूँ कि ऐसा कोई नाम पंचांग में भी नहीं है।"

कुछ दिनों बाद बिल्ले के मुँह में दावत को याद करके फिर से पानी आने लगा। उसने चुहिया से कहा, "हर अच्छी चीज़ तीन के जोड़े में मिलती है। अब देखो न, "मुझे तीसरी बार धर्मपिता बनने के लिए कहा गया है। ये बच्चा बिलकुल काला है और उसके छोटे-छोटे सफ़ेद पंज़े हैं। लेकिन उसके शरीर पर एक भी सफ़ेद बाल नहीं है। इस तरह की बात दो साल में एक बार ही होती है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि इस बार भी मुझे जाने दो।"

"सिर-सफ़ा ! आधा-सफ़ा !" चुहिया ने कहा, "ये ऐसे अद्‌भुत नाम हैं कि

मुझे थोड़ी-बहुत शंका हो रही है।"

"ओह !" बिल्ला बोला, "भूरे बालों और लम्बी पूँछवाली चुहिया ! तुम यहाँ बैठकर फालतू बातें सोचती रहती हो। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि तुम कभी बाहर नहीं जाती।"

बिल्ले की अनुपस्थिति में चुहिया घर ठीक-ठाक करने में व्यस्त रही। इधर लालची बिल्ले ने चाट-चाटकर पूरा बर्तन ही साफ़ कर डाला। उसने मन में सोचा, 'जब ये पूरा साफ़ हो जाए तभी कोई शान्ति से बैठ सकता है, जब रात हो गयी तो वह सन्तुष्ट होकर थका-माँदा घर वापस पहुँचा। चुहिया ने इस बार भी पूछा कि तीसरे बच्चे का नाम क्या रखा गया है। "तुम उसका नाम जानकर भी बहुत ख़ुश नहीं होओगी, क्योंकि इसका नाम है पूरा-सफ़ा" बिल्ला बोला।

"पूरा-सफ़ा !" चकित होकर चुहिया बोली, "सचमुच ये नाम तो अब तक के नामों में से सबसे अजीब है। मैंने इसे अब तक कहीं पढ़ा भी नहीं है। पूरा-सफ़ा ! इसका भला क्या अर्थ हो सकता है ?" अपने सिर को झटका देते हुए और शरीर को मोड़ते हुए चुहिया सोने चली गयी।

इसके बाद किसी ने भी बिल्ले को धर्मपिता बनने के लिए नहीं कहा। इधर सर्दियाँ आ गयी थीं और घर के बाहर कोई भी काम की चीज़ चुनने के लिए बची नहीं थी। चुहिया ने अपने सुरक्षित भण्डार के बारे में सोचा और बिल्ले से बोली, "आओ दोस्त, हमने जो घी का बर्तन रख छोड़ा था, वहाँ चलें। वह अब हमारे लिए बहुत स्वाद की चीज़ होगी।"

"हाँ, ज़रूर" बिल्ले ने जवाब दिया, "उसका स्वाद तुम्हें वैसा ही लगेगा, जैसा कि खिड़की को चाटने पर आता होगा।"

और वे अपनी यात्रा पर निकल पड़े। जब वे चर्च पहुँचे तो बर्तन अपनी ज़गह पर रखा हुआ था, लेकिन ख़ाली था। "वाह", चुहिया बोली, "अब मैं समझी कि क्या हुआ है। अब मैं जान गयी हूँ कि तुम सचमुच ही बड़े भरोसेमंद दोस्त हो। धर्मपिता बनकर तुमने सारा का सारा घी साफ़ कर डाला, पहले 'सिर-सफ़ा', फिर 'आधा-सफ़ा' फिर...।"

"तुम चुप होगी कि नहीं ?" बिल्ला बोला, "तुमने एक शब्द भी कहा तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।" निर्दोष चुहिया की ज़ुबान पर 'पूर-सफ़ा' अभी आया ही था और वह उसे पूरा बोल भी नहीं पायी थी कि बिल्ला उछला, उसने चुहिया को मुँह में दबाया और उसे निगल गया।

इस दुनिया में ऐसा हर दिन होता है।

24

लोमड़ और बिल्ली

किसी समय की बात है। एक बार जंगल से गुज़रते हुए एक बिल्ली की मुलाक़ात एक लोमड़ से हुई। लोमड़ को दुनियां के तौर-तरीक़ों के बारे में बहुत समझदार और अनुभवी जानकर बिल्ली उससे आदरपूर्वक बोली, "नमस्ते लोमड़ महाराज ! आप कैसे हैं ? आपका जीवन कैसे चल रहा है ? इतने मुश्किल समय में आपकी गुज़र-बसर कैसे हो रही है ?"

लोमड़ ने घमण्ड में भरकर बिल्ली को सिर से पैर तक देखा और सोचने लगा कि इसकी बात का जवाब दिया जाए या नहीं। आख़िरकार वह बोला, "ओ नीच ठगनी ! चितकबरी मूर्खा ! चूहे की शिकार करनेवाली भुक्खड़ी ! मेरा हाल पूछने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ? तुम्हें आता ही क्या है ? तुम्हें कौन-कौन सी विद्या आती है ?"

बिल्ली ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, "मुझे तो बस एक ही विद्या आती है।"

लोमड़ ने पूछा, "अच्छा वह विद्या कौन-सी है ?"

बिल्ली बोली, "जब कुत्ते मेरा पीछा कर रहे हों तो पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचाना।"

लोमड़ कहने लगा, "बस इतना ही ! मैं तो लगभग सौ विद्याएँ जानता हूँ और साथ-साथ मेरे पास चालाकियों का पिटारा भी है। मुझे तो तुम पर दया आती है। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें बताऊँगा कि शिकारी कुत्तों से कैसे अपना बचाव किया जाता है !"

इतने में चार कुत्तों के साथ एक शिकारी घोड़े पर सवार होकर वहाँ आया। बिल्ली उसे देखते ही फुर्ती के साथ पेड़ पर चढ़ गयी और सबसे ऊँची शाख़ पर जाकर बैठ गयी। शाखों और पत्तों में वह आराम से छिप भी गयी। उसने वहीं से लोमड़ को आवाज़ लगायी, "अपना पिटारा खोलो लोमड़ ! तुम अपनी चालाकियों



का पिटारा क्यों नहीं खोलते ? इसी बीच कुत्तों ने लोमड़ को बुरी तरह दबोच लिया था। उसका अन्त देखकर बिल्ली बोली, "आह लोमड़ महाराज अपनी सौ विद्याओं के बावजूद आप कुछ नहीं कर सके। यदि आप मेरी तरह पेड़ पर चढ़ना जानते तो इस तरह आपको अपने जीवन से हाथ नहीं धोना पड़ता।"

25

बूढ़ा सुलतान

एक किसान का एक स्वामिभक्त कुत्ता था—सुलतान। सुलतान उस किसान की सेवा करते-करते बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके दाँत झड़ गये थे, जिससे वह किसी चीज़ को पकड़ भी नहीं पाता था। एक दिन किसान अपनी पत्नी के साथ अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा था। वह बोला, "आज सुबह मैं सुलतान को गोली मार दूँगा, क्योंकि अब वह किसी काम का नहीं रहा।" उसकी पत्नी सुलतान के प्रति दया दिखाती हुई बोली, "उसने हमारी इतने दिनों तक भक्तिपूर्वक सेवा की है। मुझे लगता है, हम उसे आसानी से पूरी ज़िन्दगी खाना खिला सकते हैं।" उसका पति बोला, "क्या ? तुम चतुर नहीं हो। उसका तो एक भी दाँत नहीं है और न ही उससे कोई चोर डरता है। इसलिए उसे मार ही देना चाहिए। यदि उसने इतने दिन हमारी सेवा की है तो हमने उसे खाना भी तो दिया है।"

बेचारे कुत्ते ने जो धूप में पास में ही लेटा था, अपने मालिक की बात सुनी और यह सुनकर बहुत भयभीत हुआ कि कल उसका आख़िरी दिन है। जंगल में एक भेड़िया उसका दोस्त था। वह उसके पास शाम को गया और अपने दुर्भाग्य के बारे में कह सुनाया। भेड़िया बोला, "धीरज रखो ! मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैंने अभी-अभी कुछ सोचा है। कल सुबह-सुबह तुम्हारा मालिक अपनी पत्नी के साथ घास काटने जाएगा और बच्चे को भी साथ ले जाएगा, क्योंकि घर में और कोई नहीं होगा। जब वे काम करेंगे तो वे बच्चे को छाया में जाली के भीतर रख देंगे और तुम्हें उसकी रखवाली के लिए छोड़ देंगे। तभी मैं जंगल से उछलकर बाहर आऊँगा और बच्चे को उठा ले जाऊँगा। तुम तुरन्त मेरा पीछा करना। मैं बच्चे को गिरा दूँगा और तुम उसे उठाकर वापस उसके माँ-बाप के पास ले जाना, जो यह सोचेंगे कि तुमने उसे बचाया है। वे तुम्हारा धन्यवाद करेंगे और तुम्हें मारेंगे नहीं। इस तरह तुम बच जाओगे।"



कुत्ते को यह योजना अच्छी लगी और ऐसा ही किया गया। जब पिता ने भेड़िये को अपने बच्चे को ले जाते हुए देखा तो वह ज़ोर से चिल्लाया। लेकिन बूढ़ा सुलतान जब उसे वापस लाया तो वह बहुत ख़ुश हुआ। वह सुलतान की

पीठ पर हाथ फेरकर बोला, "तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा, तुम्हें पूरी ज़िन्दगी आराम से खाना मिलेगा।" उसने फिर अपनी पत्नी से घर जाकर सुलतान के लिए मुलायम रोटी और मांस पकाने को कहा, जिससे उसे चबाने में परेशानी न हो। उसके बिस्तर पर एक तकिया लगाने को भी कहा, जिससे वह आराम से सोये। अब सुलतान को सब कुछ मिल रहा था। जल्दी ही भेड़िया उससे मिलने आया और उसके भाग्य पर उसे बधाई दी। वह फिर चालाकी से बोला, "लेकिन मैं यदि तुम्हारे मालिक की एक मोटी भेड़ उठा ले जाऊँ तो तुम अनदेखा कर देना।" कुत्ता बोला, "यह भूलकर भी न करना। मेरा मालिक मुझे स्वामिभक्त मानता है। मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।" भेड़िये ने सोचा कि कुत्ता यह सब मज़ाक़ में कह रहा है और रात को वह चुपचाप रेंगते हुए आँगन में भेड़ उठा ले जाने के लिए घुस आया। लेकिन किसान को कुत्ते ने सारी बात कह दी थी। उसने भेड़िये को धर दबोचा और अनाज पीटने की संडी से उसकी ख़ूब पिटाई की। भेड़िये को भागना पड़ा, लेकिन भागते-भागते भी वह कुत्ते से चिल्लाकर बोला, "इन्तज़ार करो बदमाश, मैं तुम्हें इसका मज़ा ज़रूर चखाऊँगा।"

अगले दिन सुबह-सुबह ही भेड़िये ने एक जंगली सुअर को सुलतान के पास चुनौती देकर भेजा। उसने कहलाया कि हिम्मत है तो जंगल में मुक़ाबले के लिए आ जाओ। बूढ़े सुलतान का साथ देने के लिए केवल एक बिल्ली ही थी, जिसके केवल तीन ही पैर थे। बेचारी बिल्ली कुत्ते के साथ, दर्द से अपनी पूँछ ऊपर उठाए उचकती हुई चलती गयी। भेड़िया और उसका साथी सुअर पहले ही जंगल में मौजूद थे। जैसे ही उन्होंने कुत्ते को देखा तो बिल्ली की उठी हुई पूँछ देखकर उन्हें दूर से लगा कि कुत्ता एक बड़ी तलवार लिये चला आ रहा है। बिल्ली जब-जब उचकती तो उन्हें लगता कि कुत्ता एक बड़ा पत्थर उठाकर उन पर मारनेवाला है। भेड़िया और सुअर, दोनों ही बहुत डर गये। सुअर तो रेंगकर पत्तियों के एक ढेर में घुस गया। भेड़िया पेड़ पर चढ़ गया। जब कुत्ता और बिल्ली वहाँ पहुँचे तो उन्हें समझ में ही नहीं आया कि क्या हुआ है। जंगली सुअर अपने-आपको पूरी तरह पत्तियों के पीछे नहीं छिपा पाया था और उसके कान दिखायी दे रहे थे। इसी समय सुअर ने अपना एक कान फड़फड़ाया। बिल्ली ने उसे चूहा समझा और उछलकर काट खाया। इस पर सुअर दर्द से ज़ोर-से चिल्लाया और भागते हुए बोला, "असली क़सूरवार तो वहाँ, पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठा है !" बिल्ली और कुत्ते ने ऊपर देखा तो उन्हें भेड़िया दिखायी दिया। वह डर जाने के कारण बहुत शर्मिन्दा था। उसने कुत्ते से माफ़ी माँगी और समझौता कर लिया।

26

दो भाई

एक समय में दो भाई थे—एक अमीर और दूसरा ग़रीब। अमीर भाई सुनार था, लेकिन दुष्ट था। ग़रीब भाई झाड़ू बनाकर अपनी जीविका चलाता था, लेकिन ईमानदार और चरित्रवान था। उसके दो जुड़वाँ बच्चे थे—एकदम एक जैसे। जैसे पानी की दो बूँदें हों। वे अक्सर अपने अमीर चाचा के घर जाते और उन्हें खाने को बची-खुची जूठन दी जाती। एक दिन जब ग़रीब भाई जंगल में लकड़ियाँ लेने गया तो उसे एक चिड़िया दिखाई दी, जो सोने की थी। ऐसी चिड़िया उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी। उसने एक पत्थर उठाकर चिड़िया को मारा और वह उसे लग गया, लेकिन इतने धीरे-से कि उसका केवल एक पंख ही टूटकर गिरा। यह पंख लेकर वह अपने भाई के पास गया, जिसने उसे देखा और कहा, "यह तो शुद्ध सोने का है !" और उसे बदले में काफ़ी पैसे दे दिये। अगले दिन वह देवदारू के वृक्ष पर एक-दो शाख़ें तोड़ने के लिए चढ़ा तो उसी समय वह चिड़िया पेड़ से उड़ी। उसने अपने आसपास देखा तो उसे वहाँ एक घोंसला दिखाई दिया, जिसमें एक अंडा रखा हुआ था। वह अंडा भी सोने का था। वह पहले की तरह इस अंडे को भी अपने भाई के पास ले गया। भाई ने कहा कि यह शुद्ध सोने का है और उसे उसकी क़ीमत चुका दी। लेकिन फिर उसने यह भी कहा कि उसे वह चिड़िया ही चाहिए। तीसरी बार ग़रीब भाई जंगल में गया और उस चिड़िया को फिर उसी वृक्ष पर बैठे देखा। उसने एक पत्थर उठाकर उस पर मारा और गिरने पर उसे उठाकर अपने भाई के पास ले गया, जिसने उसे बदले में सोने का ढेर दिया। इसके बाद छोटा भाई ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आया।

लेकिन सुनार बहुत चतुर था। उसे उस चिड़िया के बारे में जो कुछ भी पता था, उसे ध्यान में रखते हुए उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, "इस चिड़िया को मेरे लिए पकाओ, लेकिन इससे जो भी गिरे उसका ध्यान रखना, क्योंकि इसे

केवल मैं ही खाऊँगा।" चिड़िया कोई मामूली चिड़िया तो थी नहीं। उसमें यह अद्भुत शक्ति थी कि जो कोई भी उसका जिगर और दिल खायेगा उसे हर सुबह अपने तकिये के नीचे एक सोने का टुकड़ा मिलेगा। पत्नी ने चिड़िया पकायी और उसे धीमी आँच पर भूनने के लिए रख दिया। उसे छोड़कर वह किसी काम से रसोईघर से बाहर गयी तभी छोटे ग़रीब भाई के दोनों बच्चे भीतर आये और चूल्हे की लकड़ी से खेल-खेल में छेड़-छाड़ करने लगे। उस बर्तन में से चिड़िया के दो छोटे टुकड़े निकलकर आग पर गिर पड़े। एक लड़का बोला, "हम ये टुकड़े खा लेते हैं, मुझे तो बहुत भूख लगी है और किसी को इसका पता भी नहीं चलेगा।" और वे जल्दी से वे टुकड़े खा ही रहे थे कि तभी बड़े भाई की पत्नी रसोईघर में आ गयी। उसने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या खाया है तो वे बोले, "इस बर्तन में से गिरे हुए चिड़िया के दो छोटे टुकड़े।" वह औरत डरकर बोली, "वे तो दिल और जिगर थे। अपने पति को पता लग जाने के डर से उसने एक मुर्ग़ा काटा और उसके दिल और जिगर को सोने की चिड़िया के भीतर डाल दिया। जब वह अच्छी तरह से पक गयी, तो वह उसे लेकर अपने पति के पास गयी जिसने उसे अकेले ही खाया और कुछ भी नहीं छोड़ा। अगली सुबह जब उसने अपने तकिये के नीचे सोने के टुकड़े तलाश किये तो वहाँ कुछ भी नहीं था।

दोनों बच्चों को अपनी क़िस्मत के बारे में पता भी नहीं था। और जब वे अगली सुबह उठे तो कुछ खनखनाकर नीचे गिरा। उन्होंने उनको उठाया तो पाया कि वह सोने के दो टुकड़े थे। वे उन्हें अपने पिता के पास ले गये तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और सोचने लगा कि उनसे वह क्या करेगा। लेकिन अगली सुबह फिर वही हुआ और फिर हर सुबह होने लगा। वह अपने भाई के पास गया और उसे पूरी बात कह सुनायी। सुनार को एकदम समझ में आ गया कि चिड़िया का दिल और जिगर उन बच्चों ने खा लिया है। वह दुष्ट और चालाक था। इसलिए बदला लेने के लिए उसने अपने भाई से कहा कि उसके बच्चों पर शैतान का प्रभाव हो गया है। उसने उसे सोना लेने के लिए भी मना किया और बच्चों को घर से बाहर निकाल देने के लिए कहा, क्योंकि उनके शैतानी प्रभाव से कोई दुर्घटना हो सकती थी। उसका पिता डर गया। हालाँकि उसका दिल बहुत दुख रहा था, फिर भी वह उन्हे भरे दिल से जंगल में छोड़ आया।

दोनों बच्चे जंगल में इधर-उधर घर की राह तलाशते हुए भटकते रहे। लेकिन उन्हें राह नहीं मिली, बल्कि वे और भटक गये। आख़िरकार उन्हें एक शिकारी मिला, जिसने उनसे पूछा कि वे किसके बच्चे हैं। उन्होंने जवाब दिया, "हम एक ग़रीब

झाड़ बनानेवाले के बच्चे हैं।" और फिर उसे बताया कि उनके पिता उन्हें इसलिए अपने साथ नहीं रख सकते, क्योंकि उनके सिरहाने रोज़ सुबह एक सोने का टुकड़ा मिलता है। शिकारी बोला, "ठीक है, यदि तुम ईमानदार हो और ख़ाली बैठे हो तो यह कोई ठीक बात तो नहीं है।" और वह बिना बाल-बच्चोंवाला भला आदमी उन दोनों जुड़वा बच्चों को अपने साथ अपने घर ले गया। वे उसे पसन्द आये थे, इसलिए उसने उनसे कहा कि वह उनका पिता की तरह भरण-पोषण करेगा। उसके साथ उन्होंने तरह-तरह के शिकार करना सीखा और रोज़ सुबह मिलनेवाले सोने के टुकड़ों को उन्होंने बुरे दिनों के लिए बचाकर रख छोड़ा।

जब वे युवा हो गये तो शिकारी उन्हें जंगल में ले गया और बोला, "आज तुम्हारे शिकार करने की परीक्षा है। मैं तुम्हें अपने जैसा शिकारी बनाना चाहता हूँ।" वे उसके साथ बहुत देर तक इन्तज़ार करते रहे, लेकिन कोई भी जंगली ज़ानवर नहीं आया। तभी शिकारी ने ऊपर देखा तो उसे त्रिकोण के रूप में उड़ते हुए जंगली हंस का एक झुण्ड दिखाई पड़ा। वह लड़कों से बोला, "दोनों किनारों से एक-एक हँस को मार गिराओ।" जब उन्होंने ऐसा कर दिया तो एक और झुण्ड दो के अंक के आकार में उड़ता नज़र आया। इसमें भी उन्हें दोनों किनारों से एक-एक पक्षी को मारने का आदेश मिला। जब उन्होंने इस झुण्ड में से भी इसी तरह दो पक्षी मार गिराये तो उनके धर्मपिता ने कहा, "अब मैं तुम्हें स्वतन्त्र शिकार करने के लिए भेज सकता हूँ, क्योंकि अब तुम कुशल निशानेबाज हो गये हो।"

वे दोनों भाई जंगल में निकल गये और एक-दूसरे से बातचीत करके शिकार की योजना बनाते रहे। शाम को जब वे खाना खाने बैठे तो उन्होंने अपने धर्मपिता से कहा, "यदि आप हमारी बात नहीं मानेंगे तो हम एक कौर भी नहीं खाएँगे।"

उसने उनसे पूछा तो वे बोले—

"अब हमने सब कुछ सीख लिया है : अब हम बाहर निकल पड़ें और देखें कि हम क्या कर सकते हैं। हमें अब घर छोड़ देना चाहिए।"

"यह हुई ना बहादुरी की बात," बूढ़ा बेहद ख़ुश होकर चिल्लाया, "तुम्हारी भी वही इच्छा है, जैसा मैं चाहता हूँ। तुम जब भी निकलना चाहो, निकल सकते हो। तुम समृद्ध बनोगे।"

उन्होंने एक बार फिर ख़ुश होकर खाया-पिया। जब उनका जाने का दिन आ गया तो बूढ़े शिकारी ने दोनों लड़कों को एक-एक बन्दूक़ और कुत्ता दिया और उन्हें जितने चाहे सोने के टुकड़े लेने के लिए कहा। वह उन्हें थोड़ी दूर तक छोड़ने के लिए गया और एक तेज़ चाकू देते हुए बोला, "यदि तुम लोग अलग



हो जाओ तो इस चाकू को सड़क के किनारे एक पेड़ में घोंप देना और यदि तुममें से कोई उस जगह पर आता है तो वह अपने बिछड़े हुए भाई की हालत पता लगा सकता है क्योंकि चाकू में जिस तरफ निशान है, उस पर उस भाई के मर जाने पर जंग लग जाएगी और यदि वह जीवित होगा तो वह हिस्सा एकदम चमकता रहेगा।"

दोनों भाई जंगल में इतने भीतर तक आ गये कि वे उस दिन जंगल से बाहर नहीं निकल सकते थे। उन्होंने रात वहीं काटी और अपनी शिकारी की पोशाकों की जेब में रखा खाने का सामान खा लिया। दूसरे दिन वे फिर चलने लगे, लेकिन उन्हें जंगल का छोर नहीं मिला। उनके पास कुछ खाने-पीने को भी नहीं थ। एक बोला, "हमें कोई जानवर मारना चाहिए, नहीं तो हम भूख से मर जाएँगे।" उसने अपनी बन्दूक़ में गोलियाँ भरी और शिकार ढूँढ़ने लगा। तभी एक बूढ़ा ख़रगोश वहाँ दौड़ता हुआ आया, जिस पर उसने निशाना साधा। लेकिन वह चिल्लाया–

"प्यारे शिकारी, ना मारो मुझे,
दो छोटे ख़रगोश दूँगा तुम्हें।"

यह कहते हुए वह दौड़कर झाड़ी में गया और वहाँ से दो नन्हें ख़रगोश के बच्चे उठा लाया। वे इतने मज़े में उछल-कूदकर खेल रहे थे कि शिकारी उन्हें मारने की बात सोच ही नहीं पाये। उन्होंने उन्हें अपने साथ ले लिया और वे ख़रगोश के बच्चे उनके पीछे-पीछे चलने लगे। तभी उनके सामने एक लोमड़ी आयी और जैसे ही वह उस पर निशाना साधने लगे, वह चिल्लायी–

"प्यारे शिकारी, ना मारो मुझे,
लोमड़ी के दो बच्चे दूँगी तुम्हें।"

वह भी दौड़कर अपने दो बच्चे ले आयी और शिकारियों ने उन्हें मारा नहीं बल्कि ख़रगोश के बच्चों की तरह ही अपने साथ ले लिया। चारों उनके पीछे-पीछे चलने लगे। थोड़ी ही देर में एक भेड़िया झाड़ी से बाहर आया। उस पर शिकारियों ने निशाना साधा ही था कि वह भी औरों की तरह चिल्लाया–

"प्यारे शिकारी, ना मारो मुझे,
भेड़िया के दो बच्चे दूँगा तुम्हें।"

शिकारियों ने भेड़िये के दो बच्चों को भी बाक़ी जानवरों के बच्चों के साथ रख लिया और वे उनके पीछे-पीछे चलते रहे फिर उन्हें एक भालू मिला। उसने भी उनसे अपने जीवन की भीख माँगी और कहा–

"प्यारे शिकारी, ना मारो मुझे,
भालू के दो बच्चे दूँगा तुम्हें।"

ये दोनों भालू के बच्चे भी साथ चल पड़े। कुल मिलाकर वे आठ थे। सबसे आखिर में कौन मिला ? अपनी अयाल हिलाता हुआ एक सिंह। दोनों भाई डरे नहीं और उस पर निशाना साधा। वह बोला—

"प्यारे शिकारी, ना मारो मुझे,
दो छोटे बच्चे दूँगा तुम्हें।"

सिंह अपने दो बच्चों को उठा लाया। अब दो सिंह, दो भालू, दो भेड़िये, दो लोमड़ी और दो ख़रगोश के बच्चे शिक़ारियों के पीछे-पीछे चल रहे थे। इसी बीच उन्हें भूख लगी और वे लोमड़ियों से बोले, "ऐ चालाक लोमड़ियों, हमारे लिए कुछ खाने को ले आओ। तुम दोनों तो बहुत तेज-तर्रार और चालाक हो।"

लोमड़ियाँ बोली, "पास ही एक गाँव है, जहाँ हम बहुत सारी मुर्ग़ियाँ पकड़ सकते हैं। हम वहाँ तुम्हें ले चलते हैं।"

वे गाँव में गये और वहाँ से अपने और अपने जानवरों के लिए कुछ खाने के लिए ले आये। फिर आगे-बढ़ने लगे। लोमड़ियाँ उन जगहों से अच्छी तरह से परिचित थीं। जहाँ मुर्ग़ियों के दड़बे थे और वे शिकारियों को अच्छी तरह रास्ता दिखा रही थीं।

इस तरह वे थोड़े समय ही साथ-साथ चल पाये। थोड़ी देर बाद उनके लिए साथ-साथ चलना कठिन हो गया। परेशान होकर वे बोले, "अब कोई चारा नहीं, हमें अलग होना पड़ेगा।" दोनों भाइयों ने जानवरों को इस तरह बाँट लिया कि हरेक के पास एक सिंह, एक भालू, एक लोमड़ी, एक भेड़िया और एक ख़रगोश आया। उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली और वादा किया कि वे मरते दम तक एक-दूसरे को चाहते रहेंगे। उस चाकू को, जो उनके धर्मपिता ने दिया था, उन्होंने पेड़ के तने में घोंप दिया, जिससे कि उसका एक सिरा पूर्व की ओर और दूसरा सिरा पश्चिम की ओर रहे।

चलते-चलते छोटा भाई अपने जानवरों के साथ एक ऐसे शहर में पहुँचा, जहाँ शोक मनाया जा रहा था। वह एक सराय में गया और उसने मालिक से पूछा कि वह अपने जानवरों को वहाँ रख सकता है या नहीं। मालिक ने उसे एक अस्तबल दे दिया। उसकी दीवार में एक छेद था, जिससे होकर ख़रगोश भीतर चला गया और बन्दगोभी खाने लगा। लोमड़ी को एक मुर्ग़ी मिल गयी और उसे खाने के बाद उसने मुर्ग़ा भी चुरा लिया। लेकिन सिंह, भालू और भेड़िया उस छेद के लिए बहुत बड़े थे और उन्हें कुछ खाने को नहीं मिल पाया। मालिक ने उनके लिए एक बैल मँगाया, जिससे उन सबने छक कर पेट भरा। अपने जानवरों का पेट भरने के बाद

छोटे भाई ने सराय के मालिक से शहर में शोक का कारण पूछा। उसने जवाब दिया कि यह इसलिए है कल राजा की इकलौटी बेटी को मरना है। शिकारी ने पूछा, "क्या वह बहुत बीमार है ?"

सराय-मालिक बोला, "नहीं, वैसे तो वह ठीक-ठाक है, लेकिन फिर भी उसे मरना ही है।"

शिकारी ने पूछा, "वह क्यों ?

सराय-मालिक बोला, "वहाँ शहर के बाहर एक बहुत ऊँचा पहाड़ है, जिस पर एक राक्षस रहता है। उसे हर साल एक कुमारी लड़की चाहिए होती है, नहीं तो वह देश को बर्बाद कर देगा। अब देश की सभी लड़कियाँ ख़त्म हो गयी हैं और केवल राजकुमारी ही बची है। उसे ही राक्षस के पास कल सुबह भेजना होगा। हमारे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

शिकारी ने पूछा, "राक्षस को मारा क्यों नहीं गया ?"

सराय-मालिक बोला, "आह, बहुत से बहादुरों ने कोशिश की, लेकिन सभी मारे गये। राजा ने तो घोषणा की है कि जो भी राक्षस पर विजय पायेगा, उससे वह अपनी बेटी का विवाह कर देंगे और उनकी मृत्यु के बाद यह राज्य भी उसी व्यक्ति को मिलेगा।"

शिकारी उस समय कुछ नहीं बोला, लेकिन अगली सुबह वह अपने जानवरों को लेकर राक्षस के पहाड़ पर चढ़ गया। थोड़ी ही ऊँचाई पर एक छोटा गिरजा था, जिसकी वेदी पर तीन प्याले रखे थे और उन पर लिखा था, "जो भी इन प्यालों का पेय पियेगा, वह पृथ्वी का सबसे मज़बूत आदमी बन जायेगा और इस दहलीज़ के नीचे दबी तलवार भी निकाल सकेगा।" बिना वे पेय पिये शिकारी ने वह तलवार ढूँढ़ ली, लेकिन वह उसे उसकी जगह से हिला नहीं पाया। इसलिए उसने वे तीनों पेय पी लिये और फिर आसानी से तलवार उठा ली। अब वह इतना शक्तिशाली हो गया था कि तलवार उसे एक पंख की तरह लग रही थी।

जब राजकुमारी को राक्षस के पास भेजने का समय आया, तब राजा और उसका सेनापति पूरे दरबार के साथ राजकुमारी के साथ आये। उन्होंने पहाड़ पर शिकारी को दूर से देखा और समझा कि वही राक्षस है और राजकुमारी का इन्तज़ार कर रहा हे। वे डरकर वहीं रुक गये, लेकिन पूरे देश के बलिदान की बात सोचकर राजकुमारी को वह भयावह चढ़ाई चढ़नी ही पड़ी। राजा और उसके दरबारी शोक में भरे घर लौटे, लेकिन सेनापति वहीं खड़े होकर दूर से देखता रहा।

जैसे ही राजकुमारी पहाड़ की चोटी पर पहुँची तो उसने देखा कि वहाँ राक्षस

नहीं, बल्कि शिकारी है। उस शिकारी ने उसे ढाढ़स बँधाया और कहा कि वह उसे बचायेगा। उसने उसे गिरजाघर में ले जाकर बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद सात सिरोंवाला राक्षस ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ता हुआ वहाँ आया और जैसे ही उसने शिकारी को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पूछा, "तुम यहाँ मेरे पहाड़ पर क्या कर रहे हो ?"

शिकारी ने कहा कि वह उससे लड़ने आया है। राक्षस ने अपने सातों मुँह से आग उगलते हुए कहा, "बहुत से बहादुरों ने यहाँ अपनी जान गँवायी है और तुम्हें भी मैं उनकी ही तरह ख़त्म कर दूँगा। उसके मुँह से निकलनेवाली आग से घास जलने लगी। यदि उसके जानवर दौड़कर अपने पैरों से आग को बुझा नहीं देते तो शिकारी का धुएँ से दम ही घुट जाता। फिर राक्षस ने शिकारी पर एक तीर चलाया। लेकिन उसने अपनी तलवार से उसे हवा में ही उड़ा दिया और उससे राक्षस के तीन सिर कट गये। राक्षस एकदम आगबबूला हो गया और हवा में उड़ते हुए अपने दुश्मन पर आग थूकने लगा। वह उसे उठा फेंकने की कोशिश करने लगा। लेकिन शिकारी ने एक तरफ़ कूदकर अपनी तलवार फिर उठा ली और उसके तीन और सिर काट दिये। इससे राक्षस अधमरा होकर गिर पड़ा, लेकिन उसने एक बार फिर शिकारी को पकड़ने की कोशिश की। शिकारी ने फिर उसे मारा और अपनी पूरी ताकत लगाकर उसकी पूँछ भी काट दी। वह अब बहुत थक गया था और अब अधिक नहीं लड़ सकता था, इसलिए राजकुमार ने अपने जानवरों को बुलाया। उन्होंने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। जैसे ही युद्ध ख़त्म हुआ तो वह गिरजे के भीतर गया और दरवाज़ा खोल दिया। राजकुमारी फ़र्श पर पड़ी हुई थी, क्योंकि जब युद्ध चल रहा था, तब वह चिन्ता और डर से बेहोश हो गयी थी। शिकारी ने उसे बाहर निकाला। जब उसे होश आया तो उसने आँखें खोलीं। शिकारी ने उसे टुकड़ों-टुकड़ों में पड़ा राक्षस दिखाया। उसने कहा कि वह अब हमेशा के लिए सुरक्षित है। उस राक्षस को देखकर वह बहुत ख़ुश हुई और बोली, "तुम अब मेरे पति होओगे, क्योंकि मेरे पिता ने उस व्यक्ति से मेरी शादी करने की घोषणा की थी, जो राक्षस को मारेगा।" यह कहते हुए उसने अपनी मूँगे की माला निकाली और तोड़कर जानवरों को इनाम के रूप में बाँट दी। सिंह को सोने का कुण्डल मिला। लेकिन अपना रूमाल, जिस पर उसका नाम खुदा हुआ था, उसने शिकारी को भेंट कर दिया। शिकारी ने राक्षस की सातों जीभें काट लीं और उन्हें रूमाल में लपेटकर सावधानी से रख लिया।

जब यह सब हो चुका तो शिकारी राक्षस से हुई लड़ाई और आग से इतना

थक गया कि राजकुमारी से बोला, "हम दोनों ही थक गये हैं। थोड़ी देर सो जाते हैं।" उसने भी हामी भर दी और दोनों वहीं ज़मीन पर सो गये। शिक़ारी ने सिंह को रखवाली की ज़िम्मेदारी सौंपी। जल्दी ही वे खर्राटे भरने लगे और सिंह उनके पास बैठकर रखवाली करने लगा। लेकिन वह भी तो युद्ध में बहुत थक गया था, इसीलिए वह भालू से बोला, "तुम मेरे पास लेट जाओ, मैं थोड़ा सोऊँगा। जब कोई आये तो मुझे जगा देना।" भालू ने वैसा ही किया, लेकिन जल्दी ही वह भी थक गया और उसने अपनी जगह रखवाली की ज़िम्मेदारी भेड़िये को दे दी। भेड़िये ने भी हामी भर दी, लेकिन थोड़ी देर बाद वह भी लोमड़ी से बोला, "मेरी जगह थोड़ी देर तुम भी रखवाली करो। मैं एक झपकी लेना चाहता हूँ। जब कोई आये तो मुझे जगा देना।" लोमड़ी उसकी बग़ल में ही लेट गयी, लेकिन जल्दी उसे भी थकान लगी और उसने ख़रगोश को बुलाकर अपनी जगह लेने के लिए कहा। ख़रगोश आया और वह भी लेट गया और उसे भी नींद आने लगी, लेकिन उसके पास उसकी ज़िम्मेदारी लेने के लिए कोई नहीं था। परन्तु वह भी धीरे-धीरे लुढ़का और ख़र्राटे लेने लगा। अब वहाँ राजकुमारी, शिक़ारी, सिंह, भालू, भेड़िया, लोमड़ी और खऋरगोश सभी चैन की नींद ले रहे थे।

इसी बीच सेनापति ने, जो नीचे बैठा राक्षस को देख रहा था, जब राजकुमारी के साथ उसे उड़कर दूर जाते हुए नहीं देखा और सब कुछ शान्त पाया तो हिम्मत की और पहाड़ पर चढ़ आया। वहाँ राक्षस चिथड़े-चिथड़े होकर पड़ा था और पास ही में राजकुमारी, शिकारी और उसके पालतू जानवर गहरी नींद में सो रहे थे। यह सब देखकर सेनापति ने दुष्टतापूर्वक विचार करके अपनी तलवार उठायी और शिकारी का सिर काट दिया और राजकुमारी को अपनी बाँहों में उठाकर पहाड़ से नीचे उतरने लगा। इस सबसे राजकुमारी की नींद खुल गयी और वह डर गयी। लेकिन सेनापति उससे चिल्लाकर बोला, "तुम मेरे हाथों में हो, तुम्हें कहना ही होगा कि राक्षस को मैंने ही मारा है।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि राक्षस को तो शिकारी और उसके जानवरों ने मारा है।" वह बोली। सेनापति ने अपनी तलवार खींच ली और राजकुमारी को जान से मारने की धमकी दी। आख़िरकार वह उसके अनुसार कहने के लिए राज़ी हो गयी। वह उसे राजा के सामने लेकर आया। राजा अपनी बेटी को फिर से देखकर बेहद प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसने तो यह सोचा था कि राक्षस ने उसकी बेटी को अब तक मार दिया होगा। सेनापति ने राजा से कहा कि उसी ने राक्षस को मारा है और राजकुमारी और पूरे देश को मुक्त किया है, इसलिए उससे राजकुमारी का

विवाह किया जाना चाहिए। राजा ने अपनी बेटी से पूछा कि क्या सेनापति सच कह रहा है तो वह बोली, "हाँ, ऐसा ही है। लेकिन मेरी एक शर्त है कि विवाह एक साल और एक दिन के पहले नहीं होना चाहिए।" ऐसा उसने इसलिए किया, क्योंकि उसे लगा कि इस बीच उसे उसके प्रिय शिकारी की कोई ख़बर ज़रूर मिलेगी।

ऊपर राक्षस के पहाड़ पर सभी जानवर अभी भी अपने मृत मालिक के पास सोये पड़े थे। तभी एक बड़ी मक्खी उड़कर ख़रगोश की नाक पर बैठी, लेकिन उसने अपने पंजे से उसे भगा दिया। मक्खी फिर आयी, लेकिन ख़रगोश ने उसे फिर भगा दिया और सो गया। तीसरी बार मक्खी आकर ख़रगोश की नाक पर बैठी और उसे डंक मारा कि वह उठ ही गया। जैसे ही वह उठा, उसने लोमड़ी को उठाया, लोमड़ी ने भेड़िये को, भेड़िये ने भालू को और भालू ने सिंह को उठाया। जैसे ही सिंह उठा तो उसने देखा कि राजकुमारी वहाँ नहीं है और उसका मालिक मरा पड़ा है। वह डरकर काँपने लगा और उसने पूछा, "यह किसने किया ? भालू तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया ?" भालू ने लोमड़ी से पूछा, "तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया ? भेड़िये ने ख़रगोश से पूछा, "तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया ?" बेचारे ख़रगोश के पास कोई जवाब नहीं था और उसी पर इसका इल्ज़ाम आ गया था। लेकिन उसने अपनी जान की भीख माँगी और कहा, "मुझे मत मारो, मैं अपने प्यारे मालिक का जीवन वापस लाऊँगा। मैं एक पहाड़ी जानता हूँ, जहाँ बूटी उगती है। उस बूटी को जो भी अपने मुँह में रख लेगा, वह तुरन्त भला-चंगा हो जाता है। लेकिन उस पहाड़ी पर जाने के लिए दो सौ घण्टे चलना होगा।"

सिंह बोला, "चौबीस घण्टों के भीतर तुम्हें वह बूटी लेकर लौटना होगा।"

ख़रगोश तुरन्त दौड़ पड़ा और चौबीस घण्टों में वह बूटी अपने मुँह में दबाये लौट आया। सिंह ने शिकारी का सिर उसके धड़ पर लगाया और ख़रगोश ने वह बूटी घाव पर लगायी। शिकारी में तुरन्त जान आने लगी, उसका दिल धड़कने लगा और वह जीवित हो गया। शिकारी उठ बैठा और राजकुमारी को वहाँ न पाकर डर गया, लेकिन उसने सोचा, शायद वह मुझसे छुटकारा पाने के लिए सोते हुए मुझे छोड़कर भाग गयी है। जल्दी-जल्दी में सिंह ने अपने मालिक का सिर ठीक तरह से नहीं लगाया था लेकिन शिकारी का ध्यान इस बात पर दोपहर तक नहीं गया। खाते समय भी वह राजकुमारी के बारे में ही सोच रहा था। जब उसने खाना खाना चाहा तो उसने पाया कि उसका मुँह तो उसकी पीठ की तरफ है। उसे इसका कारण समझ में नहीं आया और उसने जानवरों से पूछा कि जब वह सो रहा था तो उसे क्या हुआ था। सिंह ने बताया कि थकान के कारण सभी सो गये थे और

जागने पर उन्होंने उसे मृत पाया था। उसका सिर कटा हुआ था। ख़रगोश जीवन-बूटी लाया और जल्दी में उन्होंने उसका सिर दूसरी ओर लगा दिया। लेकिन उसने कहा कि वह शिकारी का सिर फिर से ठीक कर सकता है। यह कहते हुए उसने उसका सिर फिर से काट दिया और उसे घुमाकर लगा दिया और ख़रगोश ने उस पर बूटी लगा दी।

इसके बाद शिकारी बहुत उदास हो गया और वह जगह-जगह भटकने लगा। उसके जानवर नाच-नाचकर उसके लिए जीविका कमाने लगे। संयोग से एक साल बाद वह उसी शहर में लौटा, जहाँ उसने राजकुमारी को राक्षस से बचाया था। इस बारे में पूरे शहर में ख़ुशियाँ मनायी जा रही थीं। उसने सराय के मालिक से पूछा, "इसका क्या मतलब है ? एक साल पहले शहर में शोक था और आज सब जगह ख़ुशी का माहौल है ?" मालिक ने कहा, "एक साल पहले राजा की बेटी को राक्षस के पास जाना पड़ा था, लेकिन हमारे सेनापति ने राक्षस से लड़कर उसे बचा लिया। आज उनके विवाह की ख़ुशियाँ मनायी जा रही हैं।"

अगले दिन जब विवाह होना था, शिकारी ने सराय-मालिक से कहा, "मेरी बात मानो, या न मानो, लेकिन आज मैं राजा के साथ उसकी मेज़ पर बैठकर खाना खाऊँगा।"

सराय-मालिक बोला, "ठीक है। यदि यह सच नहीं हुआ तो तुम मुझे सौ सोने के टुकड़े देना।"

शिकारी ने शर्त मान ली और अपने पैसे निकालकर बाहर रख दिये। फिर उसने अपने ख़रगोश को बुलाकर कहा, "जाओ, और राजा की रोटी का एक टुकड़ा मुझे लाकर दो।"

ख़रगोश सबसे छोटा था और अपनी ज़िम्मेदारी किसी और पर नहीं डाल सकता था। उसे जाना ही पड़ा। उसने सोचा, "ओह ! यदि मैं सड़कों पर अकेला दौड़ूँगा तो कसाइयों के कुत्ते मेरे पीछे दौड़ने लगेंगे।"

जब वह खड़ा हुआ सोच ही रहा था कि उसने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। कुत्ते उसके पीछे दौड़ते हुए आये और उसे स्वाद लेकर खाने ही वाले थे कि उसने एक शानदार छलाँग (तुमने तो देखा ही होगा) मारी और एक सुरक्षा-चौकी में चौकीदार के बिना जाने घुस गया। कुत्ते उसे तलाश करने लगे, लेकिन चौकीदार उनके वहाँ घूमने की वजह नहीं जान पाया और उन्हें एक लाठी से इतना मारा कि वे रिरियाते और भौंकते हुए वहाँ से भाग खड़े हुए। जैसे ही ख़रगोश ने मैदान साफ़ देखा, वह महल की ओर दौड़ पड़ा और राजकुमारी के कमरे में जाकर उसकी कुर्सी के

नीचे बैठ गया और उसका पैर खरोंचने लगा। राजकुमारी ने उसे डाँटा—"चुपचाप बैठो !" क्योंकि उसे लगा कि वह उसका कुत्ता था। ख़रगोश ने फिर उसका पैर खरोंचा और वह फिर बोली, "चुपचाप बैठो !" लेकिन उसने फिर तीसरी बार वही किया और अबकी बार राजकुमारी ने कुर्सी के नीचे झाँककर देखा और ख़रगोश को उसके गले की माला देखकर पहचान लिया। उसने उसे बाँहों में उठा लिया और अपने शयनकक्ष में ले जाकर बोली, "प्यारे ख़रगोश, तुम्हें क्या चाहिए ?" वह बोला, "मेरे मालिक, जिन्होंने राक्षस को मारा था, यहाँ पर हैं और उन्होंने मुझे भेजा है। मुझे राजा की रोटी का एक टुकड़ा चाहिए।"

यह शब्द सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुई और अपने नौकर को राजा के भोजन जैसे रोटी का एक टुकड़ा लाने का आदेश दिया। जब टुकड़ा आ गया तो ख़रगोश बोला, "रसोइये को कहो कि वह मुझे सराय तक छोड़कर आए नहीं तो कसाई के कुत्ते मेरे पीछे पड़ जाएँगे।" रसोइया उसे सराय के दरवाज़े तक पहुँचा कर आया। वहाँ पहुँचकर ख़रगोश अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने अगले पंजों में रोटी पकड़ ली और अपने मालिक के पास ले गया। शिकारी सराय मालिक से बोला, "देखो, सौ सोने के टुकड़े मेरे हुए।"

सराय-मालिक बहुत अधिक आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन शिकारी फिर बोला, "मैंने राजा की रोटी ली है, अब मैं उसके भोजन से मांस भी लूँगा।" इसे भी सराय के मालिक ने नहीं माना, लेकिन उसने इस बार शर्त नहीं लगायी। शिकारी ने लोमड़ी को बुलाया और बोला, "प्यारी लोमड़ी जाओ और जाकर राजा के आज के भोजन में से मेरे लिये मांस लेकर आओ।"

लोमड़ी ख़रगोश से ज़्यादा चालाक थी। वह गलियों से होती हुई महल तक गयी, जिससे उसे एक भी कुत्ता नहीं मिला। वह राजकुमारी के कमरे में गयी और उसकी कुर्सी के नीचे बैठ गयी। उसने भी उसका पैर खरोंचा और राजकुमारी ने कुर्सी के नीचे झाँककर देखा और लोमड़ी को उसकी माला देखकर पहचान लिया। उसे वह अपने शयनकक्ष में ले गयी और बोली, "तुम्हें क्या चाहिए ?" वह बोली, "मेरे मालिक, जिन्होंने राक्षस को मारा था, यहाँ पर हैं। उन्हें राजा के आज के भोजन में से थोड़ा-सा मांस चाहिए।"

राजकुमारी ने रसोइये को बुलाया और उसे राजा के भोजन जैसा मांस बनाने के लिए कहा। जब वह बन गया तो उसने उसे सराय के दरवाज़े तक पहुँचाकर आने के लिए कहा। वहाँ पहुँचकर लोमड़ी ने बर्तन अपने हाथों में ले लिया और अपनी पूँछ से मक्खियाँ उड़ाती हुई उसे शिकारी के पास ले गयी।

“देखो यह रोटी और मांस है : अब मैं राजा के भोजन में से सब्ज़ियाँ भी मँगवाऊँगा।” शिकारी बोला।

उस़ने भेड़िये को बुलाया और कहा, “प्यारे भेड़िये जाओ और जाकर राजा के आज के भोजन में से कुछ सब्ज़ी ले आओ।”

भेड़िया निडर होकर सीधा महल में चला गया और सीधा राजकुमारी के कमरे में गया। उसने पीछे से उसकी पोशाक खींची, जिससे राजकुमारी ने मुड़कर पीछे देखा। राजकुमारी ने उसे अपनी माला देखकर पहचान लिया और उसे अपने शयनकक्ष में ले जाकर पूछा, “हां प्यारे भेड़िये, तुम्हें क्या चाहिए ?”

जानवर ने उत्तर दिया, “मेरे मालिक, जिन्होंने राक्षस को मारा था, यहाँ हैं और उन्हें राजा के आज के भोजन में से कुछ सब्ज़ियाँ चाहिए।”

उसने रसोइये को बुलाकर राजा के भोजन जैसी सब्ज़ी तैयार करने के लिए और उसे भेड़िये के साथ सराय के दरवाज़े तक पहुँचाकर आने के लिए कहा। सराय के दरवाज़े से बर्तन भेड़िये ने ले लिया और उसे अपने मालिक के पास ले गया। शिकारी बोला, “देखो, अब मेरे पास राजा के भोजन में से रोटी, मांस और सब्ज़ी है। लेकिन अब मैं थोड़ी मिठाई भी मँगाऊँगा।” फिर उसने भालू को बुलवाया और कहा, “प्यारे भालू जाओ। तुम्हें भी तो मिठाई पसन्द है।” भालू लुढ़कता हुआ महल तक गया। सभी उसके रास्ते से हट गये, लेकिन जब वह चौकीदार तक पहुँचा तो उसने भालू को अपनी बन्दूक़ दिखायी और उसे महल में जाने से रोकने लगा। भालू अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और चौकीदार को दायीं और बायीं कनपटी पर एक घूँसा लगाया। चौकीदार गिर पड़ा और भालू सीधा राजकुमारी के कमरे में चला गया। उसके पीछे जाकर धीरे-धीरे गुरगुराने लगा। उसने आसपास देखा और उसे भालू दिखायी पड़ा। राजकुमारी उसे अपने शयनकक्ष में ले गयी और उससे आने का कारण पूछा, “मेरे मालिक, जिन्होंने राक्षस को मारा था, यहाँ हैं और उन्होंने राजा के भोजन में से कुछ मिठाई लेने के लिए मुझे यहाँ भेजा है।” राजकुमारी ने हलवाई को बुलवाया और उसे राजा के भोजन जैसी मिठाइयाँ तैयार करने के लिए और भालू के साथ सराय तक पहुँचाने के लिए कहा। वहाँ पहुँचकर भालू ने वे मिठाइयाँ लेकर सबसे पहले बहती हुई चाशनी चाटी, फिर उन्हें अपने मालिक के पास ले गया।

“देखो, अब मेरे पास राजा के भोजन जैसी रोटी, सब्ज़ी, मांस और मिठाई है, अब मैं उसकी शराब भी मँगाऊँगा।” शिकारी बोला।

उसने सिंह को बुलाया और कहा, "प्यारे सिंह, मुझे राजा की शराब से थोड़ी शराब लाकर दो।"

सिंह शहर से होकर गुज़रा, जहाँ सभी ने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। वह महल में आ पहुँचा जहाँ चौकीदारों ने उसे रोकना चाहा, लेकिन वह थोड़ा-सा ही दहाड़ा कि सभी डरकर भाग खड़े हुए। वह महल तक गया और अपनी पूँछ से दरवाज़ा खटखटाया। जब राजकुमारी ने दरवाज़ा खोला तो पहले-पहल वह सिंह को देखकर डर गयी, लेकिन जल्दी ही उसने उसकी माला देखकर उसे पहचान लिया और पूछा, "प्यारे सिंह, तुम्हें क्या चाहिए ?"

सिंह ने जवाब दिया, "मेरे मालिक, जिन्होंने राक्षस को मारा था, यहाँ हैं और उन्होंने मुझे राजा की शराब में से थोड़ी शराब लेने के लिए भेजा है।" राजकुमारी ने नौकर को बुलाया और उसे राजा की शराब में से कुछ शराब सिंह को देने के लिए कहा। लेकिन सिंह ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ आकर देखूँगा कि तुम मुझे सही शराब देते हो या नहीं।" वह नौकर के साथ गया। जब वे नीचे आये और नौकर साधारण शराब निकालने लगा, जो राजा के नौकर पीते थे, तो सिंह ज़ोर से दहाड़ा, "रुको, मैं पहले शराब चखूँगा।" और उसने अपने लिए आधा प्याला भरकर पी लिया, फिर बोला, "नहीं ! यह असली शराब नहीं है।" नौकर ने उसकी ओर तिरछी नज़र से देखा और उसके लिए दूसरे बर्तन से शराब निकालने लगा जो राजा के सेनापति के लिए था। सिंह फिर चिल्लाया, "रुको ! पहले मैं शराब चखूँगा।" उसने अपने आप आधा प्याला भरकर पिया और बोला, "यह बेहतर है, लेकिन फिर भी सही शराब नहीं है।" यह सुनकर नौकर को ग़ुस्सा आ गया और वह बोला, "तुम्हारे जैसा बेवक़ूफ़ बकरी का बच्चा शराब के बारे में क्या जाने ?" सिंह ने उसे कनपटी पर एक मुक्का मारा, जिससे वह ज़मीन पर गिर गया। जब वह सम्हलकर उठा तो डरते-डरते सिंह को एक ख़ास छोटे कमरे ले गया, जहाँ राजा की शराब रखी थी, जिसे कोई और चखने की हिम्मत नहीं करता था। लेकिन सिंह ने उसमें से भी आधा प्याला शराब अपने लिए निकाली और चखकर बोला, "यही सही शराब है।" और उसने नौकर को छह बोतलें देने का आदेश दिया। छह बोतलें लेकर वे फिर ऊपर आये तो सिंह को हल्का-सा नशा हो गया था और वह थोड़ा-सा लड़खड़ा रहा था, इसीलिए नौकर को वे बोतलें सराय के दरवाज़े तक पहुँचाकर आनी पड़ीं। वहाँ पर सिंह ने उन्हें अपने मुँह में दबा लिया और अपने मालिक के पास ले गया। शिकारी ने सराय-मालिक को बुलाया और बोला, "देखो अब मेरे पास रोटी, मांस सब्ज़ी, मिठाई और शराब सब कुछ है, बिलकुल वैसा

ही, जैसा राजा खाता-पीता है। मैं अब अपने जानवरों के साथ खाना खाऊँगा।'' उन्होंने सिंह, ख़रगोश, लोमड़ी, भेड़िये और भालू के साथ बैठकर खाना खाया। वह बेहद प्रसन्न था, क्योंकि उसे महसूस हो रहा था कि राजकुमारी अभी भी उससे प्रेम करती है। जब वह खाना खा चुका तो उसने सराय-मालिक से कहा, ''अब तो मैंने राजा का भोजन भी कर लिया है। अब मैं महल में जाकर राजकुमारी से विवाह करूँगा।''

सराय मालिक बोला, ''यह कैसे हो सकता है, क्योंकि उसकी तो सगाई हो चुकी है और आज ही उसका विवाह भी होनेवाला है ?''

शिकारी ने फिर वह रूमाल निकाला, जो उसे राजकुमारी ने दिया था और जिसमें उसने राक्षस की सातों जीभें लपेटकर रखी थीं। वह बोला, ''इसकी मदद से सब कुछ होगा।''

सराय के मालिक ने रूमाल को देखा और बोला, ''यदि तुम्हारी सारी बातें सच भी हो तो भी इन्हें मानना तो बहुत मुश्किल है। मैं अपने घर और बग़ीचे की शर्त इसके लिए लगाता हूँ।''

इस पर शिकारी ने हज़ारों सोने के टुकड़ोंवाला बटुआ निकाला और बोला, ''मैं इस पर दांव लगाता हूँ।''

इसी बीच राजा ने अपनी बेटी से पूछा, ''आज तुम्हारे पास इतने सारे जानवर क्यों आ-जा रहे थे ?''

वह बोली, ''वह मैं आपको नहीं बता सकती, लेकिन इन जानवरों के मालिक को बुलवा भेजें तो बड़ी मेहरबानी होगी।''

राजा ने एक नौकर को शिकारी को बुला लाने के लिए भेजा। वह ठीक उसी समय वहाँ पहुँचा, जबकि शिकारी सराय-मालिक से शर्त लगा रहा था। वह बोला, ''देखो, राजा ने मुझे बुलाने के लिए नौकर भी भेज दिया।'' फिर वह नौकर से बोला, ''राजा को कहो कि मुझे बुलाने के लिए राजसी पोशाक़; छह घोड़ोंवाली एक बग्घी और नौकर भेजें।''

अब राजा ने यह जवाब सुना तो उसने अपनी बेटी को कहा, ''मैं क्या करूँ ?'' वह बोली, ''आप जैसा चाहेंगे, वही अच्छा होगा।'' राजा ने फिर एक राजसी पोशाक, छह घोड़ों की बग्घी और कुछ नौकर भेजे। जब शिकारी ने उन्हें आता देखा तो वह सराय-मालिक से बोला, ''देखो, जो मैंने चाहा था वह मुझे मिल गया।'' फिर वह राजसी पोशाक पहनकर, रूमाल लेकर राजा के पास पहुँचा। जब राजा ने उसे आते हुए देखा तो उसने अपनी बेटी से पूछा कि उसे इस व्यक्ति का किस तरह

स्वागत करना चाहिए। वह बोली, "उससे मिलने के लिए बाहर जाइये।" राजा ने वैसा ही किया और उसे महल में साथ लेकर आया। पीछे-पीछे सारे जानवर भी आये। राजा ने उसे अपने और अपनी बेटी के पास बिठाया और सेनापति राजकुमारी के दूसरी तरफ़ बैठा। दीवार के पास सात सिरोंवाले राक्षस के मृत शरीर में भूसा भरकर इस तरह रखा था जैसे कि वह जीवित ही हो। राजा बोला, "उस राक्षस के सातों सिर हमारे सेनापति ने काटे थे। इसी वजह से आज हमारी बेटी का विवाह इससे हो रहा है।"

शिकारी खड़ा हुआ और राक्षस के सातों जबड़े खोलकर उसने सातों जीभों के बारे में पूछा। इस पर सेनापति डर गया और पीला पड़ गया। आख़िरकार जब उसे कोई जवाब नहीं सूझा तो वह हड़बड़ाते हुए बोला, "राक्षस की कोई जीभ नहीं थी।"

शिकारी बोला, "जीभ तो झूठे लोगों की कट जानी चाहिए। लेकिन राक्षस की जीभें तो राक्षस को मारनेवालों को इनाम मिली थीं। यह कहते हुए उसने रूमाल खोला और उसमें से एक-एक जीभ उठाकर राक्षस के मुँह में लगा दी। सारी जीभें एकदम ठीक बैठ गयी थीं, फिर उसने वह रूमाल उठाकर राजकुमारी को दिखाया जिस पर उसका नाम कढ़ा हुआ था और उससे पूछा कि उसने यह रूमाल किसे दिया था। वह बोली, "उसे, जिसने राक्षस को मारा था।" उसने अपने जानवरों को बुलाया और सबसे सोने की मालाएँ लीं और सिंह से सोने के कुण्डल लिए और फिर सबको जोड़कर राजकुमारी को भी दिखाया और उससे पूछा कि वह माला किसकी है। राजकुमारी बोली, "ये तो मेरी थी और मैंने इसे तोड़कर इन जानवरों को दिया था, जिन्होंने राक्षस से लड़ने में मदद की थी।"

शिकारी फिर बोला, "जब मैं लड़कर थक गया और लेटा था तो सेनापति ने आकर मेरा सिर काट दिया और राजकुमारी को ले गया। यहाँ आकर इसने यह बताया कि राक्षस को इसने मारा है। यह झूठ बोल रहा था। मैं सबूत के लिए यह रूमाल, ये जीभें और यह हार दिखाता हूँ।" फिर उसने बताया कि किस तरह जानवरों ने उसे एक अनोखी बूटी से जीवित किया। एक साल तक वह भटकता रहा और आख़िरकार यहाँ पहुँचा। यहीं आकर उसे सराय-मालिक से सेनापति की दुष्टता का पता चला। राजा ने अपनी बेटी से पूछा, "क्या यह सच है कि इसी ने राक्षस को मारा था ?"

वह बोली, "हाँ यह सच है और मैंने सेनापति की दुष्टता के बारे में इसलिए नहीं बताया था, क्योंकि उसने मुझे जान से मार डालने की धमकी दी थी। अब

तो यह बात मेरे बिना बताए ही खुल गयी है। इसी कारण से मैंने अपना विवाह एक साल एक दिन के लिए टाला था।''

यह सुनकर राजा ने अपने बारह सभासदों को सेनापति के बारे में फैसला करने के लिए बुलवाया। उन्होंने उसे चार बैलों द्वारा टुकड़े-टुकड़े किये जाने की सज़ा सुनायी। इस तरह सेनापति को सज़ा हुई और राजा ने अपनी बेटी का विवाह शिकारी से करके उसे अपने राज्य का राज्यपाल बना दिया। विवाह बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ। युवा राजा ने अपने पिता और धर्मपिता को भी बुलाकर ढेर सारे उपहार दिये। वह सराय-मालिक को भी नहीं भूला, बल्कि उसका स्वागत करते हुए उससे बोला, ''देखो मैंने राजा की लड़की से विवाह कर लिया है। अब तुम्हारा मकान और बग़ीचा मेरे हैं।'' जब सराय-मालिक ने कहा कि यह तो उसका हक़ है तो युवा राजा बोला, ''मैं तुम्हें यह वापस करता हूँ, घर और बग़ीचे के अलावा उसने उसे अपने हज़ारों सोने के सिक्के भी दे दिये।

अब युवा राजा और रानी बेहद प्रसन्न थे। वह अक्सर शिकार पर जाता, क्योंकि उसे शिकार में बहुत आनन्द आता था। उसके स्वामिभक्त जानवर हमेशा उसके साथ रहते थे।

पास ही एक जंगल था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह भुतहा है। जो भी उसमें जाता वह आसानी से बाहर नहीं आता था। युवा राजा को उस जंगल में शिकार करने की बड़ी इच्छा थी और इसीलिए उसने बूढ़े राजा से बार-बार अनुरोध करके वहाँ जाने की अनुमति ले ही ली। वह अपने दल-बल के साथ चल पड़ा। जैसे ही वह जंगल में आया तो उसने एक सफ़ेद हिरण को जाते देखा। अपने साथियों को अपने वापस लौटने तक इन्तज़ार करने के लिए कहकर वह घोड़े पर बैठकर अपने जानवरों के साथ उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। उसके साथी इन्तज़ार करते रहे और शाम हो गयी, लेकिन वह वापस नहीं लौटा। वे वापस लौट गये और रानी से बोले कि उसका पति एक सफ़ेद हिरण के पीछे जंगल में गया है और वापस नहीं लौटा। इससे रानी बहुत चिन्तित हो गयी। युवा राजा उस सुन्दर हिरण के पीछे जंगल में चलता चला गया, लेकिन वह उसकी पकड़ में नहीं आया। जब भी वह निशाना साधकर गोली चलाने लगता, वह उचककर आगे बढ़ जाता और आख़िरकार वह एकदम ग़ायब ही हो गया।

तभी उसे अचानक ध्यान आया कि वह जंगल में कितनी दूर चला आया है। उसने अपने बिगुल को भी बजाया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला, क्योंकि उसके साथियों को वह सुनायी ही नहीं दिया। रात होने लगी थी और वह आग

लाकर रात काटने की तैयारी करने लगा। वह आग के पास बैठा था और उसके जानवर भी उसके साथ आसपास बैठे थे। तभी उसे लगा कि उसने मनुष्य की आवाज़ सुनी है, लेकिन आस-पास देखने पर उसे कोई भी दिखायी नहीं दिया। थोड़ी देर में उसे कुछ रिरियाने की आवाज़ सुनायी दी। वह ऐसी लग रही थी जैसे किसी बक्से में से आ रही हो। ऊपर देखने पर उसने पाया कि एक बूढ़ी औरत पेड़ के ऊपर बैठी रिरियाती हुई रो रही है, "ओ, अरे राम, मैं कैसी जम गयी हूँ।" वह बोला, "नीचे आओ और आग ताप लो !" लेकिन वह बोली, "नहीं, तुम्हारे जानवर मुझे काट खाएँगे।" वह बोला, "वे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे, तुम आ जाओ।" लेकिन वह एक चुड़ैल थी। वह बोली, "मैं तुम्हें एक शाख़ फेंकती हूँ, जिसे तुम उनकी पीठ पर मार देना, फिर वे मुझे कुछ नहीं करेंगे।" उसने वैसा ही किया और तुरन्त वे जानवर चुपचाप लेट गये, क्योंकि वे तो पत्थर बन गये थे। अब उस औरत को जानवरों से कोई ख़तरा नहीं था। वह कूदकर नीचे आ गयी और राजा को भी एक शाख़ से छू दिया और वह भी पत्थर बन गया। वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी और राजा और उसके जानवरों को एक ऐसे गड्ढे में दफ़ना दिया, जहाँ पहले से ही ढेर सारे पत्थर थे।

इसी बीच युवा रानी की चिन्ता बढ़ती जा रही थी और उसे अपने पति के न लौटने का बेहद दुख था, तभी यह हुआ कि दूसरा भाई, जो कि बिछुड़ते समय पूर्व दिशा की ओर चला गया था, उस राज्य में आ गया। वह नौकरी की तलाश में पूरे देश में भटक रहा था और अपने जानवरों को नचाकर अपना पेट भर रहा था। एक बार उसने सोचा कि उसे जाकर उस चाकू को देखना चाहिए, जिसे उन्होंने अलग होते समय पेड़ में घोंपा था और अपने भाई का हाल जानना चाहिए। जब उसने देखा तो पाया कि उसके भाई की तरफ़ का चाकू तो आधा चमकीला और आधा जंगवाला है।

वह अपने जानवरों के साथ पश्चिम की ओर चल पड़ा। जब वह राजधानी में आया तो चौकीदार ने उसके पास आकर पूछा कि क्या उसकी पत्नी को उसके आने की ख़बर कर दी जाए ? युवरानी दो दिन से उसकी अनुपस्थिति से बहुत दुखी और परेशान है और उसे डर है कि वह कहीं भुतहे जंगल में मारा तो नहीं गया। चौकीदार ने सोचा कि वह युवा राजा है, क्योंकि वह उसके जैसा ही दिख रहा था और उसके साथ भी वैसे ही जानवर थे। शिकारी समझ गया कि चौकीदार उसके भाई के बारे में बात कर रहा है और उसने सोचा कि क्यों न वही अपने भाई की जगह पहुँच जाए, क्योंकि इससे शायद वह उसे अधिक आसानी से बचा

पायेगा। इसी कारण चौकीदार के साथ महल में चला गया, जहाँ धूमधाम से उसका स्वागत हुआ, क्योंकि युवरानी तो उसे ही अपना पति मान रही थी। रानी ने पूछा कि वह इतने समय तक कहाँ था ? उसने कहा कि वह जंगल में भटक गया था।

कुछ दिन घर पर ही रहा, लेकिन हमेशा भुतहे जंगल के बारे में पूछताछ करता रहा। एक दिन वह बोला, "मुझे वहाँ एक बार फिर शिकार करने ज़रूर जाना चाहिए।" राजा और युवरानी उसे रोकने की बहुत कोशिश करते रहे। लेकिन उसने तो जाना तय ही कर लिया था। वह बहुत से सहयोगियों को साथ लेकर निकल पड़ा। जैसे ही उसने जंगल में प्रवेश किया, उसके साथ भी वही हुआ, जो उसके भाई के साथ हुआ था उसे एक सफ़ेद हिरण दिखायी पड़ा। उसने अपने साथियों को अपने लौटने का इन्तज़ार करने के लिए कहा और वह उसके पीछे चल पड़ा। उसके जानवर उसके साथ थे। लेकिन वह भी अपने भाई की ही तरह उसे नहीं पकड़ पाया और घने जंगल में पहुँच गया, जहाँ उसे रात काटनी पड़ी। जैसे ही उसने आग जलाई उसने अपने सिर के ऊपर रिरियाने की आवाज़ सुनी और किसी को कहते हुए सुना, "ओह, अरे राम, मैं तो जम रही हूँ।" उसने ऊपर देखा तो वहाँ पेड़ पर एक बूढ़ी चुड़ैल बैठी थी। शिकारी ने उससे कहा, "तुम तो जम जाओगी, यहाँ आकर आग ताप लो।" वह बोली, "नहीं, तुम्हारे जानवर मुझे काट खाएँगे। मैं यह शाख़ तुम्हें देती हूँ, इससे तुम उन्हें मार देना, फिर वे मुझे कुछ नहीं करेंगे।" जब शिकारी ने यह सुना तो उसे उस औरत पर शक हुआ। वह उससे बोला, "मैं अपने जानवरों को नहीं मारता। नीचे आओ नहीं तो मैं तुम्हें पकड़ता हूँ।" वह बोली, "तुम क्या सोचते हो ? तुम मेरा कुछ नहीं कर सकते।" वह बोली, "नीचे आओ, नहीं तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा।" बूढ़ी औरत हँसी और बोली, "अरे हटो, मैं तुम्हारी गोलियों से नहीं डरती।"

उसने घुटनों के बल बैठकर गोली चलाई, लेकिन उस पर गोलियों का कोई असर नहीं हो रहा था। हँसते हुए वह बोली, "तुम मुझे नहीं पकड़ सकते !" शिकारी को एक-दो जादू भी आते थे। उसने अपने कोट से तीन चाँदी के बटन तोड़े और उन्हें बन्दूक़ में गोलियों की जगह भर लिया। जैसे ही वह उन्हें ठोंक रहा था, तभी चुड़ैल ने पेड़ से ज़ोर की चीख़ के साथ छलाँग मारी, क्योंकि उस पर उन बटनों का असर होनेवाला था। शिकारी ने उसकी गर्दन पर अपना पैर रख दिया और बोला, "अरे चुड़ैल, यदि तुमने तुरन्त मुझे मेरे भाई के बारे में नहीं बताया तो तुम्हारे दोनों हाथ बाँधकर तुम्हें आग में फेंक दूँगा।"

वह बहुत घबरायी और दया की भीख माँगते हुए बोली, "वह एक क़ब्र में

अपने जानवरों के साथ पत्थर बना पड़ा है।" शिकारी उसे ज़बरदस्ती अपने साथ ले गया और उसे धमकाते हुए बोला, "दुष्ट बुढ़िया मेरे भाई और उसके जानवरों को वापस जीवित करो नहीं तो मैं तुम्हें आग में फेंक दूँगा।"

बूढ़ी चुड़ैल ने एक शाख़ ली और उससे छूकर वापस सबको पहले जैसा कर दिया। तुरन्त उसका भाई और जानवर उठ खड़े हुए। साथ में बहुत से व्यापारी, मज़दूर और गड़रिये भी जीवित हुए और अपनी स्वतन्त्रता से ख़ुश होकर अपने घर लौट गये। लेकिन जुड़वाँ भाइयों ने एक-दूसरे को देखा तो वे गले लगकर एक-दूसरे को चूमने लगे और बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने बूढ़ी चुड़ैल को पकड़कर बाँध दिया और उसे आग में डाल दिया। जब वह जल गयी तो जंगल भी ख़त्म हो गया और सब कुछ साफ़ हो गया, जिससे तीन मील दूर से भी महल दिखाई दे रहा था।

दोनों भाई रास्ते में एक दूसरे को आपबीती सुनाते हुए साथ-साथ घर वापस लौटे। जब छोटे भाई ने कहा कि वह राजा के बाद इस सारे देश का शासक बनेगा तो दूसरा बोला, "यह सब मुझे अच्छी तरह मालूम है; क्योंकि मैं शहर गया था और मुझे ग़लतफ़हमी से तुम्हारी जगह समझ लिया गया था। सारा राजकीय सम्मान मुझे दिया गया, युवरानी ने भी मुझे अपना पति समझा, अपनी मेज़ पर खाना खिलाया और अपने बिस्तर पर सुलाया।" जब पहले भाई ने यह सुना तो वह बहुत क्रोधित हो गया, उसे इतनी ईर्ष्या हुई कि उसने अपनी तलवार निकालकर अपने भाई का सिर काट दिया। लेकिन जैसे ही रक्त की धार बहने लगी तो उसे बेहद पश्चात्ताप भी हुआ। वह बोला, "मेरे भाई ने मुझे बचाया था और मैंने उसे मारकर बदला चुकाया।" वह बुरी तरह रोने लगा। इसी समय ख़रगोश आया और यह सब देखकर करामाती बूटी लाने के लिए दौड़ पड़ा। सही समय पर वह बूटी ले भी आया, जिससे मृत भाई फिर से जीवित हो गया और उस पर एक निशान भी नहीं बचा।

इस सबके बाद वे चल पड़े। छोटे भाई ने कहा, "देखो, हम दोनों राजसी पोशाकें पहनकर, अपने-अपने जानवर साथ लेकर शहर में अलग-अलग द्वारों से प्रवेश करेंगे। फिर राजा के सामने एक ही समय में अलग-अलग द्वारों से महल में प्रवेश करेंगे।"

तय करके वे अलग हो गये। इसी समय दोनों द्वारों के द्वारपालों ने राजा के पास जाकर उन्हें सूचित किया कि युवा राजा अपने जानवरों के साथ शिकार से वापस लौट आया है। राजा ने कहा, "यह असम्भव है, तुम दोनों के द्वार तो एक मील की दूरी पर हैं।" लेकिन इसी बीच दोनों भाइयों ने अलग-अलग द्वारों से महल के आँगन में प्रवेश किया और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। जब वे भीतर आये

तो राजा ने अपनी बेटी से कहा, "बताओ, तुम्हारा पति कौन-सा है। मुझे तो दोनों एक-से दिखायी दे रहे हैं। मैं तो नहीं बता सकता।"

राजकुमारी भी दुविधा में पड़ गयी और अपने पति को नहीं पहचान सकी। लेकिन आख़िरकार उसे अपनी सोने की माला और कुण्डल याद आये जो उसने जानवरों को दिये थे। उसने देखा तो उसे एक सिंह के पास सोने का कुण्डल दिखायी दिया और वह चिल्ला पड़ी, "जिसका यह सिंह है, वही मेरा पति है।" युवा राजा हँसने लगा और बोला, "तुम सही हो," और उन्होंने एक साथ मेज़ पर बैठकर खाना खाया। शराब पी और जश्न मनाया। रात में जब युवा राजा सोने के लिए बिस्तर पर लेटा तो रानी ने उससे पूछा "पिछली दो रातों में सोते समय तुमने मेरी बजाय अपने साथ तलवार क्यों रखी थी ? रानी ने सोचा था कि वह उसे मारने के लिए थी। जब युवा राजा को यह बात पता चली तो उसने समझ लिया कि उसका भाई कितना ईमानदार है।

27

तीन भाषाएँ

स्विट्ज़रलैंड में एक बूढ़ा सामन्त था, जिसका एक बेटा था। वह बहुत बेवक़ूफ़ था और उसे कुछ भी नहीं आता था। एक दिन पिता बोला, "बेटे, मेरी बात सुनो, मैं जो कुछ कर सकता था, मैंने कर दिया, लेकिन तुम्हारे दिमाग़ में कुछ भी नहीं डाल सका। अब तुम यहाँ से दूर जाओ, जहाँ कुशल शिक्षक तुम्हें कुछ सिखाएँगे।"

और इस तरह युवक को विदेश भेज दिया गया। वहाँ वह एक साल तक अपने शिक्षक के साथ रहा और समय ख़त्म होने पर वह वापस आ गया। उसके पिता ने जब उससे पूछा कि उसने क्या सीखा है तो उसने जवाब दिया, "मैंने कुत्तें की भाषा सीखी है। जब वे भौंकते हैं तो मैं समझ सकता हूँ कि वे क्या कह रहे हैं।"

"धत्त् तेरे की ! यह भी कोई सीखने की चीज़ है। अब मैं किसी दूसरे शहर में, किसी दूसरे शिक्षक के पास भेजूँगा।" इस तरह कहकर पिता ने उसे दूसरे शिक्षक के पास भेज दिया। एक वर्ष बीत जाने पर युवक लौटकर आया। पिता ने पूछा—'तुमने क्या सीखा है ?' युवक ने उत्तर दिया—"मैंने सीखा कि पक्षी क्या गाते हैं।" यह सुनते ही पिता को बेहद ग़ुस्सा आया। वे बोले, "अरे फ़िज़ूलख़र्च, इतना सारा क़ीमती समय बीत गया और तुम कुछ भी न सीख सके ? तुम्हें मेरे सामने आते हुए शर्म नहीं आती ? मैं दूसरी बार तुम्हें एक और शिक्षक के पास भेजूँगा, लेकिन यदि इस बार तुमने कुछ नहीं सीखा तो मैं तुम्हारा पिता नहीं कहलाऊँगा।"

तीसरे शिक्षक के साथ भी लड़का एक साल रहा। वह जब लौटकर आया तो उसने अपने पिता से कहा कि उसने मेंढकों की भाषा सीखी है। यह सुनते ही ग़ुस्से से पिता का ख़ून खौल उठा और अपने नौकरों को बुलाकर उनसे कहा, "यह लड़का अब मेरा बेटा नहीं, मैं इससे अपना सम्बन्ध तोड़ता हूँ और आज्ञा



देता हूँ कि इसे जंगल में ले जाकर मार डालो।"

नौकर उसे जंगल में ले गये, लेकिन वे उसे मार नहीं सके और छोड़ दिया। उन्होंने एक हिरण के बच्चे की आँखें और जीभ निकाली और सबूत के तौर पर उन्हें सामन्त के पास ले गये।

लड़का भटकता रहा और थोड़ी देर बाद एक महल तक आ पहुँचा, जहाँ उसने एक रात रुकने की अनुमति माँगी। महल के मालिक ने कहा, "ठीक है महल के तुम नीचे वाले हिस्से में सो जाओ। लेकिन वहाँ एक मीनार है, जिसके बारे में मैं तुम्हें सावधान करना चाहूँगा। वह बहुत ही ख़तरनाक है, क्योंकि उसमें ढेर-सारे जंगली कुत्ते हैं, जो हर किसी पर भौंकते और उछलते हैं। एक निश्चित समय पर उनके सामने एक आदमी फेंका जाता है, जिस पर वे टूट पड़ते हैं और खा जाते हैं।"

इन कुत्तों के कारण पूरे देश में दुख और आतंक फैला हुआ था। कोई भी इनको रोक नहीं पा रहा था। लेकिन युवक बिना डरे बोला, "केवल मुझे इन भौंकते हुए शिकारी कुत्तों के पास ले चलो और मुझे उनके पास फेंकने के लिए कुछ दे दो, फिर मुझे कुछ नहीं करेंगे।"

उसके माँगने पर उन्होंने उसे शिकारी कुत्तों के लिए थोड़ा मांस दे दिया और उसे मीनार में जाने दिया। जैसे ही वह मीनार में गया, कुत्ते उसकी तरफ़ दोस्ती से अपनी पूँछ हिलाते हुए और बिना भौंके उसका लाया मांस खाने लगे। उन्होंने उसका बाल भी बांका नहीं किया।

अगली सुबह वह सही-सलामत बाहर आया तो सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह क़िले के मालिक से बोला, "कुत्तों ने मुझे अपनी भाषा में बताया है कि वे इस तरह देश में आतंक क्यों फैला रहे थे। वे मीनार के नीचे गड़े विशाल खज़ाने की रखवाली कर रहे हैं और जब तक उस खज़ाने को खोदकर निकाल नहीं लिया जाएगा, उन्हें चैन नहीं मिलेगा। यह सब किस तरह करना है, यह भी उन्होंने मुझे बताया है।"

यह सुनकर सभी बहुत ख़ुश हुए। ख़ज़ाना खोद निकालने की शर्त पर महल के मालिक सामंत ने उससे अपनी लड़की की शादी करने का वादा किया। यह काम उसने ख़ुशी-ख़ुशी पूरा कर दिया और जंगली शिकारी कुत्ते वहाँ से ग़ायब हो गये। देश में शान्ति छा गयी। सामन्त की सुन्दर लड़की का विवाह उससे हुआ और वे हँसी-ख़ुशी हमेशा साथ रहे।

कुछ समय बाद वह एक दिन अपनी पत्नी के साथ बग्घी में बैठा और रोम

की ओर चल पड़ा। रास्ते में वे एक दलदल के पास से गुज़रे, जहाँ एक मेंढक बैठा टर्रा रहा था। युवा सामन्त ने सुना और जब उसने उनकी बात सुनी तो वह कुछ सोचने लगा और दुखी हो गया। लेकिन उसने अपनी पत्नी को इसकी वजह नहीं बतायी। वे रोम पहुँचे तो वहाँ उन्हें पता चला कि पोप की मृत्यु हो गयी है और बाक़ी कार्डीनल तय नहीं कर पा रहे हैं कि पोप का उत्तराधिकारी कौन होगा। उन्होंने देर तक चर्चा करके तय किया कि जिसके साथ कोई चमत्कारी चिह्न जुड़ा होगा, वही उत्तराधिकारी चुना जायेगा। जैसे ही उन्होंने यह निर्णय लिया युवा सामन्त ने गिरजाघर में प्रवेश किया। अचानक दो बर्फ-सी सफ़ेद बत्तख़ें उड़कर उसके कन्धों पर बैठ गयीं। पादरी ने पहचान लिया कि यही वे चमत्कारी चिह्न हैं, जिनकी उन्हें ज़रूरत थी। उन्होंने उससे तुरन्त पूछा कि वह पोप बनना चाहेगा या नहीं। सामन्त तय नहीं कर पा रहा था कि वह स्वीकार करे या नहीं, क्योंकि वह अपने आपको इस लायक़ नहीं समझता था। लेकिन बत्तख़ों ने उसके कान में फुसफुसा कर यह प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए कहा और उसने हामी भर दी। उसका अभिषेक किया गया और मेंढकों की भविष्यवाणी पूरी हो गयी, जिसे रास्ते में सुनकर वह परेशान हो गया था कि वह पोप बनेगा। अपने चुनाव के बाद उसे वन्दना करना थी, जिसके बारे में उसे कुछ भी नहीं मालूम था, लेकिन कन्धों पर बैठी बत्तख़ें उसे सब कुछ बताती गयीं।

28

लाल टोपी

एक समय की बात है। एक प्यारी-सी छोटी बच्ची थी। जो भी उसे देखता, प्यार करता। उसकी दादी तो उसे इतना प्यार करती थी कि वह उसके लिए जो भी करती, कम ही लगता।

एक दिन दादी ने बच्ची को एक मख़मल की लाल टोपी दी, जो उसके सिर पर एकदम ठीक बैठ गयी। वह हमेशा उसे ही पहने रहती और इसलिए उसका नाम लाल टोपी ही पड़ गया। एक दिन उसकी माँ उससे बोली, "इधर आओ लाल टोपी, यह थोड़ा-सा मांस और एक प्याला काढ़ा है। इसे लेकर अपनी दादी को दे आओ। वह बीमार और कमज़ोर हैं और ये चीज़ें उन्हें अच्छी लगेंगीं। जल्दी जाओ और उनके उठने से पहले ही वहाँ पहुँच जाओ। सँभल कर जाना और भागना नहीं, वरना तुम गिर पड़ोगी और प्याला टूट जाएगा फिर तुम्हारी दादी को कुछ नहीं मिलेगा। जैसे ही तुम उनके कमरे में जाओ तो उन्हें 'नमस्ते' करना नहीं भूलना और सारे कोनों में ताक-झाँक भी मत करना।" लाल टोपी अपनी माँ से सामान पकड़ते हुए बोली, "जैसा तुम कहोगी, मैं वैसा ही करूँगी।

दादी बहुत दूर जंगल में रहती थीं और वहाँ पहुँचने के लिए आधा घण्टा पैदल चलना पड़ता था। जैसे ही लाल टोपी पेड़ों के बीच पहुँची, उसे एक भेड़िया मिला, लेकिन उसे नहीं मालूम था कि वह कितना ख़तरनाक जानवर है। इसीलिए वह ज़रा भी नहीं डरी। वह बोला, "नमस्ते, लाल टोपी।"

"नमस्ते।" उसने जवाब दिया।

"इतनी सुबह कहाँ चली लाल टोपी ?" उसने पूछा।

"दादी के घर।" वह बोली।

"तुम्हारे झोले में क्या है ?"

"मांस और काढ़ा," वह बोली, "कल हमने मांस पकाया था। बीमार और कमज़ोर दादी को कुछ ताक़त देनेवाली चीज़ तो देनी चाहिए ना ?"

"तुम्हारी दादी कहाँ रहती हैं ?" भेड़िये ने पूछा।

"जंगल में इसके आगे पन्द्रह मिनट और पैदल चलने पर उनका घर आता है। तीन बड़े मदार के पेड़ों के नीचे उनकी कुटिया है। पास ही में फलों की कुछ झाड़ियाँ हैं, जिनसे उनके घर को पहचाना जा सकता है।"

लेकिन भेड़िये ने सोचा, 'यह मुलायम शरीरवाली बच्ची है, इसका मांस बूढ़ी औरत से ज़्यादा स्वादिष्ट होगा। मुझे समझदारी से काम लेना चाहिए, जिससे मैं दोनों को हथिया सकूँ।'

वह लाल टोपी से बोला, "देखो, अपने आसपास खिले सुन्दर फूलों को देखो, तुम अपने आसपास क्यों नहीं देखती ? मुझे लगता है, तुमने चिड़ियों का मधुर गीत भी नहीं सुना। तुम तो ऐसे जा रही हो, जैसे कि स्कूल जा रही हो, देखो जंगल में सब कुछ कितना सुन्दर है।"

लाल टोपी ने अपनी आँखें खोलीं और जब उसने सूरज की किरणों को पेड़ों से छनकर धरती पर आते हुए और रास्ते पर खिले सुन्दर फूलों को देखा तो सोचा, "यदि मैं दादी के लिए ताज़ा फूलों का एक गुच्छा ले जाऊँ तो वह बहुत ख़ुश होंगी और अभी तो सुबह ही हुई है, मैं गुच्छा लेकर समय पर दादी के पास पहुँच सकती हूँ।" वह दौड़ती हुई फूलों को देखने लगी, लेकिन जब एक बार फूल देखने शुरू कर दिये तो यह सिलसिला ख़त्म ही न हुआ। वह और सुन्दर फूलों की तलाश में जंगल में भीतर और भीतर जाने लगी, जबकि भेड़िया सीधा दौड़ते हुए दादी के घर गया और दरवाज़ा खटखटाया। बूढ़ी दादी ने पूछा, "कौन है ?" भेड़िया बोला "लाल टोपी। तुम्हारे लिए मांस और काढ़ा लायी हूँ। दरवाज़ा खोलो।"

"चटखनी खोल लो, मैं उठ नहीं सकती," दादी चिल्लाकर बोली।

भेड़िये ने चटखनी खोली और दरवाज़ा खुल गया। बिना एक भी शब्द बोले उसने बिस्तर पर कूदकर बूढ़ी औरत को खा लिया। फिर उसने दादी के कपड़े पहन लिए। उसकी टोपी सिर पर पहन ली और बिस्तर में लेटकर एक कम्बल ओढ़ लिया। लाल टोपी अभी भी फूल चुन रही थी। जब उसने काफ़ी फूल तोड़ लिये तो उसे दादी की याद आयी और वह जल्दी-जल्दी उसके घर जाने लगी। उसे दरवाज़ा खुला देखकर बहुत आश्चर्य हुआ और जब वह कमरे में गयी तो उसे वहाँ बहुत उदासी-सी लगी। वह बोली, "मुझे अच्छा नहीं लग रहा ! काश मैं आज नहीं आयी होती !" फिर उसने दादी को 'नमस्ते' कहा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।



वह बिस्तर के पास तक गयी, पर्दे खोले और दादी को देखा। उसकी टोपी उसकी आँखों पर आधी ढँकी थी और वह बहुत हिंसक लग रही थीं।

"अरे दादी, तुम्हारे कान कितने बड़े हैं।"

जवाब मिला, "अच्छी तरह सुनने के लिए।"

"और तुम्हारी आँखें कितनी बड़ी हैं।"

"अच्छी तरह देखने के लिए।"

"और तुम्हारे हाथ कितने बड़े हैं।"

"तुम्हें अच्छी तरह छूने के लिए।"

"लेकिन दादी, तुम्हारे दाँत भी बहुत बड़े हैं।"

"तुम्हें अच्छी तरह खाने के लिए।" भेड़िये ने कहा और बिस्तर से उछलकर बेचारी लाल टोपी को पकड़ा और निगल गया।

जब भेड़िये की भूख मिटी तो वह फिर बिस्तर में लेट गया और ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भरने लगा। वहाँ गुज़र रहे एक शिकारी ने यह आवाज़ सुनी और सोचा, "बूढ़ी औरत कितनी ज़ोर से खर्राटे भर रही है। मुझे जाकर देखना चाहिए कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है।"

वह कुटिया में घुसा और जब बिस्तर के पास आया तो उसने भेड़िये को लेटे देखा। वह बोला, "आखिर मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया दुष्ट भेड़िये। मैं तुम्हें बहुत समय से ढूँढ़ रहा था।" यह कहते हुए उसने बन्दूक़ से भेड़िये को मौत के घाट उतार दिया।

कुछ लोग कहते हैं कि इसमें आख़िरी बात सच नहीं है। इसकी बजाय ऐसा हुआ कि जब एक दिन लाल टोपी थोड़ा भुना हुआ मांस लेकर अपनी दादी के पास जा रही थी तो उसे एक भेड़िया मिला और उसने उसे फुसलाना चाहा। लेकिन वह सीधे चलती रही और उसने घर जाकर अपनी दादी को बताया कि उसे राह में एक भेड़िया मिला था, जिसने उसे अलविदा कहा था, लेकिन वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से इतनी दुष्टता से उसे देख रहा था कि यदि वह मुख्य सड़क पर नहीं होती तो वह उसे खा ही गया होता।

दादी यह सुनकर बोली, "चलो दरवाज़ा बन्द कर लो, जिससे वह अन्दर न आ जाए।"

इसके बाद ही भेड़िया वहाँ आया, जिसने दरवाज़ा खटखटाया और चिल्लाया, "मैं लाल टोपी हूँ दादी, मैं तुम्हारे लिए थोड़ा भुना मांस लायी हूँ।" लेकिन वे दोनों चुपचाप भीतर बैठी रहीं और उन्होंने दरवाज़ा नहीं खोला। भेड़िया कई बार

घर के चक्कर लगाने के बाद छत पर चढ़ गया और इन्तज़ार करने लगा कि जब लाल टोपी शाम को घर वापस जाएगी तो वह उसके पीछे-पीछे जाकर जंगल में उसे दबोच लेगा। दादी ने उसे देख लिया और वह उसके इरादे अच्छी तरह समझ गयी। दरवाज़े के पास पत्थर की एक बड़ी नाँद पड़ी थी। उसने लाल टोपी से कहा, "यह बाल्टी लो। इस पानी में मैंने कल मुर्ग़ा उबाला था। उसे बाल्टी में भरकर नाँद में डालती जाओ।" लाल टोपी ने कई बाल्टियाँ भर-भरकर बड़ी-सी नांद को पूरा भर दिया। भेड़िये को छत पर से मुर्ग़े की ख़ुशबू आने लगी और उसकी लार टपकने लगी। उसे इसका स्वाद चखने की बेहद इच्छा हुई और आखिरकार उसने अपनी गर्दन इतनी आगे झुकाई कि वह अपना सन्तुलन न बनाये रख सका और छत से फिसलकर सीधे उसी नाँद में गिर पड़ा और उसी में डूब गया। लाल टोपी ख़ुशी से घर वापस लौट गयी। किसी ने भी श्रीमान भेड़िये का शोक नहीं मनाया।

29

मछुआरा और उसकी पत्नी

एक समय में एक मछुआरा और उसकी पत्नी समुद्र के किनारे झोंपड़ी बनाकर रहते थे। मछुआरा रोज़ मछली पकड़ने जाता था। वहाँ वह अपनी बंसी डालकर बैठा रहता और पानी को देखता रहता। ऐसा उसने बहुत दिनों तक किया। एक दिन डोरी नीचे तक खिंच गयी और जब उसने बंसी ऊपर खींची तो एक बड़ी 'फ़्लाउंडर मछली' उसमें फँसी खिंची चली आयी। वह बोली, "मुझे जाने दो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मैं सचमुच की मछली नहीं हूँ ! एक राजकुमार हूँ, जिसे जादू से मछली बना दिया गया है। मैं तुम्हारे किस काम आऊँगी ? मुझमें स्वाद भी नहीं होगा। मुझे वापस पानी में डाल दो और तैरने के लिए छोड़ दो।"

मछुआरा बोला, "तुम इतनी मिन्नत क्यों करती हो ? बोलनेवाली मछली को तो मैं वैसे ही पानी में छोड़ दूँगा।" यह कहते हुए उसने मछली को पानी में वापस डाल दिया। वह ख़ून की लक़ीर छोड़ते हुए पानी की तली में चली गयी। मछुआरा उठा और घर वापस चला गया।

"क्या तुम्हें आज कुछ नहीं मिला ?" उसकी पत्नी ने पूछा। वह बोला, "ओह ! मुझे एक फ्लाउंडर मछली मिली थी, जिसने कहा कि वह वास्तव में एक राजकुमार है और जादू से मछली बना दिया गया है। इसलिए मैंने उसे वापस पानी में छोड़ दिया।"

पत्नी ने पूछा, "क्या उसे छोड़ने से पहले तुमने कोई इच्छा नहीं की ?" मछुआरे ने कहा, "नहीं।"

पत्नी बोली, "अरे, यह तो बड़े दुर्भाग्य की बात है। हम क्या हमेशा इसी झोंपड़ी में रहेंगे ? तुमने उससे एक अच्छी झोंपड़ी ही माँग ली होती। फिर से जाकर उसे बुलाओ और उससे एक अच्छी झोंपड़ी माँगो। तुम्हें वह ज़रूर मिलेगी।"

वह बोला, "मैं ऐसा कैसे करूँ ?" उसकी पत्नी बोली, "क्यों, तुम उसे दोबारा

पकड़ो और फिर दोबारा पानी में छोड़ने से पहले यह माँगो। जल्दी जाओ।'' यह सुनकर मछुआरा बहुत ख़ुश नहीं हुआ। उसने अपनी पत्नी से फिर मना किया, लेकिन वह नहीं मानी। आख़िरकार उसे फिर समुद्र तक जाना पड़ा। पानी कुछ हरा, पीला-सा और पहले से भी साफ़ था। किनारे खड़े होकर वह बोला—



''फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, आओ इधर
आओ इधर मैं हूँ जिधर;
माँगती है इसाबेल कुछ,
जिसकी करनी है तुमको ख़बर।''

मछली तैरती हुई ऊपर आयी और बोली, ''क्या चाहिए तुम्हें ?'' मछुआरा

बोला, "मैं तुम्हें फिर से पकड़नेवाला था, क्योंकि मेरी पत्नी कहती है कि मुझे तुमसे पहले ही कुछ माँगना चाहिए था। उसे अब अपनी झोंपड़ी में नहीं रहना है, उसे नया घर चाहिए।"

मछली बोली, "घर जाकर देखो, वहाँ पर नया घर होगा।" मछुआरा चला गया और जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ उस गन्दी झोंपड़ी की जगह एक साफ़-सुथरी कुटिया है और उसके सामने बेंच पर उसकी पत्नी बैठी हुई है। उसका हाथ पकड़ते हुए वह बोली, "भीतर आकर देखो। यह घर उस झोंपड़ी से बेहतर है।" वह भीतर गया। वहाँ एक सुन्दर प्रसाधन-कक्ष था, एक अँगीठी जल रही थी और एक भण्डारगृह था, जिसमें सुन्दर मिट्टी, तांबे और लोहे के बर्तन थे। सब कुछ वहाँ साफ-सुथरा था। पीछे एक बड़ा-सा आँगन था, जिसमें मुर्ग़ियाँ और चूज़े थे। वहाँ एक बग़ीचा भी था, जिसमें फल और सब्ज़ियाँ लगी थीं। पत्नी बोली, "देखो, क्या यह सब सुन्दर नहीं लग रहा ?"

उसका पति बोला, "हाँ, जब तक यहाँ फूल खिलते रहेंगे, तुम ख़ुश रहोगी।"

"यह सब हम बाद में सोचेंगे।" उसने उत्तर दिया और वे सोने चले गये।

इसी तरह एक-दो हफ़्ते बीत गये। एक दिन पत्नी बोली, "यह कुटिया कुछ छोटी है, आँगन और बग़ीचे भी छोटे हैं। फ़्लाउंडर हमें इससे बड़ा घर भी दे सकती है। मुझे तो पत्थरों के महल में रहने की इच्छा है। तुम उस मछली के पास जाओ और उससे एक महल माँगो।"

मछुआरा बोला, "ओह, यह कुटिया तो काफ़ी अच्छी है। तुम्हें महल क्यों चाहिए ?"

पत्नी बोली, "जल्दी आओ, फ़्लाउंडर जल्दी ही तुम्हें महल दे देगी।"

वह बोला, "नहीं-नहीं, उसने हमें यह कुटिया तो दे ही दी है। लेकिन अब मैं यदि उससे महल माँगूगा तो वह नाराज़ हो जाएगी।"

"चिन्ता मत करो", वह बोली, "वह मेरी इच्छा बहुत आसानी से पूरी कर सकती है। जाकर कोशिश करो।" पति मन ही मन में बहुत दुखी था और उसे जाने की इच्छा नहीं थी। वह अपने आपसे बोला, "यह सही नहीं है।" लेकिन अन्ततः उसे जाना पड़ा।

जब वह समुद्र के पास आया तो पानी कुछ सफ़ेदी लिये गहरे नीले रंग का था और कुछ मटमैला था। अब उसमें हरापन नहीं था और वह शान्त भी था। वह जाकर बोला—

"फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, आओ इधर,
आओ इधर, मैं हूँ जिधर;
माँगती है इसाबेल कुछ,
जिसकी करनी है तुमको ख़बर।"

"अब तुम्हें क्या चाहिए ?" फ़्लाउंडर ऊपर आकर बोली। मछुआरे ने डरते हुए जवाब दिया, "उसे पत्थर का एक विशाल महल चाहिए।" मछली बोली, "घर जाकर देखो, वहाँ महल बन गया है।"

मछुआरा वापस पहुँचा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि अब उसके घर की जगह एक विशाल महल खड़ा था। उसकी पत्नी उसे सीढ़ियों पर खड़ी होकर बुला रही थी। उसके वहाँ जाने पर उसका हाथ पकड़कर भीतर ले जाती हुई वह बोली, "चलो, महल देखें।" वे घूम-घूमकर महल देखने लगे। महल में एक बहुत ही बड़ा कमरा था, जिसमें संगमरमर की मेज़ें लगी थीं। वहाँ बहुत सारे नौकर भी थे, जो उन्हें जाली की चिक के दरवाज़े हटा-हटाकर हर कमरे में ले जा रहे थे। कमरों में सोने की कुर्सियाँ और मेज़ें रखी थीं और दीवार पर स्फटिक की तरह काँच लगा था। सभी कमरों में इसी तरह की सजावट थी। महल के बाहर बड़े-बड़े घुड़साल और गौशालाएँ थीं और गाड़ियाँ खड़ी थीं। फलों और फूलों का एक बग़ीचा और एक मील लम्बा घास का मैदान था, जिसमें हिरण, बैल, भेड़ें और भी बहुत कुछ था। उसकी पत्नी बोली, "कैसा है यह सब ?" मछुआरा बोला, "जब तक तुम्हें मज़ा आयेगा, तुम सन्तुष्ट रहोगी। फिर तुम्हें कुछ और चाहिए होगा।"

"यह सब हम बाद में सोचेंगे।" वह बोली और वे सोने चले गए।

अगले दिन सुबह पत्नी उठी और सब कुछ देखने लगी। उसका पति सोया हुआ था। वह आयी और कमर पर हाथ रखकर उसे बुलाने लगी, "उठो और आकर खिड़की के बाहर देखो। क्या मैं इस जगह की रानी नहीं बन सकती ? जाओ, जाकर फ़्लाउंडर को कहो, हमें राजा-रानी बनना है।" मछुआरा बोला, "ओह, मैं राजा बनने की इच्छा क्यों करूँ ?" उसकी पत्नी बोली, "नहीं, तुम इच्छा मत करो। इच्छा तो मैं करूँगी। जाओ और जाकर फ़्लाउंडर से यह माँगो।"

"मैं यह क्यों माँगू ? मैं यह नहीं कह सकता।"

"क्यों नहीं ? एकदम जाओ, मुझे रानी बनना ही है।" पति एकदम बेवक़ूफ़ों की तरह घर से निकल पड़ा, लेकिन उसे समुद्र के पास जाना ही पड़ा। जब वह समुद्र के किनारे आया तो वह एकदम काला-सा था और पानी में ज़ोर-ज़ोर से

लहरें उठ रही थीं। वह खड़ा हो गया और बोला—

"फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, आओ इधर,
आओ इधर, मैं हूँ जिधर;
माँगती है इसाबेल कुछ,
जिसकी करनी है तुमको ख़बर।"

"अब उसे क्या चाहिए ?" फ़्लाउंडर ने पूछा। वह बोला, "मेरी पत्नी रानी बनना चाहती है।" मछली ने जवाब दिया, "घर जाओ, वह रानी बन चुकी है।" वह वहाँ से चला आया और जब वह महल के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह और बड़ा हो गया है और उसके सामने एक दरवाज़ा और एक बड़ी सी मीनार आ गयी है। दरवाज़े पर एक प्रहरी खड़ा था और बहुत सारे सिपाही भी थे जो नगाड़े और तुरहियां भी लिये हुए थे। जब वह महल के भीतर आया तो उसने देखा कि अब वहाँ हर चीज़ अच्छे संगमरमर और सोने की बनी थी। दरवाज़ों पर सोने की झालरों वाले सुन्दर पर्दे टँगे थे। बड़े कमरे से होता हुआ वह दरबार में पहुँचा, जहाँ उसकी पत्नी सोने और हीरों से बने एक ऊँचे सिंहासन पर सोने का मुकुट पहने बैठी थी। उसके हाथ में बेशक़ीमती रत्नों से जड़ा एक राजदण्ड था। उसके दोनों ओर छह-छह दास खड़े थे, जिनमें से हरेक दूसरे से एक हाथ लम्बा था। वह सिंहासन तक गया और बोला, "अरे, अब तुम रानी बन गयी हो।" पत्नी बोली, "हाँ, अब मैं रानी बन गयी हूँ।" वह वहाँ खड़ा होकर बहुत देर तक उसे देखता रहा, फिर बोला, "अब तो तुम्हें रानी बनकर अच्छा लग रहा होगा ? अब हमारी कोई इच्छा बाक़ी नहीं है।" रानी ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ। समय बीता जा रहा है, वह मेरा इन्तज़ार नहीं करेगा। जाओ, जाकर फ़्लाउंडर से कहो मैं पोप बनना चाहती हूँ।" उसका पति चौंका, "अरे। क्या कह रही हो ? तुम पोप नहीं बन सकती। पोप तो सभी ईसाइयों का मुखिया होता है। फ़्लाउंडर तुम्हें वह नहीं बना सकती।"

"मुझे बनना ही है।" पत्नी बोली और उसे जाना ही पड़ा। जब वह समुद्र तट पर आया तो समुद्र उछलकर पहाड़ों से टकरा रहा था और आसमान में इतना अँधेरा था कि वह डर ही गया और एकदम डरकर बोला—

"फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, आओ इधर,
आओ इधर, मैं हूँ जिधर;
माँगती है इसाबेल कुछ,
जिसकी करनी है तुमको ख़बर।"

फ्लाउंडर आई, "अब क्या हुआ ?" पति बोला, "वह पोप बनना चाहती है।" उसने ज़वाब दिया, घर जाओ, वह पोप बन गयी है।"

वह वापस गया और देखा कि वहाँ एक विशाल चर्च है, जिसमें वह पहले से भी ऊँचे सिंहासन पर बैठी है। उसके दोनों ओर मोमबत्तियों की दो क़तारें हैं, जिनमें से कुछ मीनारों जितनी मोटी हैं और कुछ ढिबरी जितनी रोशनीवाली छोटी हैं। उसके सिंहासन के सामने राजा और रानी झुके हुए थे। वह बोला, "अब ख़ुश हो जाओ, अब तुम पोप हो, अब तुम्हें कुछ और नहीं माँगना चाहिए।" वह बोली, "मैं सोचूँगी" और वे सोने चले गये। लेकिन वह रात भर यह सोचकर नहीं सो पायी कि अब उसे क्या बनना चाहिए। सुबह-सुबह वह उठी और खिड़की के बाहर देखा। उसने उगते सूरज को देखा और अपने आप से कहा, "मैं ऐसा क्यों न करूँ ?" और उसने झपटकर अपने पति को झकझोरा और बोली, "जाओ जल्दी जाकर फ़्लाउंडर से कहो कि मैं सूरज उगाना चाहती हूँ।" उसका पति इतना डर गया कि वह काँपकर बिस्तर से नीचे गिर पड़ा। लेकिन पत्नी ने कुछ नहीं सुना और मछुआरे को जाना ही पड़ा।

जब वह समुद्र के पास आया तो तूफ़ानी लहरें आ रही थीं और जहाज़ और नाव सभी उन पर उछल रहे थे। वह ज़ोर से चिल्लाया, हालाँकि उसे ख़ुद अपने शब्द नहीं सुनायी पड़ते थे–

"फ़्लाउंडर, फ़्लाउंडर, आओ इधर,
आओ इधर, मैं हूँ जिधर;
माँगती है इसाबेल कुछ,
जिसकी करनी है तुमको ख़बर।"

"अब उसे क्या चाहिए ?" मछली बोली। उसने जवाब दिया, "वह ब्रह्मांड पर राज्य करना चाहती है।"

"वापस जाओ और देखो कि अब वह उसी पुरानी झोंपड़ी में पहुँच गयी है।" फ़्लाउंडर ने जवाब दिया।

और फिर मछुआरे और उसकी पत्नी ने अपना बाक़ी जीवन उसी झोंपड़ी में बिताया।

30

नाल

एक व्यापारी ने एक मेले में ख़ूब अच्छा व्यापार किया। उसने अपना सारा माल बेच दिया और अपना बटुआ सोने और चाँदी से भर लिया। उसके बाद वह घर वापस लौटने की तैयारी करने लगा, जिससे कि वह शाम तक घर पहुँच जाए। उसने अपने थैले में पैसे रख दिये और उसे घोड़े की पीठ पर बाँधकर चल पड़ा। दिन में उसने एक छोटे शहर में थोड़ा आराम किया और जब दोबारा चलने लगा तो घोड़ा लेकर आनेवाले अस्तबल के लड़के ने उससे कहा, "श्रीमान, आपके घोड़े के पिछले बायें पैर की नाल निकल गयी है।"

व्यापारी बोला, "छोड़ो उसे। मैं अभी जल्दी में हूँ और नाल लगाने में समय लगेगा। मुझे छह घण्टे और सफ़र करना है।"

शाम होते-होते वह फिर रुका और उसने आराम किया। और घोड़े को चारा दिया। यहाँ भी एक लड़का जब घोड़ा लेकर आया तो उसने बताया कि घोड़े की एक नाल लगायी जानी है। लड़के ने उससे पूछा कि क्या वह घोड़े को नाल लगवाने लुहार के पास ले जाएगा। व्यापारी बोला, "नहीं, नहीं रहने दो। इससे मेरा समय बरबाद होगा। मुझे अभी दो घण्टे और चलना है। मैं जल्दी में हूँ।"

यह कहते हुए वह चल पड़ा। लेकिन थोड़ी ही देर में उसका घोड़ा लंगड़ाने लगा। उसके बाद लड़खड़ाने लगा और फिर थोड़ी देर बाद थोड़ा गिर पड़ा। उसका पैर टूट गया। व्यापारी को अपना घोड़ा सड़क पर ही छोड़ना पड़ा। उसने अपना थैला खोला और उसे कन्धे पर लटका कर घर की ओर चल पड़ा। वह देर रात घर पहुँचा।

उसने अपने आप से कहा, "यह सारी विपदा केवल एक नाल की वजह से हुई है। ऐसी जल्दी से तो देर ही भली।"

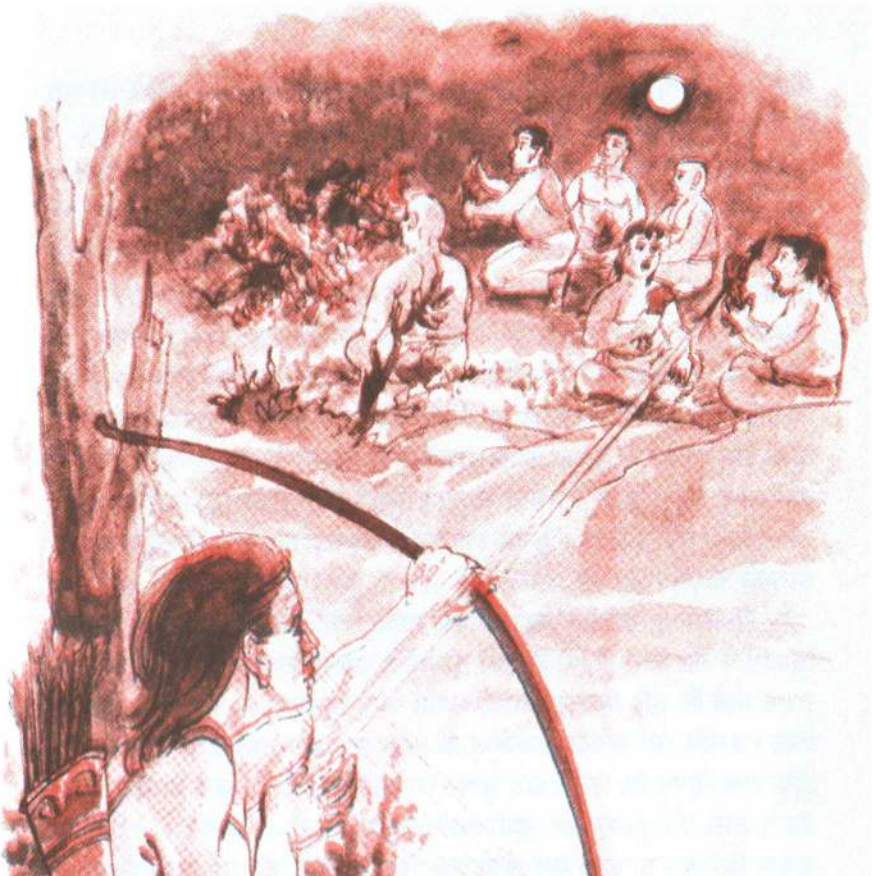
31

अनुभवी शिकारी

एक लड़का था, जिसने ताले बनाने की विद्या सीखी। फिर अपने पिता से बाहर जाकर रोज़ी-रोटी कमाने की इच्छा ज़ाहिर की। पिता ने कहा, "ठीक है, मैं ख़ुश हूँ।" और उसे यात्रा पर जाने के लिए पैसे दिये। लड़का निकल पड़ा और काम तलाश करने लगा। लेकिन थोड़े दिनों बाद उसने नया काम शुरू करने का सोचा, क्योंकि वह उससे थक गया था और वह शिकार करना सीखना चाहता था। यह सोचते-सोचते उसकी मुलाक़ात एक शिकारी से हुई, जिसने हरे कपड़े पहने हुए थे। उस शिकारी ने उससे पूछा कि वह कहाँ से आया है और उसे कहाँ जाना है। लड़के ने कहा कि वह एक ताला बनानेवाला है, लेकिन वह अब यह काम और नहीं करना चाहता। वह तो शिकार करना सीखना चाहता है। यदि वह उसका गुरु बन सके तो अच्छा होगा।

शिकारी ने उसे भेंट में सिर्फ़ एक हवाई बन्दूक़ दी, जिसका निशाना कभी ख़ाली नहीं जाता था। यह भेंट लेकर वह चल पड़ा और चलते-चलते एक बहुत बड़े जंगल में आ पहुँचा। पहले दिन वह जंगल को पार नहीं कर पाया तो वह एक बड़े पेड़ पर चढ़कर बैठ गया, जिस पर जंगली जानवर नहीं चढ़ सकते थे।

आधी रात में उसे लगा कि दूर कोई रोशनी चमक रही है। उसने शाखों के बीच में से झाँककर देखा और उस दिशा में अपनी टोपी फेंकी, जिससे कि उसे वहाँ जाने के लिए रास्ता पहचानने में मदद मिले। फिर वह नीचे उतरकर टोपी की दिशा में दौड़ पड़ा और उसे पहनकर फिर सीधा चल पड़ा। जैसे-जैसे वह पास आता रोशनी और तेज़ होती जाती और जब वह रोशनी के एकदम पास पहुँच गया तो उसने देखा कि वहाँ बड़ी आग जल रही थी, जिसके आसपास राक्षस बैठे थे। वे बैल को भुनते हुए देख रहे थे। बैल आग के ऊपर लट्ठों के सहारे लटका हुआ था। उसी समय एक राक्षस ने कहा कि वह देखना चाहता है कि



मांस पक गया है या नहीं। वह एक टुकड़ा काटकर खाने ही वाला था कि शिकारी ने निशाना साधकर उसे उड़ा दिया।

राक्षस चिल्लाया, "अरे, हवा मेरे हाथ से मांस का टुकड़ा उड़ा ले गयी।" और दूसरा टुकड़ा लेकर उसे खानेवाला था कि शिकारी ने उसे भी उड़ा दिया। इस पर राक्षस ने अपने पास बैठे राक्षस की कनपटी पर एक मुक्का मारा और ग़ुस्से से बोला, "तुम मेरा मांस का टुकड़ा क्यों ले रहे हो ?" दूसरा बोला, "मैंने नहीं लिया, यह तो कोई शिकारी है, जो इस तरफ़ निशाना साध रहा है।" राक्षस ने तीसरा टुकड़ा लिया और उसे भी वह नहीं खा पाया। राक्षस चिल्लाया, "इसका निशाना अच्छा है। जो किसी के मुँह का निवाला उड़ा सकता है, वह शिकारी हमारे बहुत काम का है।" और यह कहकर उन्होंने उसे आवाज़ दी, "इधर आओ शिकारी, यहाँ आग के पास बैठो और पेट भरकर खाओ। हम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। लेकिन यदि तुम नहीं आओगे तो हमें तुम्हें पकड़ना होगा और फिर तुम्हारा पता भी नहीं चलेगा।"

यह सुनकर शिकारी आग के पास आया। वह बोला कि वह एक अनुभवी शिकारी है और जिस पर भी निशाना साधता है, उसका निशाना कभी नहीं चूकता। राक्षस बोले कि यदि वह उनके साथ चलेगा तो वे उसके साथ अच्छी तरह व्यवहार करेंगे। उन्होंने उसे बताया कि जंगल के बाहर एक बड़ा तालाब है, जिसके दूसरी तरफ़ एक मीनार है। उसमें एक सुन्दर राजकुमारी रहती है, जिसे वे पाना चाहते हैं। शिकारी ने कहा कि वह ख़ुशी-ख़ुशी राजकुमारी को ले आएगा। उन्होंने उसे बताया कि महल के बाहर एक छोटा कुत्ता बैठा रहता है, जो उन्हें देखते ही भौंकने लगेगा और जैसे ही वह भौंकना शुरू करेगा, महल का हर आदमी जाग जाएगा। इसी वजह से वे अभी तक राजकुमारी को नहीं ला पाये हैं। उसे सबसे पहले कुत्ते को मारना होगा। इस पर शिकारी ने हामी भर दी और कहा कि यह तो उसके बायें हाथ का खेल है।

वह तुरन्त एक नाव पर सवार होकर बड़े तालाब के पार चल पड़ा। जैसे ही वह महल के पास पहुँचा कुत्ता उसके पास दौड़ता हुआ आया और भौंकने ही वाला था कि उसने निशाना साधकर उसे तीर मार दिया। जब राक्षसों ने यह देखा तो वे बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने सोचा कि राजकुमारी अब तो उनको ज़रूर मिल जाएगी। लेकिन शिकारी ने उन्हें कहा कि जब तक वह उन्हें नहीं बुलाता, तब तक वे वहीं रहें, क्योंकि उसे अभी देखना है कि काम पूरा कैसे किया जाए। वह महल में गया, वहाँ सभी चैन से सो रहे थे। जब वह पहले कमरे में घुसा तो उसे

चाँदी की एक तलवार लटकी हुई दिखायी दी, जिस पर सोने का सितारा बना हुआ था और राजा का नाम खुदा हुआ था। इसके नीचे एक मेज़ रखी थी जिस पर एक बन्द लिफ़ाफ़ा रखा था। उसने चिट्ठी खोली और पढ़ा कि जो भी इस तलवार को लेगा, वह इससे मारे हुए व्यक्ति को जीवित कर सकता है। शिकारी ने दीवार पर से तलवार उतार ली और उसे कमर से लटका लिया और फिर चलते-चलते राजकुमारी के कमरे में आ गया। सोती हुई राजकुमारी इतनी सुन्दर लग रही थी कि वह खड़ा होकर उसे देखता ही रह गया। उसकी साँस रुकी रह गयी और वह सोचने लगा, "मैं इस भोली-भाली लड़की को उन राक्षसों के हाथ में कैसे दे सकता हूँ ?" उसने आसपास देखा तो पलंग के नीचे उसे एक जोड़ी चप्पल दिखाई दी। दायीं चप्पल पर राजा का नाम एक सितारे के साथ लिखा था और बायीं पर राजकुमारी का नाम और सितारा था। उसमें रेशम और सोने का एक बड़ा रूमाल भी लपेटा हुआ था, जिस पर दायीं तरफ़ उसके पिता का नाम और सितारा तथा बायीं तरफ़ उसका ख़ुद का नाम सुनहरे तारों से कढ़ा था। शिकार ने एक चाकू लिया और रूमाल का दायां कोना काट लिया, फिर राजा के नामवाली चप्पल उठा ली और दोनों को अपने थैले में रख लिया। इस पूरे समय राजकुमारी सोयी रही। शिकारी ने उसकी ओढ़ी हुई चादर का भी एक टुकड़ा काटकर उसे भी थैले में रख लिया। उसने राजकुमारी को छुआ भी नहीं और फिर चुपचाप वहाँ से निकल गया। जब वह बाहर निकला तो उसने वहाँ तीनों राक्षसों को देखा, जो उसका इन्तज़ार कर रहे थे। उसने उन्हें चिल्लाकर भीतर बुलाया और कहा कि राजकुमारी उसके कब्जे में है, लेकिन वह दरवाज़ा नहीं खोल सकता, इसलिए उन्हें दीवार में बने एक छेद में से रेंगकर भीतर आना पड़ेगा। पहले राक्षस ने जैसे ही अपना सिर भीतर डाला, शिकारी ने उसके बाल पकड़ लिये और तलवार से उसका सिर काट दिया। उसने राक्षस का शरीर भीतर खींच लिया और दूसरे राक्षस को आवाज़ दी। उसका सिर भी उसी तरह काट दिया। तीसरे राक्षस का भी यही हाल हुआ। जैसे ही तीनों ख़त्म हुए उसने उनकी जीभें काट लीं और उन्हें भी अपने थैले में डाल दिया। वह ख़ुश हुआ कि उसने राजकुमारी को राक्षसों से मुक्त कर दिया। उसने अपने पिता के पास जाने और उन्हें सब बताने का विचार किया। इसके बाद उसने फिर से दुनिया की सैर करने की इच्छा की, क्योंकि उसे लगता था कि ईश्वर का आशीर्वाद तो उसे दुनिया में कहीं भी मिल जाएगा।

इस बीच राजा ने जागने पर अपने पास मरे पड़े तीनों राक्षसों को देखा। वह अपनी बेटी के कमरे में गया और उसे जगाकर पूछा कि इन राक्षसों को किसने

मारा है। राजकुमारी बोली, "मुझे नहीं मालूम, मैं तो सो रही थी।" लेकिन जब उसने उठकर अपनी चप्पलें पहननी चाहीं तो उसने पाया कि दायें पैर की चप्पल ग़ायब थी। उसने रूमाल का दायाँ कोना और चादर का टुकड़ा भी ग़ायब देखा। राजा ने पूरे दरबार को बुलाया, अपने सिपाहियों और सभी को। फिर उनसे पूछा कि राक्षसों को मारकर उसकी लड़की की जान किसने बचायी। राजा का एक बदसूरत काना कप्तान था, जिसने कहा कि यह काम उसका है। राजा ने घोषणा की कि उसकी शादी राजकुमारी के साथ की जाएगी। लेकिन जैसे ही राजा ने यह कहा तो राजकुमारी चिल्लाई—"इससे शादी करने से तो बेहतर होगा कि मैं पूरी दुनिया में भटकती फिरूँ।"

राजा ने कहा कि जो भी उसकी मर्जी हो, वह वही करे। लेकिन यदि वह इससे शादी नहीं करेगी तो उसे अपने राजसी वस्त्र त्यागने होंगे और किसान के वस्त्र पहनने होंगे। इससे अलावा उसे कुम्हार के पास जाकर मटके बेचने का काम भी शुरू करना होगा। राजकुमारी ने राजसी वस्त्र त्याग दिये और एक कुम्हार के पास गयी। उससे उसने एक टोकरे भर मटके ख़रीदे और उससे वादा किया कि यदि वह उन्हें बेच पायी तो वह शाम तक उनकी क़ीमत चुका देगी। राजा ने उसे बाज़ार के एक कोने में बैठने का आदेश दिया। साथ ही उसने कई गाड़ियों को वहाँ से गुज़रने का भी आदेश दिया, जिससे उसके सारे बर्तन चूर-चूर हो जाएँ। जब राजकुमारी अपनी जगह पर बैठी तो गाड़ियाँ आयीं और उसके बर्तन चूर-चूर करके चली गयी। वह रोने लगी और बोली, "हे ईश्वर ! मैं कुम्हार को पैसे कैसे दूँगी ?"

राजा को लगा कि इन सब बातों से परेशान होकर वह कप्तान से शादी कर लेगी। लेकिन इसकी बजाय राजकुमारी कुम्हार के पास गयी और उससे मटकों का एक टोकरा और माँगा। लेकिन कुम्हार ने मना कर दिया और पहले टोकरे के पैसे माँगे। राजकुमारी रोते-चीख़ते अपने पिता के पास गयी और अपने पिता से कहा कि वह बाहर दुनिया में घूमना चाहती है। राजा ने कहा, "मैं जंगल के बीच में एक मकान बनवा दूँगा। जिसमें तुम जीवनभर रहना और जो भी आये, उसके लिए खाना बनाना। लेकिन उस खाने के पैसे मत लेना। जब घर बन गया तो वहाँ एक तख़्ती टाँग दी गयी, जिस पर लिखा था—

"आज मुफ़्त : कल भुगतान।"

वहाँ वह बहुत समय तक रही। सब जगह ख़बर फैल गयी कि एक लड़की जंगल में एक कुटिया में रहती है, जो सबको मुफ़्त में खाना खिलाती है। शिकारी

ने भी सुना और सोचा, "यह मेरे लिए अच्छी ख़बर है, क्योंकि मैं ग़रीब हूँ और मेरे पास पैसे नहीं है।" उसने अपनी बन्दूक़ ली और थैला उठाया, जिसमें उसने महल की सारी लायी हुई चीज़ें रखी थीं और उस कुटिया तक आ पहुँचा, जिस पर तख़्ती टँगी थी।

"आज मुफ़्त, कल भुगतान।"

उसकी कमर पर उसकी तलवार बँधी थी। वह कुटिया के भीतर गया और कुछ खाने के लिए मँगाया। राजकुमारी ने उससे पूछा कि वह कहाँ से आया है और उसे कहाँ जाना है। वह बोला, "मैं दुनिया घूम रहा हूँ।" राजकुमारी ने उससे पूछा कि उसे यह तलवार कहाँ से मिली। उसने कहा कि वह तलवार राजा की है। उसने पूछा, "क्या तुम राजा की बेटी हो ?" राजकुमारी ने हामी भरी तो वह बोला, "इस तलवार से मैंने तीन राक्षसों के सिर काटे हैं।" और उसने तीनों जीभें, चप्पल, चादर और रूमाल के टुकड़े निकालकर उसे दिखाये। राजकुमारी इन चीज़ों को देखकर बहुत ख़ुश हुई। उसे विश्वास हो गया कि उसी ने उसकी जान बचायी है।

वे फिर राजा के पास गये। राजकुमारी उसे अपने कमरे में ले गयी और उन्हें बताया कि शिकारी ने ही उसे राक्षसों से बचाया था। राजा ने तुरन्त विश्वास नहीं किया। लेकिन जब उन्हें वे सभी चीज़ें दिखायी गयीं तो वह मान गया। उसने राजकुमारी से उस शिकारी की शादी तय कर दी, जिससे राजकुमारी बहुत ख़ुश हुई। राजा ने एक बड़ी दावत दी, जिसमें शिकारी एक ख़ास मेहमान के रूप में सबके सामने आया। जब वे मेज़ पर बैठे तो कप्तान राजकुमारी की बायीं तरफ़ अपनी जगह पर बैठा और शिकारी दायीं तरफ़ बैठा। जब खाना-पीना ख़त्म हो गया तो राजा ने कप्तान को कहा कि वह एक प्रश्न पूछेगा, जिसका सवाल उसे देना होगा।

सवाल था, "यदि कोई कहे कि उसने राक्षसों को मारा है और उससे उनकी जीभें माँगने पर उसे वे ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलीं तो इसका क्या अर्थ होगा ?" कप्तान बोला, "यानी कि राक्षसों की जीभें थीं ही नहीं।" राजा बोला, "नहीं, हर व्यक्ति की जीभ होती है। ऐसे जवाब देनेवाले आदमी का क्या अंजाम होना चाहिए ?" कप्तान ने बेहिचक कहा, "उसके टुकड़े कर देने चाहिए।"

राजा ने कप्तान से कहा, "तुमने तो अपनी ख़ुद की सज़ा सुना दी।" और कप्तान को पहले तो क़ैद में डाला फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। शिकारी की शादी राजकुमारी से हो गयी और शादी के बाद उसने अपने माता-पिता को अपने साथ रहने के लिए बुला लिया। राजा की मृत्यु के बाद शिकारी को राज्य मिला।

32

रम्पलस्टिल्टस्किन

एक समय में एक कारख़ाने के मालिक की एक सुन्दर लड़की थी। एक दिन राजा के सामने उसने अपना महत्त्व जताने के लिए कह दिया कि उसकी एक बेटी है, जो घास से बुनकर सोना बना सकती है। राजा को सोने से बेहद प्यार था। उसने सोचा, "यह कला तो मुझे बेहद पसन्द आयेगी।" और उसने कारख़ाने के मालिक से कहा, "यदि तुम्हारी लड़की इतनी चतुर है तो उसे एक दिन महल में लेकर आओ, मैं उसका काम देखूँगा।"

जैसे ही वह महल में आयी, राजा उसे एक कमरे में ले गया, जिसमें घास भरी थी। राजा ने उसे एक चरखा और चरखी दी और बोला, "अब काम शुरू करो। यदि कल सुबह तक तुमने सारी घास को कातकर सोना न बना दिया तो तुम अपनी जान से हाथ धो बैठोगी।" यह कहकर उसने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया और लड़की को अकेला छोड़ दिया।

वहाँ वह बहुत देर तक बैठी रही और अपनी जान बचाने के बारे में सोचती रही, क्योंकि वह तो घास से सोना कातने की कला बिलकुल भी नहीं जानती थी। उसकी चिन्ता बढ़ती गयी और आख़िरकार वह रोने लगी। तभी दरवाज़ा खुला और एक बौना भीतर आकर बोला, "नमस्कार, सुन्दर लड़की, तुम इतनी बुरी तरह क्यों रो रही हो ?" वह बोली, "ओह, मुझे इस घास को कातकर सोना बनाना ही होगा, जो कि मुझे आता ही नहीं है।"

बौने ने पूछा, "यदि मैं तुम्हारे लिए यह कात दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी ?"

लड़की बोली, "मेरा हार।"

बौने ने हार ले लिया और चरख़े के सामने बैठ गया--सर्र, सर्र, सर्र, तीन बार पहिया घूमा और एक चरख़ी भर गयी। फिर उसने दूसरी तरफ़ लगाया—सर्र, सर्र, सर्र, तीन बार फिर और दूसरी चरख़ी भर गयीं। वह इसी तरह पूरी रात काम



करता रहा। जब तक कि पूरी घास ख़त्म नहीं हो गयी और सारी चरख़ियाँ सोने से भर गयीं। अगले दिन सुबह-सुबह राजा आया और सोने को देखकर चकित रह गया। वह बेहद ख़ुश था, लेकिन सन्तुष्ट नहीं। वह लड़की को एक दूसरे और बड़े घास से भरे कमरे में ले गया और उसे जान की धमकी देते हुए घास को कातकर सोना बनाने के लिए कहा।

लड़की परेशान थी और रो रही थी कि तभी पहले की तरह अचानक दरवाज़ा खुला और बौना भीतर आया। बौने ने पूछा कि लड़की उसे सहायता के बदले क्या देगी। वह बोली, ''मेरी अँगूठी।'' बौने ने अँगूठी ली और काम शुरू कर दिया। सुबह तक सारी घास सोने में बदल गयी थी। राजा बेहद ख़ुश था, लेकिन अभी भी सन्तुष्ट नहीं। वह लड़की को तीसरे और बड़े कमरे में ले गया, उसमें भी और कमरों की तरह घास भरी थी। वह बोला, ''यह सब तुम रात भर में कात लोगी तो मैं तुमसे विवाह कर लूँगा।'' उसने सोचा, ''क्योंकि इतनी अमीर पत्नी दुनिया में किसी और को नहीं मिलेगी।''

जब लड़की अकेली रह गयी तो बौना फिर आ गया और उसने तीसरी बार लड़की से पूछा, ''यदि मैं यह कात दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी ?''

लड़की बोली, ''मेरे पास तो कुछ नहीं है, तुम्हें देने के लिए।'' वह बोला, ''तब मुझे अपना पहला बच्चा देने का वादा करो।''

लड़की ने सोचा, ''कौन जानता है कि कब क्या होगा ?'' उसे इस मुसीबत से बचने का कोई रास्ता न मालूम था। उसने हाँ कर दी। वह तुरन्त बैठ गया और काम ख़त्म कर दिया। जब सुबह हुई और राजा ने देखा कि उसकी इच्छा पूरी हो गयी है तो उसने लड़की से विवाह कर लिया और कारख़ाने के मालिक की सुन्दर लड़की रानी बन गयी।

एक साल बाद जब वह बौने को बिलकुल भूल चुकी थी, उसका एक बेटा पैदा हुआ। तभी अचानक बौना आया और उसने अपनी इच्छा दुहरायी। भयभीत रानी ने उसे अपने राज्य की अमूल्य सम्पत्ति लेकर अपने बेटे को छोड़ने के लिए कहा, लेकिन बौना बोला, ''नहीं, दुनिया की सारी सम्पत्ति से अधिक मुझे बच्चा प्यारा है।''

रानी इतना रोयी और चिल्लायी कि बौने को उस पर दया आ गयी और वह बोला, ''मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ। इस बीच यदि तुम मेरा नाम पता लगा लोगी तो मैं तुम्हारे बच्चे को छोड़ दूँगा।''

पूरी रात रानी सोचती रही। फिर उसने एक आदमी को पूरे देश में अनोखे और नये नाम खोजने के लिए भी भेजा। अगली सुबह बौना आया और रानी ने 'कैस्पर,' 'मुलशुआर,' 'बालथासार' और दूसरे अजीब नामों से शुरूआत की, लेकिन हर बार बौना बोलता, यह मेरा नाम नहीं हैं।'' दूसरे दिन रानी ने अपने आदमियों से नाम पूछे और बौने को 'गाय की पसली', 'भेड़ का कन्धा' और 'ह्वेल की हड्डी' कहकर बुलाया। लेकिन हर बार वह बोला, ''यह मेरा नाम नहीं है। तीसरे दिन

रानी का एक आदमी वापस आया और बोला, "मुझे एक भी नाम नहीं मिला। लेकिन जब मैं जंगल के पास एक ऊँचे पहाड़ पर आया, जहाँ लोमड़ियाँ और ख़रगोश एक दूसरे को शुभरात्रि कह रहे थे, तो मैंने वहाँ एक छोटा-सा घर देखा। उस घर के दरवाज़े के सामने आग जल रही थी। आग के आसपास अनोखा-सा बौना एक पैर पर नाच रहा था और ज़ोर-ज़ोर से गा रहा था–

"आज तो मैंने उबाला है, लेकिन कल उसे भूनूँगा,
कल मैं रानी का बच्चा लूँगा;
आह ! कितना प्रसिद्ध है, पर सब हैं अनजान,
कि मेरा नाम है–रम्पलस्टिल्टस्किन।"

जब रानी ने यह सुना तो वह बहुत ख़ुश हुई, क्योंकि अब उसे नाम पता चल गया था। जल्दी ही बौना आया और बोला, "अब बोलो रानी, मेरा नाम क्या है ?"

पहले वह बोली, "क्या तुम्हारा नाम है कॉमरेड ?" "नहीं।"

"क्या तुम हल हो ?"

"नहीं।"

"क्या तुम्हारा नाम है रम्पलस्टिल्टस्किन ?"

"ज़रूर जादूगरनी ने तुम्हें बताया है–जादूगरनी ने बताया है।" बौना चीख़ा और उसने अपना दायाँ पैर ग़ुस्से में इतनी ज़ोर से ज़मीन पर पटका कि वह उसे दोबारा उठा ही नहीं पाया। फिर उसने दोनों हाथों से अपना बायाँ पैर पकड़ा और दायां पैर इतनी ज़ोर से खींचा कि वह बाहर आ गया और ज़ोर से चीख़ते हुए दूर भाग गया। उस दिन के बाद से आज तक रानी ने अपने उस दुष्ट मेहमान को फिर कभी नहीं देखा।

33

छह हंस

एक राजा एक बार घने जंगल में शिकार करते-करते अपने शिकार का इतनी दूर तक पीछा करता गया कि उसके सभी अनुचर पीछे छूट गए। लेकिन जब शाम हो गयी तो वह रुक गया और आसपास देखने लगा। वह रास्ता भूल गया था। वह जंगल से बाहर निकलने का रास्ता तलाश करने लगा, लेकिन उसे रास्ता नहीं मिला। तभी उसे एक बूढ़ी औरत दिखी, जिसका सिर हिल रहा था। वह उसके पास आयी तो राजा बोला, "क्या तुम मुझे इस जंगल से बाहर निकलने का रास्ता बता सकती हो ?" वह बोली, "हाँ महाराज, बिलकुल बता सकती हूँ, लेकिन एक शर्त है, जिसे पूरा किये बिना आप इस जंगल से बाहर नहीं निकल पाएँगे और भूखे-प्यासे यहीं मर जाएँगे।"

राजा ने पूछा, "क्या शर्त है ?"

बूढ़ी औरत बोली, "मेरी एक बेटी है। उसके जैसी सुन्दर दुनिया में दूसरी लड़की नहीं है, वह पूरी तरह से तुम्हारी पत्नी बनने लायक़ है। यदि तुम उससे शादी करोगे तो मैं तुम्हें इस जंगल से बाहर निकलने की राह बता सकती हूँ।" परेशान राजा ने हामी भर दी। बूढ़ी औरत उसे एक कुटिया में ले गयी, जहाँ उसकी बेटी आग के पास बैठी थी। उसने राजा का इस तरह स्वागत किया जैसे कि वह उसका इन्तज़ार ही कर रही थी। राजा ने देखा कि वह बहुत सुन्दर है, लेकिन फिर भी वह उसे पसन्द नहीं आयी, क्योंकि उसकी ओर देखकर वह एक अज्ञात भय से भर उठा था। फिर भी उसने उस लड़की को घोड़े पर बिठाया और बूढ़ी औरत ने उसे राह बतायी। राजा सकुशल अपने महल में लौट आया, जहाँ विवाह सम्पन्न होना था।

राजा की पहले भी शादी हो चुकी थी और उसके सात बच्चे भी थे—छह लड़के और एक लड़की, जिन्हें वह दुनिया में सबसे अधिक प्यार करता था। वह

यह सोचकर डर गया कि उसके बच्चों से उनकी सौतेली माँ दुर्व्यवहार करेगी और उन्हें तकलीफ़ पहुँचायेगी। यही सोचकर वह उन्हें जंगल के बीच एक सुनसान महल में ले गया। यह महल इतने घने जंगल में छिपा हुआ था कि उसे ढूँढ़ना ही बहुत कठिन था। यदि एक चतुर स्त्री उसकी मदद न करती तो राजा स्वयं भी उसे न ढूँढ़ पाता। उस स्त्री ने उसे एक रुई का गोला दिया, जिसमें एक अद्‌भुत गुण था—जब वह उसे अपने सामने लुढ़काता तो वह आगे-आगे लुढ़ककर उसे राह बताता था। राजा ने उस लड़की को रानी बना दिया और इस सुनसान महल में रहने लगा। लेकिन राजा इतनी बार अपने प्यारे बच्चों से मिलने जाने लगा कि नयी रानी को उसके इस तरह बार-बार जाने पर शक होने लगा। उसके मन में बार-बार राजा के जंगल से जाने का कारण जानने का कौतूहल जाग उठा। उसने अपने नौकरों को बहुत-सा पैसा दिया और नौकरों ने उस पर राज़ खोल दिया। उसे राजा को राह बतानेवाले चमत्कारी रुई के गोले के बारे में भी बताया। रानी बेचैन थी और जब तक उसने रुई के गोले का पता नहीं लगा लिया, चैन नहीं लिया। उसने बढ़िया रेशम की छह क़मीज़ें बनायीं और अपनी माँ की दी गयी सीख के अनुसार सबके भीतर एक-एक टोटका सिल दिया। कुछ ही दिनों बाद जब राजा शिकार पर गया तो उसने वे छोटी क़मीज़ें निकालीं और महल की ओर चल दी। रुई का गोला उसे राह दिखाने लगा। राजा के बच्चों ने दूर से किसी को आते देखा तो उन्हें लगा कि उनके पिताजी आ रहे हैं और वे उस तरफ़ ख़ुशी से दौड़ पड़े। उसने हरेक के ऊपर एक-एक क़मीज़ फेंकी और जैसे ही क़मीजें उनके ऊपर गिरीं, वे हंस बन गये और जंगल में ऊपर उड़ गये। रानी ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट गयी और उसने सोचा कि उसे अपने सौतेले बच्चों से मुक्ति मिल गयी। लेकिन उन छह भाइयों की बहन रानी को नहीं मिली थी और न ही उसे इस बात का पता था।

अगले दिन राजा बच्चों से मिलने गया तो उसे केवल अपनी बेटी ही मिली। राजा ने पूछा, "तुम्हारे भाई कहाँ है ?" उसने जवाब दिया, "अरे पिताजी ! वे चले गये और उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया।" फिर लड़की ने उसे बताया कि किस तरह उसने खिड़की से अपने भाइयों को हंस बनते हुए देखा था, जो जंगल के ऊपर से उड़ गये थे। फिर उसने अपने पिता को वे पंख दिखाये, जो उसके भाई आँगन में छोड़ गये थे और उसने इकट्ठा किये थे। राजा बहुत दुखी हुआ। लेकिन उसके मन में यह नहीं आया कि उसकी पत्नी ने यह दुष्टतापूर्ण कार्य किया है। उसे यह भी डर लगा कि उसकी बेटी को कोई चुरा ले जाएगा और वह उसे अपने

साथ ले गया। लड़की अपनी सौतेली माँ से इतना डरी हुई थी कि उसने अपने पिता से प्रार्थना की कि वे उसे महल में एक रात से अधिक नहीं रोके।

बेचारी लड़की ने सोचा, "यह मेरी जगह नहीं है। मुझे अपने भाइयों की तलाश करनी है।" जब रात हुई तो वह चुपके से जंगल में निकल गयी। वह पूरी रात और लगभग अगला पूरा दिन चलती रही और आख़िरकार थककर रुक गयी। तभी उसे एक साधारण-सी झोंपड़ी दिखाई दी। उसने भीतर जाकर देखा तो उसे वहां छह नन्हें बिस्तर दिखाई दिये। लेकिन उन पर लेटने की उसकी हिम्मत नहीं हुई और वह पलंग के नीचे सरककर ज़मीन पर ही लेट गयी। जब सूरज डूबने लगा तो उसे कुछ सरसराहट सुनायी दी और छह सफ़ेद हंस उड़ते हुए भीतर आये। वे ज़मीन पर बैठ गये और एक-दूसरे को तब तक हवा करने लगे, जब तक कि उनके सारे पंख नहीं गिर गये और उनका हंस का रूप एक क़मीज़ की तरह उतर गया। लड़की एकदम जान गयी कि वे उसके भाई हैं और ख़ुशी से बिस्तर से बाहर निकल आयी। भाई भी बहन को देखकर बेहद ख़ुश हुए, लेकिन उनकी ख़ुशी कम समय की ही थी। वे अपनी बहन से बोले, "तुम्हें यहाँ नहीं रहना चाहिए। यह डाकुओं का अड्डा है, यदि वे तुम्हें देख लेगे तो ज़रूर मार डालेंगे।" बहन ने पूछा, "तुम मुझे बचा नहीं सकते ?"

वे बोले, "नहीं, क्योंकि हम केवल अपने हंस के पंखों को शाम को एक चौथाई घण्टे के लिए अलग उतारकर रख सकते हैं और केवल उसी दौरान हम आदमी के रूप में रहते हैं और फिर हम अपने रूप में वापस आ जाते हैं।"

बहन रोते-रोते बोली, "क्या तुम अपने असली रूप में वापस नहीं आ सकते ?"

वे बोले, "नहीं, यह बहुत मुश्किल है। छह वर्षों तक तुम्हें न कुछ बोलना होगा, न हँसना होगा और उस समय में तुम्हें हमारे लिए फूलों की छह क़मीज़ें बुननी होंगी। इस बीच में यदि तुम्हारे मुँह से एक भी शब्द निकला तो तुम्हारी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।" जैसे भाइयों ने यह बात पूरी की, एक चौथाई घण्टा बीत गया और वे फिर हंस बनकर खिड़की से उड़ गए।

लड़की ने पक्का इरादा कर लिया कि या तो वह अपने भाइयों को मुक्ति दिलायेगी या अपनी जान दे देगी। वह कुटिया से निकली और घने जंगल में निकल गयी। उसने रात पेड़ों के बीच ही बितायी। अगली सुबह वह उठी और उसने फूल इकट्ठा किये। उससे बात करने के लिए कोई नहीं था और हँसने की इच्छा उसके भीतर थी नहीं। वह पेड़ के ऊपर बैठ गयी और अपना काम शुरू कर दिया। कुछ समय बीतने के बाद उस देश का राजा उस जंगल में शिकार करने आया। उसके



अनुचर उसी पेड़ के नीचे आये, जिस पर लड़की बैठी थी। उन्होंने उसे आवाज़ दी और उससे पूछा, "कौन हो तुम ?" लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। वे फिर बोले, "इधर आओ, हम तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे।" उसने धीरे से अपना सिर हिलाया, लेकिन जब उन्होंने और ज़ोर दिया तो उसने अपना सोने का हार नीचे फेंक दिया। उसे यह लगा कि अब वे सन्तुष्ट हो जाएँगे और कुछ नहीं कहेंगे। लेकिन उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। फिर उसने अपनी करधनी और उसके बाद अपना महँगा दुपट्टा फेंका, लेकिन वे न हटे। आख़िर उनमें से एक अनुचर खुद पेड़ पर चढ़ गया और लड़की को नीचे लाकर राजा के पास ले गया। राजा ने उससे पूछा, "कौन हो तुम ? तुम इस पेड़ पर क्या कर रही हो ?" लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। राजा ने फिर अपनी सीखी सभी भाषाओं में उससे यह सवाल पूछा, लेकिन वह एक मछली की तरह गूँगी बनी रही। फिर भी उसकी सुंदरता से राजा प्रभावित हुआ और उसे चाहने लगा। उसने लड़की के कन्धों पर अपना दुशाला ओढ़ाया और उसे अपने घोड़े पर बिठाकर महल ले गया। वहाँ उसने लड़की के लिए बेशक़ीमती कपड़े बनवाने का आदेश दिया। हालाँकि वह सूरज की किरणों जैसी चमक रही थी और बेहद सुन्दर लग रही थी, लेकिन उसके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला था। राजा ने उसे अपने साथ खाने पर बिठाया तो उसके बड़प्पन भरे राजसी संस्कारों और तौर-तरीक़े ने राजा का दिल जीत लिया। वह बोला, "इसी लड़की से मैं शादी करूँगा और किसी से भी नहीं।" और कुछ ही दिनों बाद उनकी शादी हो गयी।

राजा की एक दुष्ट सौतेली माँ थी, जो उसकी शादी से ख़ुश नहीं थी। वह रानी की बुराई करते हुए कहती थी, "कौन जाने यह चुड़ैल कहाँ से आयी है ? राजा की बीवी गूँगी हो, यह क्या उसको शोभा देता है ?" एक साल बाद जब रानी का पहला बच्चा पैदा हुआ तो सौतेली माँ ने उसे छिपा दिया और राजा के पास जाकर शिकायत करने लगी कि रानी हत्यारिन है। राजा ने इस बात का विश्वास नहीं किया और किसी को भी अपनी पत्नी को परेशान नहीं करने दिया, जो चुपचाप बैठी क़मीज़ें बुने जा रही थी। जब दूसरा बच्चा पैदा हुआ, तब भी सौतेली माँ ने वही हथकण्डे अपनाये, लेकिन राजा ने उसकी बात नहीं सुनी और बोला, "वह तो इतनी गम्भीर और अच्छी है कि वह ऐसा कर ही नहीं सकती। यदि वह बोल सकती और अपनी बात समझा सकती तो ज़रूर साबित हो जाता कि वह निरपराधी है।" लेकिन जब तीसरी बार बूढ़ी सास ने बच्चा चुरा लिया और रानी पर इसका आरोप लगाया तो राजा को उस पर मुक़दमा चलाना ही पड़ा और उसे आग में जलकर मरने की सज़ा सुनाई गयी।

जब उसे सज़ा दिये जाने का समय आया, तभी संयोग से वह समय भी आया जब उसके भाइयों को मुक्ति मिलनेवाली थी। छह क़मीज़ें भी लगभग तैयार थीं, सिर्फ़ छठी क़मीज़ की बायीं बाँह बननी बाक़ी थी। जब उसे सज़ा की जगह पर ले जाया जाने लगा तो उसने क़मीज़ें अपनी बाँह पर रख लीं। जैसे ही उसने अपनी बाँह ऊपर उठायी और आग तेज़ी से उस तरफ़ बढ़ी तभी उसने देखा कि छह हंस उस तरफ़ उड़ते हुए आ रहे हैं। उन्हें देखकर उसका दिल ख़ुशी से झूम उठा। वे इतने पास आ गये कि अब वह क़मीज़ें उनके ऊपर फेंक सकती थी। जैसे ही उसने उनके ऊपर क़मीज़ें फेंकी, उनके पंख गिर पड़े और उसके भाई मनुष्य के रूप में सामने आ गये। लेकिन सबसे छोटे भाई की बायीं बाँह नहीं थी, बल्कि उसकी जगह हंस का डैना था। उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा। रानी राजा के पास गयी और बोली, "अब मैं बोल सकती हूँ प्रिय और तुम्हें बता भी सकती हूँ कि मैं निर्दोष हूँ और मुझ पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया है।" फिर उसने राजा को बताया कि किस तरह दुष्ट बुढ़िया ने उसके तीनों बच्चों को चुराया और कहीं और छिपा दिया है। उससे पूरी बात सुनकर राजा बेहद ख़ुश हुआ और तुरन्त दुष्ट सौतेली माँ को मंच पर ले जाकर बाँधकर जला दिया गया। वह जलकर राख हो गयी। राजा और रानी छह भाइयों के साथ फिर हमेशा सुख और शान्ति से रहे।

34

अँगूठाराम की यात्राएँ

एक दर्ज़ी का इतना नन्हा-सा बेटा था कि उसे अँगूठाराम नाम से पुकारा जाता था। लेकिन उस नन्हे से बच्चे में गज़ब की हिम्मत थी। एक दिन वह अपने पिता से बोला, "मुझे यात्रा पर जाना है।" पिता ने उत्तर दिया, "ठीक है बेटा, एक बारीक सुई ले लो और उसके सिरे पर लाख लगा दो। इस तरह तलवार तैयार करो और फिर यात्रा पर जाओ।"

दर्ज़ी को अपने बेटे के साथ आख़िरी बार खाना खाना था। इसलिए उसने अपनी पत्नी से रसोई में जाकर पूछा कि उसने उनके लिए क्या बनाया है। खाना एकदम तैयार था और बर्तन भट्ठी पर रखा था, तभी उसने अपनी पत्नी से यह पूछा।

पत्नी बोली, "तुम खुद ही देख लो।"

इसी समय अँगूठाराम ने बर्तन के किनारे पर चढ़कर बर्तन के भीतर झाँका और अपनी गर्दन लम्बी की। गर्म खाने की भाप के ज़ोर से उड़कर वह चिमनी तक पहुँच गया। कुछ दूर तक वह भाप के साथ हवा में उड़ता गया, लेकिन आख़िर में नीचे गिर ही पड़ा। नन्हा दर्ज़ी अब बाहर की दुनिया में आ गया था। उसने एक दर्ज़ी के साथ काम करना शुरू किया, लेकिन वह उसे अच्छा खाना नहीं देता था। अँगूठाराम ने अपनी मालकिन से कहा, "यदि तुम अच्छा खाना नहीं बनाओगी तो मैं यह घर छोड़ दूँगा। कल सुबह-सुबह तुम्हारे घर के दरवाज़े पर चॉक से लिख दूँगा, "ढेर सारे आलू, थोड़ा गोश्त—ख़ुदा हाफ़िज मेरे आलू-सम्राट।" मालकिन बोली, "तुम क्या सोचते हो, तुम कुछ कर सकते हो टिड्डे ?" यह कहते हुए उसने एक कपड़े का टुकड़ा उठाकर अँगूठाराम पर फेंका। लेकिन वह तेज़ी से एक अंगुश्ताने के नीचे छिप गया और नीचे से झाँक-झाँककर तरह-तरह से मुँह बनाने लगा। मालकिन ने अंगुश्ताना उठाया और उसे पकड़ने की कोशिश की। अँगूठाराम कपड़े



में छिप गया और जब उसने कपड़े को फटकारा तो वह मेज़ की दरार में छिप गया। वह अपना सिर बाहर निकालकर हँसने लगा, "ही-ही-ही बूढ़ी मालकिन" और जब वह उसे मारने को झपटती तो वह नीचे हो जाता। आख़िरकार मालकिन ने उसे पकड़ ही लिया और घर से निकाल दिया।

नन्हा दर्ज़ी भटकता रहा और अन्ततः एक जंगल में आ गया। यहाँ उसे डकैतों का एक झुण्ड मिला, जो राजा का ख़ज़ाना लूटने जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने दर्ज़ी को देखा तो सोचा, "अरे, इतना छोटा प्राणी तो चाभी के छेद से भीतर जा सकता है और हमारी मदद कर सकता है।" एक चिल्लाया, "वाह, रुको गोलियेथ, क्या तुम हमारे साथ ख़ज़ाने तक चलोगे ? तुम आसानी से भीतर जाकर सोना-चाँदी ला सकते हो ?"

अँगूठाराम ने कुछ देर सोचा और आख़िर में हामी भरकर उनके साथ महल में पहुँच गया। वहाँ उसने सभी दरवाज़ों में दरारों की जाँच की और उसे एक ऐसी दरार मिल ही गयी, जिसके उस पार वह जा सकता था। जैसे ही वह उस दरार से रेंगकर जाने लगा, दरवाज़े पर एक चौकीदार ने उसे देख लिया। उस चौकीदार ने दूसरे से कहा, "देखो कितनी बदसूरत मकड़ी रेंग रही है। इसे मैं कुचल दूँ ?

दूसरा बोला, "अरे बेचारे को छोड़ दो। उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।" इस पर अँगूठाराम जल्दी से दरार से होकर भीतर चला गया। नीचे की खिड़की खोलकर जहाँ डकैत खड़े थे, एक-एक करके चाँदी के सिक्के फेंकता गया। वह तेज़ी से सिक्के फेंक ही रहा था कि उसे राजा के वहाँ आने की आवाज़ सुनाई दी। वह जल्दी से छिप गया। राजा ने देखा कि वहाँ से कुछ सिक्के तो ग़ायब हैं, लेकिन वह यह नहीं समझ पाया कि वे सिक्के किसने चुराये हैं, क्योंकि सभी ताले बन्द थे और वहाँ कोई गड़बड़ नज़र नहीं आ रही थी। वह चौकीदारों के पास गया और उनसे बोला, "ध्यान रखो ! कोई मेरे सोने की फिराक़ में है।" इधर अँगूठाराम ने फिर अपना काम शुरू कर दिया। चौकीदारों ने सिक्कों की खनखनाहट सुनी और वे भीतर आ गये और चोर को पकड़ ही लेते, लेकिन अँगूठाराम और भी तेज़ था। उसने जब उनके आने की आवाज़ सुनी तो वह दौड़ कर एक कोने में गया और ख़ुद को एक सिक्के से पूरी तरह ढँक लिया। फिर उसने चौकीदारों को आवाज़ दी, हाँ, हाँ, मैं यहाँ हूँ ?" चौकीदार मुड़े, लेकिन वहाँ कुछ ढूँढ़ पाते, तब तक वह दूसरे कोने में पहुँच गया और बोला, "मैं यहाँ हूँ।" चौकीदार वहाँ पहुँचे, तब तक वह तीसरे कोने में था और कह रहा था, "ही, ही, ही, मैं यहाँ हूँ।" और यह इसी तरह चलता गया। अँगूठाराम उन्हें बेवक़ूफ़ बनाता रहा और वे कमरे में यहाँ-वहाँ

नाचते रहे। आख़िरकार वे थककर चले गये। वह फिर पहले की तरह सिक्के बाहर फेंकने लगा और जब आख़िरी सिक्का बचा तो वह ख़ुद भी उसके साथ उछल गया और बाहर ज़मीन पर आ गया। डकैतों ने उसकी बड़ी तारीफ़ की और बोले, "तुम तो बहुत चतुर हो। क्या तुम हमारे सरदार बनोगे ?" अँगूठाराम ने मना कर दिया, क्योंकि वह तो दुनिया देखना चाहता था। इसलिए उन्होंने रक़म बाँट ली, लेकिन नन्हें दर्ज़ी ने केवल एक पैसा ही लिया, क्योंकि इससे ज़्यादा वह उठा ही नहीं सकता था।

इसके बाद उसने अपनी तलवार दुबारा अपनी कमर में बाँध ली और डकैतों को अलविदा कहकर अपनी यात्रा पर आगे निकल पड़ा। वह कई लोगों के पास काम माँगने गया, लेकिन किसी ने भी उसे नहीं रखा। आख़िरकार वह एक सराय में नौकरी करने लगा। वहाँ की नौकरानियाँ उसे नापसन्द करती थीं, क्योंकि वह उनके कारनामे तो देख लेता था, पर वे उसे नहीं देख पाती थी। वह मालिक को इस बात की जानकारी देता था कि वे नौकरानियाँ कितना घी और अनाज चुराकर खाती हैं। इसी वजह से नौकरानियों ने उसके साथ कोई चाल चलकर उसे बाहर निकलवाने की सोची। कुछ दिन बाद ही एक नौकरानी बग़ीचे में घास छील रही थी, तभी उसने अँगूठाराम को डेजी के एक फूल से दूसरे फूल पर फुदकते हुए देखा। उसने उसी जगह की घास तेज़ी से छीली और उसका गट्ठर बनाकर धीरे-से भैंस के सामने डाल दिया। काली भैंस ने उस घास को तुरन्त खा लिया और बिना कोई नुक़सान हुए अँगूठाराम भी भीतर पहुँच गया। लेकिन वह ख़ुश नहीं था, क्योंकि भीतर बहुत अँधेरा था। जब भैंस का दूध दुहा जा रहा था, तभी अँगूठाराम चिल्लाया, "हुर्रे, दूध का बर्तन कब भरेगा ?" लेकिन दूध गिरने की आवाज़ में उसकी आवाज़ किसी को नहीं सुनाई दी। इसी समय मालिक भी वहाँ आया और बोला, "इस भैंस को कल मार देना।" यह सुनकर अँगूठाराम डरकर काँपने लगा और चिल्लाया, "पहले मुझे बाहर आने दो, रुको, पहले मुझे बाहर आने दो।"

मालिक को उसकी आवाज़ सुनायी तो दी, लेकिन समझ नहीं आया कि यह आवाज़ कहाँ से आ रही है। उसने पूछा, "तुम कहाँ हो ?"

अँगूठाराम ने जवाब दिया, "अँधेरे में," लेकिन मालिक की समझ में नहीं आया और वह चला गया।

अगली सुबह भैंस को मार दिया गया। अँगूठाराम को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा और उसे मांस के साथ कसाई के पास भेज दिया गया। जैसे ही कसाई ने अपना काम शुरू किया तो अँगूठाराम अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाया, "इतना

गहरा मत काटो ! इतना गहरा मत काटो !" लेकिन काटने की आवाज़ में फिर उसकी आवाज़ दब गयी। जहाँ चाह होती है, वहाँ राह भी निकल ही आती है और इसी वज़ह से अँगूठाराम बेहद चतुराई से चाकू के वारों से बचता-बचाता यहाँ से वहाँ कूदता रहा और अन्त में खाल के साथ हौद में दूसरे टुकड़ों के साथ गिर पड़ा। उसे एक कवच में मांस के साथ पकने के लिए लपेट दिया गया। उसे अपनी जगह बहुत सँकरी लगी और उसके बाद जब उसे चिमनी के ऊपर धुएँ में पकने के लिए टांगा गया तो उसे समय बहुत लम्बा लगा। अन्ततः एक दिन उसे एक मेहमान को परोसे जाने के लिए नीचे उतारा गया। जब मालकिन ने मांस के टुकड़े को आधा काटा तो उसकी गर्दन किसी तरह बच गयी और उसने मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए छलाँग लगायी और बाहर निकल गया।

इस घर में, जहाँ की हालत ख़राब थी, वह और नहीं रहना चाहता था। वह फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह बहुत दिन स्वतन्त्र नहीं रहा। खुले मैदान में उसे एक लोमड़ी मिली, जिसने उसे तुरन्त पकड़ लिया। अँगूठाराम बोला, "वाह लोमड़ी जी, मैं तुम्हारे गले में नहीं अटके रहना चाहता। मुझे बाहर निकाल दो।"

लोमड़ी बोली, "ठीक है, तुम्हारा वहाँ कोई काम नहीं है, लेकिन यदि तुम अपने पिता की सारी मुर्ग़ियाँ मुझे देने का वचन दो तो मैं तुम्हें छोड़ सकती हूँ।"

अँगूठाराम बोल, "ज़रूर, तुम्हें सभी मुर्ग़ियाँ मिल जायेंगी।" इस पर लोमड़ी ने उसे बाहर निकाल दिया और उसे लेकर उसके घर गयी। जैसे ही किसान ने अपने प्यारे बेटे को दोबारा देखा तो इनाम के रूप में उसने लोमड़ी को अपनी सारी मुर्ग़ियाँ दे दीं। इसके बाद अँगूठाराम ने वह पैसा निकाला, जो उसने अपनी यात्रा में कमाया था, और बोला, "देखो, मैं अपने साथ सोने का सुन्दर सिक्का लाया हूँ।"

"लेकिन तुमने लोमड़ी को अपनी सारी मुर्ग़ियाँ खाने के लिए क्यों दे दीं ?"

"क्यों ? अरे तुम एकदम भोले हो, तुम नहीं जानते कि तुम्हारा पिता तुम्हारे लिए अपनी सारी मुर्ग़ियाँ दे सकता है।"

35

खानदानी नौकरानियाँ

"तुम कहाँ जा रही हो ?" एक नौकरानी ने दूसरी नौकरानी से कहा। दूसरी ने जवाब दिया, "वाल्पे की ओर।"

"मैं भी वाल्पे की ओर जा रही हूँ और तुम भी वाल्पे की ओर जा रही हो—चलो हम दोनों का साथ अच्छा रहेगा।" पहली ने कहा, फिर उसने दूसरी नौकरानी से पूछा—

"क्या तुम्हारा पति है ? तुम अपने पति को क्या कहकर बुलाती हो ?"

दूसरी ने कहा, "चैम।" पहली नौकरानी बोली, "क्या ख़ूब कहा। मेरे पति का नाम भी चैम है, तुम्हारे पति का नाम भी चैम। मैं भी वाल्पे की ओर जा रही हूँ, तुम भी वाल्पे की ओर जा रही हो—चलो साथ अच्छा रहेगा।"

"क्या तुम्हारा बच्चा है ? तुम अपने बच्चे को क्या कहकर बुलाती हो ?" पहली ने पूछा।

"मेरे बच्चे का नाम है ग्रिल्ड।" दूसरी ने कहा। पहली बोली "मेरा बच्चा भी ग्रिल्ड, तुम्हारा बच्चा भी ग्रिल्ड, मेरा पति चैम, तुम्हारा पति भी चैम, मैं भी वाल्पे की ओर, तुम भी वाल्पे की ओर, तो चलो साथ अच्छा रहेगा।"

"क्या तुम्हारे पास पालना है ? तुम अपने पालने को क्या कहती हो ?" पहली नौकरानी ने पूछा।

दूसरी ने ज़वाब दिया, "हिप्पो हैडल।" "मेरा पालना भी हिप्पो हैडल कहलाता है, तुम्हारा पालना भी हिप्पो हैडल है; मेरा बच्चा ग्रिल्ड, तुम्हारा बच्चा ग्रिल्ड; मेरा पति भी चैम, तुम्हारा पति भी चैम; मैं भी वाल्पे की ओर, तुम भी वाल्पे की ओर, तो चलो साथ अच्छा रहेगा।" पहली ने कहा।

"क्या तुम्हारा कोई मालिक है ? तुम अपने मालिक को क्या कहकर बुलाती हो ?" पहली ने पूछा।

दूसरी ने कहा—"जितना कर सकते हो करो।" "वाह मेरे मालिक का नाम—जितना कर सकते हो करो, तुम्हारे मालिक का नाम—जितना कर सकते हो—करो; मेरा पालना हिप्पो हैडल, तुम्हारा पालना हिप्पो हैडल, मेरा बच्चा ग्रिल्ड, तुम्हारा बच्चा ग्रिल्ड; मेरा पति चैम, तुम्हारा पति चैम; मैं भी वाल्पे की ओर तुम भी वाल्पे की ओर, तो, चलो साथ अच्छा रहेगा।"

36

दुर्भाग्य

जब किसी पर दुर्भाग्य का साया पड़ता है तो वह उससे बचने के लिए बहुत दूर किसी कोने में छिप जाए या उड़कर बहुत दूर निकल जाए तो वह उससे बच नहीं पाता।

एक बार की बात है, एक आदमी बहुत ग़रीब हो गया। इतना ग़रीब कि उसके पास आग जलाने के लिए लकड़ी का एक टुकड़ा भी नहीं बचा। इसलिये वह जंगल में एक पेड़ काटने लगा। लेकिन सभी पेड़ बहुत लम्बे और मज़बूत थे। वह जंगल में और भीतर तक गया, तब उसे एक पेड़ मिला, जिसे वह काट सकता था। जैसे ही उसने कुल्हाड़ी उठायी, उसे झाड़ियों से निकलकर बाहर आता हुआ भेड़ियों का एक झुण्ड दिखायी दिया। वे ज़ोर-ज़ोर से चीख़ रहे थे। आदमी ने अपनी कुल्हाड़ी फेंक दी और दौड़कर एक पुल तक जा पहुँचा। गहरे पानी से वह पुल सड़ गया था, इसलिए जैसे ही उसने दौड़कर उस पुल पर पैर रखा कि पुल टूट गया। वह आदमी गिर पड़ा। अब वह क्या करता ? यदि वह रुका रहता तो भेड़िये उसे पकड़ लेते और फाड़कर खा जाते। इसी चिन्ता में वह पानी में कुछ पड़ा। लेकिन वह तैरना नहीं जानता था, इसलिए डूबने लगा। संयोग से वहाँ किनारे पर बैठे कुछ मछुआरों ने उसे देखा। उनमें एक ने उसे बचा लिया और किनारे पर ले आया। उन्होंने उसे सूरज की रोशनी में एक दीवार के पास लिटा दिया। लेकिन जैसे ही वह होश में आया और उसने मछुआरों को धन्यवाद देने की कोशिश की, तभी दीवार गिर पड़ी और वह उसके नीचे दबकर मर गया।

37

नन्हा गड़रिया

एक लड़का था। वह भेंड़ें चराता था। हर सवाल का चतुराई से जवाब देने के लिए उसका नाम दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। उस देश के राजा ने भी उसका नाम सुना, लेकिन उसने इसका विश्वास नहीं किया। उसने उस लड़के को दरबार में बुलवा भेजा। जब वह आया तो राजा ने उससे कहा, "यदि तुम मेरे तीन सवालों का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हें अपने बेटे जैसा पालूँगा और तुम मेरे साथ महल में रहोगे।"

"वे सवाल क्या हैं ?" लड़के ने पूछा।

"पहला है—समुद्र में पानी की कितनी बूँदें हैं ?"

लड़के ने जवाब दिया, "महाराज, पहले समुद्र का सारा पानी धरती पर निकाल कर समुद्र ख़ाली कर दीजिये, तभी मैं बूँदें गिन पाऊँगा।"

राजा ने कहा, "दूसरा सवाल है—आसमान में कितने तारे हैं ?"

लड़के ने कहा, "मुझे एक बड़ा सा कागज़ दीजिए।" फिर उसने कागज़ लेकर, उसमें पिन से अनगिनत छेद कर दिए। यह करने के बाद वह बोला, "इस कागज में जितने छेद हैं, उतने ही आसमान में तारे हैं, इन्हें गिन लीजिये।" लेकिन कोई भी नहीं गिन सका। फिर राजा बोला, "तीसरा सवाल—अनन्त काल में कितने क्षण होते हैं ?"

"निचले पोमेरेनिया में एडमेंटाइन पर्वत है, जो कि एक मील ऊँचा, एक मील चौड़ा, एक मील गहरा है। वहाँ एक चिड़िया एक हज़ार साल में एक बार आती है और अपनी चोंच इस पहाड़ पर रगड़ती है। जब वह रगड़कर पहाड़ को पूरा ख़त्म कर देगी, तब अनन्तकाल का पहला क्षण बीतेगा।"

"तीनों प्रश्नों के उत्तर तुमने बहुत अच्छी तरह दिये।" राजा बोला, "और अब से तुम मेरे साथ मेरे बेटे बनकर महल में रहोगे।"

38

बूढ़ी भिखारिन

एक समय में एक बूढ़ी औरत थी, जो दूसरी भिखारिनों की तरह भीख माँगती थी। जब कोई उसे कुछ भीख दे देता तो वह कहती, "ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे !" यह बूढ़ी भिखारिन एक दरवाज़े पर भीख माँगने गयी। वहाँ एक अच्छे स्वभाव का लड़का खड़ा होकर आग ताप रहा था। जैसे ही उसने बाहर खड़ी उस बूढ़ी औरत को ठण्ड से काँपते हुए देखा तो वह बोला, "भीतर आकर आग ताप लो।" वह भीतर आ गयी, लेकिन आग के ज़्यादा पास आ जाने से उसके फटे-पुराने कपड़े जलने लगे। और उसे पता भी नहीं चला। लड़का खड़ा-खड़ा उसे देखता रहा। लेकिन क्या उसे भिखारिन के कपड़ों में लगी आग नहीं बुझानी चाहिए थी ? बिलकुल, और यदि उसके पास पानी नहीं था तो उसकी आँखों से पानी बहना चाहिए था और दो प्यारी नन्हीं धाराएँ निश्चित ही आग बुझा देतीं।

39

लोहे का चूल्हा

उन दिनों जबकि इच्छा करने से चीज़ें मिल जाया करती थीं, एक राजा के बेटे को, एक बूढ़ी जादूगरनी ने जादू से जंगल में एक बड़े लोहे के चूल्हे में बन्द कर दिया। वहाँ वह बहुत सालों तक रहा और उसे कोई छुड़ा नहीं सका। एक दिन एक राजकुमारी जंगल में खो गयी और अपने पिता के राज्य तक वापस लौटने की राह नहीं तलाश सकी। नौ दिन भटकने के बाद चूल्हे के पास तक आ पहुँची। जब वह वहाँ पहुँची तो उसे एक आवाज़ सुनायी दी, "तुम कहाँ से आयी हो और तुम्हें कहाँ जाना है ?" वह बोली, "मैं अपने पिता के राज्य की राह भटक गयी हूँ और मैं अपने घर नहीं जा सकती।" लोहे के चूल्हे से आवाज़ आयी "यदि तुम, मैं जो चाहूँ वह करने का वचन दो, तो मैं थोड़ी देर में तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। मैं तुम्हारे पिता से भी बड़े राजा का बेटा हूँ और मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ।"

राजकुमारी इस प्रस्ताव पर डर गयी और चिल्लाई, "लोहे के चूल्हे का मैं क्या करूँगी ?" लेकिन घर लौटने की चिन्ता में उसने उस बात की सहमति दे दी। राजकुमार ने उससे कहा कि वह घर पहुँचने के बाद वापस ज़रूर लौट आये और अपने साथ चूल्हे को काटने के लिए एक चाकू भी लेकर आये। उसके बाद उसने राजकुमारी को इतनी बारीकी से उसके घर का रास्ता समझाया कि वह दो घण्टे में ही अपने घर पहुँच गयी। जब वह घर पहुँची तो सब ओर ख़ुशी की लहर दौड़ गयी। राजा उसके गले लग गया और उसे चूमा। लेकिन वह परेशान थी। वह अपने पिता से बोली, "अरे पिताजी, मेरे साथ क्या-क्या बीता ! यदि मुझे एक लोहे का चूल्हा न मिलता तो मैं तो कभी पहुँच ही न पाती और इसीलिए मैंने उसे विवाह करने का वचन भी दिया है।"

राजा यह सुनकर बेहद डर गया और बेहोश हो गया, क्योंकि उसकी एक

ही बेटी थी। जब उसे होश आया तो उन्होंने तय किया कि एक मिल-मालिक की बेटी जो बेहद सुन्दर थी, उसकी जगह ले लेगी। इस तरह उस लड़की को चाकू के साथ वहाँ पहुँचाया गया और लोहे के चूल्हे में एक छेद करने को कहा गया। चौबीस घण्टों तक चाकू से खुरचने के बाद भी चूल्हे में छेद नहीं हुआ। सुबह हुई तो चूल्हे से आवाज़ आयी, "मुझे लगता है सूरज निकल आया।" लड़की बोली, "हाँ मुझे भी लगता है और मुझे अपने पिता की मिल की फट्-फट् की आवाज़ भी सुनायी दे रही है।" फिर आवाज़ आयी, "तो तुम मिल मालिक़ की बेटी हो। तुम घर जाओ और राजकुमारी को मेरे पास भेजो।"

लड़की घर लौट गयी और राजा से बोली कि चूल्हा उससे नहीं, बल्कि राजकुमारी से ही विवाह करेगा। राजा फिर डर गया और राजकुमारी भी रोने लगी। लेकिन राजा की दासियों में एक सुअर चरानेवाले की बेटी भी थी, जो कि मिल-मालिक की बेटी से भी सुन्दर थी। राजा ने उसे एक सोने का टुकड़ा दिया और राजकुमारी की जगह लोहे के चूल्हे के पास जाने के लिए कहा। वह लड़की चली गयी और उसने भी चौबीस घण्टों तक चाकू से चूल्हे को खुरचा, लेकिन कोई असर न हुआ। सुबह हुई तो चूल्हे में से आवाज़ आयी, "लगता है सूरज निकल आया।" लड़की बोली, "हाँ, क्योंकि मुझे अपने पिता के भोंपू की आवाज़ सुनायी दे रही है।"

आवाज़ बोली, "तो तुम सुअर चराने वाले की लड़की हो। सीधे वापस जाओ और राजकुमारी से कहो कि यदि वह नहीं आयी तो तुम्हारे राज्य में सब कुछ टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। दीवारें ढह जाएँगी। सब तबाह हो जाएगा।"

जैसे ही राजकुमारी ने यह सुना, वह रोने लगी। लेकिन उससे कोई लाभ न था, क्योंकि उसे अपना वचन निभाना ही था। उसने अपने पिता से विदा ली और अपने साथ चाकू लेकर जंगल में लोहे के चूल्हे के पास चल पड़ी। पहुँचते ही उसने चूल्हे को चाकू से खुरचना शुरू कर दिया और दो घण्टे बीतते-बीतते उसने उसमें एक छोटा छेद कर दिया। इस छेद से उसने झाँककर देखा और उसे चूल्हे में एक सुन्दर राजकुमार दिखायी पड़ा। वह सोने और रत्नों जड़े कपड़े पहने था। वह उसे देखते ही उससे प्रेम करने लगी और पहले से भी तेज़ी से खुरचने लगी। जल्दी ही उसने छेद बड़ा कर दिया और राजकुमार बाहर आ गया। धरती पर उतरते ही वह बोला, "मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरी हो। तुम मेरी पत्नी बनोगी, क्योंकि तुमने मेरे प्राण बचाये हैं।" वह उसे अपने राज्य में अपने पिता के पास ले जाना चाहता था। लेकिन राजकुमारी ने कहा कि वह एक बार फिर अपने पिता के पास जाकर उनकी अनुमति लेना चाहती है। राजकुमार ने हामी भर दी, लेकिन



यह भी कहा कि वहाँ वह तीन शब्दों से अधिक नहीं बोलेगी और तुरन्त लौट आयेगी। राजकुमारी अपने घर गयी और उसने तो वहाँ तीन शब्दों से कहीं ज़्यादा बातचीत की। लोहे का चूल्हा बना राजकुमार तुरन्त ग़ायब हो गया और कई बर्फ़ीले पहाड़ों और घाटियों के ऊपर से गुज़रकर दूर जा पहुँचा। इधर राजकुमारी ने अपने पिता से विदा ली और अपने साथ थोड़ा-सा सोना लेकर वापस जंगल में आयी। वहाँ उसने लोहे के चूल्हे को बहुत तलाश किया, लेकिन वह नहीं मिला। वह नौ दिन तक भूखी-प्यासी चूल्हा ढूँढ़ती रही। अन्ततः उसे लगा कि मर जाएगी। शाम हुई तो रात में आनेवाले जंगली जानवरों से बचने के लिए एक छोटे पेड़ पर चढ़ गयी। आधी रात में उसे थोड़ी दूर पर कुछ रोशनी दिखायी दी और उसने सोचा, "वहाँ मुझे कुछ मदद मिल सकती है।" यह सोचकर वह उतरी और रोशनी की तरफ़ मन ही मन प्रार्थना करते हुए चली गयी। थोड़ी ही देर में वह एक कुटिया तक आ पहुँची, जिसके चारों ओर बहुत-सी घास उगी थी। दरवाज़े के पास एक लकड़ी की गट्ठर रखा था। उसने जब खिड़की के भीतर झाँककर देखा तो उसे मोटे मेंढक, मेज पर रखा मांस और शराब और चाँदी के बर्तन दिखायी दिये। वह अपने आप से कह उठी, "अरे मैं यह कहाँ आ गयी ? उसने हिम्मत करके दरवाज़ा खटखटाया और एक मेंढक चिल्ला पड़ा–

"टेढ़े पैरोंवाले मेंढक
जल्दी से दरवाज़ां खोलो
देखो-देखो कौन खड़ा है ?"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, एक छोटा मेंढक दौड़ता हुआ आया और उसने दरवाज़ा खोला और राजकुमारी भीतर चली गयी। सभी ने उसका स्वागत किया और उसे बिठाया। उन्होंने उससे पूछा कि वह कहाँ से आयी है और उसे कहाँ जाना है। उसने मेंढकों को सारी बात बतायी कि किस प्रकार तीन शब्दों से ज़्यादा बोलने से चूल्हा और राजकुमार ग़ायब हो गया और अब वह पहाड़ों-घाटियों में उसकी तलाश में निकली है। जब उसने अपनी बात पूरी कर ली तो बूढ़ा मेंढक चिल्लाया–

"टेढ़े पैरोंवाले मेंढक
जल्दी जाओ, आओ लेकर
टोकरी जो टँगी है खूँटी पर।"

छोटा मेंढक गया और टोकरी बड़े मेंढक को लाकर दी। बड़े मेंढक ने राजकुमारी को मांस और शर्बत दिया। उसके बाद उसे रेशम और मख़मल के साफ़ सुन्दर बिस्तर पर सुला दिया। वह उस पर ईश्वर की कृपा से अच्छी तरह सो गयी। जैसे

ही सुबह हुई, राजकुमारी उठी और बूढ़े मेंढक ने उसे थैले से तीन सुइयाँ निकालकर दीं। उसने कहा कि वह इन्हें ले जाए, क्योंकि वे उसे काँच के पहाड़, तीन तेज़ तलवारों और एक बड़े तालाब से गुज़रने में उसकी सहायता करेंगी। बूढ़े मेंढक ने चलते समय उसे एक हल का पटिया और तीन अखरोट भी दिये।

राजकुमारी निकल पड़ी और चलते-चलते काँच के पहाड़ के पास पहुँची, जो इतना चिकना था कि वह तीनों सुइयों की मदद से ही उसकी चोटी पर पहुँची। जब वह पहाड़ के दूसरी ओर पहुँची तो उसने सुइयाँ सँभालकर रख लीं और चलते-चलते तीनों तलवारों के पास पहुँची। उसने हल के पटिया की सहायता से उन तलवारों का सामना किया। आख़िरकार वह एक बड़े तालाब के पास आ पहुँची और जब उसने उसे पार कर लिया तो वह एक विशाल सुन्दर महल के पास आ गयी। उसने उसमें प्रवेश किया और वहाँ नौकरी करने की इच्छा ज़ाहिर की। उसने कहा कि वह एक ग़रीब लड़की है और उसने कुछ दिनों पहले एक राजा के बेटे को जंगल में रखे लोहे के चूल्हे से बचाया था। कुछ देर बाद उसे थोड़े से पैसों पर रसोई में काम करने के लिए रख लिया गया। जल्दी ही उसे पता चला कि राजकुमार किसी अन्य लड़की से विवाह करनेवाला है, क्योंकि वह यह मान रहा है कि वह जिसे पहले चाहता था, वह लड़की बहुत पहले ही मर गयी है। एक शाम, जब वह नहाकर आयी तो उसे अपनी जेब में से तीन अखरोट मिले, जो बूढ़े मेंढक ने उसे दिये थे। उसने एक अख़रोट तोड़ा तो उसके भीतर गिरी की बजाय एक सुन्दर राजसी पोशाक़ निकली। जब इस पोशाक के बारे में होनेवाली दुल्हन ने सुना तो उसने कहा कि यह पोशाक उसे चाहिए, क्योंकि यह पोशाक नौकरानी के लिए नहीं है। लेकिन राजकुमारी ने कहा कि वह इस पोशाक को केवल एक ही शर्त पर बेचेगी और वह शर्त यह है कि उसे एक रात राजकुमार के कमरे के पास बिताने दीं जाये। उसकी शर्त मान ली गयी, क्योंकि वधू को वह पोशाक पाने की बेहद इच्छा थी।

जब शाम हुई तो उसने अपने होनेवाले पति से कहा कि एक बेवक़ूफ़ लड़की उसके कमरे के पास रात बिताना चाहती है। राजकुमार बोला, "यदि तुम ख़ुश हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" लेकिन उसने राजकुमार को एक प्याला शराब में नींद की दवा मिलाकर पिला दी। उसके प्रभाव से वह इतनी गहरी नींद में सोया कि बेचारी ग़रीब राजकुमारी उसे जगा नहीं पायी। वह पूरी रात रोती रही और कहती रही, "मैंने तुम्हें जंगल में बचाया था और लोहे के चूल्हे से तुम्हारी जान भी बचायी थी। मैं तुम्हारी तलाश में काँच के पहाड़, तीन तेज़ तलवारों और एक बड़े तालाब से गुज़रकर आयी हूँ और फिर भी तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो।" लेकिन सोचे

राजकुमार ने कुछ नहीं सुना। सामने के कमरे में नौकरों ने यह बात सुन ली और अगली सुबह राजकुमार से सारी बात बतायी। अगली शाम जब राजकुमारी ने नहाकर दूसरा अख़रोट तोड़ा तो उसमें पहली पोशाक से भी सुन्दर पोशाक थी। वधू ने कहा कि यह पोशाक उसे चाहिए। लेकिन राजकुमारी उसे सिर्फ़ एक ही शर्त पर बेचना चाहती थी, वह यह कि पहले ही की तरह अभी भी उसे राजकुमार के पास रात बिताने दी जाए। वधू ने फिर राजकुमार को नींद की दवा पिला दी और वह इतनी गहरी नींद में सो गया कि वह इस बार भी राजकुमारी का रुदन और उसकी शिकायतें नहीं सुन पाया। राजकुमारी कह रही थी, "मैंने तुम्हें जंगल में बचाया था और लोहे के चूल्हे से तुम्हारी जान भी बचायी थी। मैं तुम्हारी तलाश में काँच के पहाड़, तीन तेज़ तलवारों और एक बड़े तालाब से गुज़रकर आयी हूँ और फिर भी तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो।" इस बार फिर पास के कमरे में सोये नौकरों ने यह बात सुन ली और अगली सुबह राजकुमार से सारी बातें कह सुनाईं।

उसी शाम ग़रीब नौकरानी ने तीसरा अख़रोट तोड़ा और उसमें से सोने के तारों की एक पोशाक निकली। वधू ने कहा कि यह पोशाक उसे किसी भी क़ीमत पर चाहिए और राजकुमारी ने फिर पहलेवाली ही शर्त रख दी। लेकिन राजकुमार ने इस बार नींद की दवा पी नहीं, बल्कि फेंक दी और जब राजकुमारी रोकर कहने लगी, "आह, मेरे स्वामी, क्या तुम भूल गये कि मैंने तुम्हें कैसे घने जंगल और लोहे के चूल्हे से बचाया था ?" राजकुमार ने उसकी बात सुनी और वह उछलकर बोला, "हाँ, तुम सही कह रही हो। मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरी हो।"

इसके बाद रात समाप्त होने पर वह राजकुमारी के साथ एक बग्घी में बैठा और नक़ली वधू के कपड़े भी ले लिये, जिससे वह उनका पीछा न कर सके। वे चलकर तालाब के पास आये और तेज़ी से उसे पार किया। हल के पटिये की मदद से तीनों ने तेज़ तलवारों का सामना किया। तीनों सुइयों की मदद से उन्होंने काँच का पहाड़ पार किया और आख़िरकार छोटे पुराने घर में आ गये। जैसे ही वे उस घर में घुसे, घर एक भव्य महल में बदल गया। उसी समय सभी मेंढक जादू से मुक्तत होकर अपने असली रूप में आ गए। वे उस देश के राजा के बेटे थे। विवाह सम्पन्न हुआ और राजकुमार और राजकुमारी महल में रहने लगे, क्योंकि वह महल राजकुमारी के पिता से भी बड़ा था। लेकिन राजा अपनी बेटी के लगातार ग़ायब रहने से बेहद दुखी था, इसलिए वे वहाँ जाकर उसके साथ रहने लगे और दोनों राज्यों का शासन एक साथ सँभालने लगे और वर्षों तक सुख और समृद्धि से रहे।

40

चमकीला सूरज लाता है दिन

एक दर्ज़ी काम की तलाश में देश भर में भटक रहा था। लेकिन उसे कोई काम नहीं मिला। इस तरह भटकते-भटकते वह इतना ग़रीब हो गया कि उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं बची। ठीक इसी समय उसे सड़क पर एक यहूदी मिला। अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ को अनुसना करके दर्ज़ी उसके पास गया। उसने सोचा कि यहूदी के पास पैसे होंगे, इसीलिए वह उसे रोककर चिल्लाया, "अपने पैसे मेरे हवाले कर दो, नहीं तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगा।" यहूदी गिड़गिड़ाया, "मेरी जान बख़्श दो ! मेरे पास केवल आठ सिक्के हैं।" लेकिन दर्ज़ी बोला, "तुम्हारे पास जो पैसे हैं, मैं उन्हें लेकर रहूँगा।" और यह कहते हुए उसने यहूदी को मार-मारकर अधमरा कर दिया। लेकिन मरने से पहले यहूदी बोला, "चमकीला सूरज लाता है दिन," और तुरन्त प्राण त्याग दिए। उसके मरने के बाद दर्ज़ी ने उसकी जेबों की तलाशी ली। उनमें उसे आठ सिक्कों के अलावा कुछ न मिला। उसने लाश उठायी और झाड़ियों में फेंक दी और फिर काम की तलाश में आगे चल पड़ा।

काफ़ी दूर चलकर वह एक शहर में आया जहाँ वह एक बड़े दर्ज़ी के साथ काम करने लगा। उस दर्ज़ी की एक सुन्दर बेटी थी, जिससे इसका विवाह हो गया। वे सुख से रहने लगे। कई वर्षों में उनके दो बच्चे हुए, बूढ़े माँ-बाप मर गये और बच्चे घर सम्हालने लगे। एक सुबह जब पति खिड़की के पास मेज़ पर बैठा, उसकी पत्नी उसके लिए कॉफ़ी लेकर आयी। जैसे ही पति ने तश्तरी में कॉफ़ी पीने के लिए उड़ेली, तभी चमकीले सूरज की रोशनी तश्तरी में पड़ी और दीवार पर चमकने लगी। यह देखकर दर्ज़ी उछलकर खड़ा हो गया और चिल्लाया, "यह दिन लायेगा। लेकिन यह ला नहीं सकता !" पत्नी ने पूछा, "प्रिय क्या बात है, इसका क्या अर्थ है ?" पति बोला, "यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता।" उसकी पत्नी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और वह प्रेम से बार-बार उससे उस बात की वजह पूछती रही।



उसने यह वादा भी किया कि वह उस बात का ज़िक्र किसी से नहीं करेगी। आख़िरकार दर्ज़ी ने अपनी पत्नी को बता ही दिया कि किस तरह जब वह काम की तलाश में भटक रहा था तो उसे एक यहूदी मिला था जिसे उसने पैसों के लालच मे मार डाला था। उसके अन्तिम शब्द थे, "चमकीला सूरज लाता है दिन।" उस सुबह सूरज दीवार पर चमका तो था, लेकिन थोड़ी देर के लिए और उसे देखकर ही दर्ज़ी को यहूदी की याद आयी थी और वह बात बताकर उसने उससे किसी और से उस बात का ज़िक्र करने के लिए मना किया। उसके बाद जैसे ही वह काम करने बैठा, उसकी पत्नी अपनी चचेरी बहन के पास गयी और उससे वह राज़ की बात कह दी। उससे वादा लिया कि वह इस बात को किसी और से नहीं कहेगी। तीन दिनों के भीतर उसकी चचेरी बहन ने भी वह बात किसी और से कह दी। इस तरह वह बात पूरे शहर में फैल गयी। दर्ज़ी को गिरफ़्तार कर लिया गया और सज़ा सुनायी गयी। सच ही तो था, चमकीला सूरज लाता है दिन।

●●

जैकोब लुडविग कार्ल ग्रिम (1785-1863) और **विलहेम कार्ल ग्रिम** (1786-1859) आधुनिक आख्यान-शास्त्र एवं लोक-साहित्य-विज्ञान के जनक और भाषा-विज्ञानी थे। उनका मुख्य उद्देश्य साहित्य के पारंपरिक स्वर एवं स्वरूप का अध्ययन करना था। जैकोब को जर्मन भाषा और व्याकरण के प्रति रुचि थी तो विलहेम को लोककथाएँ संगृहित करने में विशेष आनंद मिलता था। इन कहानियों के संकलन का उद्देश्य परंपरागत कहानियों के विपुल समुच्चय को समेटते हुए भाषा, मुहावरों, दंतकथाओं, कविताओं, बालसुलभ खेलों और गीतों के माध्यम से जर्मन भाषा एवं संस्कृति के स्रोतों और ऐतिह्य का क्रमिक विकास के साथ अध्ययन करना था। ग्रिम बंधुओं ने जर्मनी के चप्पे-चप्पे पहुँचकर बुजुर्गों और क़िस्सागों से कहानियाँ सुनकर लिपिबद्ध की। ग्रिम बंधुओं का वृहद कथा संकलन *नर्सरी एंड हाउसहोल्ड टेल्स* (नर्सरी और घरेलू कहानियाँ, 1812) छपते ही जर्मनी के घर-घर की ज़रूरत बन गया। कहानियों का दूसरा खंड 1815 में प्रकाशित हुआ।

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ केवल जर्मन साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व बाल साहित्य की अमर धरोहर हैं। कोई दो सौ वर्षों से ये बच्चों के साथ-साथ बड़ों का भी मनोरंजन कर रही हैं। यूरोप में ग्रिम बंधुओं की कहानियों की लोकप्रियता से उनके अनुवाद में तेज़ी आई और इनके अनुवाद क्रमशः डेनिश, स्विस एवं फ्रांसीसी और फिर अंग्रेज़ी, इतालवी, स्पानी, चेक और पोलिश भाषाओं में हुए।

हिन्दी बाल साहित्य पर कार्य करनेवाले विद्वानों में महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर डॉ. हरिकृष्ण देवसरे (जन्म 1940) ने ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ (दो भागों में) प्रस्तुत की हैं। जबलपुर विश्वविद्यालय से बाल साहित्य पर पी-एच.डी. प्राप्त डॉ. देवसरे 1960 में आकाशवाणी की सेवा में आए। उन्होंने दो सौ पचास से अधिक पुस्तकों की रचना की है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य से जुड़ी समस्याओं पर अनगिनत लेख लिखे हैं। आकाशवाणी से स्वैच्छिक अवकाश प्राप्त कर हिन्दी बालपत्रिका *पराग* के संपादक बने। 1991 में इस दायित्व से मुक्त होकर, आप इन दिनों स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

ISBN 81-260-2040-7
9788126020409
मूल्य : 90 रुपये (प्रति भाग)



आवरण एवं रेखांकन
सुरेन्द्रपाल सिंह